CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संहिता ज्योतिष

महेन्द्र नाथ केदार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संहिता ज्योतिष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संहिता ज्योतिष

ग्रहण, भूकम्प, बाजार भाव, सोने-चांदी के भाव में उतार-चढ़ाव, प्राकृतिक प्रकोष, बाढ़, टारनैडो, साइकलोन, बादलों का फटना, पहाड़ों की जमीन सरकना, दुर्घटनाएँ (रेल व सड़क व हवाई), चुनाव, सरकारों का गिरना, राजनीतिक हत्याएँ

महेन्द्र नाथ केदार

प्रकाशक

के.वी.आर. पब्लिशर्स

सी-1/62, राजस्थली अपार्टमेंट, पीतमपुरा, दिल्ली

फोन : 9871666660

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल्य : ₹ 500-00

प्रथम संस्करण : रामनवमी, संवत् 2062 (18-4-2005)
द्वितीय संस्करण, संवत् 2068 (दिसम्बर 2011)
तृतीय संस्करण (वृहद् संशोधित) वैशाखी 2072 तदानुसार अप्रैल 2015

© महेन्द्र नाथ केदार

प्रकाशक
के.वी.आर. पब्लिशर्स
सी-1/62, राजस्थली अपार्टमेंट, पीतमपुरा, दिल्ली
फोन : 9871666660

लेजर टाइपसैटिंग :
एब्रो एन्टरप्राईजिज
2369, छत्ता शाहजी, चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006
दूरभाष : 23284462

मुद्रक :
अशोक प्रिंटिंग प्रेस
2810, गली माता वाली, नई सड़क, दिल्ली-110006
दूरभाष : 23264968, 9810377836

पुस्तक मिलने का पता

आर.वी.एस. बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स
जी-4/30, गली नं. 3, पांचवा पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110094
फोन : 09582971153, 09953918219

पुस्तक भारती
भारतीय विद्या भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली—110001
फोन : 23381369

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने॥30॥

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये॥32॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥33॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिसमं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥35॥

राम मेरी माता है, राम मेरे पिता हैं, राम स्वामी हैं और राम ही मेरे सखा हैं दयामय रामचन्द्र ही मेरे सर्वस्व हैं, उनके सिवा और किसी को मैं नहीं जानता-बिल्कुल नहीं जानता॥30॥

जो सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर, रणक्रीडा में धीर, कमलनयन, रघुवंशनायक, करुणामूर्ति और करुणा के भंडार हैं, उन श्रीरामचन्द्र जी की मैं शरण लेता हूँ॥32॥

जिनकी मन के समान गति और वायु के समान वेग है, जो परम जितेन्द्रिय और बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हैं, उन पवननन्दन वानराग्रगण्य श्रीरामदूत की मैं शरण लेता हूँ॥33॥

आपत्तियों को हरने वाले तथा सब प्रकार की सम्पत्ति प्रदान करने वाले लोकाभिराम भगवान राम को मैं बारंबार नमस्कार करता हूँ॥35॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रद्धा सुमन

स्वर्गीय पिता श्री केदारनाथ, वरिष्ठ एडवोकेट

एवं 'माता श्री' श्रीमती विद्यावती

एवं

मेरे ज्योतिष गुरुदेव

श्री के.एन. राव के चरणों में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समझो और जानो–
सूरदास जी की भविष्यवाणी

रे मन धीरज क्यों न धरे।

एक सहस्त्र नौ सौ से ऊपर ऐसो योग पड़े।।

शुक्ला जया नाम संवतत्सर छठ सोमवार पड़े।

हलधर पूत पंवार घर उपजै दैहरी छत्र धरे।।

सूर सबे अनहोनी होई है जग में काल परे।

म्लेच्छ राज की सगरी सेना आपहि आप मरे।।

हिन्दू मुगल तुरक सबनासै कीट पतंग जरे।

सौ पर शून्य शून्य के भीतर आगे योग जुरै।।

सहस्त्र वर्ष लो व्यापे सतयुग धरम की बेल बढ़े।

सूरदास हरि की लीला टारे न टरे।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरी स्वर्गीय पत्नी श्रीमती सरोजनी केदार द्वारा रचित कविताओं में से यह मेरे सामने इस पुस्तक का वृहद् संशोधित संस्करण लिखते समय, आ गई मन में भाव आया और उनकी स्मृति में यहाँ प्रकाशित कर रहा हूँ।

पूछते हो कन्हैया कहाँ है?

उनको ढूढ़ों कुरुक्षेत्र में जाकर, साथ अर्जुन खड़े होंगे शायद।
नहीं तो बैठे पाण्डवों के शिवर में, कोई मंत्रणा कर रहे होंगे।।
या तो यमुना किनारे मिलेंगे,
या द्रौपदी ने होगा बुलाया। चीर खींचता होगा दुशासन।।

———————×———————

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं
यह दुनिया एक उलझन है, यहाँ धोखा कहीं ठोकर
कोई हँस-हँस कर जीता है, कोई जीता है रो-रो कर
जो गिरकर फिर संभल जाए उसे इंसान कहते हैं।
भरने को तो पेट पशु भी भरते हैं, पथिक भी
जो बाँट कर खाये उसे इंसान कहते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेखक का परिचय

श्री महेन्द नाथ केदार का जन्म दिनाँक 10 जून 1933 (शनिवार) को प्रातः 9 बज कर 11 मिनट (9 घटी 27 पल 8 विपल) आषाढ़ कृष्ण तृतीय सम्वत् 1990 शाका 1855 को दिल्ली के एक धार्मिक/संभ्रांत व प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। भारत के नियन्त्रक महालेखा परीक्षक के कार्यालय से एक वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी के पद से निवृत्त हुए। आप सदैव समाज तथा मानव उत्थान के लिए सेवारत रहे, देश प्रेम तथा भारतीय संस्कृति के पुजारी रहे हैं। 1994 में आपको दिल्ली की सौ वर्ष पुरानी संस्था वैश्य बीसा अगवाल ने **''वैश्य शिरोमणि''** की उपाधि देकर सम्मानित किया। भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद (पंजीकृत) मद्रास के दिल्ली चैप्टर के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में 1987 में भारतीय विद्या भवन दिल्ली में डा. बी. वी. रमन (परिषद के संस्थापक प्रधान) एवं अपने गुरु श्री के. एन. राव के आशीर्वाद तथा अपने सहयोगी न्यायाधीश शंकर नाथ कपूर (तत्कालीन मन्त्री दिल्ली चैप्टर) वर्तमान में, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद, सर्व श्री आर. एन. वशिष्ठ, श्रीमती (डा.) ललिता गुप्ता, जे. एन. शर्मा, जैड अंसारी, आर. के. विश्वकर्मा के साथ मई, 1987 में भारतीय विद्या भवन दिल्ली में आइकास के तत्त्वाधान में ज्योतिष की कक्षाऐं प्रारंभ की परन्तु ग्रहों के वशीभूत होकर जनवरी 1995 से आइ. कास. की कक्षाऐं भारतीय विद्या भवन से हट कर चलाई, जो आज दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों (1) पूसा रोड, (2) रूप नगर, (3) यमुना पार (मधुविहार) (4) सरस्वती बाल मन्दिर, एल ब्लाक हरि नगर (5) फरीदाबाद (6) गुड़गाँव (7) साकेत (8) नौएडा आदि स्थानों पर समाज के प्रतिष्ठित/शिक्षित वर्ग को ज्योतिष की शिक्षा देकर ज्योतिष की वैज्ञानिक महत्ता का आभास करवा रहे हैं। 1993 में पत्राचार द्वारा ज्योतिष प्रशिक्षण शुरु किया जो 1996 तक चला। इसी बीच आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम के आधार पर पुस्तकें लिखकर ज्योतिष पढ़ने वालों को लाभान्वित किया तथा शिक्षण को अति सरल बना दिया। अपनी पुस्तकों एवं स्मारिकाओं में शोध कार्य प्रकाशित कर अनेकों शंकाओं का समाधान किया। आप सरलतम ढंग से फलित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने की विधि के लिए प्रसिद्ध हैं। परन्तु वह स्वयं को एक विद्यार्थी, जिज्ञासु तथा ज्योतिष समाज के एक सेवक के रूप में ही मानते हैं।

अन्य विद्वानों द्वारा आपकी प्रशंसा

1. ए बुक आन प्रोफैशन (1993 में प्रकाशित)

   एम. एन. केदार एक सुविख्यात वैदिक ज्योतिषी हैं।

   श्री के. एन राव के नाम के बाद एक अनुभवी तथा सफल ज्योतिषी के रूप में आप ही माने जाते हैं।

2. **श्रीमती गायत्री देवी वासुदेव (सुपुत्री डा. बी वी रमन), संपादक-ऐस्ट्रोलॉजिकल मैगजीन**

   भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् आज संसार में सबसे शक्तिशाली संस्था बन चुकी है। जिसके पीछे एम. एन केदार जैसे ईमानदार एवं समर्पित ज्योतिष के विद्वानों का योगदान है जिन्होंने हृदय, तन, मन, धन से इसको सींचा है तथा पल्लवित किया है। (अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन (2-3 नवम्बर 1996)

3. श्री के. एन. राव के विभिन्न समय पर प्रकट किये गये विचार

   एडवाँस टेकनीक्स आफ एस्ट्रोलोजिकल प्रिडिक्शन (1991) में प्रकाशित—केदार जी की ज्योतिषीय योग्यता बहुमुखी है। उनकी शिक्षा, विवाह एवं व्यवसाय संबन्धी परामर्श उन्हें विश्व के उच्च कोटि के सफल ज्योतिषियों की श्रेणी में रखता है।

एम. एन केदार की पहचान है उनकी गहन शोध कृतियाँ जिनमें वर्गों का फलित ज्योतिष में प्रयोग दर्शाया गया है। उनके अनेकों विद्वत्तापूर्ण लेख अंग्रेजी व हिन्दी में छपते रहे हैं।

कुज दोष (मंगली दोष), व्यवसाय, कुण्डली मिलान एवं अन्य विषयों पर उनके शोध कार्य को न केवल सराहा गया बल्कि प्रयोग एवं उद्धृत किया जाता रहा है। मंगल तथा शनि की तीसरे भाव में स्थिति इनकी व न्यायाधीश एस. एन. कपूर की एक अद्भुत शोधकृति है जो संसार की प्रमुख ज्योतिष पत्रिकाओं तथा एस्ट्रोलोजिकल मैगजीन्स, रश्मि विज्ञान, ज्योतिषमति, ज्योतिष मंथन आदि में प्रकाशित हो चुकी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'अपराध' पर ज्योतिषीय शोधकृत लेखों की एकशृंखला भी एस्ट्रोलोजिकल मैगजीन में प्रकाशित हुई है। शिक्षा संबंधी परामर्श, विवाह समय निर्धारण, वैवाहिक जीवन में साम्यता तथा असाम्यता आदि विषयों पर कुशल मार्गदर्शक के रूप में इनकी पहचान है।

इनकी विशेषताएँ

वास्तव में उभरते हुए विद्यार्थियों एवं ज्योतिषियों के लिए एक समर्पित अध्यापक एवं गुरु, मित्र तथा मार्गदर्शक के रूप में माने जाते हैं। सेवानिवृत्त होने के बाद आप पूरा समय ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन, अध्यापन तथा शास्त्र के प्रचार में लगा रहे हैं। आपके अनेकों शोध लेख, जो पाठकों को नये-नये विचारों से अवगत कराकर शास्त्र अध्ययन के लिए प्रेरणा देते हैं, स्मारिकाओं तथा ज्योतिष पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

आपकी अनेकों पुस्तकें स्वलिखित तथा सहायक लेखक के रूप में भी प्रकाशित हुई हैं जो पाठकों के ज्ञानवर्धक एवं शंका समाधान करने वाली मानी है।

आपने विदेशीयों के लिये छोटे-छोटे समय के लिए निःशुल्क कक्षाएँ चलाकर उन्हें ज्योतिष ज्ञान दिया जिसके कारण विदेशों में भी आपकी पुस्तकों एवं ज्ञान की प्रशंसा होती है।

आप भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे, वर्तमान में तकनीकी सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं।

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली के अतिथि संकाय सदस्य भी रहे हैं।

सम्मान

निम्नलिखित संस्थाओं ने इनकी विद्वता एवं ज्योतिष शास्त्र की अनन्य सेवाओं, प्रबुद्ध व्याख्यान, शोध एवं प्रयोगात्मक शैली द्वारा शैक्षण के लिए इनको सम्मानित किया है।

1. दी इन्स्टीट्यूट ऑफ ऐस्ट्रोलोजी एण्ड ऑकल्ट साइंसिस, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली-(दिसम्बर 1989)
2. भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद (पंजीकृत) चेन्नैई के द्वितीय अखिल भारतीय सम्मेलन, पूना में आपको सम्मानित किया गया (1994)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. मौडर्न एस्ट्रो स्टडीज (स्थापित 1930) बंगलौर ने स्वर्ण जयन्ती के समारोह के अवसर पर विशेष उपाधि द्वारा सुशोभित किया।

4. भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद, दिल्ली चैप्टर ने इनकी अभूतपूर्व सेवाओं एवं ज्योतिष कार्यशालाओं, सम्मेलनों, दीक्षान्त समारोह के आयोजन एवं शोधकार्यों के लिए सम्मानित किया (1989)

5. देश की एक महान संस्था भारत निर्माण ने राष्ट्रीय सम्मेलन, 24 से 26 दिसम्बर 1993 में **प्राचार्य आवार्ड** तथा **ज्योतिष सुधाकर** (17 दिसम्बर 1996) द्वारा सुशोभित किया।

   1995 में भारत निर्माण ने इनके ज्योतिष में सर्वोच्च योगदान के लिए **प्राचार्य आवार्ड** दिया।

   मिस्टिक इण्डिया एण्ड ऑकल्ट इण्डिया फाउण्डेशन द्वारा अक्टूबर 1999 में आर्यभट्ट के अवार्ड से सम्मानित किया।

6. त्रिस्कन्ध ज्योतिष में दक्षता के लिए **ज्योतिष वाचस्पति** की उपाधि से 1996 में इन्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोलोजी एण्ड आकल्टीज्म, दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया।

7. भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद (पंजी) चेन्नैई, ने ज्योतिष वाचस्पति (1991), ज्योतिष भूषण (1996) तथा ज्योतिष भानु (1999), ज्योतिष आचार्य (9 जुलाई 2006) तथा ज्योतिष मार्तण्ड, 2 जुलाई 2011) उपाधियाँ देकर सुशोभित किया।

8. अखिल भारतीय विराट् ज्योतिष सम्मेलन 2001 में वेदाँग ज्योतिष अनुसंधान संस्था कोटा (राजस्थान) द्वारा

9. अखिल भारतीय ज्योतिष महासम्मेलन (2000) में गायत्री ज्योतिष एवं परामनोविज्ञान शोध संस्थान अजेमर द्वारा।

10. कालिदास अकादेमी, उज्जैन द्वारा (2001)

11. नेशनल फैड्रेशन आफ एस्ट्रोलाजी एण्ड स्प्रीच्युल साइंस, चन्डीगढ़ (भारत) मातारा (श्रीलंका) द्वारा

12. प्राच्य विद्या ज्योतिष अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान ने **एस्ट्रो साइंटिस्ट** की उपाधि द्वारा ज्योतिष महाकुंभ प्रयाग में (2001)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

13. ज्योतिष महाविद्यालय (इंडिया), दिल्ली द्वारा (2000)
14. विश्व तंत्र-ज्योतिष, ज्योतिष-अनुसंधान केन्द्र, आध्यात्मिक साधना-सिद्धि केन्द्र, जोधपुर द्वारा **'ज्योतिष मनीषी'** उपाधि द्वारा।
15. दिव्यज्योति कालिज ऑफ एस्ट्रोलोजी बंगलौर द्वारा वेदिक ज्योतिष तथा एलाइड साइंसेस पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय समागम में (अप्रैल-मई 2009 में) ज्योतिर्विद्या वाचस्पति तथा दिसम्बर 2012 में ज्योतिष **महा महोपाध्याय की उपाधी** से सुशोभित किया।
16. फ्यूचर पाइंट, दिल्ली ने 'नक्षत्र मेला' आयोजन 2010 तथा 2011 में त्रिस्कन्ध ज्योतिष में दक्षता होने पर सम्मानित किया।
17. डा. राधाकृष्ण श्रीमाली द्वारा आयोजित शहस्राब्दी-सम्मान समारोह, जोधपुर, **ज्योतिष मनीषी** की उपाधि से सम्मानित किया।

श्री एम. एन. केदार ने अनेकों ज्योतिष कार्याशालाओं तथा विचार विमर्श सभाओं मे भाग लिया जिनमें कुछ का विवरण दे रहे हैं।

(*i*) श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा मैडिकल एस्ट्रोलोजी पर आयोजित संगोष्ठी में

(क) 27 तथा 28 मार्च 2008

(ख) 29-30 मार्च 2011

(*ii*) एस्ट्रो साइंटिस्ट/प्राच्य विद्या ज्योतिष अध्ययन तथा अनुसंधान संस्थान इलाहबाद द्वारा आयोजित

24-25 अक्टूबर 1998, प्रयाग में

(*iii*) भारतीय ज्योतिष शोध संस्थान, पलवल (19 नवम्बर 2001) में

(*iv*) ज्योतिष महाविद्यालय (भारत), नई दिल्ली द्वारा आयोजित बाहरवें वार्षिक ज्योतिष सम्मेलन एवं निःशुल्क शिविर के अवसर पर

(*v*) डा. देवी प्रसाद गौड़ प्राच्य विद्या अनुसंधान संस्थान (पंजी) इलाहाबाद द्वारा 29 अक्टूबर 1999, को आयोजित समारोह में

(*vi*) भारतीय ज्योतिष परिषद इंदौर द्वारा 2-3 अक्टूबर 2000 को आयोजित सम्मेलन में

(*vii*) ज्योतिष मंथन, जयपुर द्वारा आयोजन में (12 नवम्बर 2000)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*viii*) अंतर्राष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास संस्थान फतेहपुर बेरी, महरौली द्वार 15 अगस्त 2001 को 'ज्योतिष समराट' की उपाधि दी गई।

(*ix*) अखिल भारतीय ज्योतिष स्वाध्याय संस्थान, दिल्ली द्वारा दिसम्बर 1997 को **'ज्योतिष शिरोमणी'** द्वारा अलंकृत किए गए।

(*x*) महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, ज्योतिषपुरम, रतलाम द्वारा 4 जनवरी 2004 को **'अभिनव मिहिर सम्मान'** द्वारा अलंकृत किए गए।

(*xi*) आल इण्डिया फैडरेशन ऑफ ऐस्ट्रोलोजिकल सोसाइटीस द्वारा आयोजित इंटरनेशनल सिम्पोजियम ऑन ऐस्ट्रोलोजिकल साइंसेस, अहमदाबाद 26-27 दिसम्बर 2011 को

(*xii*) ह्यूमन केयर चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी) साकेत, दिल्ली द्वारा 12 अगस्त 2011 को **''लाइफ टाइम्स अजीवमैन्ट अवार्ड''** दिया गया।

(*xiii*) दिल्ली एस्ट्रो सर्किल द्वारा 16 फरवरी 2013 को इण्डिया इंटरनेशनल सैंटर के सभागार, लोधी गार्डन्स दिल्ली में **''लाइफ टाइम अचीवमैन्ट अवार्ड''** से सुशोभित किया।

एस्ट्रोलॉजिकल रिसर्च इंस्टीच्यूट इंडिया, देवधर (वैद्यनाथ धाम), झारखण्ड में दिसम्बर 2012 में।

श्री केदार इनके अतिरिक्त एक सलाहकार संरक्षक, मार्गदर्शक के रूप में भी अनेको संस्थाओं से जुड़े हैं।

लेखक इन सबको ज्योतिष का सम्मान मानते हैं यह उनकी मान्यता है।

विद्या ददाति विनयम्।

तथा

सर्वे भवन्तु सुखिनः।।

वे विनय शील है तथा सब के सुख की कामना करते हैं।

श्री केदार जी को यह सब दिखाने की इच्छा नहीं है, वह तो एक विद्यार्थी एवं सेवक के रूप में ज्योतिष अध्ययन व प्रचार-प्रसार करना चाहते हैं। परन्तु आज के युग में इसकी आवश्यकता है इसलिए उपलब्धियों का विवरण हम उनकी इच्छा न होते हुए भी कर रहे हैं जिसके लिए केदार जी हमें क्षमा करेंगे।

K.V.R. Publisher

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विचारार्थ

श्री के. के. पाठक जी की पुस्तक 'ए बुक ऑन मुण्डेन' में से लिया गया है।

यह इतिहास एवं मुहूर्त के दृष्टिकोण से रुचिकर लगा। इसका हिन्दी अनुवाद पाठकों तक पहुँचाने हेतु प्रकाशित कर रहा हूँ–

हालाँकि ऐतिहासिक रूप से दिल्ली राज्यों के लिए भूतकाल में कई अवसरों पर अशुभ रहा है।

महाभारत के समय में भी दिल्ली का नाम 'हस्तिनापुर' के नाम से प्रसिद्ध था जिसकी राजधानी कुरुक्षेत्र रही। पाण्डवों ने एक नया शहर 'इन्द्रप्रस्थ' नाम से बसाया। एक महायुद्ध 'महाभारत' हुआ। जिसमें विशाल हिन्दु सभ्यता का विनाश हुआ। इस महायुद्ध का भय इतना व्यापक हो गया कि दिली किसी हिन्दु राजा ने 'दिल्ली' को राजधानी नहीं बनाया।

दुर्भाग्य से कुछ हुणजाति से निकले राजपूत राजस्थान से आए, जो इस ऐतिहासिक तथ्य से अवगत नहीं थे दिल्ली में बस गए। बहुत समय के बाद अनंगपाल दिल्ली का राजा बना जिसने अपनी पुत्री के पुत्र पृथ्वीराज चौहान को अपना उत्तराधिकारी बना दिया जो दिल्ली का अन्तिम हिन्दु राजा बना। 1911 (ए. डी.) से मुगलों के आक्रमण और राज से हिन्दु राष्ट्र एक यादगार बनके रह गये। बाद में मुसलमानों के लिए भी एक कहानी बनकर रह गया। 1911 (ए.डी.) से 1525 (ए.डी.) तक राजनीतिक दृष्टिकोण से एक अस्थिर समय रहा। दिल्ली की मिट्टी हिन्दु-मुसलमानों के खून से रंग दी गई थी। टुर्की, अफगानी, पठान, मंगोल आदि ने दिल्ली को पाने के लिए खून खराबा किया।

मौहम्मद तुग़लक ने एक असफल प्रयास किया और अपनी राजधानी को दिल्ली से 700 मील दक्षिण की ओर 'देवागिरी' ले गया। बाबर, हुमायुँ ने 'दिल्ली' को राजधानी बनाया और चैन से राज नहीं कर पाये। तुगलक स्वयं एक ज्योतिषी था, अकबर का ज्योतिष में विश्वास था और संतों में विश्वास था उसने अपनी राजधानी दिल्ली से फतेहपुर सीकरी, बाद में आगरा ले गया। जैसा कि मुस्लिम फकीर और ज्योतिषियों ने राय दी। उसके पुत्र जहाँगीर का राजतिलक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आगरा में हुआ। उसने अधिकतर आगरा तथा लाहौर या कश्मीर में राज किया। शाहजहाँ का भी राजतिलक आगरा में हुआ और उसने वहीं से राज किया। अपने बाद के जीवन में उसने दिल्ली में लालकिला बनवाया और वहाँ से प्राय: राज किया, उसका भी अन्त दर्दनाक रहा। औरंगजेब का दो बार राजतिलक हुआ, पहले 31-7-1658 को आगरा में पुन: 15-5-1659 को दिल्ली में अन्दाजन 9-45 प्रात: बजे हिन्दु ज्योतिषी द्वारा निकाले गए समय पर हुआ। इस मूहूर्त से उसे कई प्रकार के लाभ हुए। उसका अशुभ दिल्ली में आना मुगल साम्राज्य के अन्त का विशेष कारण बना। तत्पश्चात् दिल्ली लगातार भारत की राजधानी रही जो शनै-शनै मुगल शक्ति का अन्त हो गया। औरंगजेब के उत्तराधिकारी 1707 से 1857 तक कमजोर राज्य रहे। जहाँ तक सिखों की बात है तो श्री गोविन्द सिंह जी के दो सुपुत्र बन्दा बैरागी का दिल्ली में कत्ल हुआ। सरदारों के लिए दिल्ली अशुभ है। दुखित घटना 1984 में इन्दिरा जी की हत्या के बाद हुई। कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने सिक्खों का कत्ले आम किया।

आश्चर्य तो इस बात का है कि अंग्रेज सरकार के लिए भी दिल्ली में राज करना अशुभ रहा। 155 वर्ष उन्होंने कलकत्ते में राज किया और उनका साम्राज्य बढ़ता गया। परन्तु अगले 35 वर्ष 1912 ए.डी. में जब उन्होंने दिल्ली को राजधानी बनाया उन्हें बिस्तर बोरिया बाँधकर भारत को छोड़ कर भागना पड़ा।

भारत के लिए भी स्वतंत्रता उपरान्त दिल्ली को राजधानी बनाना अशुभ ही रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की हत्या, पं. जवाहरलाल नेहरु की चीन की धोखेबाजी के झटके से प्रभावित होना, श्री लाल बहादुर शास्त्री की संदेहयुक्त स्थिति में हत्या, श्रीमती इन्दिरा गाँधी तथा राजीव गाँधी की हत्या।

नोट: श्री सुभाष चंद्र बोस का लापता होना।

आज किसी भी सूरत में राजधानी बदलना संभव नहीं लगता। नई दिल्ली ही भारत की राजधानी रहेगी।

लेखक का सुझाव है कि कम से कम स्वतंत्रता दिवस पर झण्डा लाल किले की जगह लोक सभा पर होना चाहिए। यह हमारा गणतंत्र का मन्दिर है। लाल किला अत्याचारी राजाओं का अशुभ स्थान है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आभारोक्ति

करुणावरुणालय पालय मां; भवसागरदुःखविदूनहृदम्।
रचयाखिलदर्शन तत्वविदं; भवशङ्कर देशिक में शरणम्॥

सर्वप्रथम आद्यशंकराचार्य को नमन करता हूँ जिन्होंने मानव कल्याण एवं विश्वशांति हेतु चारों धाम (पीठ)-बद्री, जगन्नाथ, द्वारका एवं रामेश्वरम् की अवधारणा में राष्ट्रीय एकता एवं अखण्ड भारत की संस्थापना की। आज विश्व एक भयंकर स्थिति से गुजर रहा है, परिवार टूट कर बिखर रहे हैं, माता-पिता संतानवान होकर भी संतानहीनता का कष्ट अनुभव कर रहे हैं। ऐसी स्थिति से बचने व संघटनात्मक विचारधारा बनाए रखने के लिए कलियुग के प्रभाव एवं ग्रहों के प्रकोप से बचने के लिए ज्योतिष शास्त्र का मार्गदर्शन भी अनिवार्य है। संहिताग्रंथ **सर्वेभवन्तु सुखिनः** की भावना से रचा गया होगा। आने वाले समय में वर्षा कैसी होगी, कहाँ और कब बाढ़ आयेगी, भूस्खलन होगा आदि की भविष्यवाणी पूर्व में ही की जा सकती है। इस पुस्तक का ध्येय ऋषियों द्वारा प्रतिपादित सूत्रों को जन-जन तक पहुँचाना है ताकि आने वाली आपदाओं से बचने के लिए पहले से ही कदम उठाए जाऐं। अपनी इस भावना की पूर्ति के लिए जिनकी कृपा से मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ उन गुरुजनों के चरणों में मैं सादर प्रणाम करता हूँ साथ ही उन विद्यार्थियों का धन्यवाद करता हूँ जिनको मैं इस विषय की शिक्षा देता रहा और अनुभव प्राप्त करता रहा हूँ। इस विषय पर पुस्तक लिखने के लिए विद्वानों से प्रार्थना की परन्तु जब कोई पुस्तक नहीं प्रकाशित हुई तो मैं एक अदना विद्यार्थी इस संकल्प को लेकर आगे बढ़ा। इस विषय पर पुस्तक लिखना शायद इतना सहज नहीं है, केवल टिप्पणियों का आवहान करना है। आलोचना भी होगी तो मेरा ज्ञानवर्धन होगा अपमान नहीं क्योंकि मैं केवल एक ज्ञानार्चन का पिपासु हूँ।

मुझे इसकी रचना में जिन सज्जनों का विशेषकर एम. जी. कस्तवार एवं श्रीमती सरोजिनी केदार का योगदान प्राप्त हुआ उनका मैं आभार प्रकट करता हूँ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो शब्द

ज्योतिष के त्र्यस्कन्ध में एक स्कन्ध संहिता है। हिन्दू (भारतीय) संस्कृति की मान्यता है 'वसुधैव कुटुम्बकं' अर्थात् पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणी वासुदेव भगवान के परिवार के सदस्य हैं। वह सभी 'भ्रातृ प्रेम' के आनन्द सागर में कुशल रहे ऐसी भगवान से प्रार्थना है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्रानि पश्यन्तु मा कश्चिद दुख भाग भवेत।

अर्थात् संसार में सभी सुखी रहें, निरोगी काया, ईर्ष्या रहित जीवन तथा शांतिपूर्ण वातावरण में रहे ऐसी भगवान से कामना है।

ऋषियों ने हमारी सनातन संस्कृति को ध्यान में रखकर ही किसी विशेष समाज, जाति या देश के लिए नहीं 'मानव कल्याण' के लिए, आयुर्वेद तथा ज्योतिष शास्त्र की रचना की। **आयुर्वेद** मानव के शरीर को निरोगी रखने का प्रयास करता है तथा **योग** उसे स्वस्थ रखता है और दीर्घ आयु प्रदान करता है। **ज्योतिष शास्त्र गुरु है** या **मार्गदर्शक है** जो मानव के चरित्र, मनोबल, उज्जवल भविष्य, मानसिक शांति, पारिवारिक सुख आदि सभी को प्रदान करता है और सदैव सहायक रहता है।

पाठक खगोलीय ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही इस विषय को पढ़े तो अच्छा रहेगा, दैवज्ञ की मौलिक योग्यता आवश्यक है। (*देखें पुस्तक 'खगोल शास्त्र' द्वारा वी.पी. जैन*)

ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व

(*i*) **मुहूर्तः** ज्योतिष शास्त्र के जातक स्कन्ध का एक भाग मुहूर्त है। किसी कार्य, व्यापार को शुरु करने, नौकरी पर जाने, विवाह करने, बच्चे को स्कूल भेजने, गृह प्रवेश, मन्त्री पद के शपथ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेने के लिए शुभ समय का पता लगाने के लिए यह अति उपयोगी होता है। यदि कोई कार्य शुभ समय पर प्रारंभ किया जाए तो सफलता ही मिलेगी, साथ ही कार्य पूरा होने में समय कम लगेगा। अंग्रेजी की एक कहावत है 'वैल बिगन इज हाफ डन' अर्थात् कोई कार्य सोच विचार कर शुरु हो तो समझो आधा हो गया। इसलिए मुहूर्त परम लाभदायक है।

(*ii*) **कर्मः** ज्योतिष शास्त्र हमें हमारे संचित कर्मों व प्रारब्ध के विषय में बताता है जातक कहाँ कर्म करने में स्वतंत्र है और कहाँ वह प्रारब्ध से बंधा है। ज्योतिष शास्त्र जातक को कर्म करने के लिए प्रेरित करता है और उसका मार्गदर्शन करता है ताकि वह अपने प्रारब्ध को भोगते हुए अपना भविष्य उज्जवल बना पाए।

(*iii*) **ग्रह शांतिः** शुभाशुभ फलों का पूर्वाभ्यास करवाता है। कौन सा ग्रह जातक के लिए बाधक/कष्टप्रद होगा। इस ज्ञान से वह अशुभ फल से बचने व शुभ फल को बढ़ाने का प्रयास कर सकता है।

(*iv*) **भविष्य कथनः** जातक के शिक्षा का स्तर, आय कब प्रारंभ होगी और किस साधन से, विवाह कब होगा, सुखी विवाह जीवन रहेगा या नहीं, संतान कब और कैसी होगी आदि जीवन में होने वाली घटनाओं का समय, उनसे संबंधित सभी जानकारी ज्योतिष शास्त्र से मिलती है।

(*v*) जातक की आर्थिक स्थिति भविष्य में कैसी रहेगी, कब हानि या लाभ होगा आदि।

(*vi*) जातक के स्वास्थ्य संबंधी, किसी रोग के होने की संभावना है तो कब। उसका इलाज होगा या नहीं।

जातक कभी-कभी जिस वातावरण में रहता है उसके कारण भी जीवन में बाधाएं आती हैं। वह राजनीतिक, सामाजिक या प्राकृतिक प्रकोपों के कारण भी हो सकती है। जातक के जीवन में आने वाली बाधाओं के विषय में भविष्य कथन कठिन नहीं है। परंतु राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं, प्राकृतिक प्रकोपों जैसे बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन, अग्निकांड, अकाल आदि राजनीतिक उथलपुथल, वर्षा आदि का भविष्य कथन रुचिकर होते हुए भी सरल नहीं है। वर्षा, बाजार भाव में उतार चढ़ाव अपने आप में एक पूर्ण विषय है। **संहिता स्कन्ध** के भी सभी भाग अपने आप में पूर्ण विषय है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अग्रिम अध्यायों में विषय का स्पष्टीकरण एवं उससे भूकम्प वर्षा, बाजार, भावादि के विषय में फलकथन के सूत्रों का संग्रह कर प्रस्तुत किया है, आशा है पाठकगण संतुष्ट होंगे। इस पुस्तक में **संहिता शास्त्र** से फलित के लिए ग्रहों आदि के प्रभावों को ज्ञात करने के तरीकों की चर्चा की जाएगी। राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मामलों पर भी सूत्रों को लगाकर उनकी सार्थकता दर्शाने की चेष्टा रहेगी परन्तु विस्तार से चर्चा केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही रहेगी। वैसे यही नियम किसी भी क्षेत्र, देश पर वहाँ की भूगोलीय स्थितियों को ध्यान में रखकर, लगाया जाये तो सफलता अवश्य मिलेगी।

यहां देश के विद्वान ज्योतिषी श्री के. एन. राव साहब के ज्योतिष मन्थन पत्रिका 2000 में प्रकाशित दो लेखों में से कुछ विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं–

"मेदिनी ज्योतिष में शोध–कार्य न होने के कारण अधिकांश ज्योतिषी ऐसी भयावह भविष्यवाणी करते हैं, जो बिना ज्योतिष के सहारे की जा सकती है। उदाहरण के लिए प्राकृतिक प्रकोप, वृष्टि, अल्पवृद्धि, अनावृष्टि, सूखा, भूकंप, बीमारी और युद्ध आदि जिसकी भविष्यवाणी होती है वे अधिकांश सत्य इसलिए लगती है कि ये तो हर साल दुनियां में होती ही रहती हैं।"

युद्ध की स्थिति कब दृष्टिगोचर होगी इसके लिए हरदेव शर्मा शास्त्री की सफल भविष्यवाणियों में से श्री के. एन. राव ने निम्नलिखित मापदंडों का आंकलन किया–

1. शनि, राहु/केतु और मंगल का एक साथ होना।
2. शनि राहु/केतु तथा मंगल का एक दूसरे से केन्द्र में होना और विशेषकर द्विस्वभाव राशि में हो।
3. वृषभ राशि खासकर रोहिणी नक्षत्र पीड़ित होना।
4. वाराहमिहिर ने भारत को मकर राशि दी है इसलिए मकर और कर्क जब पीड़ित होते हैं, भारत के इतिहास में मोड़ आता है।
5. बृहस्पति और शुक्र जब एक साथ हों तो उस समय रक्तपात होने की भविष्यवाणी हरदेवजी ने हर बार की।
6. शनि, केतु, मंगल और राहु युत हो या परस्पर केंद्र में हो तब युद्धोन्माद होता है।
7. ग्रहणों के प्रभाव का विश्लेषण सूक्ष्मता से करके ही युद्ध की भविष्यवाणी की जा सकती हैं।
8. शनि और बृहस्पति की युति या परस्पर दृष्टि परिवर्तन का सूचक होती हैं। सीमांत युद्धों की भविष्यवाणी करने के लिए छठे स्थान का निरीक्षण आवश्यक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(भाग-2) श्री के.एन. राव साहब के शोध कार्यों का उल्लेख

हर वर्ष शुक्र के मिथुन में प्रवेश करने पर कुछ ऐसी घटनायें घटती हैं जो देश के लिए दर्दनाक होती हैं।

इस आधार पर लोंगोवाल की हत्या 20-8-1985 की भविष्यवाणी की थी।

20-5-1964 को जब पंडित जवाहर लाल नेहरु की मृत्यु हुई तो शुक्र मिथुन में राहु के साथ था।

10-6-1980 को शुक्र मिथुन में वक्री होकर वृष में प्रवेश करने वाला था तो संजय गांधी की मृत्यु हुई।

19-7-1979 को शुक्र मिथुन में था, चरण सिंह द्वारा सरकार तोड़ने के कारण मोरारजी देसाई की सरकार का पतन हुआ।

21-5-1991 को जब राजीव गांधी की हत्या हुई शुक्र मिथुन में था।

शोध: श्री एम. एम. मेहता शुक्र 'मिथुन के अलावा और कहीं भी पीड़ित हो तो उस समय कुछ घटनाएं घटती हैं। जो देश को आंदोलित कर देती हैं।' शनि जब गोचर में वक्री होकर अगली से पिछली राशि में आता है तो छत्र भंग होता है।

कोई एक ज्योतिषी यह शोध नहीं कर सकता जब तक देश में इसके लिए नि:स्वार्थ भाव से सामूहिक रूप में काम नहीं करेंगे। (श्री के.एन.राव)

लेखक के विचार

(*i*) कोई भी एक ग्रह की स्थिति अपने आप में फल देने की स्थिति में नहीं होती वरना हर दुर्घटना मिथुन के शुक्र में अथवा मई से जुलाई के बीच में ही होती।

(*ii*) यदि भविष्यवाणियां प्राकृतिक प्रकोप, वृष्टि, अनावृष्टि सूखा, बाढ़, भूकंप, बीमारी और युद्ध आदि के विषय में अधिकांश सत्य होती है तो उसका कारण ऋषियों द्वारा प्रतिपादित सूत्र है (जैसा आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे) बिना ज्योतिष के गहन अध्ययन के यह भविष्यवाणी संभव नहीं होती है।

(*iii*) पं. हरदेव शर्माजी के द्वारा प्रयोग किए गए सूत्र सही फल की ओर इशारा करते हैं। इस पुस्तक में उनके पंचांग के विषय पर बहुत कुछ लिखा गया है।

(*iv*) दुख यह है कि विद्वान अपना अहं, परस्पर राग, द्वेष एक दूसरे पर दोषारोपण करना नहीं छोड़ते, तो सामूहिक शोध कैसे हो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकता है। जो यह घोषणा करते हैं कि हम कुछ छुपाते नहीं, खुल कर ज्योतिष के सूत्रों की चर्चा करते हैं तथा अपने अनुभवों को बांटते हैं परंतु यह सत्य नहीं है सबने अपने-अपने अखाड़े बना रखे हैं। भगवान ही अपनी लीला करेंगे और इनमें सद्भावना का प्रसार करेंगे।

यह पुस्तक आपके हाथ में शास्त्र व ज्योतिष विद्वानों एवं अपने गुरुओं के प्रति मेरे 'श्रद्धा सुमन' के रूप में ही हैं। संहिता खण्ड में पाठकों की रुचि बढ़े और इसमें शोध करने की इच्छा जागृत हो यह ही लेखक का ध्येय है। अनुभव में आया कि संहिता खण्ड में विद्यार्थियों की एवं ज्योतिषियों की रुचि कम है जबकि जातक शास्त्र, मुहूर्त आदि व्यक्तियों की नित्य प्रति जीवन में उपयोग आते हैं तथा ज्योतिषियों को सरलता से धन व ख्याति प्राप्त होती है, उसमें सभी की रुचि है। आशा है इस पुस्तक से अधिक से अधिक विद्वान इस विषय की ओर आकर्षित होंगे और शोध कार्य करेंगे। लेखक का जो अपना अनुभव है वह विनम्रता पूर्वक ज्योतिष शास्त्र की भेंट है।

प्रथम अध्याय में सूर्य तथा चंद्रग्रहण तथा उनका पृथ्वी पर पड़ने वाले परिणामों की चर्चा की गई है। **द्वितीय अध्याय** में भूकंप के कारणों तथा प्रभाव की कई उदाहरणों द्वारा चर्चा की गई है। इन दो अध्यायों के बारे में पढ़कर विधाता की सृष्टि को नमन करने की भावना जागृत हो जाती है। **तृतीय अध्याय** में संवत्सर तथा उसकी केबिनेट के मंत्रियों के पदों की चर्चा की गई। प्रयत्न है कि विषय प्रवेश सरल होता जाए। **चतुर्थ अध्याय** में ज्योतिषीय मौसम विभाग के अंतर्गत ऋतुओं तथा ग्रहों के संबंध की चर्चा की गई है। वर्षा ऋतु की विशेष चर्चा जैसे अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़ादि की भविष्यवाणी करने के तरीकों की चर्चा की है। अनेकों उदाहरणों द्वारा सूत्रों की प्रमाणिकता दिखाई गई है। **पंचम अध्याय** में बाजार भावों, शेयर बाजार, व्यापरियों के मार्गदर्शन आदि के सूत्र उदाहरण सहित दिये गये हैं। **छठे अध्याय** में सबसे कठिन व नीरस प्रतीत होने वाला विषय है जिसमें राजनीतिक घटनायें, प्राकृतिक घटनाएँ, राष्ट्र उन्नति, राष्ट्र के सम्मुख आने वाली चुनौतियों की भविष्यवाणियों के ज्योतिषीय सूत्रों की चर्चा विस्तार से की गई है। अनेकों उदाहरण देकर सूत्रों की सूची भी स्थान-स्थान पर दी गई है ताकि पाठक स्वयं भी उनकी ग्रह स्थिति देखकर सूत्रों की सार्थकता का परीक्षण करे और ऋषियों की कृति के लिए आभार प्रकट करें।

सभी के मंगल की कामना करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुचिकर तथ्य

भगवति तव तीरे तीरमात्राशनोऽहं।
विगत विषय तृष्णः कृष्णमाराधयामि।
गंङ्गाष्टक शंङ्करविरचित

विषय प्रवेश से पहले निम्नलिखित ग्रहयोग तथा उनका फल प्रस्तुत कर रहा हूँ जिससे पाठक के हृदय में विषय को जानने की उत्कष्ठा पैदा हो–

I. शनि + राहु की तुला राशि में युति साथ ही मंगल का कन्या में अवस्थित होना जिससे धनु राशि में स्थित सूर्य का पीड़ित होना (शनि की तृतीय दृष्टि व मंगल की चतुर्थ दृष्टि)

प्रभाव (*i*) शनि का तुला में प्रवेश 15 नवम्बर, 2011 को प्रातः 10 बजकर 11 मिनट पर हुआ।

(*ii*) राहु का तुला में प्रवेश 29 दिसम्बर 2012 को 19:55 बजे हुआ।

पिछली बार जब भी वृष/तुला (शुक्र की राशियाँ पीड़ित हुई हैं–**स्त्रियों पर कष्ट**, आक्रामक व्यवहार हुए हैं। शनि के तुला में आने पर हुए, राहु की युति होने के बाद बढ़े। इनकी जानकारी पुस्तक में दी गई है।

II. दक्षिण रूस के वौएगोगरेड शहर

30 दिसम्बर 2013 को आत्मघाती **बम विस्फोट** हुआ एक ट्रौली में जिसके कारण 14 व्यक्तियों की मृत्यु और 35 व्यक्ति घायल हुए।

एक दिन पहले 'स्त्री आत्मघाती' बम द्वारा शहर के मुख्य रेल स्टेशन पर धमाका हुआ जिसमें 18 लोग मारे गये।

रूस के राष्ट्रपति कलादमिर पुटिन ने देश में सुरक्षा व्यवस्था और बढ़ाने का आदेश दिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋतु पर प्रभाव–30 दिसम्बर 2013 को दिल्ली में ठंड का 17 वर्ष का रिकार्ड टूटा। (2.4°C अथवा –5° साधारण से कम। वर्षा भी हुई। दिल्ली शिमला (2.5°C) से ज्यादा ठण्डी थी। श्रीनगर (–5.3°C), मनाली (2.5°C) जफरपुर (दक्षिण-पश्चिम दिल्ली) में 0.7°C तथा उत्तर पश्चिम दिल्ली (मुग्गेशपुर) में 0.9°C तापमान था।

अनुभव में देखा गया है जब भी शनि का सूर्य से किसी प्रकार का संबंध हो वह ऋतु तीव्र प्रभावशाली हो जाती है। रिकार्ड टूटते पाये गये हैं।

नोटः इसके साथ बुध शुक्र तथा गुरु की स्थिति व उनके नक्षत्र भी ध्यान में देने होंगे।

3. महाराष्ट्र में मजदूरों की सामुहिक आत्महत्या

हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशित समाचार 'यू.पी.ए' सरकार द्वारा 'महात्मा गाँधी राष्ट्रीय देहांत नौकरी' आश्वासन के साथ नामांकित मजदूरों को वेतन समय पर प्राप्त न होने के कारण आत्महत्या हुई।'' इसके कारण शहरी विकास मन्त्री श्री जय राम रमेश ने महाराष्ट्र सरकार को लिखा।

नोटः शनि + राहु से तुला पीड़ित (स्वतंत्रता दिवस की कुण्डली का छठा भाव + मंगल पंचम भाव कन्या में, धनु में अवस्थित सूर्य को पीड़ित कर रहा है।)

4. रेलगाड़ी में आग

8 जनवरी, 2014 को प्रातः 2 बजकर 25 मिनट पर देहरादून रोड स्टेशन से चलने के 7 मिनट बाद लैवल क्रॉसिंग के गेट मैन जवाहर सिंह ने देखा कि बांदरा-देहरादून एक्स्प्रैस में आग की लपटें निकल रही हैं। उसने स्टेशन मास्टर को सूचना दी। गाड़ी चिखला स्टेशन पर (पहाड़ी क्षेत्र, घलवाड़ से पहले) रोक दी गई।

बलसार–एम आइ डी सी अग्निशमन जो 10 कि. मी. पर था, 3 बजकर 30 मिनट पर फून गया और आधा घण्टे बाद दमकल पहुँच गाया और 5-15 बजे आग पर काबू पा लिया गया। पाँच यात्रियों की मृत्यु हो गई।

पिछले दो हफ्तों में आग के कारण 35 यात्रियों की मृत्यु हुई। रेलवे की कमजोरी बाहर आई (उजागर हुई)।

8 जनवरी 2014 की ग्रह स्थिति

चंद्रमा मीन राशि (मेष राशि में प्रवेश 20-45 बजे किया)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि + राहु मीन से अष्टम में थे, मंगल की सप्तम दृष्टि चंद्रमा पर पड़ रही थी।

शुक्र कारक वक्री धनु राशि में मंगल + शनि से पीड़ित था।

28 दिसम्बर 2013 रेलगाड़ी में आग

ए. सी. 3 टायर बंगलौर–ननदेड़ ऐक्स्प्रैस में 26 लोग मारे गए। करीब 65 लोग पिछले दो वर्षों में रेल दुर्घटना में आग से झुलस गये 2013–14 में 35 लोग सात आग की दुर्घटनाओं में मारे गये। 2011–12 में 9 लोग मरे।

ग्रहस्थिति–चंद्रमा तुला में शनि + राहु के साथ सूर्य + बुध (धनु राशि में) मंगल से दृष्ट, शुक्र (व) मकर राशि में (9/3°53′ का)

नोट: स्वतंत्रता दिवस की कुण्डली का तृतीय भाव व चतुर्थ भाव शनि की दशम दृष्टि से पीड़ित चंद्रमा की राशि से तृतीय व चतुर्थ भाव भी पीड़ित हैं। (शनि तथा मंगल से)

भारत की मकर राशि से तृतीय भाव (मीन) पर मंगल की दृष्टि, चतुर्थ भाव मेष में केतु व शनि की दृष्टि पूर्व में भविष्यवाणी (लेखक द्वारा अप्रैल 2014 में अंग्रेजी पुस्तक Mundane Astrology में प्रकाशित)

शनि + राहु की युति ने छः राज्यों में सत्ता परिवर्तन देख लिया। इस ही में लोक सभा का भी चुनाव व सत्ता परिवर्तन होगा। और भी राज्यों में होने की आशा है।

2014 मार्च में मंगल भी मिल जायेगा, वक्री होगा फिर कन्या में जायेगा। वहाँ फिर दीर्घकाल तक रहेगा। इसकी यह चाल तुला कन्या–तुला भारत सरकार को एक सदमा देगी। जनता के सामने भी समस्याऐं आ सकती हैं। शतप्रतिशत कुछ नहीं कह रहा। ग्रह ऐसी संभावनाऐं बता रहे हैं।

नोट–1. अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद है जो 2012 में प्रकाशित हुई थी में से लिया गया है। 5 मार्च 2014 को चुनावों की घोषणा हुई थी। आज हमने देखा कि सोलहवीं लोकसभा के लिए 7 अप्रैल 2014 से 12 मई 2014 के बीच, देश के इतिहास में प्रथम बार इतने लम्बे समय तक चुनाव की प्रतिक्रिया चलती रही जिसमें 2009 के चुनावों से 100 करोड़ अधिक मतदान पड़े। 543 पदों के लिए 8,251 उम्मीदवार ने चुनाव लड़े। वास्तव में उस समय की सरकार के लिए सदमा ही रहा जब उनके दल कांग्रेस को 16 मई 2014 को चुनाव परिणाम घोषणा में (कांग्रेस व उसके सभी दलों को) यू. पी. ए. के 58 प्रत्याशी विजयी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुए जब कि भारतीय जनता दल के 336 प्रत्याशी विजयी हुए। श्री नरेन्द्र मोदी ने 26 मई 2014 को प्रधान मंत्री का कार्यभार संभाला।

2. दिल्ली विधान सभा चुनाव 11 तथा 19 नवम्बर 2013 में 15 वर्षों से राज कर रही कांग्रेस का सफाया, भारतीय जनता पार्टी व आम आदमी पार्टी को सफलता मिली परन्तु स्वयं कोई सरकार बनाने योग्य नहीं था। कांग्रेस ने 'आप' को बाहर से समर्थन दिया परन्तु वह सरकार भी 49 दिन तक चली।

पुनः फिर 17 फरवरी 2015 को चुनाव हुए जिनमें कांग्रेस का बिल्कुल सफाया, भारतीय जनता पार्टी को 3 और 'आप' को 67 सीटें प्राप्त हुई। जब तक शनि-राहु तुला में रहे दिल्ली को स्थिर सरकार नहीं मिल पाई! 3 सितम्बर, 2014 को शनि वृश्चिक में प्रवेश कर गए, 20 जुलाई 14 को गुरु मिथुन से कर्क में प्रवेश कर गए थे, इसलिए फरवरी में दिल्ली को सरकार मिल गई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय-सूची

1.	ग्रहण	1–8
2.	भूकम्प	9–55
3.	आकाशीय परिषद	56–76
4.	ज्योतिषीय मौसम विज्ञान	77–112
5.	ज्योतिष तथा बाजार भाव	113–173
6.	राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय घटनाएँ	174–272
	परिशिष्ठ	273–336
	अनुलग्न	337–359
	विषय-सूची	360–371

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय

1 ग्रहण

1.1 (*i*) विषय-प्रवेश

सूर्य देव से प्राप्त प्रकाश को ही सर्वग्रह बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेपच्यून तथा प्लूटो पुनः परावर्तित करते हैं। आकाशीय मण्डल में सूर्य ही केवल एक प्रकाश पुंज है, जो वास्तव में सूर्य लोक में एक तारे के समान है। सभी ग्रह सूर्य के चारों और चक्कर काटते हैं, जिनमें पृथ्वी भी सूर्य की आकर्षण शक्ति के कारण अपनी धुरी पर घूमते हुए सूर्य के चारों ओर चक्कर काटती हैं। चंद्रमा पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के कारण, पृथ्वी के चारों ओर घूमते हुए पृथ्वी के साथ-साथ सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाता है।

नोट: ग्रहण के होने, मध्य व अन्त का गणित नहीं दिया जा रहा है। वह सभी पंचांग या ऐफेमेरीज़ में देख लें।

1.1 (*ii*) राहु-केतु

गोचरवश कोई भी आकाशीय पिण्ड (ग्रह या चन्द्रमा) अपनी कक्षा में जब क्रांतिवृत्त को नीचे से ऊपर की ओर जाते हुए काटते हैं तब उस कटान बिन्दु को आरोही पात और ऊपर से नीचे जाते हुए क्रांतिवृत्त के कटान बिन्दु को अवरोही पात कहते हैं। चन्द्रमा के आरोही पात का नाम राहु है और अवरोही पात केतु कहलाता है। दोनों पातों के मध्य 180° का अन्तर होता है। अर्थात् जब चन्द्रमा अपनी कक्षा में भ्रमण करता हुआ क्रांतिवृत्त को नीचे से ऊपर जाता हुआ जिस बिन्दु पर काटता है वह बिन्दु राहु और ऊपर से नीचे जाते हुए जिस बिन्दु पर काटे वह केतु कहलाता है। जब चन्द्रमा राहु या केतु के साथ होता है तब वह क्रांतिवृत्त पर होता है और उसका शर शून्य होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1.1 (*iii*) ग्रहण दो प्रकार के होते हैं–

चंद्र ग्रहण तथा सूर्य ग्रहण

(क) चंद्रग्रहण उस समय पड़ता है जब चंद्रमा आकाश में पृथ्वी की छाया में से गुजरता है। ऐसा केवल उस समय होता है जब सूर्य, पृथ्वी तथा चंद्रमा तीनों ही एक सीधी रेखा पर होते हैं सूर्य तथा पृथ्वी सदा क्रांतिवृत पर होते हैं परन्तु चन्द्रमा का पथ क्रांतिवृत्त से 5 डिग्री के कोण पर झुका रहता है। इसलिए चन्द्रमा का क्रांतिवृत्त पर उसके पास होना या न होना आवश्यक नहीं है। जब पृथ्वी, सूर्य तथा चन्द्रमा के मध्य हो, यानि पूर्णिमा के दिन (प्रत्येक पूर्णिमा पर ग्रहण नहीं होता)। परन्तु जब चंद्रमा राहु–केतु के निकट होता है अथवा क्रांतिवृत के पास यह संभावना होती है। जब चंद्रमा की बिम्ब पूर्णतया पृथ्वी की छाया में होती है, उसे पूर्ण ग्रहण या खग्रास कहते हैं। चंद्रमा की दो विशेष स्थिति होनी आवश्यक है–(क) चंद्रमा विपरीत युति हो अर्थात् उस समय पूर्णिमा समाप्त हो रही हो। (ख) चंद्रमा राहु या केतु पर हो या इनके अधिक निकट हो।

जब इसका कुछ भाग ढका होता है तो खण्डग्रास कहते हैं।

(ख) सूर्य ग्रहण–उस समय होता है जब पृथ्वी तथा सूर्य के मध्य चंद्रमा आ जाता है।

(*i*) यह सदैव अमावस्या को होता है। सूर्य व चन्द्रमा के भोगांश समान हों अर्थात् अमावस्या का अन्त हो रहा है।

(*ii*) चंद्रमा राहु या केतु पर अथवा उनके पास होता है और उनका शर शून्य होता है अर्थात् चंद्रमा, पृथ्वी तथा सूर्य एक ही रेखा पर होते हैं।

सूर्य ग्रहण का भी कारण चंद्र ग्रहण जैसा है अर्थात् सूर्य के प्रकाश की किरणों को पृथ्वी पर पड़ने में चंद्रमा अवरोधक बनता है। ऐसा तब ही हो सकता है जब *चंद्रमा सूर्य तथा पृथ्वी की रेखा पर तथा उनके मध्य आ जाये* और प्रकाश की किरणों को पृथ्वी पर पड़ने से रोक दे। चंद्रमा सामान्यतया आधी डिग्री से अधिक प्रतिघण्टे की गति से पूर्व की ओर बढ़ता है। अपनी इस गति में वह अपने बिम्ब को लगातार हमारे (पृथ्वी) और तारों के मध्य रखता है। इस प्रकार किसी भी तारे के बिम्ब का चंद्रमा के कारण अचानक लोप हो जाना ही उसका *आच्छादन* या रुकावट कहलाता है। वास्तव में यह क्रिया किसी भी आकाशीय पिण्ड द्वारा दूसरे आकाशीय पिण्ड पर हो सकती है।

नोटः प्रत्येक पूर्णिमा व अमावस्या को ग्रहण क्यों नहीं होता?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम पढ़ चुके हैं कि सूर्य व पृथ्वी सदैव क्रान्वित्त पर रहते हैं, इसलिए चंद्रमा हमारी नज़र के विस्तार को ढकने में या कहें पृथ्वी की छाया में प्रवेश करेगा जब वह **क्रांतिवृत्त** के बहुत नज़दीक होगा। अमावस्या व पूर्णिमा के अन्त में जब राहु या केतु में से कोई एक सूर्य के बिल्कुल पास हो तब ही ग्रहण हो सकता है, अथवा नहीं।

सूर्य ग्रहण के तीन प्रकार होते हैं (क) पूर्ण (ख) आंशिक (ग) कंकणाकार (वलयाकार) जब चंद्रमा का बिम्ब सूर्य से छोटा पड़ जाये, पूरा सूर्य नहीं ढ़क पाये अर्थात् सूर्य 'पूथ्वी नीच' (Perigee) पर या इसके समीप हो तथा चंद्रमा 'पृथ्वीउच्च' (Apogee) पर या इसके समीप हो। इनके पृथ्वी से दिखाई देने वाले अधिकतम व न्यूनतम व्यास हैं–

	पृथ्वी नीच पर	पृथ्वी उच्च पर
सूर्य	32′36″	31′32″
चंद्रमा	33′31″	29′22″

वास्तव में देखा जाये तो एक आकाशीय पिण्ड का दूसरे से ढका जाना ही समागम है। दृढ़ता से कहें तो सूर्य ग्रहण भी सूर्य का चंद्रमा के द्वारा समागम का ही प्रतिफल है। ग्रहण मानव जीवन व राष्ट्र व पृथ्वी पर होने वाली शुभाशुभ घटनाओं का पूर्वाभास करा देता है। इनके होने का समय एक ग्रहण से दूसरे ग्रहण का मध्य काल ही होता है। कुछ विद्वानों का मत है कि ग्रहण जितने घण्टे व मिनट रहता है उतने ही मास व दिन तक ग्रहण का प्रभाव रहता है उसी समय में कोई घटना हो सकती है।

(ग) ग्रस्तोदित व ग्रस्तास्त–ग्रहण के आरंभ होने के उपरान्त सूर्य या चंद्रमा उदित हो अत: उदय के समय बिम्ब ग्रसत या ढका हुआ होगा। इस स्थिति को **ग्रस्तोदित** कहते हैं।

इससे विपरीत सूर्य या चंद्रमा ग्रहण के रहते हुए ही (मोक्ष होने से पूर्व) अस्त हों तो वह स्थिति **'ग्रस्तास्त'** कहलाती हैं।

दोनों से स्थिति अशुभ एवं जन धन के लिए हानिकारक होती है।

भूभाग के उस ही भाग में होती है जहाँ से पूर्ण ग्रहण या खग्रास ग्रहण ग्रस्तोदित या ग्रस्तास्त दिखाई देता है। उस ही देश-प्रदेश का राज्य/शासन गड़बड़ा जाता है और राजा या किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण–आगे 1.3 में 30 मई 1984 के ग्रहण का प्रभाव 31 अक्टूबर 1984 को श्रीमती इन्दिरा गाँधी की मृत्यु, सत्ता परिवर्तन व सिक्ख भाइयों का कत्ले आम हुआ।

1.2 ग्रहण के प्रभाव

(*i*) जातक के जीवन पर ग्रहण का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है यदि वह जन्म कुंडली में अवस्थित ग्रह, दशम स्पष्ट तथ लग्न पर पड़ता हो।

(*ii*) दक्षिणी पात (केतु) ग्रहण से उत्तरी पात (राहु) वाला ग्रहण अधिक प्रभावशाली होता है।

(*iii*) साधारणतया राहु वाले ग्रहण का शुभ तथा केतु वाले ग्रहण का प्रभाव अशुभ होता है।

(*iv*) राहु वाला ग्रहण जन्म कुंडली में अवस्थित सूर्य, चंद्रमा अथवा मर्मज्ञ स्थान (लग्न व दशम स्पष्ट) से यदि 3/11 अथवा 5/9 भावों में हो अथवा शुभ ग्रहों (गुरु व शुक्र) से युति हो तो उसका प्रभाव शुभकारी होता है।

(*v*) यदि ग्रहण अष्टम भाव में पड़े और दुष्ट, ग्रह की दृष्टि से प्रभावित हो या किसी जन्मकालीन ग्रह को देखता हो, विशेषतया जब दुष्ट ग्रह की दशा चल रही हो, अशुभ प्रभावकारी, स्वास्थ्य के लिए अशुभ रहे एवं स्थान हानि करवाता है।

(*vi*) यदि चंद्रग्रहण सूर्य लग्न पर पड़े तो जातक को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है (यदि गुरु की दृष्टि न हो)।

(*vii*) पुरुष जातक पर दुष्प्रभाव अधिक होता है जबकि स्त्री जातक पर कम होता है।

नोटः यहाँ शास्त्रोक्त विचार में थोड़ा परिवर्तन आवश्यक है क्योंकि आज महिलायें भी पुरुष की भांति कार्यरत हैं। वैसे भी ग्रहण का विशेष प्रभाव गर्भवती स्त्रियों व उनके होने वाले बच्चों पर पड़ सकता है।

(*viii*) **जन्मकालीन ग्रह स्थिति पर ग्रहण का प्रभाव** सूर्य लग्न पर (पिता) चंद्र लग्न पर (माता), लग्न पर (जातक स्वयं) आदि के भाग्य, स्वास्थ्यादि पर दुष्प्रभाव डालता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ix*) **सूर्य ग्रहण के प्रभाव का समय**–जितने घण्टे मिनट ग्रहण रहता है उतने दिन, सप्ताह, मास आदि में कोई घटना हो सकती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार सूर्य ग्रहण का प्रभाव वर्षों तक रहता है, चंद्र ग्रहण का प्रभाव मास तक, जितने घण्टे का ग्रहण होता है उसके अनुसार गिनना चाहिए।

(*x*) **अनक्रमिक ग्रहणों का अंशछादन प्रभाव**–एक ग्रहण का प्रभाव, आगे पड़ने वाले ग्रहण के साथ भी जुड़ जाता है।

कुछ विद्वानों के मत से सूर्य ग्रहण का प्रभाव सात महीने में तथा चंद्र ग्रहण का प्रभाव छः से आठ मास में शुरु हो सकता है।

अन्य मत ग्रहण के दिन से ही प्रभाव शुरु होकर भविष्य में पड़ने वाले ग्रहण तक हो सकता है।

नोटः अपने अनुभव से प्राप्त फल–प्रत्येक ग्रहण का प्रभाव ग्रहण काल के घण्टे मिनट के अनुसार उतने ही दिन, सप्ताह और मास में घटित हो जाता है। साधारणतया वर्ष में कम से कम दो बार ग्रहण पड़ जाता है, यहाँ तक कि एक मास में भी दो बार ग्रहण आ जाता है। महाभारत के समय 13 दिन में दो ग्रहण पड़े थे। जिसका प्रभाव सर्वविदित है।

(*xi*) यदि दो ग्रहण, एक सूर्य तथा दूसरा चंद्रग्रहण, एक ही मास में पड़ जायें तो **राजा की हत्या, सेना का विद्रोह, रक्त का बहना, हत्याऐं होने की संभावना होती है। श्रीमती इन्दिरा गांधी, भारत की प्रधानमंत्री के साथ इसी प्रकार की घटना हुई।**

(*xii*) यदि चंद्रमा ग्रहण काल में ही उदय/अस्त हो जाए तो शरद/खरीफ की फसल कृषि के उत्पादन की हानि तथा राजा को भय होता है।

पूर्ण ग्रहण (खग्रास), दुष्ट ग्रह से दुष्ट हो तो अकाल और देश के अधिक भागों में कृषि की हानि होने की संभावना रहती है।

(*xiii*) यदि ग्रहण पूर्ण है तथा क्रूर ग्रहों से प्रभावित है तो अकाल, अनिष्ट, महामारी आदि की संभावना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1.3 उदाहरण

30 मई, 1984 (बुधवार) को हुए सूर्य ग्रहण की कुण्डली

लग्न	8/28°–57′	मं	6/20°–46′	शु.	1/11°–24′
सू.	1/15°–48′	बुध	0/23°–19′	शनि	6/17°–29′
चं.	1/15°–46′	बृ.	8/17°–57′	रा.	1/12°–54′

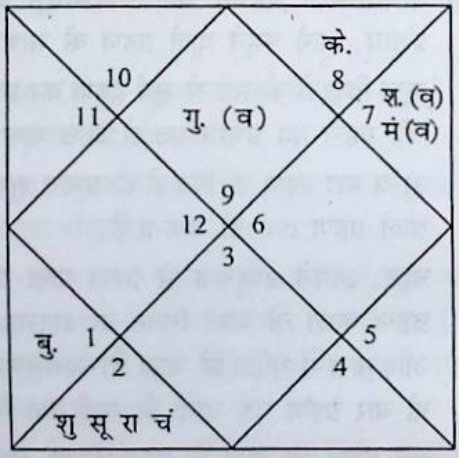

भारत में नहीं दिखाई दिया। उत्तरी अमेरिका, उत्तरी पश्चिमी अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप आदि में देखा गया। ग्रहण काल 5 घण्टे, 39 मिनट, (19 घन्टे 26 मिनट से 25 घण्टे 5 मिनट तक) अधिकतम ग्रहण 22 घन्टे 15 मिनट पर था।

दूसरा सूर्य ग्रहण 23 नवम्बर 1984 को वृश्चिक राशि में पड़ा (भारत में नहीं दिखाई दिया) इसकी समय अवधि (1 घण्टा 43 मिनट से 7 घण्टे 03 मिनट तक) 5 घण्टे 20 मिनट रहा।

30 मई 1984 वाला सूर्य ग्रहण वृष राशि में होने के कारण वृष/वश्चिक की धुरी (axis) में रहा। स्वतंत्र भारत की कुंडली का भी वृष लग्न है, जिसको ग्रहण ने प्रभावित किया। श्रीमती इन्दिरा गांधी की कुंडली को भी प्रभावित किया।

चंद्रमा 30 मई, 1984 को 22 घण्टे 18 मिनट पर उदय हुआ। (ग्रहण 25 घण्टे 05 मिनट तक या ग्रहण के समय में ही) जैसा ऊपर (*xii*) में बताया गया, ऐसी स्थिति अशुभ होती है, *राजा व प्रजा तथा फसल के लिए विनाशक होती है।* ग्रहण को मंगल (व) जो शनि के साथ बैठा था दृष्टि दे रहा था जो पुनः उपरोक्त फल दर्शाता है (देखें बिन्दु *xiii*)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपरोक्त ग्रहण से पांच मास के भीतर ही तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के अंगरक्षक (सेना का विद्रोह) द्वारा 31 अक्टूबर 1984 को उनकी निर्मम हत्या की गई, जिसके फलस्वरूप पूरे देश में केशधारी (सिक्ख) हिन्दुओं की निर्मम हत्या की गई (खून का दरिया बहा), एक दुखद घटना घटी।

गोचर 31 अक्टूबर, 1984

शनि	6/24°–5′	सू.	6/14°–18′	बु.	6/26°–57′
रा.	1/3°–59′	चं.	9/10°–19′	गु.	8/15°–04′
मं.	8/24°–49′	शु.	7/19°–41′		

जन्मपत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी (दिनांक 19 नवम्बर, 1917 समय 23 घण्टे, 15 मिनट, इलाहाबाद)

लग्न	3/28°–22′	सू.	7/4°–8′	चं.	9/5°–37′
मं.	4/16°–21′	बुध	7/13°–13′	बृ.	1/15°–0′
शु.	8/21°–0′	शनि	3/21°–49′	रा.	8/9°–06′

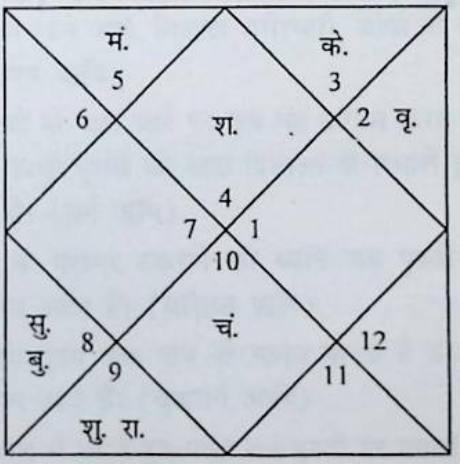

ग्रहण के दिन की कुंडली का लग्न धनु था जो भारत की कुंडली के लग्न से अष्टम, चंद्रमा से षष्ठ तथा इंदिरा गांधी की जन्म कुंडली के लग्न से षष्ठ व चंद्रमा से द्वादश भाव था।

वृष तथा वृश्चिक दोनों राशियाँ इस ग्रहण से प्रभावित हुई, साथ ही इनसे 1, 4, 7, 8, 12 तथा 10वीं राशियाँ भी प्रभावित होती हैं। भारत की स्वतंत्रता दिवस की कुंडली में लग्न वृष से प्रथम, सप्तम (वृश्चिक) तथा अष्टम (ग्रहण की कुंडली का लग्न हुआ, झण्डा झुकना) स्वाभाविक था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीमती इन्दिरा गांधी की जन्म कुंडली की राशि से विचार करें तो (ग्रहण की कुंडली के लग्न धनु से इंदिरा जी के लग्न का 6/8 का योग बना। वृष (ग्रहण की राशि) से दशम भाव कुंभ, श्रीमती इन्दिरा गांधी की कुंडली का अष्टम भाव तथा उनका दशम भाव (मेष) द्वादश भाव हुआ जो उनकी आयु व कर्मस्थान दोनों के लिए हानिकारक हुआ। चंद्रमा की राशि से वृष-वृश्चिक राशि 5/11 तथा सूर्य राशि से 1/7 के योग में पड़ी, यहाँ केवल ग्रहण का प्रभाव देश व व्यक्ति पर किस प्रकार पड़ा यह बताया गया है। श्रीमती इन्दिरा गांधी की अपनी कुण्डली की दशा व देश तथा संहिता ज्योतिष के नियम (जिनकी चर्चा आगे की जा रही है) आदि का भी विचार इस घटना के कारणों को जानने के लिए आवश्यक है। जैसे 31 अक्टूबर 1984 को चंद्रमा ने उत्तर आषाढ़ से श्रावण में तथा बुध स्वाति से विशाखा में प्रवेश किया। *दो ग्रहों का परिवर्तन भी ऐसी अशुभ घटनाओं का कारण बना।*

ग्रहण का प्रभाव भूमि पर प्राकृतिक प्रकोपों का भी कारण बनता है, जिसमें सबसे अधिक भूकम्प के होने का है, जिसकी चर्चा भूकम्प के अध्याय में की जाएगी।

❑❑❑

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय

2 भूकम्प

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्निं नमस्तुभ्यं पादस्पर्शक्षमस्वमे॥
एतस्माज्जायते प्राणो, मनः सर्वेन्द्रियाणि च।
खं वायुज्योतिरापश्च पृथ्वी विश्वस्यधारिणी॥

केवल्योपनिष

2.1 भूकम्प की उत्पत्ति

पुरातन मत

(*i*) जल में रहने वाले, विशाल शरीरधारी, जीवों के धक्के के कारण। (कश्यप ऋषि)

(*ii*) दिग्गजों के थक जाने पर जब वह आराम करते हैं उसके कारण। आठ हाथी पृथ्वी को आठ दिशाओं से संभाले हुए हैं, ऐसा माना गया है। (गर्ग ऋषि)

(*iii*) वायु के परस्पर टकराने की ध्वनि जब पृथ्वी पर आती है तो भूकम्प आता है। (वशिष्ठ ऋषि)

(*iv*) अदृश्य पुण्य तथा पाप जो मानव करता है उसके प्रभाव से भी भूकम्प आते हैं। (वृद्धगर्ग आदि)

(*v*) आकाश में उड़ते हुए पर्वत जब पृथ्वी पर उतरते हैं तथा पुनः जब उड़ान भरते हैं, उससे जो पृथ्वी पर कम्पन होता है वही भूकम्प का कारण होता है। एक बार इस प्रकार की क्रिया से दुखी होकर पृथ्वी देवताओं की सभा में गई और कांपते हुए स्वर में ब्रह्माजी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से प्रार्थना की कि आपने मेरा नाम अचल रखा है, परन्तु यह पर्वत मुझे स्थिर व शांत नहीं रहने देते। मुझसे यह दु:ख अब सहन नहीं होता। उसकी दर्द भरी वाणी से प्रार्थना सुनकर ब्रह्माजी ने इन्द्र को आज्ञा दी की पर्वतों के पंख काट दिए जाएं। इन्द्र ने वैसा ही किया साथ ही पृथ्वी को कहा कि चिन्ता न करो। भूकम्प के शुभाशुभ प्रभाव के विषय में, दिन के चार प्रहरों, जिनके स्वामी अग्नि, वायु इन्द्र तथा वरुण होंगे उनसे पता चलेगा। दिन के दोनों भागों के तथा रात्रि के दो प्रहरों के स्वामी होंगे, दिन के नक्षत्र से मण्डल का नाम पता चलेगा तथा इनके योग से भूकम्प के प्रभाव की भविष्यवाणी की जा सकेगी।

2.2.1 आधुनिक मत

(*i*) ज्वालामुखी के कारण (अधिकतर ऐसे भूकम्प जापान तथा न्यूजीलैंड में आते हैं) परन्तु इनका विशेष प्रभाव नहीं होता।

(*ii*) पहाड़ों, भूमि तथा प्लेटों के खिसकने के कारण पहाड़ों में शनै-शनै तनाव बढ़ता जाता है, जब वह पृथ्वी के लिए असह्य हो जाता है तो वह हिल जाती है वही भूकम्प का कारण बन जाता है।

(*iii*) पृथ्वी की ऊपरी सतह के सिकुड़ने से भी भूकम्प के झटके आते हैं।

2.2.2 नई वैज्ञानिक मान्यता

विवर्तनिकी पट्टिकाऐं ही इसका कारण है। पृथ्वी के अन्दर 50 से लेकर 100 कि. मीटर मोटी प्लेटें (पट्टिकाऐं) होती हैं। जब वह खिसकती हैं तो भूकम्प का आभास होता है।

वैगनर का मत–सभी महाद्वीप करोड़ों वर्ष पूर्व एक दूसरे से जुड़े थे। दक्षिणी ध्रुव किसी समय में केपटाउन के पास होता था। दक्षिणी भारत अफ्रीका, आस्ट्रेलिया से जुड़ा था। भूगर्भीय कारणों से महाद्वीप एक दूसरे से दूर होने लगे। *जब दो प्लेटें आपस में टकराती हैं तो भूकम्प आ जाता है।*

यह प्लेटें तीन प्रकार की होती हैं–

(क) कुछ प्लेटें अपने स्तर पर (उसी अक्षांश) टकराती हैं, खिसकती हैं और मध्य में बहुत स्थान छोड़कर दूर हट जाती हैं। उदाहरण अमेरिका का सेन एण्ड्रियास।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) दो प्लेटें परस्पर टकराकर एक दूसरे के अन्दर घुस जाती है जैसे कि हिमालय क्षेत्र में हिन्द प्लेट का यूरेशिया प्लेट में प्रवेश करना और एक बड़ी दरार डालना। इस क्षेत्र में अति विनाशक भूकम्प आते हैं।

हिन्द प्लेट पांच सेंमीटर प्रतिवर्ष की गति से उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ रही है। हिन्दु कुश प्रांत के सिवाय इस क्षेत्र में कोई भूकम्प नहीं आता क्योंकि निचली सतह बहुत ही पक्की है। *ऐसा मानना है कि प्लेटों के खिसकने के कारण 30 लाख वर्ष बाद यू.पी. तथा बिहार का कुछ भाग हिमालय में चला जायेगा।*

(ग) दो प्लेट एक दूसरे से टकराकर अलग हो जाती हैं वह केवल कुछ भागों में होता है। बड़ी-बड़ी प्लेटें हैं अमेरिका, प्रशांत, हिन्द, यूरेशिया, अफ्रीका, अंर्टाटिका अदि।

2.3 भूकम्प के प्रकार एवं फल

चार मण्डल प्रत्येक सात-सात नक्षत्रों से बनते हैं।

बेला/दिन का भाग	दिन		रात्रि	
चार प्रहर	I	II	I	II
मण्डल के नाम	वायव्य	आग्नेय	इन्द्र	वरुण

I. वायव्य मण्डल

प्रभावित

क्षेत्रफल 200 योजन (1000 कि. मीटर)

नक्षत्र उ. फा. (12), हस्त (13), चित्रा (14) स्वाति (15) पु. वसु (7), मृगशिरा (5) तथा अश्विनी (1)

लक्षण यदि उपरोक्त सात नक्षत्रों में भूकम्प आता होगा तो सात दिन पूर्व से शकुन होने लगेंगे। आकाश में चारों दिशाओं में धुंऐ जैसा दिखाई देगा। पृथ्वी से धूल उड़ेगी, तेज हवाऐं पेड़ों को उखाड़ेंगी व सूर्य का प्रकाश धूमिल हो जाएगा।

फल फसल, औषधि, जड़ी-बूटी तथा जल का नाश।

रोग मानसिक विपथन (मति भ्रंश), बुखार, पागलपन, शोध, कास, श्वास, उन्माद आदि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जनता पर प्रभाव	व्यापारी वर्ग को हानि, सिपाही, वेश्या, डॉक्टर, स्त्री, कवि, गायकादि व कलाकारों को कष्टप्रद।
प्रभावित क्षेत्र	सौराष्ट्र, कुरु, मगध, दशार्ण तथा मत्स्य प्रदेश के लोग।
सामान्य	तेज हवा के कारण दो मास तक विनाश लीला।

II. आग्नेय मण्डल

प्रभावित क्षेत्रफल	110 योजन (550 कि. मीटर)
नक्षत्र	पुष्य (8), कृत्तिका (3), विशाखा (16), भरणी (2), मघा (10), पू. भाद्रा (26) तथा पू. फाल्गुनी (11)
लक्षण	यदि उपरोक्त नक्षत्रों में ग्रहण पड़ने की संभावना हो तो, आकाश से टूटता तारा, दिगदाह, उलकापात, बादल व पानी के तालाबादि का नाश, सात दिन पहले होने लगेगा।
फल	दुर्घटनाऐं, तेज वायु, अग्निकांड, दावानल आदि की घटनाऐं होती हैं।
रोग	बुखार, पाण्डुरोग, विषर्पिका, चर्म रोगादि
जनता पर प्रभाव	क्रोधग्रस्त, तेजस्वी व्यक्तियों को कष्ट,
प्रभावित क्षेत्र	अंग, अश्मक, कलिंग, बंग, द्रविड़, शबर बल्हीक और तगण।
सामान्य	छोटी-छोटी घटनाऐं तीन पक्षों तक विनाशकारी रहेंगी।

III. इन्द्रमण्डल

प्रभावित क्षेत्रफल	160 योजन (800 कि. मीटर)
नक्षत्र	रोहिणी (4), अनुराधा (17), ज्येष्ठा (18), तथा उ. आषाढ़ (21), अभिजित (22), श्रावण (23) घनिष्ठा (24)।
लक्षण	यदि उपरोक्त किसी नक्षत्र में भूकम्प आने की संभावना हो तो पर्वताकार आकृतियाँ आकाश में घूमती दिखाई देना और भयंकर आवाज तथा बिजली चमकने व भैंसे के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	सींग वाली व काली मक्खियों के झुण्ड वाली आकृति के बादल, सर्पाकार बादल वर्षा करते हुए होना।
रोग	संग्रहणी, खूनी आंव, गले का रोग, मुखरोग, कफादि।
जनता पर प्रभाव	घर के मुखिया, प्रसिद्ध व्यक्ति तथा राजा को भय, जनता को कष्ट
प्रभावित क्षेत्र	काशी, गंधार, किरात, कीर, अभिसार, हल, भद्र, अब्रुद, सौराष्ट्र, मालवादि।
सामान्य	वर्षा उपयुक्त एवं लाभकारी होगी।

IV. वरुणमण्डल

प्रभावित क्षेत्रफल	180 योजन (900 कि.मीटर)
नक्षत्र	आर्द्रा (6), आश्लेषा (9), मूला (19), शतभिषा (25), पू. आषाढ़ (20) तथा उ. भाद्रा (27), रेवती (28)।
लक्षण	यदि उपरोक्त नक्षत्र में ग्रहण पड़ना हो तो सात दिन पहले से ही तेज वर्षा होने लगती है।
जनता पर प्रभाव	समुद्र के पास रहने वालों, नदी के पास रहने वालों के लिए अंधिक वर्षा होने से विनाशकारी स्थिति रहेगी।
क्षेत्र	चेदी, कूकुर, किरात, विदेह, गोनर्द आदि में कष्ट रहेगा।
सामान्य	उसी दिन छोटी-छोटी दुर्घटनाऐं होंगी। अधिक वर्षा होने के कारण विनाशकारी स्थिति हो सकती है।

2.4 अन्य प्रकार की विनाशक शक्तियाँ

उत्पात, प्राकृतिक प्रकोप, उलका, तारा टूट कर गिरना, आग के समान वस्तु का पृथ्वी की ओर आना आदि निम्न लक्षणों के आधार पर पहले से ही बताया जा सकता है–

वातावरण में धूल, भूकम्प, दिग्दाह, भयानक वायु, ग्रहण का दुष नक्षत्रों में होना, बिना बादल के वर्षा, आग लगना, जंगली पशुओं का आबादी में आना, इन्द्रधनुष दिखाई देना, नदी के बहाव की दिशा में परिवर्तन, आकाश में ढोल बजने की आवाज, अप्राकृतिक व असामान्य घटनाओं का होना आदि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2.5 भूकम्प के ज्योतिषीय योग

पूर्व चर्चित कारणों से वैज्ञानिक तथा भूकम्प विज्ञान के विद्वान सहमत हों या न हों परन्तु ज्योतिषीय योग अकाट्य है। यहां हम उन योगों की चर्चा करेंगे जो वराहमिहिर द्वारा प्रतिपादित हैं। हम उनके प्रयोग में मण्डलों व प्रहरों का भी उपयोग करेंगे।

(*i*) यदि वायव्य मण्डल (दिन का प्रथम प्रहर) में अपने नक्षत्र में ग्रहण पड़ता है तो उसका पूर्ण प्रभाव होगा।

(*ii*) यदि नक्षत्र मण्डल तथा बेलाखण्ड अलग-अलग हों जैसे इन्द्र मण्डल तथा वायव्य बेला तो भूकम्प प्रभावहीन होगा। वायव्य-बेला दिन की है तथा इन्द्रमण्डल रात्रि का अथवा वायव्य मण्डल तथा इन्द्र बेला हो अथवा वरुण बेला हो तब भी ऐसा ही होगा।

(*iii*) वायव्य मण्डल तथा आग्नेय बेला व आग्नेय मण्डल तथा वायव्य बेला हो, राजा की मृत्यु व प्रसिद्ध व्यक्ति का विनाश होगा। सही फल भूकम्प की शक्ति तथा ग्रहों की उस समय की स्थिति पर आधारित होगा। राजा को भय, वर्षा की कमी, अकाल, भूख, दंगे-फिसाद से मृत्यु।

(*iv*) इन्द्र मण्डल तथा वरुण बेला व वरुण मण्डल तथा इन्द्र बेला हो, भूकम्प शुभ फल दायक होगा, सभी ओर प्रसन्नता की लहर होगी तथा राजाओं में परस्पर मित्रता होगी।

2.6 विभिन्न मण्डल तथा बेला के योगों में हुए भूकम्प से प्रभावित क्षेत्र

(*i*) **वायव्य तथा आग्नेय मण्डल व बेला**—कुरु, शल्व, मत्स्य, निशाध, पुन्द, आन्ध्र, कलिंग, विन्ध्या तथा आसपास के क्षेत्रों में अग्नि काण्ड, रोग, कीड़े-मकोड़े आदि से जनता पीड़ित व हानि का सामना करेगी।

(*ii*) **इन्द्र तथा वायव्य मण्डल व बेला**—प्राच्यदेश (पूर्व) शक, चीन, पल्लव, योधो, कपार्डी, यक्षवत देश (ऊँची पहाड़ी वाले क्षेत्र) आदिवासी, गोमन, शारदण्ड, मगध, बन्धकी आदि क्षेत्रों में विनाशक स्थिति होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iii*) **वरुण तथा इन्द्र मण्डल व बेला**–काशी, अभिसार, कच्छ द्वीप के लोग तथा आर्यवर्त देश के राजा, अध्यक्षादि के विनाश का भय दर्शाता है।

2.7 भूकम्प की पुनरावृत्ति

एक बार भूकम्प आने के बाद भी, तीसरे, चौथे, सातवें, तीसवें या 15वें या 45 वें दिन उसकी पुनरावृत्ति हो सकती है और वह प्रसिद्ध व्यक्ति व राजा के विनाश का भय दर्शाती है।

2.8 भूकम्प का समय

ऋषियों के मतानुसार आने का संभावित समय निश्चित है–

(क) ग्रहण के समय या उसके आसपास के समय में आ सकता है।

(ख) सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के आस-पास।

(ग) अर्धदिवस व अर्धरात्रि के आस-पास।

2.9 भूकम्प का दिन

ऋषियों के अनुसार दिन क़ी भविष्यवाणी भी की जा सकती है। क्योंकि भूकम्प **पूर्णिमा व अमावस्या** के आसपास आता है।

2.10 भूकम्प व ग्रहों के योग

(*i*) सभी या अधिकतर ग्रहों की एक ही राशि में युति अथवा अधिकतर ग्रह सूर्य के साथ व उसके निकट हों।

(*ii*) ग्रहण की भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि वह उस राशि को बताता है जहाँ भूकम्प आ सकता है। राशि उस क्षेत्र के विषय में ज्ञान देती है।

(*iii*) शनि, मंगल तथा राहु या तो केन्द्र, 2/12 अथवा 6/8 आदि स्थिति में होंगे।

(*iv*) वृष तथा वृश्चिक राशियों का भी विशेष संबंध देखा गया है।

(*v*) सबसे ज्यादा द्विस्वभाव राशियाँ, उसके बाद चर राशियाँ फिर स्थिर राशियों का संबंध होता है।

(*vi*) बृहस्पति, शनि, हर्षल, नेपच्यून यदि स्थिर राशियों में हो (विशेषतया वृष व वृश्चिक में), तो भूकम्प की संभावनाएं और अधिक होती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*vii*) ग्रहण की राशि से चतुर्थ यदि स्थिर राशि हों और उसमें कोई ग्रह अवस्थित हो तब भी भूकम्प की संभावनाऐं होती हैं।

(*viii*) भूकम्प उन राशियों के प्रतिनिधित्व वाले क्षेत्र में आता है जहाँ मन्दगति ग्रह तथा अधिक ग्रहों की युति हो अथवा चतुर्थ भाव (cusp) उभयाग्र की नोक में ऐसा योग हो।

(*ix*) गुरु का वृष/वृश्चिक में होना तथा बुध के साथ युति व समसप्तम होना।

(*x*) राहु मंगल से सप्तम में, बुध मंगल से पंचम में तथा चंद्रमा बुध से केन्द्र में हों, भूकम्प की संभावना होती है।

(*xi*) जिस राशि में ग्रहण पड़ता है, वह **मर्मज्ञ स्थान** (क्रान्तिवृत्त बिन्दु) बन जाता है। जब भी शनि/मंगल में से कोई उस बिन्दु से गुजरे और दूसरा उस पर दृष्टि दे तो भूकम्प अथवा किसी और प्रकार की प्राकृतिक दुर्घटना होने की संभावना होती है।

(*xii*) मन्दगति ग्रह यदि परस्पर एक दूसरे से केन्द्र, त्रिकोण षडाष्टक अथवा युक्त हों, भूकम्प की संभावना होती है।

(*xiii*) **मर्मज्ञ स्थान** (क्रान्तिवृत्त बिन्दु) से 1, 4, 7, 8, 12 तथा 10वें भाव भूकम्प/प्राकृतिक प्रकोप होने के स्थान दर्शाते हैं। यदि वह भाव भी पीड़ित हो तो उन क्षेत्रों में भूकम्प आ सकता है।

नोटः नक्षत्रों के तत्त्व

पृथ्वी	जल	तेज	वायु	आकाश
अश्विनी	आर्द्रा	उ.फा.	अनुराधा	घनिष्ठा
भरणी	पुन, पुष्य	हस्त	ज्येष्ठा, मूल	शतभिषा
कृत्तिका	श्लेषा	चित्रा	पू.षा.	पू.भा.
रोहिणी	मघा	स्वाति	उ.षा.	उ.भा.
मृगशिरा	पू.फा.	विशाखा	श्रावण	रेवती

(*xiv*) यदि उस दिन का नक्षत्र पृथ्वी/वायु तत्व का हो।

(*xv*) चंद्रमा तथा बुध की युति हो, एक दूसरे की राशि या नक्षत्र में हो अथवा एक ही ग्रह के नक्षत्र में हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xvi*) जब अन्य ग्रह की आकर्षण शक्ति के कारण ग्रह अपनी साधारण गति व पथ से हट जाता है तब भी एक प्रकार का कंपन उत्पन्न होता है जो भूकम्प की भांति प्रतीत होता है।

(*xvii*) चतुर्थ भाव की नोक/शीर्ष उभयाग्र पर जब कोई क्रूर ग्रह विचरण करता है और उस दिन अमावस्या हो और उसी समय कोई ग्रह राशि परिवर्तन करता हो।

(*xviii*) जब कोई ग्रह वक्री/मार्गी होता है विशेषतया मन्द गति वाला ग्रह। वैसी ग्रह स्थिति में प्रत्येक परिवर्तन प्रभाव रखता है।

(*xix*) यदि कोई ग्रह, विशेषतया मन्दगति ग्रह, राशि व नक्षत्र परिवर्तन करे अथवा ग्रह स्थिति में हो कोई और परिवर्तन हो, उन सभी का प्रभाव कोई न कोई घटना का संकेत करता है।

2.11 भूकम्प के समय का पड़ने वाला प्रभाव

(*i*) **यदि प्रथम पहर में पड़े :** ब्राह्मणों के लिए हानिकारक तथा विद्वानों के लिए कष्टप्रद।

(*ii*) **यदि द्वितीय प्रहर में हो :** क्षत्रिय सेना व पुलिस का सिपाही आदि के लिए कष्टप्रद।

(*iii*) **तृतीय पहर में हो :** वैश्य (व्यापारी वर्ग) के लिए हानिकारक।

(*iv*) **यदि चतुर्थ प्रहर में हो :** शूद्र, सेवक, कर्मचारी वर्गादि के लिए कष्टप्रद।

(*v*) **संध्या काल (सूर्योदय/सूर्यास्त) का भूकम्प :** राजा के लिए भय।

नोट : भूकम्प का प्रभाव छः माह तक रहता है।

2.12 भूकम्प का होना

श्री पी. मेरियन के अनुसार भूकम्प का होना ग्रहों की चाल (गोचर) से नियंत्रित होता है। अनुभव में आया है कि सबसे अधिक जल में आवृति की संभावना होती है जबकि द्वीपीय तथा प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में सबसे अधिक संभावना ग्रीष्म ऋतु में होती है।

नोट : 26 दिसम्बर 2004 को जो 'सुनामी' आया वह इसका जीता जागता उदाहरण है। जिसका कारण समुद्र की गहराई में हुए विक्षोभ, ज्वालामुखी आदि है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2.13 भावुक (मर्मज्ञ) स्थान

इटली, जापान, पेरु तथा चीन में सबसे अधिक और विनाशक भूकंप होते हैं। स्वीटजरलैण्ड में भूकम्प अधिक तो होते हैं परन्तु शायद ही कभी हानिकारक होते हैं।

2.14 (*i*) कुछ भूतकालीन भूकम्प

(*i*) 11 दिसम्बर 1967 प्राय: 4.22 पर कोयना में। भारत के पश्चिमी तट पर कोयना नगर को भूकम्प ने बरबाद कर दिया जिसने सैंकड़ों लोगों को घर से बेघर कर दिया। विशाल जनधन की हानि हुई। भूवैज्ञानिकों (geologist) का कहना है कि दक्षिणी पठार/अधित्यका (प्लैटो) में भूकम्प नहीं आते यह मिथ्या हो गया।

कुछ जापान के निपुण वैज्ञानिक, जो इस समय नहीं हैं का विचार रहा है कि बड़े-बड़े झटके विवर्तनिक उत्पत्ति (टैकटोनिक) के थे। एक भूवैज्ञानिक का सुझाव था कि कोयना डैम में पानी एकत्रित होने के कारण जो दबाव पड़ा वह तथा पृथ्वी का धसना मिलकर उसके कारण बने और भूकम्प आया।

(*ii*) **जुलाई 1976 चीन में** बेजिंग से 150 कि.मीटर पूर्व में तंगशान शहर बर्बाद हुआ, एक लाख व्यक्तियों की जान गई, कितने ही भवन नष्ट हुए, जिसमें प्रसिद्ध हॉल आफ प्यूपिल भी था, कितने ही डैम (पानी के सरोवर) थे। पुल क्षतिग्रस्त हुए। काफी प्रभावशाली झटके थे। **शनि, कर्क में मंगल सिंह में राहु तुला राशि में थे।**

2.14 (*ii*)

कुण्डली I

तिथि–15-6-1949

स्थान–अरुणाचल प्रदेश

28°-5′ उ. 96°7′ पू.

अक्षांश रेखांश

(3)

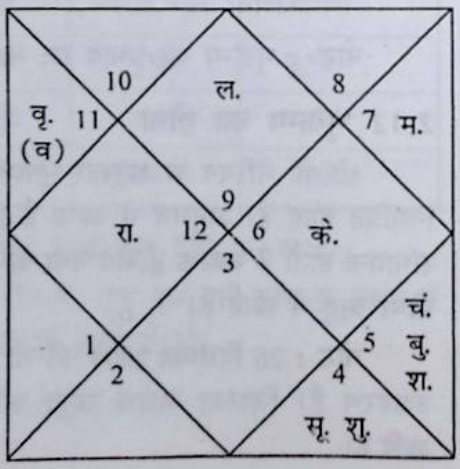

यह स्थान चीन की सीमा के पास है। भूकम्प की माप 8.5 (आर.एस) थी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2.14 (*iii*)

कुण्डली II

तिथि–21-7-1956

स्थान–अंजार (गुजरात)

23°-3′ उ. 70°0′ पू.

अक्षांश रेखांश

(3)

यह स्थान अंजार गुजरात प्रदेश में है। भूकम्प की माप 7.0 (आर. एस)

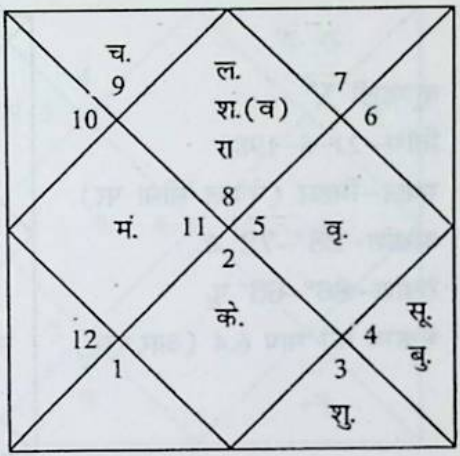

कुण्डली III

तिथि–19-1-1975

अक्षांश–32°–38′ उ.

रेखांश–78°–49′ पू.

यह स्थान किन्नौर हिमाचल प्रदेश में है, भूकम्प की माप 6.2 (आर.एस.)

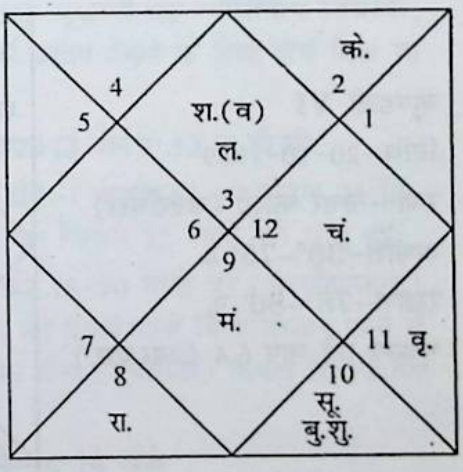

कुण्डली IV

तिथि–6-8-1988

स्थान–मयनामार सीमा

अक्षांश–25°–13′ उ.

रेखांश–95°–15′ पू.

भूकम्प की माप 6.6 (आर.एस.)

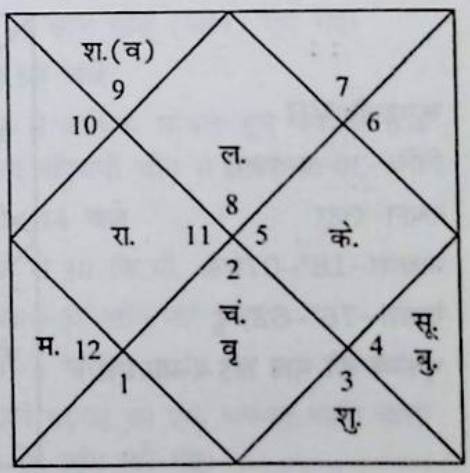

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुण्डली V
तिथि–21-8-1988
स्थान–बिहार (नेपाल सीमा पर)
अक्षांश–26°–72′ उ.
रेखांश–86°–63′ पू.
भूकम्प की माप 6.4 (आर.एस.)

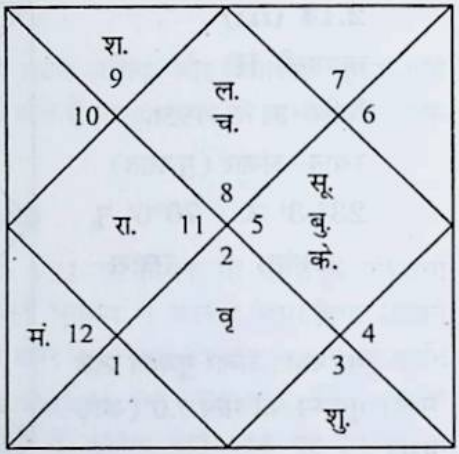

कुण्डली VI
तिथि–20-10-1999
स्थान–उत्तर काशी (उत्तराँचल)
अक्षांश–30°–75′ उ.
रेखांश–78°–86′ पू.
भूकम्प की माप 6.4 (आर.एस.)

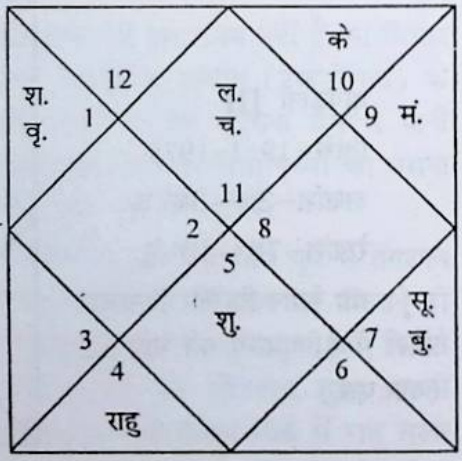

कुण्डली VII
तिथि–30-9-1993
स्थान–लटूर
अक्षांश–18°–07′ उ.
रेखांश–76°–62′ पू.
भूकम्प की माप 6.3 (आर.एस.)

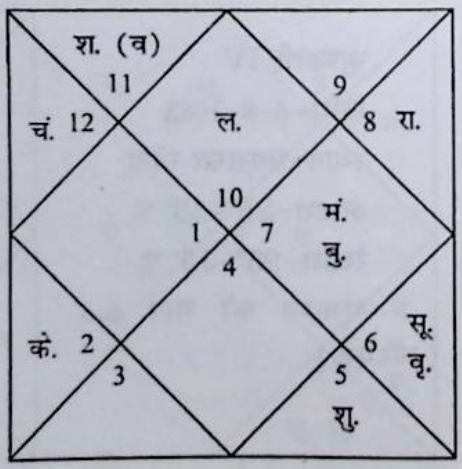

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुण्डली VIII
तिथि–22-5-1997
स्थान–जबलपुर (म. प्र.)
अक्षांश–23°–08′ उ.
रेखांश–80°–06′ पू.
भूकम्प की माप 6.0 (आर.एस.)

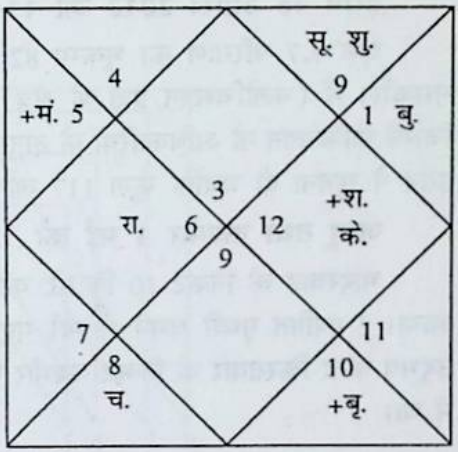

2.14(*b*) 2013 में आये कुछ बड़े भूकम्पों का ज्योतिषीय विवरण, शनि + राहु की तुला राशि में युति का प्रभाव देखने के लिए नीचे दिया जा रहा है–

(*i*) फिलिपाइंस–15 अक्टूबर 2013 समय 12 यू.टी.सी

7.1 परिमाण का भूकम्प बोहोल द्वीप। (आइलैण्ड) जो केवल 25 कि. मीटर की गहराई पर (पृथ्वी से नीचे) था। जिससे 32 लोगों की मृत्यु हुई।

पाकिस्तान 24 सितम्बर 2013 को 16-30 घण्टे पर (मध्याँहोपरान्त) भूकम्प आया। एक भयंकर 7.7 परिमाण का प्रभावशाली बिलोचिस्तान प्रान्त में आया जिसमें 900 लोग मारे गये। जिसका केन्द्र (ऐपीसैंटर) केवल 20 कि.मी. पृथ्वी से नीचे था।

चीन (*i*) **21 जुलाई 2013 को 10:14 बजे**

5.9 परिमाण का भूकम्प जिसमें 95 लोग घांसू (चीन) मारे गए।

(*ii*) **20 अप्रैल 2013 को 20.53 बजे**

160 लोग मारे गए तथा 5,000 से अधिक घायल हुए क्योंकि 6.6 परिमाण का भूकम्प सिचुहान प्रांत दक्षिण पश्चिमी चीन से टकराया।

इरान–19 अप्रैल 2013 को 14.14 बजे

ए 6.3 परिमाण का भूकम्प पृथ्वी से 10 कि.मी. नीचे

बुशहरे प्रांत (इरान) में आया जिसमें 37 लोग मारे गए।

सानता क्रुज (आइलैण्ड) द्वीप–6 फरवरी 2013 को 01-12 बजे

सानता क्रुज द्वीप के 29 कि.मी. की गहराई को एक भयंकर ध्वनि वाला 8 परिमाण का भूकम्प टकराया जिसमें 18 लोग मारे गए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इरान 16 अप्रैल 2013 को 11-04 बजे

एक 7.7 परिमाण का भूकम्प 82 कि.मी. की गहराई पर पन्जगुर तथा मसकील में (बलोचिस्तान प्रांत के क्षेत्र) जो इरान की सीमा है पर टकराया जिसमें पाकिस्तान के अधिकारियों के अनुसार 34 लोग मारे गए। इस दुर्घटना की इरान ने सूचना दी जबकि कुल 117 लोग घायल हुए। (इन दोनों देशों में)

जम्मू तथा कश्मीर 1 मई को 12:27 बजे

भादरवाह के निकट 10 कि.मी. की गहराई पर 6.2 परिमाण का भूकम्प आया। 2 व्यक्ति पृथ्वी धसने से मारे गए तथा 100 लोग घायल हुए। इसका उद्भव केन्द्र किस्तवार के निकट कश्मीर में तथा हिमाचल प्रदेश की सीमा क्षेत्र में था।

2.15 ग्रहों तथा सूर्य की गतिविधि का प्रभाव तथा भूकम्प

देखा गया है कि ग्रहों की सूर्य से स्थिति का ही भूकम्प से सीधा संबंध है। सौर गतिविधियां भी भूकम्प उत्पन्न करती हैं। **डा. एण्डर्सन् कैलिफोरनिया इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नॉलोजी** के एक भूकम्प विज्ञान के विद्वान हैं। भूकम्पनीय घटनाओं को अकेला जिम्मेदार नहीं मानते। 1897 से 1914 तक के 17 वर्ष के भीतर हुए 8 रिएक्टर स्केल से ऊपर के भूकम्पों का अध्ययन किया और पाया कि 30 मीटर की ज्वारयभट्टीय लहरों की संख्या कितनी बढ़ गई, दिन की लम्बाई में भी परिवर्तन आया, भूमि को चक्कर लगाने की गति धीमी पड़ गई। विश्व का साधारण ताप एक डिग्री बढ़ गया तथा पृथ्वी का झूलना उच्चतम शिखर पर हो गया। यह सभी मिलजुल कर भूकम्प का कारण बने। डुलने की आवर्त्ति 40 वर्ष है और यह बात 1950 तथा 1952 में कामचटका (आसाम) में आए भूकम्प के समय स्पष्ट हो गया था।

2.16 सूर्य पर होने वाले धब्बे भी भूकम्प को जन्म देते हैं

पुरातन समय से ऋषियों ने सूर्य की उपासना बताई है। उनका अनुभव रहा कि सूर्य का पृथ्वी पर पूर्ण शुभ प्रभाव होता है।

गर्ग संहिता में भूकम्प का आना केतु अथवा सूर्य पर होने वाले गहरे धब्बे ही हैं।

जब सूर्य पर धब्बे बड़े और गिनती मे अधिक हो, जो चुम्बकीय झंझावात पृथ्वी पर होते हैं और उसके फलस्वरूप अन्तर्भूमिक विक्षोभ, उत्पात, ज्वालामुखी फटना आदि घटित होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2.17 संघट चक्र का प्रयोग

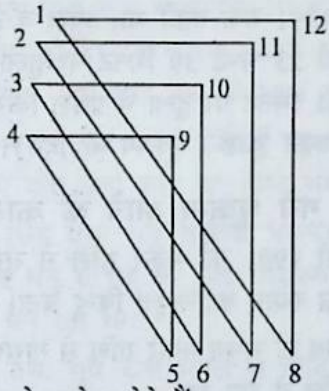

इसके कई प्रकार के प्रयोग होते हैं–

(*i*) रोगी के स्वास्थ्य/आयु/रोग मुक्त होने का ज्ञान,

(*ii*) संहिता में राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का ज्ञान।

(*iii*) विशेषतया भूकम्प के विषय में प्रयोग होता है।

इसमें राशियों की दृष्टियाँ होती हैं, ग्रहों की नहीं। चार त्रिकोण हैं, प्रत्येक त्रिकोण में पड़ने वाली राशियाँ परस्पर दृष्टि देती हैं तथा अन्य त्रिकोण की राशियों को नहीं।

2.17.1

उदाहरण 20 अक्तूबर 1991 रविवार (त्रयोदशी तिथि, पू. भाद्रा नक्षत्र एवं ध्रुव योग) को गढ़वाल (उत्तरांचल) में एक भूकम्प आया जिसका प्रभाव दिल्ली तक रहा। उस समय की ग्रह स्थिति निम्न कुंडली 1 दर्शाती है।

लग्न	0/10°–10′
सू.	6/3°–0′
चं.	10/21°–0′
मं.	6/8°–25′
बु.	6/13°–16′
बृ.	4/13°–12′
शु.	4/16°–34′
श.	9/06°–38′
रा.	8/9°–33′

कुंडली 1

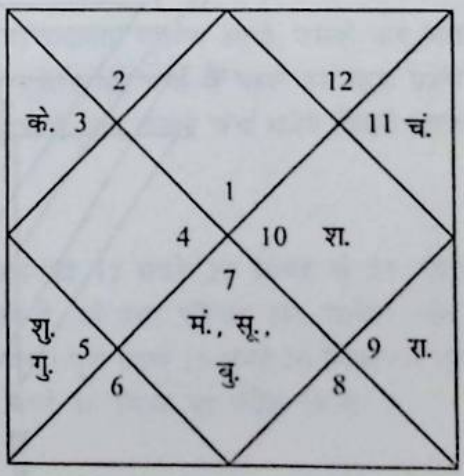

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2.17.2 गोचर की स्थिति

शनि 5 अक्तूबर 1991 तक वक्री था, हर्षल व नेपच्यून धनु राशि में थे। बुध का 11 अक्तूबर को 23 घण्टे 39 मिनट पर तुला में प्रवेश तथा मंगल 7 अक्तूबर को 17 घण्टे 21 मिनट पर तुला में प्रवेश किया तथा 20 अक्तूबर को 24 घण्टे 8 मिनट पर वक्री हुआ (भूकम्प के दिन)।

2.17.3 पीछे बताए गये भूकम्प आने के कारणों पर विचार

(*i*) 16 जनवरी 1991 को मकर राशि में सूर्य ग्रहण पड़ा था। मकर राशि मर्मज्ञ स्थान कान्तिवृत्त बिन्दु बना।

(*ii*) शनि भूकम्प के समय मकर राशि से गोचर कर रहा था तथा मंगल उसको दृष्टि दे रहा था।

(*iii*) चंद्रमा घटना के होने का समय बताता है। चंद्रमा तथा बुध दोनों राहु के नक्षत्र में हैं।

(*iv*) शनि मंगल एक दूसरे से केन्द्र में और परस्पर दृष्टि संबंध बनाये हैं।

(*v*) पूर्णिमा के आसपास (त्रयोदशी तिथि) भूकम्प पड़ा और समय सूर्यास्त के पास।

(*vi*) अन्य मुख्य ग्रह गुरू तथा शनि आपस में षडाष्टक योग बना रहे थे राहु तथा शनि एक दूसरे से द्विद्वार्दश थे।

चंद्रमा तथा बुध दोनों राहु के नक्षत्र में थे। साधारणतया वह नियम जिनकी चर्चा पैरा 2.10 में की गई है यहाँ लगते हैं।

2.18 उपरोक्त भूकम्प की ग्रह स्थिति संघट चक्र में

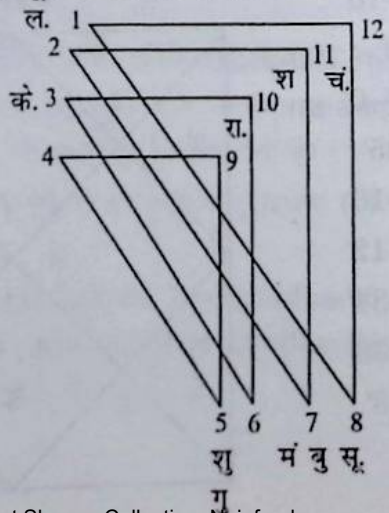

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

I (क) मेष, मीन तथा वृश्चिक परस्पर दृष्टि दे रहा था। परन्तु इन राशियों में कोई ग्रह नहीं था।

(ख) वृष, तुला तथा कुंभ दूसरा त्रिकोण है तीनों राशियाँ एक दूसरे को देख रही है। इस कारण चंद्रमा (कुंभ राशि से) तुला में बैठे मंगल, सूर्य तथा बुध के साथ दृष्टि संबंध बन गया।

(ग) मिथुन मकर तथा कन्या राशियाँ परस्पर दृष्टि संबंध बनाए हैं इसलिए केतु तथा शनि का दृष्टि संबंध है।

(घ) कर्क, सिंह तथा धनु राशियाँ परस्पर दृष्टि संबंध बनाए हैं इसलिए धनु से राहु का सिंह राशिस्थ शुक्र तथा गुरु से दृष्टि संबंध बन रहा था।

II (क) चंद्रमा तथा सूर्य दोनों मंगल से पीड़ित थे।

(ख) मिथुन व मकर में अवस्थित केतु तथा शनि ने मकर राशि जो ग्रहण के कारण मर्मज्ञ स्थान था) को उत्तेजित किया।

(ग) शुक्र व गुरु राहु से पीड़ित हो गए।

नोट:

(*i*) राशि चक्र में इन दृष्टियों के लोप हो जाने से यह पीड़ित नहीं मालूम पड़ते थे परन्तु संघट चक्र में यह स्पष्ट हो गया। क्रूर ग्रहों से सौम्य ग्रहों का वेध, विशेषतया सूर्य तथा चन्द्रमा का, शुक्र तथा बुध का जिनका भूकम्प से सीधा संबंध है।

(*ii*) सर्वतोभद्रचक्र में यदि देखा जाए तो स्थान व समय का स्पष्टीकरण राशि, अक्षर, नक्षत्र, तिथि व ग्रहों के वेध से हो जाता है।

2.19 गुजरात में 26 जनवरी 2001 को आए भूकम्प का विस्तृत ज्योतिषीय विशलेषण

सन् 2001 में भुज (गुजरात) में भयानक भूकम्प आया, उसके बाद प्रांत में दंगे हुए और शांति भंग रही। इस भूकम्प की चर्चा से पहले हम कुछ ग्रहण जो भूकम्प से पहले व आसपास के क्षेत्रों में आए उनकी चर्चा करेंगे जिससे ग्रहण के प्रभावों का स्पष्टीकरण हो सके।

उपरोक्त कुंडली

(*i*) **16 जुलाई 2000 रविवार को 17 घण्टे 27 मिनट से 21 घण्टे 24 मिनट तक पूर्ण चंद्र ग्रहण की है,** जो उत्तर पश्चिम रुस, जापान, चीन, एशिया, भारत आदि स्थानों पर देखा गया। पूर्ण ग्रहण 19 घण्टे 26 मिनट पर था। उसी दिन सूर्य ने कर्क राशि में 7 घण्टे 46 मिनट पर प्रवेश किया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुण्डली सं. 1

लग्न	8/28°–11′	मं.	2/26°–04′	शु.	3/10°–8′
सू.	3/00°–00′	बु.	2/16°–35′	श.	1/04°–24′
चं.	9/00–28	बृ.	1/09°–26′	रा.	3/00°–45′

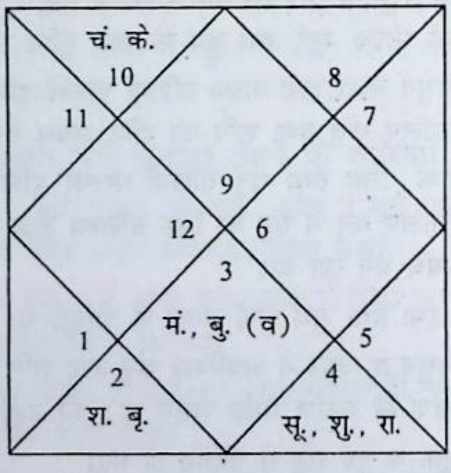

कुण्डली सं.2

(*ii*) खण्ड ग्रास सूर्यग्रहण 31 जुलाई 2000 (सोमवार) को पड़ा जो भारत में नहीं देखा गया। उस समय की कुंडली नं 2

लग्न	4/25°–06′	सू.	3/14°–23′	चं.	3/15°–32′
मं.	3/00°–34′	बु.	2/25°–15′	बृ.	1/12°–00′
शु.	3/28°–04′	श.	1/05°–34′	रा.	3/09°–50′

कुंडली चार्ट 2

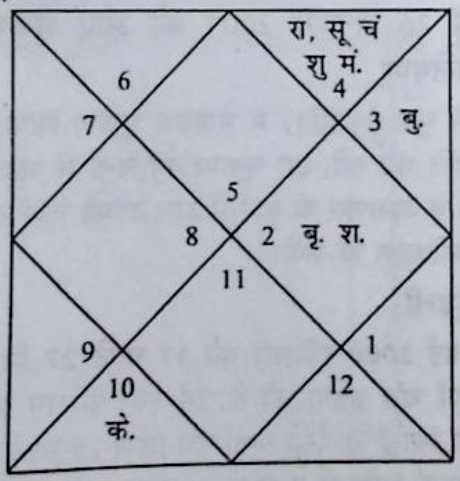

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iii*) **खण्ड ग्रास सूर्यग्रहण 25 दिसम्बर**, 2000 सोमवार को 20 घण्टे 57 मिनट से 23 घण्टे 12 मिनट (कुण्डली के लिए समय-22 घण्टे) स्थान-भुज। सूर्योदय 7 घण्टे 30 मिनट 44 सैकेण्ड तथा सूर्यास्त का समय 18 घण्टे 10 मिनट 46 सैकण्ड पर, इष्ट 36 घटी 13 पल।

कुंडली 3

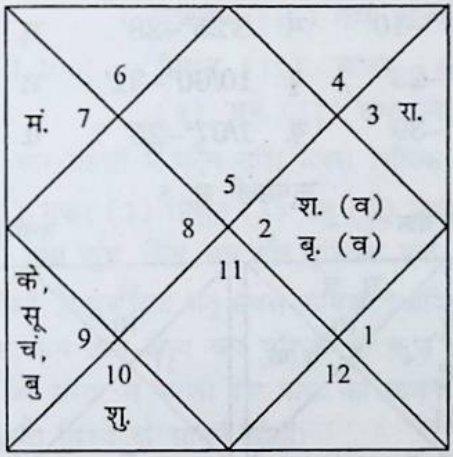

लग्न	4/01°–28′	सू.	8/10°–20′	चं.	8/09°–56′
मं.	6/07°–22′	बु.	8/10°–54′	बृ.	1/08°–54′
शु.	9/26°–04′	श.	1/01°–02′	रा.	2/22°–09′

(*iv*) चंद्र ग्रहण 9 जनवरी, 2001 (मंगलवार) को 24 घण्टे 11 मिनट से 27 घण्टे 29 मिनट तक, पूर्ण ग्रहण 25 घण्टे 57 मिनट पर था। उस समय की कुंडली के ग्रह स्पष्ट:

ग्रह स्पष्ट

लग्न	5/00°–35′
सू.	8/25°–40′
चं.	2/24°–02′
मं.	6/16°–09′
बु.	9/04°–47′
बृ.	1/07°–45′
शु.	101/12°–35′
श.	1/00°–24′
रा.	2/21°–22′

कुंडली चार्ट 4

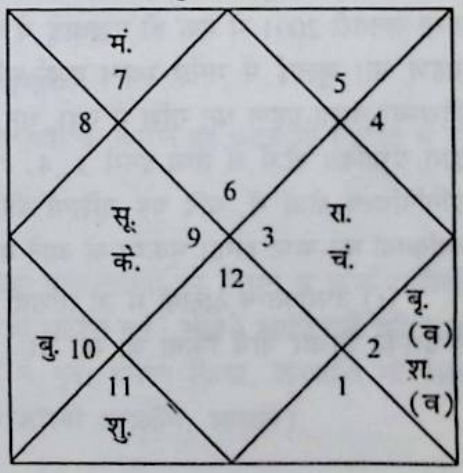

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊपर दी गई ग्रहणों की कुण्डलियाँ व उनका विवरण दिया गया है, अब भूकम्प की चर्चा करते हैं।

कुण्डली चार्ट 5

भुज में 26 जनवरी, 2001 को प्रातः 9 बजे आए भूकम्प की कुंडली के ग्रह स्पष्ट:

लग्न	10/07°–10′	मं.	6/25°–28′	शु.	10/29°–11′
सू.	9/12°–23′	बु.	10/00°–31′	श.	1/00°–12′
चं	9/29°–39′	बृ.	1/07°–25′	रा.	2/20°–30′

कुण्डली सं. 5

राशि चक्र

नवाँश

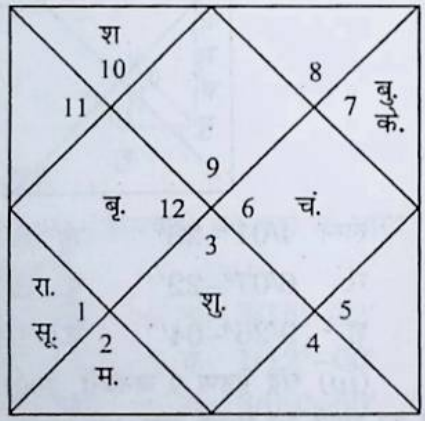

2.20 (क) उपरोक्त कुंडलियों का विश्लेषण

दो ग्रहण जुलाई में, एक ही पखवाड़े में तथा दो ग्रहण दिसम्बर, 2000 तथा जनवरी 2001 में एक ही पखवाड़े में पड़े। जिनमें एक सूर्य तथा दूसरा चंद्र ग्रहण था। जुलाई में मर्मज्ञ स्थान कर्क राशि हुआ (जो भारत की राशि है), दिसम्बर वाला ग्रहण धनु राशि में पड़ा, धनु राशि मर्मज्ञ स्थान बनी। इन राशियों द्वारा प्रभावित क्षेत्रों में तथा इनसे 1, 4, 7, 8, 12 तथा 10 वीं राशियों द्वारा प्रतिनिधित्व क्षेत्रों में, यदि यह राशियाँ पीड़ित हों तो, इन क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों को कष्ट होगा। भूकम्प के आने की संभावनाएं भी इन्हीं क्षेत्रों में होंगी।

(*i*) उपरोक्त कुंडलियों में जो राशियाँ पीड़ित हैं उनमें कौन कितनी पीड़ित है इसका विचार नीचे किया जा रहा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

16 जुलाई, 2000	मकर (1), मेष (4), कर्क (7), सिंह (8), तुला (10) तथा धनु (12)
31 जुलाई 2000	कर्क (1), मिथुन (12), तुला (4), मकर (7), कुंभ (8) तथा मेष (10)
25 दिसम्बर 2000	धनु (1), मीन (4), मिथुन (7), कर्क (8), वृश्चिक (12) तथा कन्या (10)
9 जनवरी 2001	मिथुन (11), कन्या (4), धनु (7), मकर (8), वृष (12) तथा मीन (10)

उपरोक्त चार ग्रहणों में कौन राशि सबसे अधिक बार आई:

कर्क (2) मकर (3) मिथुन (3) धनु (3) कन्या (2) मेष (2) मीन (2) तुला (2) तथा कुंभ, सिंह, वृष और वृश्चिक एक-एक बार प्रभावित हुई।

कर्क, मकर, मिथुन तथा धनु सबसे अधिक प्रभावित हुई। कन्या, मेष तुला तथा मीन उनसे कम तथा अन्य चार राशियाँ भी कुछ प्रभावित हुई इससे यह स्पष्ट होता है कि संसार में काफ़ी देश कष्ट का सामना करेंगे किसी न किसी प्रकार की समस्या विश्व के सामने रहेगी।

(*ii*) सबसे अधिक संवेदनशील क्षेत्र कर्क राशि (भारत, न्यूयार्क, अफगानिस्तान, काश्मीर आदि) मकर/मिथुन तथा धनु (देखे पैरा 6.7 III, IX तथा X) से प्रतिनिधित्व क्षेत्र में प्राकृतिक प्रकोप, राजनैतिक उथल-पुथल आदि घटनाऐं हो सकती हैं। इसके साथ ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन भी घटनाओं के होने व समय निर्धारण में भागीदार होता है। धनु राशि स्वतंत्रता दिवस की कुण्डली का अष्टम भाव बहुत पीड़ित है इसलिए मृत्यु दर भी बड़ा होने की संभावना है। भारत की मकर राशि व कन्या (आधुनिक विद्वानों द्वारा मान्य) भी पीड़ित हैं।

2.20 (ख) ग्रहण एवं दुर्घटनाऐं

उपरोक्त चार ग्रहणों के दुष्प्रभावों के कारण हुई घटनाओं (भारत व अन्य राष्ट्रों में) का विवरण:

(*i*) 16 जुलाई 2000

आसाम (आद्रा, पु. वसु तथा पुष्य नक्षत्रों जो मिथुन व कर्क राशियों में पड़ते हैं के बुरी तरह पीड़ित होने के कारण बने) में **14 व्यक्तियों की जातीय झगड़ों में हत्या**, आतंकवादियों ने पुनः हमला किया, जनजाति के अलावा व्यक्तियों की हत्या की। (जिला कोरबी अगलौंग, आसाम)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नोट: *बुध 16 जुलाई को 7.47 प्रात: उदय हुआ और उस ही दिन यह घटना हुई।*

(*ii*) **17 जुलाई, 2000**

(क) **वायुयान दुर्घटना:** पटना में अलाईंस एयर का बोइंग 737 मकानों से टकराया, 51 यात्री मारे गए तथा यान में आग लग गई। यह सब यान के उतरने के समय से कुछ क्षण पहले प्रात: 6.47 पर हुआ। (मिथुन, वायु तत्व राशि-आर्द्रा, पु. वसु तथा पुष्प नक्षत्र पीड़ित तथा उस दिन *बुध-मार्गी हुआ प्रात: 6.47* पर)

(ख) 14 लोग शारदा नदी, पीलीभीत, पूर्वी यू.पी. में एक नाव डूबने से मारे गए। पूर्वी उत्तर प्रदेश आर्द्रा, पु. वसु व पुष्य नक्षत्र जलीय नक्षत्र में ही आता है।

(*iii*) 20 जुलाई, 2000

(क) **आसाम में दंगे।** छ: जनजाति के लोग मारे गए, तीन घायल हुए। उस समय 16 तारीख को हुए दंगे ही चल रहे थे।

(ख) इण्डियन एयरलाइंस का यान अगाती (लक्षद्वीप) को जाने वाला था उड़ान भरते ही उसे अपनी यात्रा भंग करनी पड़ी और वह कोची (मेष राशि) अंतर्राष्ट्रीय हवाई अढडे पर उतर गया।

(*iv*) *21 जुलाई 2000 को शुक्र आश्लेषा में तथा चंद्रमा कुंभ में प्रवेश किया।*

(क) जन शक्ति ग्रुप के 7 नकसलवादी, एक डिप्टी कमिश्नर तथा दो स्त्रियाँ करीमनगर जिले में (आन्ध्रप्रदेश-*आश्लेषा नक्षत्र*) मुठभेड़ में मारे गए।

(ख) सुरक्षा दल ने अस्त्र शस्त्रों की एक बहुत बड़ी संख्या तथा 60 किलो विस्फोटक पदार्थ (आर डी एंक्स) तथा 50 ऐंटी टैंक बम बरामद किए।

इसी समय में एक और दुर्घटना होने से बची जब सेना ने 17 किलो आर डी एक्स आदि साम्बा-जम्मू रेलवे लाइन पर बरामद किये। (मकर, अभिजीत तथा धनिष्ठा नक्षत्रों का क्षेत्र) गुरु की मकर पर दृष्टि।

(*v*) **1 अगस्त 2000** (शुक्र सिंह राशि में तथा राहु मिथुन राशि में प्रवेश किया)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(क) अमरनाथ को जाने वाले 25 यात्री गोली से मारे गए और 60 व्यक्ति घायल हुए। पहलगांव में लक्सर-ए-तोयेबा ने इसे अपना काम बताया।

(ख) सतलुज नदी में पुनः बाढ आने से शिमला, कुल्लु, मण्डी तथा किन्नौर जिले में 150 लोगों के मरने का समाचार मिला। *हिमालय श्रृंखला, श्रावण, अभिजित तथा धनिष्ठा नक्षत्रों में आती है।*

(*vi*) 2 अगस्त 2000 (सूर्य आश्लेषा में प्रवेश किया)

काश्मीर में भयानक रात्रि रही जब 100 लोग जिनमें यात्री तथा बिहार के मजदूर थे, मारे गए। *यह काश्मीर के आतंकवाद के इतिहास में सबसे भयानक दुर्घटना रही।*

(*vii*) 8 अगस्त 2000 (चंद्रमा अनुराधा नक्षत्र में बुध तथा मंगल दोनों पुष्य नक्षत्र में थे) लगातार भारी वर्षा के कारण हुए बहुत बड़े भूमि स्खलन में 200 लोगों के भूटान के पक्षकला गांवों में मरने की सूचना थी।

(*viii*) 8 जुलाई 2000 (चंद्रमा ने चित्रा नक्षत्र में प्रवेश किया, बुध (व) आर्द्रा में तथा मंगल पुनर्वास, में।

भूटान में 200 लोग **'पशकला'** में भयानक **भूमिस्खलन** (लेण्ड स्लाइड) तथा जबरदस्त वर्षा के कारण हुआ।

(*ix*) 10 अगस्त 2000 यू.पी. के पिथौरागढ़ एवं नैनीताल जिले में लगातार वर्षा के कारण तथा भूस्खलन में 36 लोग मारे गए।

नोटः चार ग्रह जलीय नाड़ी में, तीन प्रचण्ड नाड़ी में तथा एक ग्रह सौम्य नाड़ी में था। चंद्रमा वृश्चिक से धनु राशि में और शुक्र सिंह राशि में था। पृथ्वी तत्व राशियाँ पीड़ित थी। अत्यधिक वर्षा का योग था।

गृह स्थिति (10 अगस्त 2000 की)

सूर्य	3/24°	बुध	3/11°	शनि	1/06°–08′
चंद्रमा	7/27°	गुरु	1/13°28′	राहु	3/0°–39′
मंगल	3/12°	शुक्र	4/10°		

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतीय सैनिक का सिर काटा गया 8 जनवरी 2013 की ग्रहस्थिति 2.2 (क)

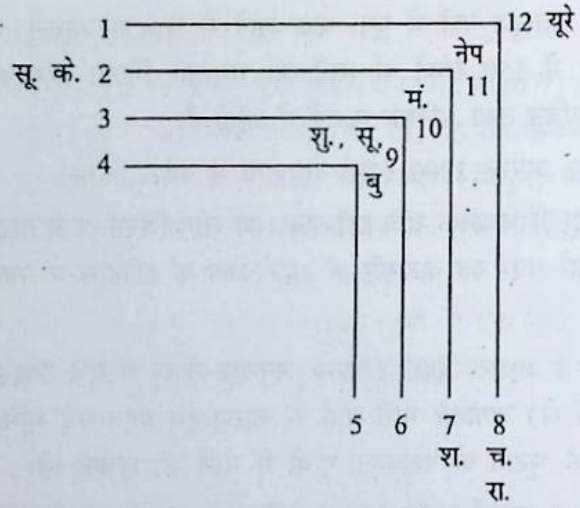

शनि तथा राहु की युति तुला राशि में होने के कारण दुर्घटनाए हुई

सूर्य	8/23-46-07 पू. आषाढ़ (शुक्र)
चंद्रमा	7/00-03-01 विशाखा (गुरु)
मंगल	9/16-05-32 श्रावण-II (चंद्रमा)
बुध (अ)	8/17-27-26 पू. आषाढ (शुक्र)
गुरु (व)	1/13-07-59 रोहिणी (चंद्रमा)
शुक्र	8/04-25-01 मूल (केतू)
शनि	6/15-59-51 स्वाति (राहु)
राहु	7/00-46-45 विशाखा (वृहस्पति)
केतु	7/00-46-45 कृत्तिका (सूर्य)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतीय स्वतंत्रता दिवस की कुण्डली का लग्न लिया गया है।

जिस दिन भारतीय सैनिक का मेधार सैक्टर, जम्मू-काशमीर मे सिर काट दिया गया था।

कर्क/मकर (ऐक्सिस) तथा मेष/तुला (ऐक्सिस) जब भी पीड़ित हुआ है, देश में कोई न कोई दुर्घटना होती है। वह भी पकिस्तान के साथ।

इस समय भी शनि/राहु एक दूसरे से 2/12 (द्विर्द्वादश) शनि/गुरु एक दूसरे से 6/8 (षडाष्टक), शनि/केतु एक दूसरे से 6/8, मंगल तथा शनि एक दूसरे से केंद्र में मेष राशि पर मंगल तथा शनि दोनो की दृष्टि पड़ रही है।

यह एक अनोखी तथा अकेली घटना है जो कभी भूतकाल में नहीं हुई। इसके कारणों को ढूँढने के लिए कोई सहायता व सकेंत प्राप्त करना कठिन है।

तृतीय भाव (सीमा) पीड़ित है, छठा भाव सेना (रक्षा) का भी पीड़ित है, षष्ठेश शुक्र जो भारत का लग्नेश भी है पीड़ित है। शुक्र लग्नेश अष्टम भाव में सूर्य (शत्रु) के साथ व शनि से दृष्ट अशुभ कर्तरी में है। अष्टम भाव मृत्यु का है। शनि (अंग भंग का ग्रह है) उच्च का छठे भाव में बैठकर सूर्य (सिर), शुक्र (लग्नेश व षष्ठेश) पुनः सिर तथा सैनिक छठे घर एवं अष्टम घर के स्वामीयों का पीड़ित होना। शायद यही इस घटना का कारण हो सकता है।

2.22 पाकिस्तान द्वारा हमला

2/3 जुलाई 2013

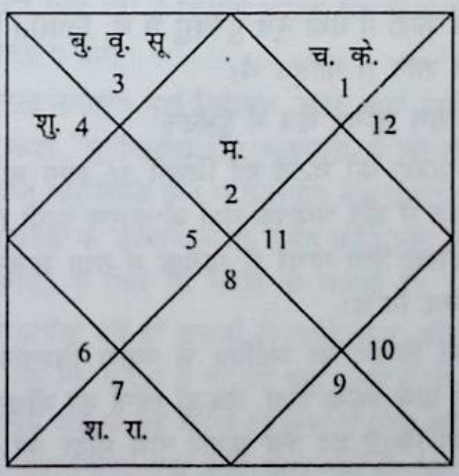

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य	2/17°–16′ आर्द्रा (रा.)
चंद्रमा	0/19°–35′–40 भरणी (शु.)
मंगल	1/28°–40′ मृगशिर (मं.)
बुध (व)/(अ)	2/27–32 पुर्नवसु (वृ.)
गुरु (अ)	2/19°–32′ आर्द्रा (राहु)
शुक्र	3/12–08 पुष्या (शनि)
शनि (व)	6/1047 स्वाति (राहू)
रा.	06/21–21 विशाखा (वृ.)
के.	0/21–21 भरनी (शुक्र)

मेष/तुला दोनों पीड़ित है, कारक सूर्य भी शनि (व) से पीड़ित है। मकर राशि पर शीघ्र ही मंगल के मिथुन में आने पर पीड़ित होगी। (मंगल राशि प्रवेश से एक सप्ताह पूर्व ही प्रभाव देना शुरू कर देता है) मंगल उस दिन पूर्व में उदय होता है। शनि/राहु एक दूसरे से केन्द्र में है। परन्तु मंगल से दोनो का 6/8 षडाष्टक है।

मंगल अपने नक्षत्र में है परन्तु शनि तथा गुरू दोनों राहु के नक्षत्र में है। षष्ठ भाव भी पीड़ित है तथा तृतीय भाव (सीमाओं का) भी पीड़ित हैं। दोनों सूर्य व चंद्रमा प्रकाश देने वाले सितारे भी पीड़ित है। अष्टम भाव व अष्टमेश भी पीड़ित है।

8-8-2000 को बुध (व) आर्द्रा में था तथा मंगल पुर्नवसु में था, परन्तु घटना के दिन मंगल आर्द्रा में तथा बुध पुर्नवसु में थे, विपरीत स्थिति, परन्तु एक ही राशि में थे और शनि से पीड़ित थे।

2.23 केदार नाथ मन्दिर क्षेत्र में दुर्घटना

नोट-10-8-2000 को घटना हुई जिसमें 36 लोग मारे गए। यह घटना पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड में और भयानक वर्षा के कारण पृथ्वी (पहाड़) खिसकने से हुई। लेखक ने इसके लिए गोचर में भाचक्र में तथा सप्तनाड़ी चक्र में ग्रहों की स्थिति का विचार किया।

सरकार मौसम विभाग पर ज्योतिष से ज्यादा विश्वास करती है। यदि ज्योतिष से मार्गदर्शन प्राप्त किया होता, सैकड़ों लोगों का जीवन, उनके मकानदि बचाए जा सकते थे। किसी हद तक केदार नाथ मंदिर की भी कुछ रक्षा हो सकती थी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

14 से 17 जून 2013 को जो घटना केदार नाथ में हुई थी उसका ज्योतिष के आधार पर कारणों सहित व्याख्या

(*i*) **सूर्य की मिथुन राशि प्रवेश** पूर्व-उत्तर *क्षेत्र में कष्टप्रद होगा, उस पखवाड़े में तिथि वृद्धि (चतुर्थी तिथि) साथ ही तिथी क्षय ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (9 जून से 23 जून तक) पक्ष 15 दिन का था क्योंकि दो चतुर्थी और द्वादशी का क्षय हो गया था। सूर्य मिथुन राशि में 28-55 को पंचमी तिथि (शुक्रवार रात्रि), षष्ठी तिथी (शनिवार अर्ध रात्रि उपरान्त), आश्लेषा नक्षत्र, माघ संक्राति पुण्य अगले दिन 15 जून 2013 (शनिवार) का था। सूर्य के गोचर ने पूर्व-उत्तर प्रातों में कष्ट दिखाया, युद्ध की सी स्थिति और बच्चों को यातनाऐं दिखाता है।*

शनिवार की संक्राति भारत में (पहाड़ी क्षेत्र) जीवन हानि, सम्पत्ति विनाश भूकम्प, घटानाओं से आच्छादित ऋतु, बाढ़, प्राकृतिक प्रकोप, खून खराबी आदि, बाज़ार भाव में वृद्धि जनता में अशाँति दर्शाता है।

टाइम्स आफ इन्डिया ने एक गोष्ठी का टाइम्स 'फाउन्डेशन' तथा 'उत्तराखण्ड' सरकार के साथ मिलकर आयोजन किया। सभी विषेशज्ञों को आव्हान किया गया। विषय था हिमालय क्षेत्र में एक स्थायी व टिकाऊ उन्नति व सुधार का प्रतिरूप (मॉडल) बनाना था। सभी वक्ताओं ने उन्नति तथा परिस्थिति विज्ञान के साथ तालमेल बनाए रखने पर जोर दिया। श्री अरूण गुप्ता, निदेशक, वाडिया इन्स्टिट्यूट आफ हिमालयन जीओलॉजी, देहरादून ने कहा कि हिमालय देश की जीवन रेखा है। उत्तराखण्ड एक अनिश्चित स्थिति का सामना कर रहा है। बहुत से महत्त्वपूर्ण हिम नदी बर्फ को धीरे-धीरे सरकने वाली चट्टाने अपने स्थान छोड़ रही है जिसके कारण क्षेत्र में उन्नति व परिस्थिति ज्ञान के झंझटों को समझना होगा।

श्रीमती सुनीता नारायण महा निदेशक, सेंटर आफ साइंस आफ ऐनवारनमेंट (सी एस इ) ने कहा "पुर्ननिर्माण और भूतकाल में की गई भूलों को फिर न दोहराए। उन्नति तथा परिस्थिति ज्ञान में तालमेल बैठाना संभव है परन्तु हमें ध्यान देना है कि उत्तराखण्ड के उत्थान करते समय कोई त्रुटि न हो चाहे परिस्थिति विज्ञान (ऐनवारनमेंट) में फिर भी संभव हो सकती है।

यह स्थिति प्रत्येक वर्ष हो सकती है। पाकिस्तान, चीन, दक्षिण पूर्व एशिया के क्षेत्रों में, यहाँ तक कि यू.एस ने भी वह बाढ़ देखी है जो कभी पहले इतिहास में नहीं हुई। हिमालय क्षेत्र में यह घटना 11,000 से उपर की ऊँचाई पर हुई जिस क्षेत्र में मनुष्य के द्वारा किया गया कोई काम नहीं है। 'ओजोन' (बिजली पैदा करने वाले यंत्र से उत्पन्न ठोस प्राणवायु) की सतह भी रिक्त होती जा रही है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'ग्लोबल वारमिंग' ऋतु परिवर्तन विश्व में हो रहा हैं। यह श्री राकेश शर्मा, अतिरिक्त मुख्य सचिव उत्तराखण्ड का विचार था।

केदार नाथ मन्दिर की पुनः स्थापना पूजा का मुहूर्त जो निकाला गया पर टिप्पणी-

मुहूर्त कुण्डली का वायु तत्व राशि जिसमें शुक्र बैठा है, शनि व राहु तुला में हैं। गुरु मिथुन में, बुध पृथ्वी तत्व (कन्या) राशि में है, चंद्रमा (जलीय ग्रह) मंगल जल राशि में है।

सप्तनाड़ी चक्र में जलीय नाड़ी में सूर्य, मंगल, नीर नाड़ी में गुरु, वायु में शनि, राहु तथा प्रचण्ड में चंद्रमा तथा केतु हैं।

तीन ग्रह जल नाड़ी में हो सकता है तेज हवा के साथ भारी वर्षा हो, बुध चंद्रमा के नक्षत्र में, चंद्रमा विशाख (गुरु के) नक्षत्र में तथा बुध की राशि में है।

जिस समय पूजा होगी चंद्रमा अनुराधा में आ जायेगा (नक्षत्र संख्या 17), इस मुहूर्त में भय है, सभी प्रकार के प्रबंधों को करना होगा चतुर्थ भाव मंगल से पीड़ित है चतुर्थ का स्वामी द्वादश में है वह भी मंगल द्वारा दृष्ट है जो कोई परेशानी दिखाता है।

परन्तु प्रथम तथा दशम भाव के स्वामियों का स्थान परिवर्तन भगवान का आर्शीवाद दिखाता है।

2.23 आतंकवादी द्वारा नैरोबी (कीनिया) अक्षांश 1°-16′ दक्षिण रेखांश 36°-52′ पूर्व पर हमला

सूर्य की कन्या सकांति की कुण्डली

तिथि 17-9-2013 समय 00-00 घण्टे स्थान नैरोबी (केनिया)

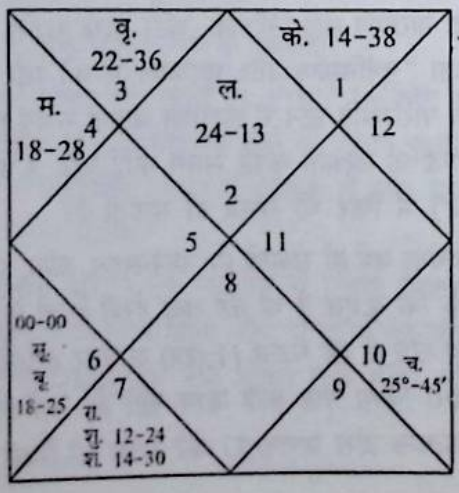

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षष्ठ भाव (तुला राशि) बहुत बुरी तरह पीड़ित है। तृतीय भाव व तृतीयेश चंद्रमा पीड़ित है। लग्नेश शुक्र षष्ठ भाव में पीड़ित, अष्टम भाव पर शनि की दृष्टि। अष्टम से अष्टम (तृतीय भाव व भावेश) मंगल तथा शनि से पीड़ित।

चंद्रमा का पीड़ित होना तथा लग्नेश का मंगल से पीड़ित होना अग्नि व अग्नि वाले शस्त्रों द्वारा आक्रमण प्रतीत होता है।

दक्षिण पृथ्वी तत्व राशियों से प्रतिनिधित्व होता है। पृथ्वी तत्व राशियाँ वृष, कन्या, मकर पीड़ित है। वैसे कन्या तुला इस क्षेत्र को दर्शाती है। सूर्य विधि का लग्नेश षष्ठ में मंगलसे दृष्ट है। शनि व राहु के साथ बैठा है। अंशों में भी तीनों पास-पास हैं।

घटना के दिन का गोचर (21-9-2013)

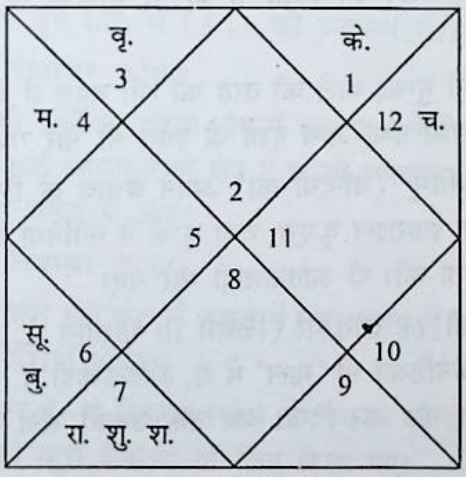

जब भी दो या अधिक ग्रह अपनी स्थिति में परिवर्तन करते हैं। पृथ्वी पर कोई समस्या या प्राकृतिक प्रकोप होने की संभावना उत्पन्न होती है। शनि तथा मंगल एक दूसरे से केन्द्र में या एक दूसरे को दृष्टि दे, या राहु इनसे केन्द्र में हो। चंद्रमा मीन से मेष में, 17-09 बजे प्रवेश किया। शनि व राहु बराबर अशों पर थे और एक ही नक्षत्र में (स्वाति) थे।

इसलामिस्ट आतंक समूह (राहु) शाबाद शनिवार के दिन 21 सितम्बर 2013 के नैरोबी के वेस्ट गेट माल पर आक्रमण करने का काम अपना बताया और कहा कि 'कीनिया' के सैनिकों का सोमालिया में हस्तक्षेप का बदला लिया गया है

'अलकायदा' का कोर (हृदय) सदैव पाकिस्तान, अफगानिस्तान तथा यूएस में केन्द्रित है, 'ओसामा बिन लादेन' का विचित्र ढंग से मारा जाना इसका कारण बना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2.24 मई 2011 को आंतकवादी ग्रुप के विश्वास पर एक गहरा आघात हुआ। परन्तु अयमान-अल-जवाहिरी ने इस संस्था की बाग डोरी अपने हाथ में ली। यह स्पष्ट हो रहा था कि इसका कार्यक्षेत्र पश्चिम की ओर बढ़ रहा है। इस दिशा में दो वर्ष उपरांत यमेन, सोमालिया तथा माली को अलकायदा के शशत्क कार्य क्षेत्र के रूप में मान लिया गया।

उन्होंने हाथगोले फेके तथा ए.के. 47 लेकर अपने शरीर पर हथ गोले बाँध रखे थे। वह अर्बी तथा सोमाली भाषा बोल रहे थे।

1998 में 2000 लोग मारे गए, जब अलकायदा ने नीरोबी में सबसे भयानक आक्रमण यू.एस. राजदूतावास पर किया था।

बन्दूक लिए आदमी ने मुस्लिम लोगों को एक लाइन में खड़ा होने को कहा और वहाँ से चले जाने की आज्ञा दी जो ग़ैर मुस्लिम थे उनको निशाना बनाया गया।

यह आक्रमण भी मुम्बई वाले की तरह का था। बहुत से देशों के निवासी जिसमें भारतीय, ब्रिटिशर्स तथा अन्य देशों के लोग भी मारे गए।

जिहादीयों ने 'प्रतिभू' (बन्दियों का) अपने बचाव के लिए मानव ढाल के रूप में प्रयोग किया इज़राइल यू.एस, तथा यू.के ने कीनिया की इस समस्या को सुलझाने में सहायता की। दो आंतकवादी मारे गए।

लड़ाई चलती रही, 68 लोग मरे (जिसमें 10 भारतीय थे, 30 बंधित लोग जिसमें अमेरिक तथा कैनेडियन भी 'माल' में थे, आंतकवादी ने, केनिया सरकार से बात करने के लिए मना कर दिया। जब तक उनकी सेना उनके देश भर आक्रमण करेगी।

उसने कहा कि यह आक्रमण का पूर्व प्रयोग कई मास तक पुनः 2 किया। इसकी योजना सोमाली की धरती पर बनी। इसका संचालन कर्ता 'अल-शाबाब' के वाहिरी शस्त्रों के चलाने वाले थे।

2.24. 22-9-2013 को पाकिस्तान में एक 'चर्च' पर आक्रमण हुआ जिसमें बम फटने से 78 लोग मारे गए तथा 130 घायल हुए।

पाकिस्तान में अल्प संख्यकों पर सब से दर्दनाक हमला इसाइयों पर हुआ, 19 वीं सदी के चर्च के बाहिर (कालोनिर्यलस) आत्मघाती बम का धमाका किया। देश के उत्तर-पश्चिमी भाग सभी सेंट पेशावर चर्च के प्रभावित हुए।

2.25. बहुत प्रभाव शाली **टाइफून 'युसागी (Usagi)'** 22 सितम्बर 2013 को चीन में एक बर्बादी पूरे सप्ताह रही, तेज हवाओं ने दक्षिण-पूर्वी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किनारे तथा स्कूलों के बन्द होने, हवाई यातायात में रूकावट हुई। दक्षिण-पश्चिमी हॉग-कॉग में 48 मीटर प्रति सेकिण्ड से हवाऐं चली।

सूर्य विधि के अनुसार यह सभी होने सम्भावनाऐं दिखा रहा था।

(*x*) भूकम्प 13 अगस्त 2000

भावनगर में भूकम्प के झटके, छः हलके झटके, प्रातः 5 बजे से 7 बजे के बीच में आये उसके बाद 9.50 बजे, 10.20 बजे, 11.45 बजे मध्याह्न तथा 7 बजे सायं जोरदार झटके आये।

नोट-ज्योतिषीय योग चर्तुदशी का दिन, चंद्रमा शनि से केन्द्र में बुध तथा शुक्र स्व नक्षत्र, बुध चंद्रमा की राशि में व चंद्रमा उत्तर आषाढ नक्षत्र में मंगल, राहु, कर्क में, शनि वृष राशि में (3/11 की अवस्था में)।

(*xi*) 14 सितम्बर 2000

कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, चंद्रमा मीन में तथा शुक्र ने चित्रा नक्षत्र में प्रवेश। पुनः भावनगर व उसके आसपास के क्षेत्र में झटके लगातार (तीन रिकटर स्केल के) पिछले चौबीस घण्टों में आए।

(*xii*) 17 नवम्बर 2000

चंद्रमा सिंह राशि में (केतु के नक्षत्र में) बुध तुला में स्वाति नक्षत्र में था। वृश्चिक व मकर राशियाँ पीड़ित।

भूकम्प के झटके-दो रिकटर स्केल के भूकम्प के झटके 22 घण्टे 56 मिनट पर दिल्ली को कुछ सैकेण्ड के लिए हिला गए।

(*xiii*) 27 दिसम्बर 2000

(क) सूर्य मूल नक्षत्र में, चंद्रमा पू. आषाढ में, बुध मूल नक्षत्र में (चंद्रमा तथा बुध की युति) से पू. आषाढ में प्रवेश कर रहा है। झंझावात के साथ समुद्री **तूफान दक्षिणी तमिलनाडु** (मेष राशि, स्वाति विशाखा तथा अनुराधा नक्षत्र कम पीड़ित होने के कारण तट की ओर बढा परन्तु हल्का होकर अपना रुख बदल गया। अधिकारियों की चेतावनी पर सैंकड़ों मछेरे अपने परिवार सहित वहाँ से चले गए थे।

(ख) **श्रीलंका में तूफान** में 5 व्यक्ति मरे, 5 लाख बेघर हो गए, उत्तरी तथा पूर्वी क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुए। दो ग्रह जल राशि, तीन दहन, दो प्रचण्ड तथा दो सौम्य नाड़ियों में थे।

(*xiv*) 26 जनवरी 2001 काल स्वरूप भूकम्प (7.9 रिकटर स्केल का) गुजरात में आया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध को 25 ता. को कुंभ में 23-26 पर प्रवेश शुक्र का 27 ता. को मीन राशि में 5-54 पर प्रवेश, गुरु की 26 तारीख को 9.25 पर युति. (ठीक भूकम्प के समय) शनि पहले 7 दिसम्बर से ही युति किए था। बृहस्पति 25 ता. को 14 घण्टे 8 मिनट पर मार्गी हुआ तथा शनि उसी ही दिन 5 घण्टे 54 मिनट पर मार्गी हुआ। चंद्रमा शुक्ल पक्ष की द्वितीया का अमावस्या के निकट धनिष्ठा नक्षत्र में 23 घण्टे 13 मिनट तक था, व्यतिपात योग, सूर्य श्रावण नक्षत्र (वायु) में, बुध धनिष्ठा में, शुक्र पू. भाद्रा में, शनि व गुरु दोनों कृतिका (पृथ्वी) में तथा मंगल विशाखा और राहु पुर्नवसु में था।

(*xv*) 29 जनवरी 2001 भूकम्प के हल्के झटके तमिलनाडु, कर्नाटक (माण्डया, मैसूर, मंगलौर, चामराज नगर) में आए जिससे छत की टीन की चद्दरें उड़ गई, दीवारों में दरार आ गई। कांची, तिरुवन्थापुरम भी प्रभावित हुए।

कारण: चंद्रमा मीन राशि में उत्तर भाद्रा में साथ ही बुध व शुक्र की स्थिति में परिवर्तन।

(*xvi*) 8 फरवरी 2001

कच्छ (गुजरात) में पुन: भूकम्प के ताजा झटके भयानक भूकम्प के दो सप्ताह उपरान्त यह नये झटके परन्तु हल्के (5.3 रिकटर स्केल) के आये। रांची में 10 घण्टे 15 मिनट पर शुरू होकर 30 सैकिण्ड रहे और उत्तर पश्चिम में भचाउ से 30 किमी पर इनका प्रभाव पड़ा (23°–6′ उ अक्षांश तथा 70°–1′ पू रेखांश)

(*xvii*) 9 फरवरी 2001

भूकम्प के झटके गुजरात में आते रहे। 13 झटके भुज को केन्द्र बनाकर 4.5 से 3 रिकटर स्केल के बीच में 8 फरवरी 2001 (00-06) अर्ध रात्रि से 9 फरवरी की 3.38 सायं तक।

(*xviii*) 13 फरवरी 2001

चीन तथा इण्डोनेशिया में 260 व्यक्तियों की मृत्यु

एक शक्तिशाली भूकम्प (5 रिकटर स्केल) ने एल सलवाडोर को हिला दिया। दक्षिणी पश्चिमी चीन के सिचौन प्रांत तथा दक्षिणी इण्डोनेशिया के द्वीप सुमात्रा प्रभावित हुए। ग्रीक में भी हल्के झटके लगे।

(*xix*) 15 फरवरी 2001

भुज (गुजरात) के कुछ भागों में 11 भूकम्प के झटके 4.8 रिकटर स्केल के 15 घंटें 35 मिनट पर आए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xx*) महात्मा बुद्ध की प्रतिमा पर बम वर्षा

(क) मार्च 2001 में तालीबानों ने बुद्ध की पत्थर की प्राचीन दो लाट के समान ऊंची प्रतिमाओं को गिराया। 2000 वर्ष पुराने बमियान बुतों को बर्बाद किया जिनमें संसार के सबसे ऊँची (50 मीटर की खड़ी मूर्ति) बुद्ध की मूर्ति को जो काबुल के संग्रहालय में रखी हुई थी तथा और कई अन्य जगह प्रतिमाएं गिराई। गजनी, हैरूत, जलालाबाद, कंधार (अक्षांश 31°-32′ उ. रेखांश 65°-30′ पू.) आदि स्थानों में यह क्रम सारे विश्व के विरोधोपरांत भी चलता रहा।

रॉकेट्स, टैंकस तथा ऑटोमैटिक राइफलस से बमियान, कपयिास, हेरुत, काबुल, जलालाबाद तथा गजनी (मकर राशि से प्रतिनिधित्व) में बौद्ध की प्रतिमाओं पर हमला किया गया।

(ख) **नबी मौहम्मद के जन्म स्थान** के निकट माइन घाटी, मक्का (सऊदी अरेबिया) में तीन दिन पत्थर फेंकने की रस्म में हज में गए यात्रियों में भगदड़ मचने के कारण लोग गिर पड़े और 36 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। (अक्षांश 21°–25′ उ, रेखांश 39°–54′ पू.).

2.21 सारांश: पैरा 2.20 (आ) में बताया गया कि लगातार चार ग्रहणों के कारण भचक्र की कौन-कौन सी राशियाँ बुरी तरह पीड़ित थीं। यहाँ केवल उनके कुछ प्रभाव **विशेषतया भूकम्प तथा धार्मिक दुर्घटनाओं की चर्चा की** है। आगे अध्यायों में संहिता ज्योतिष पर चर्चा करते हुए प्राकृतिक व राजनैतिक उथल-पुथल, लड़ाई आदि, विश्व के अधिकतर देशों में हुई विपत्तियों पर प्रकाश डालेंगे। वर्ष 2000-2001 की सैंकड़ों घटनाऐं ऐसी है जिनके ज्योतिषीय कारणों पर प्रकाश डाला जा सकता है परन्तु पुस्तक की सीमा से विवश होकर संक्षेप में चर्चा कर रहे हैं।

2.22 भूकम्प के ज्योतिषीय योग

(क) 26 जनवरी, 2001 को भुज (गुजरात) में आए भूकम्प की विस्तार से ज्योतिषीय, योगों पर प्रकाश:

(*i*) पीछे पैरा 2.10 को ध्यान दें।

(*ii*) पिछली चर्चा से ग्रहण के प्रभाव से भूकम्प का संबंध स्पष्ट हो चुका है।

(*iii*) शनि-राहु का द्विर्द्वादश 2/12, शनि-मंगल का षडाष्टक (6/8) योग तथा गुरु व शनि की युति व एक साथ केंद्र में होना।

(*iv*) शनि तथा मंगल से वृष तथा वृश्चिक का पीड़ित होना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*v*) गुरु तथा शनि स्थिर राशि में, शुक्र तथा बुध भी स्थिर राशि (कुंभ) में तथा शनि से दृष्ट।

(*vi*) बुध से बृहस्पति केंद्र में।

(*vii*) बुध मंगल से पंचम में।

(*viii*) मर्मज्ञ स्थान (पैरा 2.19 को देखें) मिथुन, कर्क, मकर तथा धनु यह सभी राहु, मिथुन में (25 जनवरी, 2001 तक शनि से दृष्ट) केतु धनु में, मकर में सूर्य मंगल से दृष्ट तथा कर्क राशि पर शनि की दृष्टि द्वारा पीड़ित थे।

(*ix*) बड़े (मन्द गति) ग्रह मंगल तथा शनि षडाष्टक, मंगल तथा बृहस्पति मे षडाष्टक, मंगल तथा राहु नवपंचम, शनि तथा राहु द्विर्द्वादश तथा केतु और शनि भी षडाष्टक में।

(*x*) मर्मज्ञ स्थान से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश तथा दशम राशियाँ पीड़ित।

(*xi*) चंद्रमा तथा बुध दोनों मंगल के नक्षत्र में।

(*xii*) उस दिन का नक्षत्र घनिष्ठा था।

(*xiii*) बृहस्पति तथा शनि 25 तारीख को ही मार्गी हुए। बुध 25 तारीख को रात्रि को कुंभ में प्रवेश किया और शुक्र से युति की।

नोट–भूकम्प के पूर्वचर्चित सभी प्राचल पूरी तरह लग गए हैं।

✓2.22 (ख) 26 दिसम्बर 2004 को सुनामी प्राकृतिक प्रकोप भारत के इतिहास में प्रथम बार

हिन्द महासागर में **'भूकम्प'** रिकटर स्केल 8.9 का (एक विनाशक लहर समुद्र की गहराई में उत्पन्न विस्फोट के कारण) आया जिसने चेन्नई का मरीना समुद्री तट, कार निकोबार (7.5 रिकटर स्केल का), केरल, आंध्र प्रदेश तथा पांडिचेरी, पोर्ट ब्लेयर तामिलनाडु के नागापटिनम जिला, कडडालोर कन्याकुमारी तथा पड़ोसी राष्ट्र श्रीलंका, मालद्वीप, सुमाया, मयनमार, थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया सभी प्रभावित हुए। (पैरा 2.20 (*xii*) क को भी देखें)

26 दिसम्बर का गोचर

ग्रह	नक्षत्र	नाड़ी
सूर्य	मूल	दहन
चंद्रमा	मृगशिरा	दहन
बुध	ज्येष्ठा	पवन
शुक्र	ज्येष्ठा	पवन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल	अनुराधा	प्रचण्ड
गुरु	हस्त	सौम्य
शनि	पु.वसु	नीर
केतु	चित्रा	दहन

कुण्डली नं. 7

सूर्य विधि 15 दिसम्बर 2004 को 18 घंटे 57 मिनट पर दिल्ली की (मद्रास का लग्न 2/17°20′ नवांश मीन)

दिल्ली का नवांश कुंडली

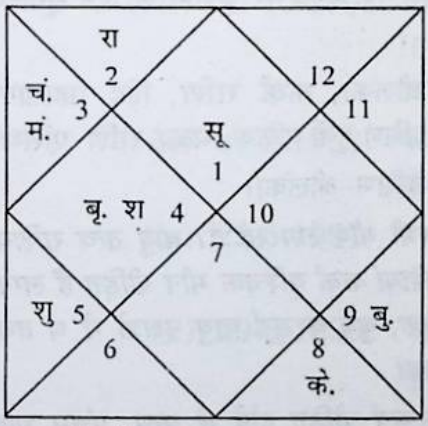

लग्न कुण्डली-7

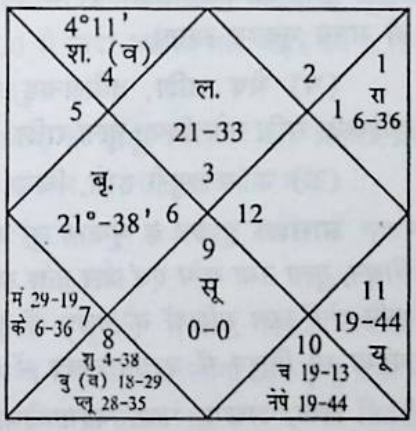

विश्लेषण:

(*i*) शनि तथा मंगल एक दूसरे से केंद्र में

(*ii*) गुरु तथा राहु का षडाष्टक योग

(*iii*) मंगल तथा राहु का सम सप्तक

(*iv*) चंद्रमा शनि व मंगल से पीड़ित, पक्ष बल में कमज़ोर

(*v*) (क) दो ग्रहण 14 अक्टूबर, 2004 गुरुवार 7.30 बजे (अमावस्या)

(ख) 28 अक्तूबर 2004 (पूर्णिमा)

(*vi*) अष्टम भाव भी पीड़ित।

14 अक्तूबर का मर्मज्ञ स्थान कन्या राशि 28 अक्तूबर का मर्मज्ञ स्थान तुला/मेष राशियां गुरुवार 8 घंटे 49 मिनट का भारत में नहीं दिखाई दिया परन्तु पश्चिमी हिंद महासागर में दिखाई दिया।

पीड़ित राशियां: मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मीन तथा मकर राशियाँ कन्या, धनु, मीन, मेष, सिंह तथा मिथुन राशियाँ, तुला, मकर, मेष, वृष, कन्या, कर्क राशियाँ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिक प्रभावित

मेष (3) कन्या (2) मीन (2) मकर (2) तुला (2) कर्क (2) धनु (1) सिंह (1) मिथुन (1) वृष (1) वृश्चिक (1)

भूकम्प के नियम

देखें पैरा 2.10 का (*i*), (*iii*), (*iv*), (*v*) सभी चर राशियाँ पीड़ित है, यूरेनस तथा प्लूटो स्थिर राशियों में राहु मंगल से सप्तम में (*xi*) राहु मेष से भ्रमण कर रहा है शनि तथा मंगल दोनों की दृष्टि पड़ रही हैं। (*xii*) मन्द गति शनि तथा मंगल परस्पर केंद्र में थे।

(ग) आचार्य वराहमिहिर के बताए गये समय पर पूर्णिमा के दिन सूर्योदय के समय भूकम्प आया।

(घ) **मेष राशि**, तमिलनाडू, श्रीलंका, **कर्क राशि**, हिंद महासागर **वृश्चिक राशि** कोलंबिया। **तुला राशि** दक्षिण पूर्वी एशिया, **मकर राशि**–एशिया।

(ड) उ. फाल्गुनी हस्त, चित्रा, दक्षिण–श्रीलंका।

सारांशः *तूफान व भूकम्प के सभी योग लग रहे हैं। वायु तत्व राशियाँ मिथुन, तुला तथा कुंभ एवं जल तत्व राशियां कर्क वृश्चिक मीन पीड़ित हैं लग्न, शनि दोनों जल राशियों के नक्षत्र में शुक्र, बुध व सूर्य वायु नक्षत्रों में थे तथा चंद्रमा भी मिथुन में जलीय नक्षत्र में था।*

लग्न, अष्टम, भाव, चंद्रमा तथा सूर्य पीड़ित होने से मृत्यु, पंचम भाव पीड़ित सप्तम भाव पीड़ित जनता पर कहर होने का इशारा। पृथ्वी तत्व राशियाँ भी पीड़ित हैं। यह सभी सुनामी समुद्री तूफान का संयोग दर्शाते हैं।

2.23 उपरोक्त सभी पैरामीटर्स (प्राचाल) को 30–35 भूकम्पों पर लगा कर देखा गया और शत प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई हैं। ज्योतिषीय योग आदि ठीक प्रकार से अध्ययन किए जाये तो घटना के होने की संभावना का पूर्वाभास अवश्य हो जाता है।

2.24 भूतकाल में भारत में हुए कुछ बड़े भूकम्पों की सूची पाठकों की जानकारी के लिए नीचे दी जा रही है।

(*i*) 4-4-1905 कांगड़ा (हि.प्र.) में हजारों मर गये। (8 रिकटर स्केल)

(*ii*) 15-1-1934 बिहार नेपाल की सीमा पर बड़ा भूकम्प आया काठमांडू, पटना तथा दरभंगा में बड़े स्तर पर हानि। (8.3 रिकटर स्केल)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iii*) 26-6-1941 अण्डमान द्वीप पर ते भूकम्प (8.1 रिकटर स्केल)

(*iv*) 15-8-1950 बड़े पैमाने पर आए भूकम्प में आसाम को झंझोडा (8.5 रिकटर स्केल)

(*v*) 19-1-1975 हिमालय में किन्नौर तथा लाहुल जिलों में 6.2 रिकटर स्केल का भूकम्प।

(*vi*) 21-8-1988 बिहार नेपाल सीमा के समीप 6.5 रिकटर स्केल के भूकम्प में 900 लोग मोर गये।

(*vii*) 20-10-1991 उत्तरकाशी में 6.6 रिकटर स्केल के भूकम्प में 1600 से ऊपर व्यक्ति मारे गए (पैरा 2.18 का उदाहरण देखें)

(*viii*) 30-9-1993 महाराष्ट्र के लटूर जिले में 6.3 रिकटर स्केल के भूकम्प में 10,000 लोग मरे।

(*ix*) 22-5-1997 जबलपुर क्षेत्र में 6 रिकटर स्केल के भूकम्प में 140 लोग मरे।

(*x*) 29-3-1999 चमोली (यू.पी) में 6.8 रिकटर स्केल का भूकम्प जिसमें 100 लोगों की मृत्यु तथा बहुत बड़ा विनाश हुआ। रुद्र प्रयाग तथा टिहरी भी प्रभावित हुए इसका केन्द्र (epicentre) रुद्र प्रयाग में था। हल्के-हल्के झटके पूरे दिन अनुभूत होते रहे। दिल्ली में भी यह झटके आये जिससे बहुत भवनों में दरार पड़ गई।

(*xi*) 27-11-2001 दिल्ली में भूकम्प 5.4 रिकटर स्केल का आया जिसके झटके आसपास के क्षेत्रों में भी अनुभूत किए गए।

2.25 दिल्ली के भूकम्पों का इतिहास

यह भूकम्प से प्रभावित क्षेत्रों में चतुर्थ स्थान पर आती है अभी तक 6.5 रिकटर स्केल के झटके सन 1720 से मापे गए। दिल्ली हरिद्वार की पहाड़ियाँ तथा दिल्ली मुरादाबाद के संभावित क्षेत्र से इसका प्रभाव महसूस किया गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सबसे बड़ी भूमिका मिट्टी की गहराई (बहते पानी से जो तलछट जमा होते हैं) की है जो इस भय का निर्माण करती है जिसमें पटेल नगर, नारायणा, यमुना नदी का क्षेत्र, नोएडा तथा फरीदाबाद आदि को इसका भय होता है परंतु एक हलके भूकम्प के झटकों का।

2.26 भुज में आए भूकम्प के निकट बाद की भारत में स्थिति।

28 जनवरी 2001 3.3 तथा 4.4 रिकटर स्केल के झटके भुज तथा उसके आसपास के क्षेत्र में 20.10 बजे से 22.55 बजे के बीच में आए।

29 जनवरी, 2001 भूकम्प के हलके झटके, तमिलनाडु, कर्नाटक, कोची तथा थीरूवंथापुरम में आए।

2 फरवरी, 2001 भूकम्प के नौ झटके 3.0 से 4.3 रिकटर स्केल के बीच के भुज में आए।

8 फरवरी 2001 कच्छ में भूकम्प के ताज़ा झटके।

10 फरवरी 2001 **नई नदी की गुजरात में उत्पत्ति।**

80 मीटर चौड़ी 100 किलोमीटर लम्बी नदी अचानक फूट पड़ी। रन आफ कच्छ में 26 जनवरी के भूकम्प के बाद जो नबीसा (पाकिस्तान) से मुरुदाताक्कर (भारत) तक थी।

28 अप्रैल 2001 प्रातः 6.36 बजे दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्र में 3.8 रिकटर स्केल के भूकम्प के झटके आए जिसका (Epicentre) केन्द्र सोनीपत, हरियाणा रहा।

15 जुलाई, 2001 भुज कच्छ में तीन झटके 3.2, 4.1 तथा 3.3 रिकटर स्केल के 2.05 रात्रि से 5.41 प्रातः तक के बीच में अनुभूत हुए।

25 सितम्बर 2001 बंगलौर में झटके, केन्द्र चेन्नई रहा 20.35 बजे 5.2 रिकटर स्केल के कुछ सैकिण्डों के लिए अनुभूत हुए। **5 जुलाई 2001 का चंद्रग्रहण 19.05 से 21.45 बजे तक मिथुन व धनु राशियों में रहा।**

2.27 प्राकृतिक विनाश तथा दुखद/दुर्भाग्यपूर्ण घटना

श्री केदारनाथ, हेम कुण्ड साहिब, राम बाग, बदरीनाथ एवं आसपास के क्षेत्रों में बादलों के फटजाने के कारण तथा भारी वर्षा एवं (पृथ्वी के खिसकने) भूस्खलन आदि का होना।

माघ शुक्ल पंचमी से षष्ठी तक 14/15 जून 2013 (शुक्रवार) शनिवार ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी/षष्ठी, आश्लेषा/मास नक्षत्र हर्ष तथा वज्रयोग, तौतिल्य कारण। सूर्य 28-55 बजे 14 जून 2013 को मिथुन राशि में प्रवेश किया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य विधि 14 जून 2013 की ग्रह स्थिति

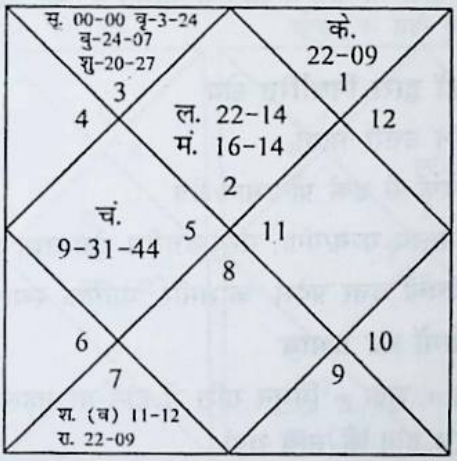

10 अगस्त 2000 को इस ही प्रकार की घटना पिथौरागढ़ तथा नैनीताल (उत्तराखण्ड) में हुई थी। देखे (*viii*) (क) 12 वर्ष बाद हिमालय में पुनः ईश्वर का प्रकोप पड़ा और मानव ने प्रकृति की स्थिति के साथ छेड़-छाड़ की जिसका यह परिणाम हुआ।

इस भयानक घटना और विनाश के कारण जो सैकड़ो लोग मरे उस पर ज्योतिषीय चर्चा।

(*i*) मिथुन राशि पर्वत व पहाड़ी क्षेत्रों को दर्शाती है, बुरी तरह पीड़ित थी।

(*ii*) कर्क राशि भी शनि की दशम दृष्टि के कारण पीड़ित थी, इसका स्वामी चंद्रमा भी मंगल से पीड़ित था। चंद्रमा व कर्क राशि भी नदी, जलीय क्षेत्र, तीर्थ स्थान, चीन देश (जो केदार नाथ/बद्रीनाथ) की सीमा पर है।

(*iii*) सिंह राशि चतुर्थ भाव, उसमें चंद्रमा बैठा है, भी मंगल से पीड़ित है। यह पहाड़ों, पहाड़ी क्षेत्र, भारत को दर्शाता है।

(*iv*) तुला पहाड़ की चोटी व पहाड़ की बाजू एवं भारत को दर्शाता है।

(*v*) वृश्चिक राशि, भारत, दिल्ली, धार्मिक स्थल, ऊँचे स्थानादि का प्रतिनिधि है। इस पर मंगल की सप्तम एवं वक्री शनि की तीसरी दृष्टि है।

(vi) धनुराशि इस कुण्डली का अष्टम भाव है जो शनि से पीड़ित है, सूर्य मंगल से पीड़ित हैं। यह भी धार्मिक स्थानों/तीर्थों को दर्शाती है, जैसे- चर्च, मंदिर, मस्जिद आदि, भारत तथा उत्तर प्रदेश अष्टम भाव व अष्टमेश दोनों पीड़ित हैं, लग्नेश शुक्र, सूर्य एवं चंद्रमा सभी बड़े पैमाने पर मृत्यु का सकेंत कर रहे हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*vii*) मेष राशि भी केतू व शनि से पीड़ित है, यह भी पर्वतिय क्षेत्र बताती हैं।

पीड़ित ग्रहों द्वारा निर्धारित क्षेत्र

सूर्य – चीन उत्तरी भारत

चंद्रमा – बर्फ से ढके प्राँत/भाग/क्षेत्र

बुध – हिमालय राज्य/गंगा, सरयु/उत्तरीय क्षेत्र तथा पश्चिमी भाग।

गुरु – पश्चिमी उत्तर प्रदेश, काशमीर, धार्मिक स्थान/तीर्थ

ग्रहों के योगों का प्रभाव

सूर्य + बुध + शुक्र = मिथुन राशि में होने पर तहलका मचा देगे, थोड़े समय के लिए तेज हवा के साथ वर्षा

बुध का मिथुन में प्रवेश भी वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में होने के निकट हुआ इसलिए भी वर्षा खूब हुई।

शुक्र का आर्द्रा प्रवेश वर्षा देता है और तेज हवाओं के साथ वर्षा। शुक्र का पुर्नवसु नक्षत्र में प्रवेश भयंकर वर्षा दे सकता है। 31 जुलाई 2004 को शुक्र जैसे मिथुन में प्रवेश किया बहुत ज़ोरदार वर्षा हुई।

बुध + शुक्र दोनों वायु तत्व राशि में एक साथ है इसलिए भी तेज हवा के साथ वर्षा हुई।

वृष तथा धनु दोनो अर्ध जलीय राशियाँ हैं, तुला भी एक चौथाई जलीय राशि है, शुक्र, चंद्रमा तथा गुरु जलीय ग्रह हैं।

कर्क पूर्ण जल राशि, चंद्रमा पीड़ित, वृश्चिक भी मंगल से पीड़ित है।

उपरोक्त घटना पर ग्रहण का प्रभाव

(*i*) सबसे पहले पीछे 26 अप्रैल तथा 10 मई 2013 को हुए ग्रहणों की स्थिति पर विचार करते हैं। यह ग्रहण की भूकम्प व प्राकृतिक आपदाओं के मुख्य कारण होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

25/26 अप्रैल 2013
(1-24 से 1-51 बजे तक)

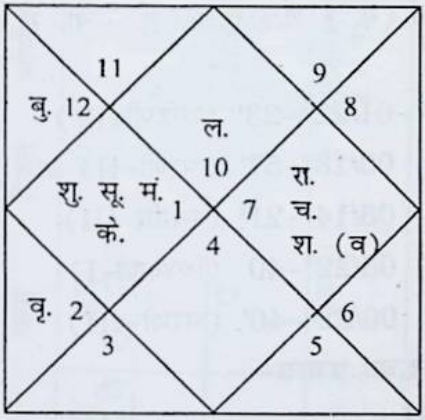

भारत की कुण्डली में
गोचर के ग्रहों की स्थिति

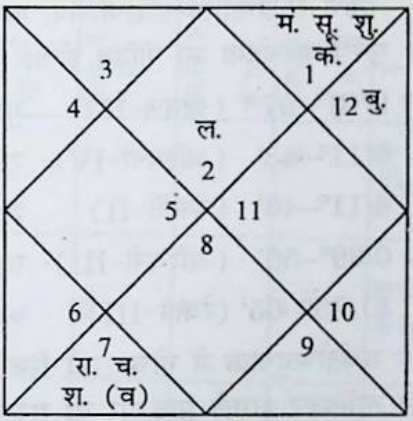

10-5-2013 समय 2-55 पर ग्रहण

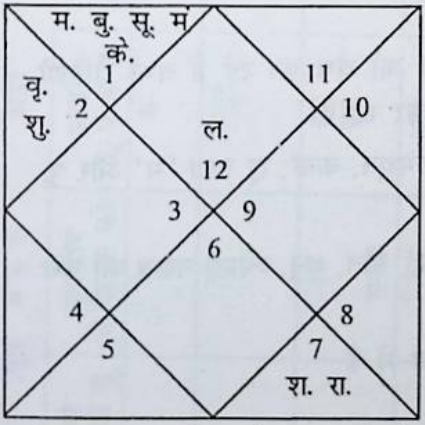

ग्रहण समाप्ति की कुण्डली
10-5-2013, 08-55 पर

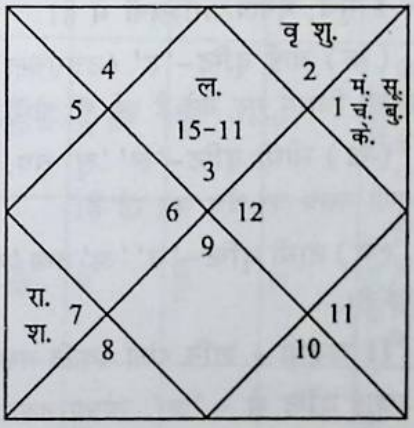

ग्रहण समाप्ति की कुण्डली के ग्रह स्पष्ट (10-5-2013, 8.55 घ.)

ल.	2/15°–11′	सू.	0/25°–53′	चं.(अ)	0/26°–56′
मं.	0/20°–32′	बु.	0/23°–31′	गु.	1/22°–22′
शु.	1/06°–35′	श.(व)	6/13°–17′	रा.	6/21°–44′

इन गोचर के ग्रहों का स्वतंत्रता दिवस की कुण्डली में लगाकर प्रभाव देखते है। (ग्रहण दिखाई दे या न दे परन्तु पृथ्वी पर उनका प्रभाव अवश्य होता है।) मेष तथा तुला राशि का (ऐक्सिस) पीड़ित तथा कर्क/मकर का (ऐक्सिस) पीड़ित भारत के सामने समस्या उत्पन्न करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहण 26 अप्रैल 2013 की कुण्डली

ग्रहण से प्रभावित राशियाँ मेष, कर्क (मं. + श.) तुला (श. + रा. + मं.) सूर्य तथा चंद्रमा का पीडित होना।

लग्न	9/13°–57′	(श्रावण-II)	गुरु.	01/22°–23′	(रोहिणी-IV)
सू.	0/11°–43′	(अश्विनी-IV)	शु.	00/18°–57′	(भरणी-II) अ
चं.	6/11°–40′	(स्वाति-II)	श.	06/14°–21′	(स्वाति-III)
मं.	0/09°–56′	(अश्विनी-III)	राहु	06/22°–40′	(विशाखा-I)
बु.	11/25°–05′	(रेवती-III)	केतु	00/22°–40′	(भरणी-III)

सर्वतोभदुचक्र में गोचर की स्थिति का प्रभाव–

तालिका अगले पृष्ठ पर दी गई है।

(तालिका अगले पृष्ठ पर देखें।)

I सूर्य, मंगल/अश्विनी में है।

(क) बाई दृष्टि–'उ' (उत्तराँचल) को वेध का रहे हैं तथा रोहिणी नक्षत्र को जिसमें गुरु बैठे है को भी वेध कर रहे है।

(ख) सीधी दृष्टि–'ल' 'लृ' वृष, मिथुन, कर्क, लृ तथा 'म' और पू. फाल्गुणी नक्षत्र का वेध कर रहे हैं।

(ग) दायी दृष्टि–'च' 'अ' तथा 'य', मीन, धनु, ज्येष्ठा नक्षत्र का वेध कर रहे है।

II चंद्रमा + शनि दोनों स्वाति नक्षत्र में हैं

बाई दृष्टि से = 'ऋ', ज्येष्ठा नक्षत्र

सीधी दृष्टि से = 'त', ए, ऐ, ग (गौरी कुण्ड) वृश्चिक, धनु, मकर राशियों को वेध

दाई दृष्टि से 'र', कन्या, औ, मिथुन, 'व' रोहिणी नक्षत्र (गुरु इसमें बैठा है) 'र' (राम बाग जगह आ गया।)

III शुक्र + केतू (दोनों भरणी नक्षत्र में हैं)

बाई दृष्टि से कृत्तिका

दाई दृष्टि से 'ल', 'न' अनुराधा नक्षत्र वृश्चिक राशि, मेष राशि रिक्ता तिथि तथा जया तिथि, गुरु, शुक्र का वेध होता है।

सीधी दृष्टि–उ, अ, व, क, ह, उ, ऊ मघा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

सर्वतोभद्र चक्रम

ईशान	नंदा पूर्णा	भद्रा नन्दा	पूर्व घ ड़ छ	जया भद्रा		रिक्ता जया	पूर्णा रिक्ता	आग्नेय
अ	कृतिका अ इ ऊ ए	रोहिणी ओ वा वी वू	मृगशीर्ष वे वा क की	आर्द्रा कु घ ड छ	पुनर्वसु के को ह हि	पुष्य हु हे हो डा	अश्लेषा डी डू डे डो	आ
भरणी लि लू ले लो	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	मघा म मी मू में
अश्विनी चु चे चो ला	ल	लृ	वृष	मिथुन	कर्क	लृ	म	पुर्वाफाल्गुनी मो टा टी टू
रेवती दे दो चा ची	च	मेष	ओ मंगल	नंदा सूर्य	औ	सिंह	ट	उत्तराफाल्गुनी टें टो पा पो
उत्तरा-भाद्रपदा दू थ झ त्र	द	मीन	रिक्ता शुक्र	पूर्णा शनि बुध	भद्रा चंद्रमा	कन्या	प	हस्त पू षा णा ठ
पूर्वाभाद्रपदा से सो दे दी	स	कुम्भ	अः	जया गुरु	अं	तुला	र	चित्रा पे पो रा री
शतभिषा गो सा सी सू	ग	ऐ	मकर	धनु	वृश्चिक	ए	त	स्वाति रु रे रो ता
धनिष्ठा गा गि गू गे	ऋ	ख	ज	भ	य	न	ऋ	विशाखा ति तू ते तो
ई	श्रवण खि खु खे खो	अभिजीत जु जे जो ख	उत्तराषाढ़ा भे भो जा जी	पूर्वाषाढ़ा भू धा फां ढा	मूला ये यो भा भी	ज्येष्ठा नो या यी यू	अनुराधा ना नी नू ने	इ

ऊ त्त र झि झ ञ

द क्षि ण धा घ ण ठ

वायव्य — पश्चिम ध फ ढ़ — नैऋत्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

IV राहु विशाखा नक्षत्र में है

बाई दृष्टि–अनुराधा

सीधी–ऋ, न, य, भ, ज, ख, ऋ धनिष्ठा नक्षत्र

दाई दृष्टि–त, अ, वृष, तुला, तिथि भद्रा, नन्दा, कृत्तिका नक्षत्र तथा चंद्रमा, बुध, सूर्य, मंगल द्वारा तुला (शनि, चंद्रमा) को वेध

V वृहस्पति–रोहिणी नक्षत्र में है–

दाई दृष्टि–'उ' अश्विनी-सूर्य को वेध।

सीधी दृष्टि–अ, लृ, मेष, मीन, कुंभ, ऐ, ख, अभिजीत, सूर्य, मंगल, शुक्र, केतू को वेध।

बाई दृष्टि–वृष, नन्दा, सूर्य, मंगल, भद्रा, चंद्रमा, बुध, तुला, त, विशाखा, राहु, चंद्रमा व शनि को वेध।

VI बुध–रेवती नक्षत्र में

दाई दृष्टि–'द', कुंभ, मकर, भो, मूला, शुक्र, केतु को वेध।

सीधी दृष्टि–'च', मेष, ओ, नन्दा, सूर्य, मंगल, औ, सिंह, ट, उत्तर, फाल्गुणी, सूर्य, मंगल, शुक्र, केतू को वेध।

बाई दृष्टि–अ, रोहिणी व वृहस्पति को वेध।

श्री केदार नाथ मन्दिर की दुर्घटना की कुण्डली

अब घटना की कुण्डली यानि 14/15 जून 2013 का 4-56 प्रातः के समय, ज्येष्ठ शुक्ल 5/6 शुक्रवार/शनिवार की कुण्डली। यह वह ही समय है जिस समय सूर्यदेव ने मिथुन राशि में प्रवेश किया था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

			नक्षत्र संख्या	नाड़ी
लग्न	1/25°–25′	(मृगशिरा-II)	5	दहन
सूर्य	2/00°–00′	(मृगशिरा-III)	5	दहन
चंद्रमा	4/09°–32′	(मधा-III)	10	दहन
मंगल(अ)	01/16°–14′	(रोहिणी-II)	4	पवन
बुध	02/24°–07′	(पुर्नवास-II)	7	नीर
गुरु(अ)	2/03°–24′	(मृगशिरा-IV)	5	दहन
शुक्र	2/20°–27′	(पुर्नवसु-I)	7	नीर
शनि(व)	6/11°–12′	(स्वाति-II)	15	पवन
राहु	6/20°–09′	(विशाखा-I)	16	प्रचण्ड
केतु	0/22°–09′	(भरणी-I)	2	प्रचण्ड

सप्तनाड़ी चक्र में स्थिति का फल

दहन में, सूर्य, चंद्रमा, गुरू कुलग्रह तीन

पवन में–मंगल, तथा शनि कुलग्रह दो

नीर में–बुध, शुक्र कुलग्रह दो

प्रचण्ड में–राहु तथा केतु कुलग्रह दो

उपरोक्त स्थिति भारी वर्षा वह भी तेज हवाओं के साथ, दहन व प्रचण्ड के कारण ढहाने व मारने का काम किया।

27वाँ, पहला तथा **दूसरा** नक्षत्र चीन, उत्तर पूर्व भारत (हरिद्वार तथा ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों की ओर इशारा करते है।

इस घटना का भी सर्वतोभद्र चक्र में ग्रहों/राशियों/अक्षर/नक्षत्रों का वेध देखते हैं-

I सूर्य तथा मंगल–'3' उत्तरांचल (अक्षर 'उ') वृहस्पति यह भी उस ही क्षेत्र का प्रतिनिधि है।

शनि– अक्षर 'ग' तथा 'र' जो गंगा तथा राम बाग का क्षेत्र हुआ।

राहु– 'भ' (भागीरथी गंगा जिसमें बाढ़ आई और पूरे क्षेत्र के विनाश का कारण बनी।

'ज' (जाह्नवी जो गंगा जी का ही दूसरा नाम है।)

14/15 जून 2013 की ग्रह स्थिति में उनके वेध का विचार

सूर्य + मंगल– 'उ' (उत्तरांचल) तथा वृहस्पति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि– 'ग' (गंगा, गौरी कुण्ड) 'र' राम बाग (जहाँ से केदार नाथ मन्दिर का आधे से कम मार्ग रह जाता है।

राहु– 'भ' (भागीरथी का क्षेत्र)

'ज' (जाह्नवी भी गंगा जी का नाम है) का क्षेत्र।

मीन– उसकी (हिमालय) क्षेत्र को दर्शाती है।

सर्वतोभद्र का 14/15 जून 2013 के लिए प्रयोग नीचे दे रहे है

I सूर्य + चंद्रमा + गुरु तीनों मृगाशिरा नक्षत्र में है।

बाई दृष्टि– क, कर्क, सिंह, प, चित्रा नक्षत्र, शनि, राहु चंद्रमा को वेध

दाई दृष्टि– लृ, च, उत्तर भाद्रा

सीधी दृष्टि– ज, उत्तर आषाढ, तिथि रिक्ता

II मंगल–रोहिणी नक्षत्र में है।

दाई दृष्टि– अश्विनी, उ

बाई दृष्टि– 'अ', वर्ष, नन्दा, तिथि, सूर्य, मंगल, भद्रा तिथि, चंद्रमा, बुध, तुला, 'त' विशाखा नक्षत्र

सीधी दृष्टि– अ, लृ, मेष, (कुंभ) केतु को बेध

ऐ, ख, अभिजित नक्षत्र का वेध

III बुध तथा शुक्र–दोनों पुर्नवसु नक्षत्र में है।

बाई दृष्टि– 'ह', मिथुन, ओ, मीन, स, पूर्व फाल्गुणी, सूर्य, बुध, वृहस्पति, शुक्र को वेध।

दाई दृष्टि– वृ, ट, हस्त नक्षत्र

सीधी दृष्टि– ह, कर्क, औ, भद्रा, चंद्रमा, बुध, अ, वृश्चिक, य, मूल नक्षत्र।

IV शनि– स्वाति नक्षत्र में है।

बाई दृष्टि– ऋ, ज्येष्ठा नक्षत्र

दाई दृष्टि– कन्या, औ, मिथुन, व, रोहिणी, सूर्य, बुध, वृहस्पति, शुक्र तथा मंगल को बेध

सीधी दृष्टि–त, ए, वृश्चिक, धनु, मकर, ऐ, ग, शर्ताभिषा

V केतु–भरणी नक्षत्र में है

बाई दृष्टि– कृत्तिका

दाई दृष्टि– ल, मेष, रिक्ता तिथि, शुक्र, जया, वृहस्पति, वृश्चिक, न, अनुराधा

सीधी दृष्टि– उ, अ, व, क, ह, ड, ऊ मघा नक्षत्र, चंद्रमा को वेध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

VI राहु–विशाखा नक्षत्र में

बाई दृष्टि– अनुराधा

दाई दृष्टि– त, तुला, भद्रा, नन्दा, चन्द्रमा, बुध, सूर्य, मंगल, वृष, अ, कृत्तिका (उ), शनि, को बेध

नोट–अर्थ हुआ उत्तराखण्ड, अलकनन्दा का क्षेत्र जो केदार नाथ मंदिर के आसापास का क्षेत्र है।

उपरोक्त कुण्डली में मिथुन, वृष, कर्क, सिंह, मेष, तुला राशियाँ पीड़ित है क्योंकि सूर्य, मंगल, शनि, केतू + शनि तथा शनि एवं राहू क्रमशः पीड़ित कर रहे हैं।

मृगशिरा (सूर्य), रोहिणी (मंगल), स्वाति (शनि), विशाखा (राहू) तथा भरणी (केतू) यह नक्षत्र कोष्ठक में लिखे ग्रहों द्वारा पीड़ित है।

कर्क राशि जिसका प्रधिनिधित्व अक्षर ह, हे, हो अर्थात् हेमकुण्ड साहिब, 'ग' गोविन्द घाट (कुंभ राशि) शनि (स्वाति में है) अक्षर रा, री, रू आदि अर्थात् रामघाट मिथुन राशि भी पीड़ित हैं।

मुझे ऐसा विश्वास हो रहा है कि मैं अब तक की चर्चा में इस विषय पर पूर्ण प्रकाश डाल चुका हूँ। विषय बहुत रूचिकर है और ऋषि प्रदत्त सूत्र शतप्रतिशत परिणाम देते हैं तो अति आनन्द आता है। विषय में रूचि बढ़ती जाती है, चर्चा बन्द करना भी हृदय पर आघात सा लगता है परन्तु विश्राम करना ही होगा इस आशा से कि पाठकगण विषय तथा सूत्रों के उदाहरणों में देखने के बाद अवश्य संतुष्ट होंगे।

गेयं गीता नाम सहस्त्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्त्रम्।
नेयं सज्जनसग्डे चित्तं देयं दीनजनाय चि वित्तम्॥
यावज्जीवो निवसति देहे कुशलं तावत्पृच्छतिगेहे।
गतवति वायौ देहापाये भार्या विभ्यति तस्मिन्काये॥

(भगवतपाद जगत गुरु आद्यशंकराचार्य के उपदेशानुसार प्रत्येक व्यक्ति चाहे बालक, युवा बूढ़ा जो भी हो भगवान की महिमा का गान करते रहना चाहिए। वह प्रभु हृदय में निवास करता है। ऐसा करना ही जीवन को सफल बनाने, शांतिपूर्ण वातावरण में रहने तथा स्वयं की प्राप्ति का एक सरल उपाय है।

प्रभु की महिमा का गान (गीता) तथा भगवान विष्णु के सहस्त्रनामों का जप, उनके आनन्दमय शांताकारम स्वरूप का ध्यान ही मन को संतों की संगति के लिए प्रदत्त करता है और अपने धन को गरीबों की सहायता में लगाने को प्रेरित करता है। सभी संबंधी आपके जीवन के साथ हैं, शरीर के नहीं, आत्मा के परलोक गमन के बाद पत्नी भी उस शरीर से डरने लगती है।)

प्राकृतिक दुर्घटनाओं से बचने के लिए हर समय प्रभु का ध्यान व भजन करते रहना चाहिए।

❑❑❑

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय

3 आकाशीय परिषद

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।। (गीता 7/6)

(इस संसार में सांसारिक व आध्यात्मिक सभी का प्रदाता व विनाशक मैं ही हूँ।)

3. संवत्सर जानने की विधि

(सौजन्य से 'संवत्सर संहिता' प्रकाशक डॉ. सुरेश चंद्र मिश्रा)

ईशवी सन् में 56 जोड़े तो गत संवत्सर होगा जैसे 2015 + 56 = 2071 जो 20 मार्च 2015 चैत्र अमावस्या को समाप्त होकर संवत्सर 2072 प्रारंभ होगा।

यदि ईश्वी सन् में 54 घटाकर 60 से भाग दें शेष वर्षारंभ में गत संवत्सर की क्रम संख्या होगी फिर उसका नाम ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण

2015 (–) 54 = 1961

1961 ÷ 60 = 41 शेष

41 पर 2070 गत सम्वत्सर की संख्या, वर्तमान में सम्वत्सर 2071 है। आज 21 मार्च सन् 2015 शक सम्वत् 1937 सम्वत्सर 2072 है।

क्रम संख्या	संवत्सर संख्या	नाम	ईसवी सन
1	2030	प्रभव	1974
2	2031	विभव	1975
3	2032	शुक्ल	1976

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4	2033	प्रमोद	1977
5	2034	प्रजापति	1978
6	2035	अंगिरा	1979
7	2036	श्री मुख	1980
8	2037	भाव	1981
9	2038	युवा	1982
10	2039	धाता	1983
11	2040	ईश्वर	1984
12	2041	बहुधान्य	1985
13	2042	प्रमाथी	1986
14	2043	विक्रमी	1987
15	2044	वृष	1988
16	2045	चित्रभानु	1989
17	2046	सुभानु	1990
18	2047	तारण	1991
19	2048	पार्थिव	1992
20	2049	व्यय	1993
21	2050	सर्वजित	1994
22	2051	सर्वधारी	1995
23	2052	विरोधी	1996
24	2053	विकृति	1997
25	2054	खर	1998
26	2055	नन्दन	1999
27	2056	विजय	2000
28	2057	जय	2001
29	2058	मन्मथ	2002
30	2059	दुर्मुख	2003
31	2060	हेलम्बी	2004

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

32	2061	विलम्बी	2005
33	2062	विकारी	2006
34	2063	शर्वरी	2007
35	2064	प्लव	2008
36	2065	शुभकृत	2009
37	2066	शोभन	2010
38	2067	क्रोधी	2011
39	2068	विश्वासु	2012
40	2069	पराभव	2013
41	2070	प्लवंग	2014
42	2071	कीलक	2015
43	2072	सौम्य	2016
44	2073	साधारण	2017
45	2074	विरोधकृत	2018
46	2075	परिधावा	2019
47	2076	प्रमादी	2020
48	2077	आनन्द	2021
49	2078	राक्षस	2022
50	2079	नल	2023
51	2080	पिंगल	2024
52	2081	कालयुक	2025
53	2082	सिद्धार्थी	2026
54	2083	रौद्र	2027
55	2084	दुर्मति	2028
56	2085	दुन्दभि	2029
57	2086	रूधिरोष्गारी	2030
58	2087	रक्ताक्ष	2031
59	2088	क्रोधन	2032
60	2089	क्षय	2033

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संवत्सर के वाहन

संवत्सर के राजा के आधार पर निश्चित होता है। इसको 'समय वाहन' भी कहते हैं।

तालिका

राजा ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वाहन	घोड़ा	हाथी या हिरन	नाव या बैल	झूला/ सियार	नाव	हाथी/ मेंढक	घोड़ा/ भैंसा
फल	राजनैतिक मतभेद	सुभिक्ष प्रजा में सुख शांति अच्छी वर्षा	उत्पादन में कमी चौपायों को कष्ट, वाहन दुर्घटना, आतंकियों द्वारा कष्ट	हाहाकार मचना दुर्भिक्ष युद्ध संघर्ष	अशुभ देखें मंगल वाले फल	शुभ देखें चंद्रमा वाले फल	शासकों में विग्रह लोगों को क्षोभ, राजनेताओं की दुर्घटना में मृत्यु

3.1. परिचय

नवसंवत्सर में ग्रहों का आकाशीय परिषद में पद

सृष्टि में होने वाली सांसारिक व प्राकृतिक सभी घटनाओं का नियंत्रण ग्रहों के माध्यम से होता है। ज्योतिष शास्त्र की मूल परिभाषा के अनुसार संपूर्ण पृथ्वी तथा ब्रह्माण्ड पर ग्रहों व नक्षत्रों का पूरा प्रभाव बना रहता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है, मानव कल्याण के लिए कृषि संबंधी भविष्यवाणी करने के लिए ऋषियों ने शोध करके कुछ सूत्रों का प्रतिपादन किया जिनकी सहायता से यह जाना जा सकता है कि ग्रहों तथा नक्षत्रों का कब, कैसा और कितना प्रभाव पड़ रहा है उसका क्या परिणाम होगा। वर्षा ऋतु, खेती, जल की उपलब्धि, अकाल, बाढ़, भूस्खलन, फल-अनाज की पैदावार आदि सभी के विषय में जानकारी ग्रहों व नक्षत्रों के परस्पर संबंध के प्रभाव से प्राप्त होती है। इसी शृंखला में प्रत्येक संवत्सर के लिए एक परिषद का चुनाव किया जाता है। परिषद के पदाधिकारी नौ ग्रहों में से चुने जाते हैं। कभी-कभी एक ही ग्रह के पास एक से ज्यादा पद (मंत्रालय) का भार आ जाता है। प्रत्येक ग्रह अपने स्वाभावानुसार अपने पद का कार्य करता है और उसी प्रकार का फल जनता को भोगना पड़ता है। संसार चक्र भगवान महाविष्णु की इच्छानुसार चल रहा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह भी अपने गोचरवश द्वादश राशियों तथा अट्ठाइस नक्षत्रों में भ्रमण कर रहे हैं और इस प्रतिक्रिया में पृथ्वी पर तथा ब्रह्माण्ड में घटनाओं का क्रम होता है। परिषद का कर्त्तव्य वर्षा, फल, सब्जी, अनाज आदि के विषय में शुभाशुभ फल प्रदान करना है। एक-एक करके सबके चुनाव की विधि व उनके चुने जाने की युति व उनके फल की चर्चा करेंगे।

3.2. दस पदाधिकारियों का चयन

(*i*) वर्ष का राजा

जिस प्रकार वर्ष कुण्डली में 'वर्षेश' होता है उस ही प्रकार एक प्रधान शासक 'राजा' बनता है।

(क) चैत्र शुक्ल प्रतिदा को जो वार होता है, उस बार का स्वामी (वर्ष) सम्वत्सर का राजा होता है अथवा मीन की अमावस्या के अन्त (जब चंद्रमा या सूर्य के अक्षांश एक ही हों और दोनों मीन राशि में हों) का वार।

नोटः भारतीय परम्परा में नव वर्ष इसी दिन से होता है, जिसको मनाने के लिएं मदिरापान करके नृत्य करने या जुआ खेलने का विधान नहीं है, भारतीय परम्परा में नव वर्ष के दिन सभी के लिए आने वाला वर्ष सुखमय, मंगलमय, स्वास्थ्य तथा धनवर्धक हो ऐसी कामना करने का होता है। इस दिन से नौ दिन तक माँ जगदम्बा शक्तिरूपिणी की आराधना होती है ताकि वह हमें अच्छा स्वास्थ्य, निरोगी काया, विद्या, शक्ति, धन भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करे।

नवसंवत्सर चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (संवत्सर का प्रथम मास इस दिन से शुरू होता है) को भी प्रारंभ हो सकता था। परन्तु हमारे ज्योतिष शास्त्रानुसार शुभ कार्य का प्रारंभ शुक्ल पक्ष से करना ही उत्तम बताया गया है। फिर हमारे यहाँ आशीर्वाद देते समय बुर्जुग कहते हैं "दिन-दिन ऐसी उन्नति करो जैसे शुक्ल पक्ष का चंद्रमा बढ़ता है" इन दोनों बातों का ध्यान रखते हुए नव संवत्सर का शुभारंभ चैत्र (आधा चैत्र मास बीतने के बाद) शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ करने का प्रचलन हुआ।

(ख) राजा का प्रभाव

वर्ष का राजा पूरे राष्ट्र में होने वाली सभी बातों का पूरा दायित्व संभालता है। फिर भी काश्मीर तथा अफगानिस्तान इसके विशेष कार्यक्षेत्र रहेंगे। राजा के फल पूरे वर्ष पर लागू होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ग) राजा का वाहन

जो ग्रह राजा होगा, उसका वाहन निम्नलिखित विवरण के अनुसार होगा। जैसे (अध्याय के आरंभ में दी गई तालिका देखें)

सूर्य - घोड़ा	बुध - गीदड़	शनि - भैंसा
चंद्रमा - हिरन	गुरु - चातक	
मंगल - नाव	शुक्र - मेंढक	

3.2.2. वर्ष का मंत्री (प्रधानमंत्री)

जिस वार को सूर्यदेव मेष में प्रवेश करते हैं उस वार का स्वामी मन्त्री चुना जाता है।

3.2.3. वर्ष का मेघेश

जिस वार को सूर्यदेव (मिथुन राशि में गोचर करते हुए) आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करें उस वार का स्वामी मेघेश चुना जाता है। इस दिन सूर्य (यह प्रतिवर्ष 21-22 जून को ही संभव होता है) के आर्द्रा प्रवेश के समय की कुंडली बना कर वर्षा-ऋतु के बारे में भविष्यवाणी की जाती है।

3.2.4. वर्ष का सस्येश (वर्षा ऋतु की फसल का स्वामी) जिस वार को सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है उस वार का स्वामी ही सस्येश चुना जाता है। सभी प्रकार के उत्पादन इसके कार्य क्षेत्र में आते हैं।

3.2.5. वर्ष का दुर्गेश (रक्षामंत्री या सेनाध्यक्ष)

जिस वार को सूर्यदेव सिंह राशि में प्रवेश करें उस वार का स्वामी दुर्गेश चुना जाता है। जिसका कार्यक्षेत्र देश की बाहरी व आंतरिक सुरक्षा का विषय है।

3.2.6. वर्ष का धनेश (धन एवं कोष का स्वामी)

जिस वार को सूर्यदेव कन्या राशि में प्रवेश करें उस वार का स्वामी धनेश चुना जाता है अर्थात् वित्तमंत्री या अध्यक्ष आर्थिक एवं वित्त वृद्धि का कार्य। अर्थ सम्पदा, राज्यकोष, करादि द्वारा आय तथा व्यय का विचार उससे होता है।

3.2.7. वर्ष का रसेश व रसाधिप

जिस वार को सूर्य तुला राशि में प्रवेश करे उस वार का स्वामी उस संवत्सर का रसाधिप चुना जाता है। जिन पदार्थों में रस होता है सभी का स्वामी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3.2.8. वर्ष का धान्येश

जिस वार को सूर्यदेव धनुराशि में प्रवेश करते हैं उस वार का स्वामी धान्येश (शरद ऋतु की फसल का स्वामी) चुना जाता है। खाद्य-आपूर्ति (Supply of Disposal) का मंत्री होता है।

नोटः वृष, वृश्चिक, कुंभ तथा मीन संक्रांतियों को कोई पद नहीं प्राप्त है।

3.2.9. वर्ष का नीरसेश (खनिज, धातु तथा वस्त्रादि का स्वामी)

जिस वार को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करे उस वार का स्वामी उस संवत्सर का नीरसेश चुना जाता है। उसका कार्यभार धातु, उद्योग आदि से संबंधित होता है।

3.2.10. वर्ष का फलेश (सम्पूर्ण फलों का स्वामी)

जिस वार को सूर्य देव मीन राशि में प्रवेश करते हैं उस वार का स्वामी फलेश होना है। फल, फूल, सब्जियाँ आदि इस ही के कार्यभार में आती हैं।

3.3. सम्वत् 2072 की परिषद के पदाधिकारी

नव सम्वतसर का प्रथम दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (21 मार्च, 2015) शनिवार को पड़ने से शनि वर्ष का राजा बना।

शनै नृपे कष्टमयं जनेषु। वृष्टिश्च स्वल्पा धनधान्यमल्पम्॥
दोषो नृपाणां बहुविग्रह स्यात्। प्रजासुपीडा बहु व्याधि दोषाः॥

शूर्य के वर्षेश होने से नकारात्मक फल होंगे। फलोत्पत्ति कम, जनता में कष्ट, अल्प वृष्टि, रोग का फैलना आदि से जनता दुखी। प्रशासन अधिकारियों में मतभेद, धार्मिक दंगे रोग का फैलना आदि से जनता दुखी।

3.3. (*ii*) मंत्री 'मंगल'

सूर्य ने मेष राशि में (वैशाख संक्रांति) 14 अप्रैल, 2015 के दिन प्रवेश किया। इसलिए मंगल इस वर्ष का प्रधानमंत्री हुआ।

अवनिजोननुमंत्रिपदंगतो भवति। दस्युगदादिज्वेदनाः।
जनपदेषु जयं सुख संचयं। न बर्हुगोषु पयोद्विजकर्म च॥

लाभकारी वर्षा की कमी, अनाज की कम उत्पत्ति, चोर भय, अग्निभय, झगड़ों का भय, अशांति का भय के कारण जनता दुःखी तथा चिन्तामग्न। जनता अपने आवश्यक वस्तु व सुख साधनों के संचय में व्यस्त रहेगी। ब्राह्मण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्मकांड में व्यस्त रहेंगे। सोने, चांदी, पटसन, चावल, नाग मणि, लाल वस्तु आदि के भाव में तेजी होगी। (इस वर्ष में स्वर्ण, चांदी व शेयर सर्वोच्च शिखर पर पहुँचे।)

3.3. (*iii*) मेघेश 'चंद्रमा' सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश आषाढ़ शुक्ल तृतीया (22 जून, 2015) वार सोमवार को होगा। इसलिए **मेघेश चंद्रमा** बना। सूर्य का प्रवेश 16 घण्टे, 45 मिनट पर होने से वृश्चिक लग्न, एकादश में राहु, पंचम में केतू, अष्टम में सूर्य, मंगल तथा बुध सप्तम भाव में चंद्रमा, नवम में बृहस्पति तथा शुक्र दशम में चंद्रमा होगा। चंद्रमा पू. फाल्गुणी नक्षत्र में होगा।

शशिनी तोयदपेयदि गोमहिष्यवजरादिषु दुग्धरसं तदा।
फलवतीधनधान्यवति धरा विविध भोगवती ननु भामिनी।।

चंद्रमा के मेघेश होने के फलस्वरूप गाय, भैंस, बकरी आदि अधिक मात्रा में दुग्ध देंगी। फसल अच्छी होगी, अनाज गेहूँ, चावल आदि का उत्पादन अधिक होगा। फल तथा फूल वृक्षों पर लदे होंगे। सभी ओर प्रसन्नता, मनोरंजन, शांति एवं सभी प्रकार के सुख की वर्षा होगी। भोग की वस्तुएँ अधिक मात्रा में उपलब्ध होंगी।

3.3 (*iv*) सस्येश (ग्रीष्म ऋतु की फसल) 'गुरु'

सूर्य ने कर्क राशि (द्वितीय अधिक आषाढ कृष्ण अमावस्या) गुरुवार (17 जुलाई, 2015) को प्रवेश करेगा, इसलिए शुक्र सस्येश बना।

भवति सस्यपतौ सुखन्दिते सकल सौख्यधनागमशालीला
जन्मधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहूनि धनानि च।।

गुरु के कृषि का स्वामी बनने से लाभदायक एवं पर्याप्त वर्षा होने की संभावना है। फसल अच्छी होगी गेहूँ, जौ, चावल, गन्ना, फल तथा फूल आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होंगे। ऋतु के अनुसार मेवा भी अधिक उत्पन्न होंगे। सोना, घी, तेल, मजीठा, चावल, जौं, अरहड़, मेंहदी का व्यापार करने वाले बहुत लाभार्जन करेंगे।

3.3. (*v*) दुर्गेश (सेनाध्यक्ष) 'चंद्रमा'

सूर्य ने सिंह राशि में (श्रवण शुक्ल तीज) प्रवेश सोमवार (17 अगस्त 2015) को करेगा, इसलिए चंद्रमा दुर्गेश बना।

गढ़पति शशलाछंनकोयदा नृपसुराज्य विलासित पौरजाः।
बहुधनेक्षु जगोरसभेगिनो नरवरा नखर्णितविग्रहा।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्रमा के दुर्गेश बनने के फलस्वरूप देश में शांति रहेगी। राजनैतिक नेता व प्रशासक अपना कर्तव्य पूरा करेंगे और जनता के हित में कार्य करेंगे। गुड़, शक्कर, गन्ने, दूध आदि के व्यापार में बहुत लाभ होगा। कई राष्ट्रों के अध्यक्ष, राज्यों के अध्यक्ष युद्ध के इच्छुक होंगे या परस्पर कटुता बनाए रखेंगे और टकराव की स्थिति बनाए रखेंगे। वर्षा गायों को खुश कर देने वाली होगी, देवताओं व ब्राह्मणों को सम्मान व आदर मिलेगा। सर्वत्र धन-धान्य की वृद्धि होगी।

3.3. (*vi*) धनेश (कोषाध्यक्ष, वित्तमंत्री) 'गुरु'

सूर्य ने कन्या राशि में प्रवेश गुरुवार 17 सितम्बर, 2015 को करेगा इसलिए बृहस्पति धनेश हुए। धन, फल, प्रसन्नता आदि का कारक होने से भी शुभ फल प्रदाता रहेगा।

सुमनसां च गुरु द्रविणाधिपो वणिजवृत्तिपरां सुखभाजनाः।
फलित पुष्पित भूमिरुहः सदा विविधद्रव्ययुताभुपि मानवः॥

गुरु के इस प्राप्ति से देश की आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, व्यापारी वर्ग, विद्वान व शिक्षित वर्ग के लोगों को सुख मिलेगा। वह सफल रहेंगे, प्रसन्न तथा सम्पन्न रहेंगे। वृक्ष फल व फूल से लदे रहेंगे। सामान्यतया: जनता भी आर्थिक उन्नति करेगी व प्रसन्न रहेगी।

3.3. (*vii*) रसेश (रसदार वस्तुओं का स्वामी) 'शनि'

सूर्य तुला राशि में (आश्विन शुक्ल चतुर्थी) शनिवार, 17 अक्टूबर, 2015 को प्रवेश करेगा। इसलिए रसेश का पद शनि को प्राप्त होगा। शनि शुष्क तथा क्रूर ग्रह है। अशुभ व नकारात्मक फल अधिक होंगे।

रविसुतेरसपे रस संक्षययोन जलदागददाश्च पयोधराः।
अजगवां गजवाजि खरोष्टहा जनपदपुनरा न रसैयुताः॥

शनि के रसेश होने के फलस्वरूप वर्षा की कमी रहेगी। पशु, गाय, भैंस, बकरी, हाथी, ऊँट आदि की संख्या कम होती जाएगी। भोग्यवस्तु का मूल्य बढ़ेगा, कई प्रकार के रोग फैलेंगे, जनता उनसे दुखी होकर परेशान रहेगी। परस्पर प्रेम व सद्भावना का लोप रहेगा।

3.3. (*viii*) धान्येश (सर्दी की फसल) 'बुध'

सूर्य का धनुराशि प्रवेश (मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी) बुधवार 16 दिसम्बर, 2015 को हो रहा है। इसलिए बुध ही धान्येश बनेगा। यह व्यापारिक ग्रह होने के कारण शुभता प्रदान करेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध धान्याधिपे मेधा जलं मुंचति वैभृशम्।
सैन्धवे लाटदेशे च माधवोऽल्पं च वर्षति॥

वर्षा समय पर होगी और पर्याप्त होगी। अनाज की उत्पत्ति भी अधिक होगी। परंतु सिंध तथा लाट प्रदेश (पंजाब) में वर्षा कम होगी। बुध बाजार भावों में तेजी लाता है। शासक की नीतियाँ युक्ति युक्त रहती हैं।

3.3. (*ix*) नीरसेश (धातु आदि व वस्त्रों का स्वामी) 'गुरु'

सूर्य ने मकर राशि में प्रवेश (पौष शुक्ल षष्ठी) बृहस्पतिवार 14 जनवरी, 2016 को होगा। गुरु सौम्य ग्रह और धन, विद्या, ज्ञान व धर्म का कारक है। इसलिए शुभ फल प्रदाता रहेगा।

हरिद्रापीतवस्तुनि पातवस्त्रदिक च यत्।
नीरसेशोयदा जीवः सर्वेषां प्रीति रुत्तमा॥

पीले रंग की वस्तु की मांग बढ़ेगी, हल्दी, पीतवस्त्र, सोने, पीतल आदि के दाम बढ़ेगे। व्यापारी वर्ग को लाभ रहेगा। लोग धर्म पर आस्था रखेंगे तथा परस्पर सद्भावना रहेगी।

3.3. (*x*) फलेश 'चंद्रमा'

सूर्य ने मीन राशि में प्रवेश फाल्गुण शुक्ल, षष्ठी सोमवार 14 मार्च, 2016 को होगा। इसलिए चंद्रमा ही फलेश बना।

यदि विधुः फलपोदुमराशयः फलयुता व्रतिभिः कुसुमेर्युताः।
द्विज सुखा वरभोगसमन्विता नृपतयो न्यायपालनतत्पराः॥

वृक्षों पर फल तथा फूल लदे रहेंगे, फल सब्जी के दाम गिरेंगे। शासकगण न्यायप्रियता की ओर बढ़ेगे, विद्वान व पण्डित लोग अपने कार्यों में रत रहेंगे।

उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट हो गया कि सूर्य के राशि प्रवेश के दिन जो बार होता है वही उस पद के लिए चुना जाता है।

राजा के लिए राशि प्रवेश नहीं, केवल चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का वार देखना है। इसी तरह मेघेश सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के वार पर निर्भर करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

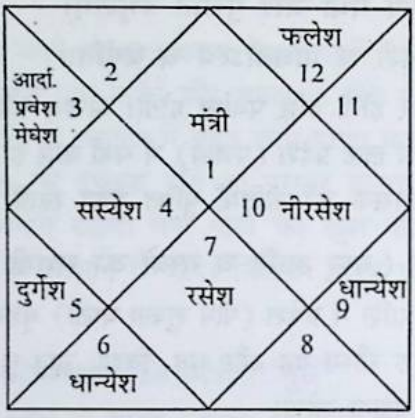

यदि उपरोक्त पदाधिकारियों के स्थान पर कोई और ग्रह चुना जाये तो फल किस प्रकार के होंगे इसका विचार अनुलग्न में देखें।

सम्वत् 2072 (सन् 2015-16) के लिए आकाशीय परिषद एवं उनका प्रभाव

नाम संवत्सर 'कीलक'

फल–शासकों में विवाद (युद्ध) अनाजों के मूल्यों में गिरावट एवं अच्छी वर्षा से संसार में वृद्धि।

नोट: परन्तु इस वर्ष 'आषाढ़' मास दो होने से जनता में कष्ट, खण्ड वर्षादि का योग बनता है।

नववर्ष (संवत्सर 2072) का प्रवेश, चैत्र कृष्ण 30 (शुक्रवार) दिनाँक 20 मार्च 2015 ई. को 15 घण्टे 6 मिनट पर कर्क लग्न ($3^{s}/21°–25^{s}$) आश्लेषा द्वितीय चरण में हुआ। कुण्डली निम्न प्रकार है–

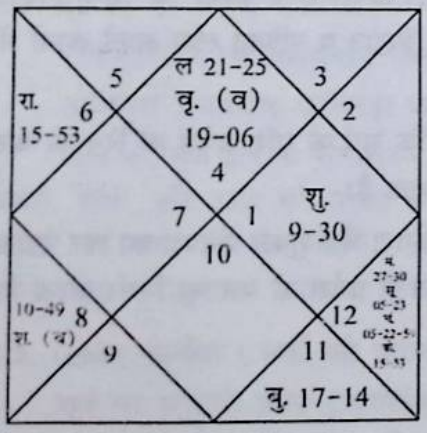

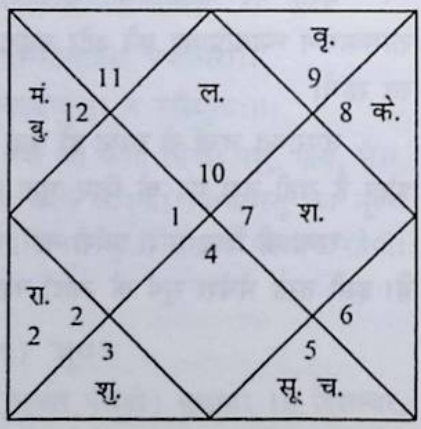

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ल.	3/21°25′	मंगल	11/27°30′	शुक्र	0/09–30
सूर्य	11/05°23′	बुध	10/17–14	शनि (च)	07/10–49
चं.	11/05°–22–59′	वृ. (व)	03/19–06	रा.	5/15–53

भोग्यदशा शनि 16 वर्ष 0 मास 28 दिन

लग्नेश चंद्रमा मीन राशि में मंगल, सूर्य तथा केतु के साथ चतुग्रही योग बना रहा है। गुरु (व) की नवम दृष्टि अपने घर में बैठे हुए इन ग्रहों पर पड़ रही है। बृहस्पति षष्ठेश होकर भी देख रहा है। लग्नेश का पंचमेश के साथ योग (नवम भाव में) (चं. + मंगल) देश की उन्नति में 'युवा पीढ़ी' का योगदान दिखा रहा है। नवमेश बृहस्पति का लग्न में बैठकर लग्नेश व नवमेश का स्थान परिवर्तन देश का उन्नत भविष्य दिखा रहा है। दशमेश मंगल तथा लग्नेश चंद्रमा के साथ धनेश सूर्य की युति धनवृद्धि, शासक की सफलता को इंगित कर रहा है। सूर्य (राजा का प्रतीक उच्चाभिलाषी है, लग्न में बृहस्पति नवम में केतु आधयात्मिक उन्नति दर्शाता है।)

तृतीय भाव में राहू से सूर्य (धनेश) + चंद्रमा लग्नेश तथा पंचमेश व दशमेश मंगल का दृष्टि संबंध सीमा व पड़ोसी राष्ट्रों से मित्रता व टकराव होने के योग दर्शाता है। धन भाव पर शनि (सप्तमेश व अष्टमेश) की दृष्टि आपदाओं के कारण धन-जन की हानि का योग बन रहा है। चतुर्थ भाव पर मंगल की अष्टम दृष्टि व अष्टमेश पर शनि (व) की दृष्टि षष्ठेश गुरु (व) की पंचम दृष्टि किसी भूकम्प तथा प्राकृतिक प्रकोप का भाजन बनना भी दर्शाती है। तृतीयेश व द्वादशेश बुध का अष्टम भाव में होना, गुप्त रूप से पड़ौसी व विदेशी गुप्तचरों का षड्यंत्र देश की शान्ति का भंग करने की कोशिश करेगा। परन्तु लग्न में गुरु उन सभी विपदाओं से देश की रक्षा करेगा। धार्मिक अनुष्ठानों के अधिक होने के कारण संकटों से बचाव होगा। नवांश में लग्नेश शनि दशम भाव में उच्च का बैठा है। दशमेश शुक्र की तृतीयेश व द्वादशेश बृहस्पति से सम सप्तम दृष्टि, तृतीय भाव में मंगल व भाग्येश बुध सरकार को सभी ओर से पड़ौसी राष्ट्रों से प्रेम सद्भावना का प्राप्त होना भी दिखा रहा है।

पंचम भाव में शनि (सप्तमेश-अष्टमेश) पर गुरु की दृष्टि, पंचमेश मंगल को नवम भाव में लग्नेश व धनेश से युति के अनुसार सरकार शिक्षा व नौकरी के क्षेत्र में जनहिताय कार्यों पर अधिक धन व्यय करेगी। अष्टमेश का पंचम में होने भी शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय परिवर्तन होने को इंगित करता है। चतुर्थ भाव विरुद्ध राजनैतिक दलों को दर्शाता है। शुक्र का दशम में बैठना सरकार के साथ उनकी सहमति भी दर्शाता है। तृतीय भाव मीडिया का है,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसका स्वामी बुध (जो पत्रकारिता का कारक भी है) अष्टम भाव में शनि की राशि में बैठा है, उसका नियंत्रक शनि पंचम भाव में बैठा है और गुरु से दृष्ट है। इसका प्रयोजन है कि मीडिया व पत्रकारिता का देश की उन्नति में शुभ योगदान रहेगा।

चतुर्थ भाव (आवासीय क्षेत्र) पर उसके स्वामी शुक्र की सप्तम दृष्टि दशम भाव (सरकार) से पड़ रही है। नवमेश व षष्ठेश गुरु (व) लग्न में बैठकर चतुर्थ पर दृष्टि दे रहा है। इसका अर्थ हुआ कि सरकार इस क्षेत्र में अद्वितीय कार्य करेगी। गुरु (व) की दृष्टि लग्न, चतुर्थ, पंचम, अष्टम व नवम भावों पर पड़ रही हैं जिससे प्रतीत होता है कि यह वर्ष जनता को सभी प्रकार की सुख सुविधाओं की उपलब्धि का वर्ष है।

षष्ठेश का लग्न में होना, लग्नेश का क्षीण होकर मंगल से पीड़ित होना, तृतीय भाव का पीड़ित होना, तृतीयेश का अष्टम में होना, अष्टमेश शनि (व) पंचम में बैठकर सप्तम व दशम, लग्न, तृतीय आदि भावों पर कुप्रभाव आता रहा है जो देश में हड़ताल, उत्पात, धरने आदि में युवाओं का भाग लेना दर्शाता है।

षष्ठेश का लग्न में बैठना, शनि वक्री की षष्ठ भाव पर दृष्टि चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष उन्नति संभावित है।

चंद्रमा तो हर वर्ष की कुण्डली में क्षीण होता है, इस बार चंद्रमा लग्नेश होकर भाग्य स्थान में गुरु की राशि में है और दोनों ने स्थान परिवर्तन किया है। इस वर्ष का राजा बहुत सफल होगा। देश भी उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा। चतुर्थेश चतुर्थ को देख रहा है। गुरु की दृष्टि भी शुभ है। सरकार द्वारा किए गए कार्य जनता के सुख, आवासीय योजना के कार्यों से जन-मानव को खुशी प्रदान करने में सफल होगी।

संवत्सर के नाम का भी प्रभाव वर्ष भर में प्राप्त होता है। इस वर्तमान संवत्सर का नाम ''कीलक'' है। यथा नाम तथा गुण के अनुसार यह वर्ष तनाव व क्षोभ का होगा। शासकों में टकराव के कारण जनता दुखी। अच्छी वर्षा के कारण सुमिक्ष व अनाज सस्ता हो।

परन्तु दो आषाढ़ मास के कारण कहीं-कहीं खण्ड वृष्टी भी है, सकती है।

(*i*) वर्ष का राजा शनि

इस वर्ष का प्रवेश 20 मार्च 2015 (शुक्रवार) को 15 घण्टे 06 मिनट पर हुआ। सूर्य उदय अगले दिन प्रतिपदा में हुआ। इसलिए शनिवार लिया गया वर्ष का राजा 'शनि' हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फल–इस कारण जनता को कष्ट होगा, खण्ड वृष्टि, धन-धान्य की कमी, कटुता व तनवापूर्ण वातावरण, रोग-शोक में वृद्धि।

शनौ नृपे कष्टमयं जनेषु। वृष्टिश्च स्वल्पा धनधान्यल्पम्।
दोषों नृपाणां बहुविग्रहस्यात्। प्रजासुपीड़ा बहु व्याधि दोषाः॥

(*ii*) 4 अप्रैल 2015 (चैत्र पूर्णिमा का शनिवार का चन्द्रग्रहण का प्रभाव मीन/कन्या Axis पर भी अपना प्रभाव देगा।)

(*iii*) मन्त्री मंगल

सूर्यदेव ने मेष राशि में 14 अप्रैल 2015 वार मंगलवार (वैशाख कृष्ण दशमी 2072) को 13 घण्टे 47 मिनट पर प्रवेश किया। इसलिए वर्ष का मंत्री मंगल हो गया। उस समय की कुण्डली–(इसी को जगत कुण्डली कहते हैं।)

जगत लग्न

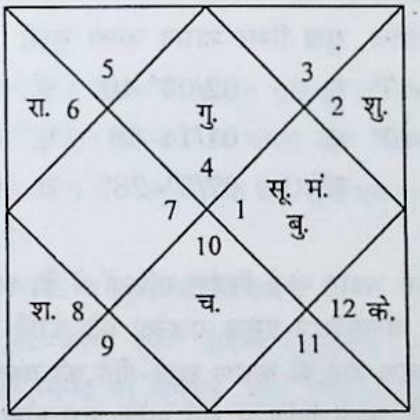

फल–उपद्रव बढ़ेगा। अन्न उत्पादन में वृद्धि, दुग्ध की कमी।

अवनिजों ननु मन्त्रिपदं गतो। भवति वस्यु गदाविजवेदन।
जनपदेषु जयं सुख संचयं। न बहुगोषु पयोद्विज कर्म च॥

इस कुण्डली में धनेश सूर्य दशम भाव में योग कारक मंगल के साथ है, सरकार आर्थिक रूप से संपन्न और प्रभावशाली रहेगी। उसे पुलिस व सेना का बार-बार प्रयोग करना पड़ सकता है। शिक्षा व सड़कों, यातायात के साधनों पर विशेष व्यय होगा।

(*v*) मेघेश-चंद्रमा

प्रथम अधिक आषाढ़ शुक्र षष्ठी (सोमवार) सम्वत् 2072 तदानुसार दिनाँक 22 जून 2015 को मिथुन राशि में गोचर करते हुए सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में 16 घण्टे 45 मिनट पर प्रवेश करेंगे। उस समय वृश्चिक लग्न उदय हो रहा होगा–कुण्डली नीचे देखें–

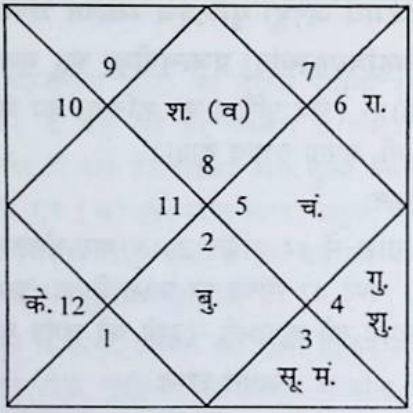

अच्छी वर्षा शान्ति, सुख स्थिर शासन जनता सुखी

ल.	07/03°-17-47′	सू.	02/06°-40′	चं.	04/15°–01′
मं.	02/04°-30′-40″	बु.	01/14–38	वृ.	03/25–57
शुक्र	3/20°–58′	शनि(व)	07/5°–28′	रा.	05/11°–43′
के.	11/11°-43′				

फल–सूर्य तथा चंद्रमा दोनों निर्जल राशियों में है। चंद्रमा पूर्व–फाल्गुनी नक्षत्र में है, जिसके फलस्वरूप प्रमुख राजनेता की कीर्ति एवं ख्याति बढ़ेगी। सोमवार को आर्द्रा प्रवेश होने के कारण खाने-पीने की वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि, सुभिक्ष होता है। षष्ठी तिथि में सूर्य प्रवेश शुभ होता है, जनता में सुख की वृद्धि।

आर्द्रा प्रवेश मध्याह्न व संध्या काल के मध्य होने से फसलों व खेती को संकट परन्तु विशेष हानि नहीं होगी।

सिद्धि योग के कारण धन, धान्य, कपासादि की वृद्धि। साथ ही रोग फैलने की संभावना है।

सूर्य, चंद्रमा तथा लग्नेश मंगल निर्जल राशियों में हैं, लग्न में वायु तत्त्व का ग्रह शनि व अल्प जल राशि का है। गुरु (उच्च का) जलीय राशि से दृष्टि दे रहा है। मित्र बुध पृथ्वी तत्त्व राशि से देख रहा है। पूर्व में अच्छी शुभ वृष्टि, परन्तु तेज वायु के वेग के साथ अच्छी वर्षा हो, इशान कोण (द्वितीय व तृतीय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाव) पर गुरु एवं शुक्र की पूर्ण दृष्टि, भारी वर्षा, जल प्लावन की संभावना, उत्तर दिशा में अर्ध जलराशि कुंभ, जलीय ग्रह चंद्रमा देख रहा है। उत्तर दिशा के क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा, वायव्यकोण जल तथा अग्नि तत्त्व हैं, इस दिशा पर गुरु की दृष्टि है, पर्याप्त वर्षा का संकेत है। कहीं-कहीं खण्ड वृष्टि हो सकती है।

पश्चिम दिशा (मकर राशि) कुछ स्थानों पर वायु प्रवाह तीव्र होगा। क्योंकि इस दिशा में पृथ्वी तत्त्व एवं अर्ध जल राशि होने व उस पर बुध का प्रभाव है।

नैऋत्य कोण (दक्षिण-पश्चिम) मिथुन व कर्क राशि में विरोधावासी विचारोत्तेजक स्थिति है, इसके अर्ध भाग में अग्नि तत्त्व के सूर्य और मंगल हैं, निर्जल राशि के हैं और दूसरे भाग में जलीय राशि में उच्चस्थ गुरु व शुक्र जलीय ग्रह बैठे हैं।

नवांश कुण्डली में इस कोण में जलीय राशियाँ कुंभ तथा मीन क्रमशः तथा कुंभ में गुरु बैठे हैं। जिन पर शनि व मंगल तथा चंद्रमा की दृष्टि है।

सूर्य देव मंगल से आगे हैं परन्तु मंगल का सूर्य एवं बुध के मध्य होना अधिक गर्मी दिखाता है।

कहीं-कहीं अल्पवृष्टि व सूखे की संभावना है।

(*iii*) **सप्येश शुक्र**–ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी (शुक्रवार) तदानुसार 15 मई 2015 को 10 घण्टे 37 मिनट पर सूर्यदेव 'वृष' राशि में प्रवेश करेंगे।

सूर्य को लग्न मानकर

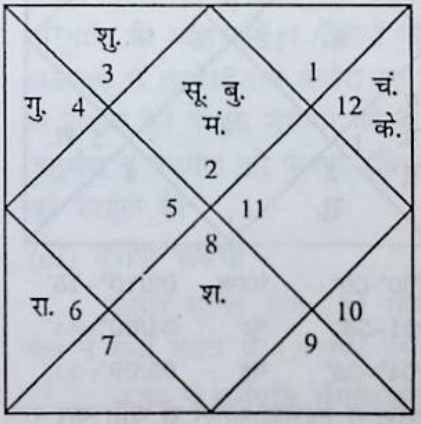

वर्ष प्रवेश की कुण्डली

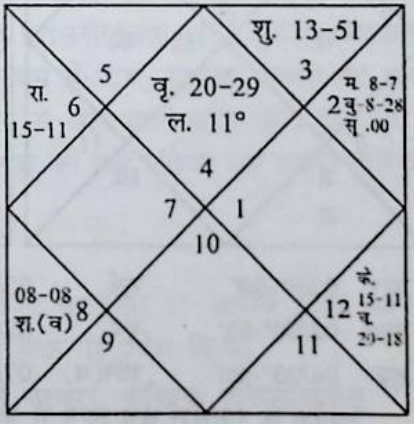

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*i*) लग्न में मंगल सप्तम में शनि टिड्डी दल, कीट से हानि, वर्षा कम, द्वितीय भाव में शुक्र (सौम्य ग्रह), लाभ भाव में चंद्रमा अच्छी फसल हो सकती है। सप्तमस्थ शनि पर गुरु की दृष्टि उसकी अशुभता को कम कर रही है। लग्न में बुध फसल की वृद्धि दर्शाता है। इसका अर्थ है कि कृषक यदि ध्यान दे, समय पर उसकी रक्षा करना शुभ फल हो सकता है।

(*ii*) यहाँ लग्न में गुरु, सप्तमेश शनि मंगल की राशि में मंगल से दृष्ट (अशुभ) परन्तु वृ., बुध, धनेश सूर्य की दृष्टि शुभता दे रही है, बुध व शुक्र का स्थान परिवर्तन भी शुभ संकेत दे रही है।

(*iv*) सष्येश (ग्रीष्म ऋतु की फसल) गुरु

द्वितीय अधिक आषाढ़ कृष्ण अमावस्या (गुरुवार) तदानुसार 17 जुलाई 2015 को 24 घण्टे 2 मिनट पर 'कर्क' राशि में प्रवेश किया

भवति सस्यपतौ सुखन्दितं सकलसौरदयधनागम शालिता।
जलधरा जदा बहुतस्यदा रासपंयाशि बहूनि धनानि च॥

इसके प्रभाव से सुख, धन, धान्यादि की वृद्धि, सुवृद्धि, खाने-पीने की वस्तु, अनाज, रस पदार्थों की वृद्धि।

लग्न

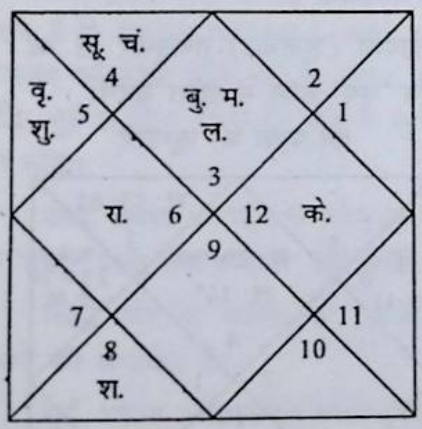

नवांश

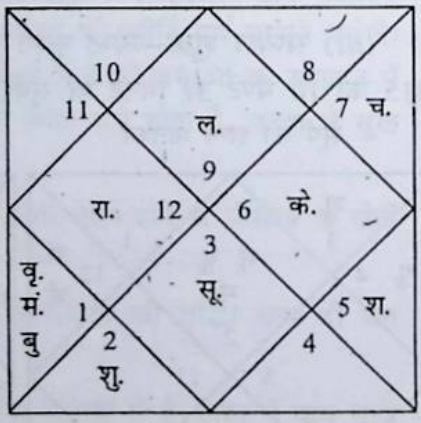

लग्न	02/8°-59′	सूर्य	03/00°-00′	चंद्रमा	03/10°–15′
मंगल	02/20°-51′	बुध	02/21–56′	गुरु	04/00°–31′
शुक्र	04/05°–23′	शनि(व)	07/04°–25′	राहू	05/09°–21′

लग्नेश व चतुर्थेश बुध लग्न में षष्ठेश व लाभेश मंगल से युति कर रहा है। अष्टमेश व नवमेश शनि षष्ठभाव में बैठकर अष्टम तृतीय भाव को पीड़ित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर रहा है। तृतीय व चतुर्थ भाव का पीड़ित होना व कारक शुक्र का पीड़ित होना वाहन दुर्घटनाओं को इंगित करता है। अग्निकाण्ड, जलयान आदि की दुर्घटना हो सकती है।

(*v*) धान्येश (शरद ऋतु की फसल) बुध मार्गशीर्ष शुल्क 5 (पंचमी) (बुधवार) तदानुसार 16 दिसम्बर 2015 को 14 घण्टे 43 मिनट पर धनुराशि में प्रवेश किया।

बहुसस्ययुता पृथ्वी रसानां च महर्घता।
नीतियुक्ता सदा भूपा बुधे धान्याधिये सति।

बुध ही बाजार भावों में तेजी लाता है, शासकों की नीतियाँ युक्तियुक्त रहती हैं। उत्पादन अच्छा होता है। नीचे दी गई कुण्डली देखें–

लग्न कुण्डली

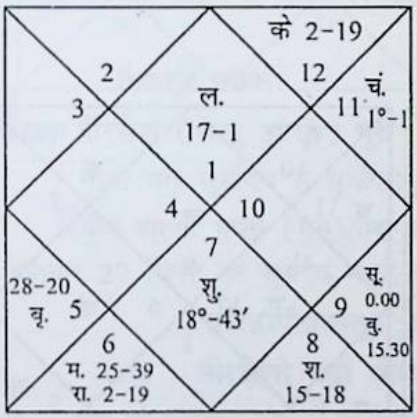

नवांश कुण्डली

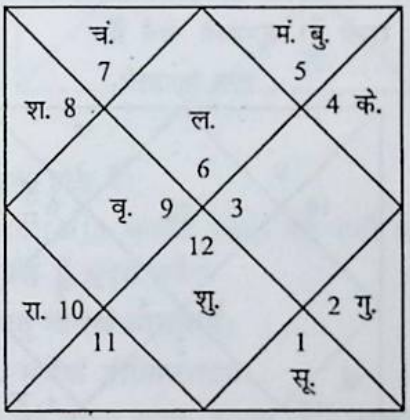

विशेष बात यह है कि पंचमेश (सूर्य) तथा नवमेश (गुरु) का स्थान परिवर्तन भी योजनाओं व नीतियों को प्रशंसनीय बता रहा है। विधि, न्यायालय, छठेभाव में लग्नेश तथा षष्ठेश का नवम में जाना, दशमेश लाभेश का अष्टम से द्वितीय को देखना सरकार को करों से आय उनमें वृद्धि आदि दर्शा रहा है। चतुर्थेश व नवमेश की परस्पर दृष्टि देश की मान प्रतिष्ठा एवं सफल योजनाओं को दर्शाती है।

(*vi*) दुर्गेश चंद्रमा

श्रावण शुल्क तीज (3) सोमवार तदानुसार 17 अगस्त 2015 को सूर्य देव ने मघा नक्षत्र में 12 घण्टे 25 मिनट पर प्रवेश किया।

अथ न दुर्गपति मृगलांछनो नरवराः सुखिनः शुभशासनात्
बहुधने क्षुजे गोरसभोगिनो नृपतयो नरगीत पराक्रमः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्रमा के दुर्गेश होने से गणमान्य व्यक्तियों का मान सम्मान बढ़ता है। राजनेता प्रशासन-व्यवस्था अच्छी तरह से चलाते हैं। जीवन स्तर में प्रगति होती है। जनता राजनेता (सरकार) से संतुष्ट व प्रसन्न रहती है।

(*vii*) धनेश (कोषाध्यक्ष) वृहस्पति

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी (गुरुवार) तदानुसार 17 सितम्बर 2015 को 12 घण्टे 19 मिनट पर सूर्यदेव ने कन्या राशि में प्रवेश किया।

समनसां च गुरुर्द्राविणाधिपो वणिज वृत्तिपराः सुखभाजना।
फलित पुष्पित भूमिरुहाः सदा विविध द्रव्ययुता भुवि मानवाः॥

गुरु के धनेश होने से मानव जाति पुण्य कर्म करता बनती है, व्यापारियों को धन लाभ होता है, वृक्षों पर फल व पुष्प अधिक मात्रा में लगते हैं।

जनता का जीवन स्तर प्रगति करता है, जनता भी प्रमुख राजनेता से प्रसन्न रहती है। कुण्डली नीचे है–

लग्न कुण्डली

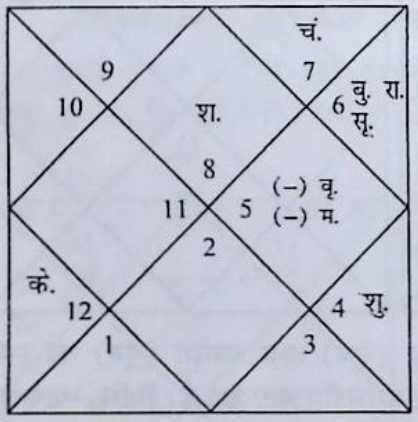

नवांश कुण्डली

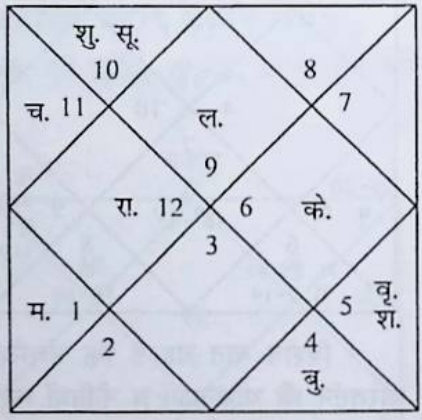

लग्नेश मंगल दशम भाव में दशमेश सूर्य तथा पंचमेश व धनेश गुरु के साथ बेठा है जो प्रमुख नेता व सरकार के अच्छे कार्यक्षमता को दर्शाता है। भाग्येश तथा द्वादशेश का स्थान परिवर्तन विदेशों में भारत का सम्मान; उनके साथ समझौतों से देश का भविष्य उज्जवल होगा।

(*viii*) रसेश (रसदार वस्तुओं का स्वामी) शनि

आश्विन शुल्क चतुर्थी (रविवार) तदानुसार 7 अक्टूबर 2015 को 0-17 बजे सूर्यदेव तुला राशि में प्रवेश करेंगे।

रविसुते रसपे रस संक्षयो न जलदा गद दाश्च पयोधराः।
अजगजाश्व खरादिहति र्भेवदपि धरा रसगर्भजला न हि॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि, रमेश होने से भूमिगत जलस्तर में कमी, वर्षा का अभाव रहे। हाथी, घोड़े, गधे, बकरी आदि पशुओं की प्राणहानि होती है। पृथ्वी पर रस तथा जल का अभाव होना। इस समय की कुण्डली नीचे है–

लग्न कुण्डली

नवांश कुण्डली

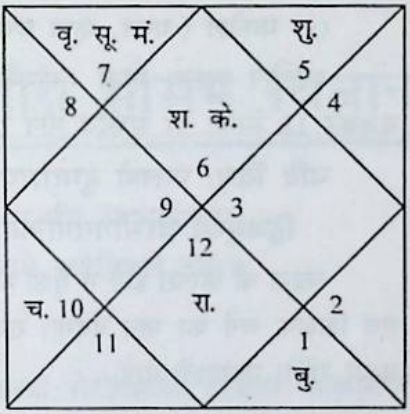

(*ix*) **नीरसेश (धातु आदि) गुरु**

नोट: वार सूर्योदय से सूर्योदय तक होता है।

पौष शुल्क षष्ठी (गुरु)/तदानुसार 14/15 जनवरी 2016 को राची 01 बजकर 27 मिनट पर सूर्यदेव मकर राशि में प्रवेश करेंगे।

हरिद्रापीतवस्तूनां धातु नामर्थ वाससाम्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा।।

गुरु के नीरसेश होने से पीले रंग की वस्तुएं हल्दी, पीतल, पीले वस्त्रादि सस्ते होंगे। जनता में परस्पर प्रीति बढ़ेगी। कुण्डली नीचे है।

लग्न कुण्डली

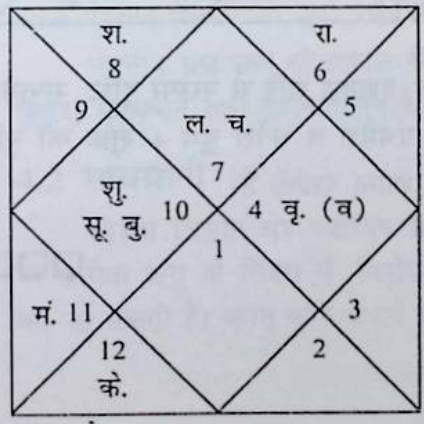

नवांश कुण्डली

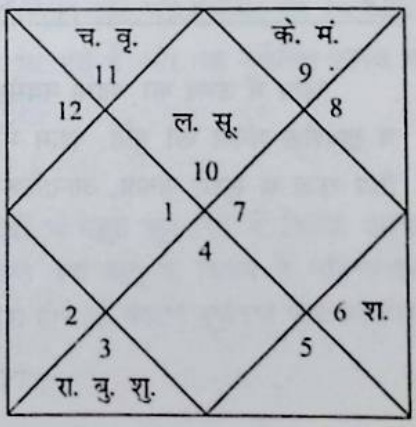

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नेश, शुक्र, लाभांश सूर्य, नवमेश व द्वादशेश बुध चतुर्थ भाव में गुरु (व) द्वारा दृष्ट हैं, दशमेश चंद्रमा लग्न में। देश में आंतरिक स्थिति शान्तिमय होगी। धनेश व पंचमेश शनि व मंगल का स्थान परिवर्तन धनवृद्धि, दोनों स्थानों पर गुरु की दृष्टि मूल्यों में कमी, अच्छी आर्थिक स्थिति को दर्शाता है।

(x) फलेश (फल, फूल तथा सब्जी) चंद्रमा।

फाल्गुन शुल्क षष्ठी (सोमवार) तदानुसार 14 मार्च 2016 को 11 बजकर 18 मिनट पर सूर्यदेव मीन राशि में प्रवेश करेंगे।

यदि विधुः फलपो दुमराशयः फलयुता व्रतिभिः कुसुमैर्युताः।
द्विजमुखा वरभोगसमन्वित। नृपतयो नयापालन तत्पराः॥

चंद्रमा के फलेश होने से वृक्षों में फल तथ फूल बहुत होंगे; विद्वान-ब्राह्मणों एवं शिक्षक वर्ग का मान बढ़ेगा। राजनेता न्यायप्रिय होंगे। जनता की सेवा में तत्पर रहेंगे। कुण्डली देखें–

लग्न कुण्डली

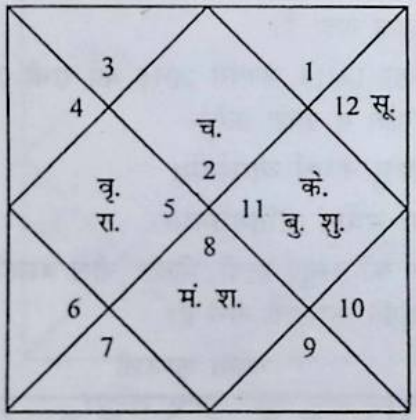

नवांश कुण्डली

लग्न में उच्च का चंद्रमा नवमेश, दशमेश शनि से परस्पर दृष्टि, सप्तमेश व द्वादशेश मंगल की युति, दशम में पंचमेश व धनेश बुध + शुक्र की युति प्रिय राजा व सुखी जनता, आन्तरिक शान्ति दर्शाती है।

❑❑❑

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय

4 ज्योतिषीय मौसम विज्ञान

यद्भासा भासते सर्व भू-नीर-गगनथितम्।
शिवाय सिद्धरुपाय तस्मै ज्योतिष्मते नमः॥

4.1 विषय प्रवेश

हमारे पूर्वजों ने जब आकाश में नक्षत्रों, सैटेलाइटस, कोमेट्स, आकाशगंगा आदि को देखा होगा तो उनके मस्तिष्क में उनके विषय में जानने की अभिलाषा जागी होगी। मानव मस्तिष्क में खोज और ज्ञान प्राप्ति की ललक सदैव से, यानि सभ्यता के प्रारंभ से ही है, जो उसको आकाशीय पिंडों के गोचर व उनके पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने के लिए अवश्य उत्साहित करते रहे होंगे। पूर्व आचार्यों, विद्वानों, खगोलशास्त्रियों व ज्योतिषियों, ज्ञान पिपासुओं, चिन्तनशील व्यक्तियों, साधकों आदि ने गहन अध्ययन चिर काल तक किया होगा। सच्ची लगन और सतत अध्ययन द्वारा ही आकाश को रात्रि भर देखा होगा। फलस्वरूप वह दिन व रात्रि मान, वर्ष, मास, अधिक मास (पुरुषोत्तम मास, मलमास) आदि को निर्धारित कर पाये होंगे। भारत के विश्वविख्यात खगोल शास्त्री आर्यभट्ट ने दो पुस्तकें–आर्यभट्ट तथा तंत्र की रचना की, उनके पश्चात् वराहमिहिर द्वारा पंच सिद्धांतिका और कई पुस्तकों की रचना हुई।

भारतीय ग्रंथ ज्ञान के प्रकाश से भरे पड़े हैं और वह ज्योतिष शास्त्र के सुन्दर, मूल्यवान तथा चमकते नगीने है।

4.2 सावधानी

मौसम विज्ञान पर ज्योतिष ग्रंथों में बहुत सूत्र दिये हैं जिनके आधार पर प्रत्येक ऋतु के विषय में, विशेषतया वर्षा ऋतु के विषय में भविष्यवाणी की जा सकती है। भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण पूर्णतया वर्षा पर निर्भर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करता है। नदियाँ, नहरें आदि भी वर्षा पर निर्भर करती हैं। शायद इसीलिए ज्योतिष के आचार्य ने वर्षा ऋतु पर बहुत जोर दिया और वर्षा होगी, नहीं होगी, कम होगी यानि वृष्टि, अनावृष्टि अथवा अति वृष्टि के योग, सूखे के योग, अकाल के योग, बाढ़ व भूस्खलन के योगों की खुलकर चर्चा की है। यहाँ एक-एक करके वर्षा विज्ञान के, जयोतिष दृष्टिकोण से, सभी पक्षों की चर्चा करेंगे।

इससे पहले कि ज्योतिष मौसम विज्ञान के आधार पर भविष्यवाणी की जाए, ऋतुओं, भौगोलिक स्थिति आदि का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होना चाहिए। क्योंकि खेती, ऋतु, मिट्टी, प्राकृतिक स्थिति, नदी आदि पर निर्भर करती हैं। बाढ़ नदी के आसपास (निचले क्षेत्रों में), भूस्खलनन पहाड़ी (ऊँचाई वाले) क्षेत्र में, साइक्लोन व सुनामी समुद्री क्षेत्र में हो सकते हैं। इसलिए स्थान, प्रांत व देश की इन परिस्थितियों को जानकर ही फलित करना है। भूमध्य रेखा पर अच्छी वर्षा की संभावना होनी चाहिए, पहाड़ी क्षेत्र व जंगल व समुद्री तट पर अच्छी वर्षा की आशा की जा सकती है, जबकि रेगिस्तान में यह फलित गलत हो जाएगा। गर्म व सर्द मौसम विश्व के कई भागों में होते हैं। नदी व गर्म मौसम वर्षा को बढ़ावा देते हैं। जंगलों का अधिक होना वर्षा के लिए अच्छा है। ग्रह स्थिति का फलित सूत्रों के आधार पर करने के लिए देश, काल तथा पात्र का ध्यान रखना बुद्धिमत्ता होगी।

4.3 सूर्य व चंद्रमा आदि ग्रहों की भूमिका

मानव ने सबसे पहले सूर्य तथा चंद्रमा को देखा होगा और उसकी ओर आकर्षित हुआ होगा। यह भी जान लिया होगा कि स्थावर, जंगल सभी प्राणियों को सूर्य से प्राण प्राप्त होते हैं। ग्रह, पृथ्वी, ऋतुऐं, आकाश तथा सारे ब्रह्माण्ड की गतिविधियाँ सूर्य के ऊपर निर्भर करती हैं। जब यह जान गया तो सूर्य की उपासना प्रारंभ कर दी। ज्योतिष के आचार्यों ने भी सूर्य, चंद्र तथा ग्रहों के प्रभाव को जाना और इनकी महत्ता से मानव को अवगत कराया।

चित्रं देवानामुद्गदनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य-आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥ (ऋग्वेद)

यह भी सर्वविदित है कि सूर्य की स्थिति में सूक्ष्मतर अंतर/परिवर्तन भी दिग्दाह, उलकापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल, राजनैतिक उथल पुथल, झगड़े देश में/पृथ्वी पर कहीं भी हो सकते हैं। ब्रह्माण्ड में हो रही घटनाओं का ग्रहों व नक्षत्रों से संबंध है। यह तथ्य आज के वैज्ञानिक एवं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिक्षित वर्ग भी जान गए हैं। (जो नहीं मानते थे उनको 26 दिसम्बर 2004 के सुनामी तथा केदार-बद्री क्षेत्र में हुए प्रकृति के प्रकोप ने समझा दिया) ज्योतिष शास्त्र ही केवल एक ऐसा विज्ञान है जो ब्रह्माण्ड में होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी कर सकता है और विश्व के व मानव के कल्याण के लिए पूर्वज्ञान देकर उन आपत्तियों से बचने का समय और उपाय बताता है। ग्रहों के प्रभाव का मानव जीवन पर कब/कैसा प्रभाव पड़ता है इसके ज्ञान का प्रसार भी ज्योतिष शास्त्र ने किया है।

4.4 खेती-बाड़ी ही आधार है मानव जीवन का

सदैव से मानव पृथ्वी को माता मानता रहा क्योंकि कृषि से ही उसकी भूख तथा नदियों से प्यास की तृप्ति हुई है। कृषि ही मानव जीवन के जीवित रहने का एक सबसे बड़ा साधन बना। इससे प्राप्त अनाज, चारादि सभी जीवों का आधार रहा।

भारत भी एक कृषि प्रधान देश है, जो वर्षा पर निर्भर करता है। नदियाँ भी बहुत महत्त्व रखती हैं। नदियाँ फिर वर्षा और बर्फ गिरने पर निर्भर करती हैं। इसीलिए ऋषियों व ज्योतिष के आचार्यों ने वर्षा विज्ञान पर अधिक ध्यान दिया और कुछ ज्योतिषीय योगों को प्रतिपादित किया है।

4.5 ग्रह योग, नक्षत्र व तिथियों के परस्पर संबंध के प्रभाव

ऋषियों ने निम्नलिखित स्थितियों का वर्णन किया है–

(*i*) ग्रहों का परस्पर संबंध जैसे स्थिति, दृष्टि तथा युति (स्दृयु) का प्रभाव।

(*ii*) ग्रहों के द्वादश राशियों व 28 नक्षत्रों में भ्रमण का प्रभाव।

(*iii*) तिथि, वार तथा नक्षत्र के योग का प्रभाव।

(*iv*) सूर्य व चंद्र का नक्षत्र प्रवेशादि।

(*v*) ग्रहों का अस्त होना व उदय होना।

(*vi*) ग्रहों का वक्री व मार्गी होना।

(*vii*) ग्रहों का अतिचारी व मंद व स्थिर होना आदि।

4.6 ज्योतिषीय योग एवं ब्रह्माण्ड में प्रति क्षण होने वाली घटना/परिवर्तन

(*i*) अभी तक चर्चा में लिखे गए योगों के द्वारा ऋतु व उनमें होने वाले परिवर्तन, प्राकृतिक शुभाशुभ घटनाऐं जैसे वृष्टि, अतिवृष्टि,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाढ़ादि, ज्वारभाटा, तूफान रोगादि, का फैलना सभी नियंत्रित होते हैं।

यह नियम केवल भारत के लिए ही नहीं है बल्कि संसार भर के लिए हैं, चाहे कोई देश हो, यह योग प्रभावशाली रहेंगे। जिस युग में यह नियम बने उस समय के भारत का मानचित्र आज के भारत से भिन्न था, आज के भारत का क्षेत्र बहुत कम हो चुका है। उस समय अखण्ड भारत था।

(*ii*) इस पुस्तक में हम आज के भारत के संबंध में विशेष और आसपास के क्षेत्र के विषय में भी चर्चा करेंगे। कहीं-कहीं अन्य देशो का भी उदाहरण देकर सूत्र को समझने का प्रयास रहेगा। संहिता ज्योतिष में सबसे बड़ी कठिनाई क्षेत्र का पता करने में होती है यानि घटना कहां होगी। नियम के शत प्रतिशत सही फल होते हैं इसमें कोई शंका नहीं हैं। पिछले हजारों वर्षों से पृथ्वी पर बहुत परिवर्तन, भूकम्पों, युद्धों आदि के कारण हो चुके हैं, कई नए देश उभर आए हैं। इस पर शोध की आवश्यकता है। इसी ध्येय की पूर्ति के लिए 1987 में भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद चेन्नई जिसके संस्थापक प्रधान आज के युग के वराहमिहिर स्वर्गीय डा. बी. वी. रमन बंगलौर थे, के तत्त्वधान में भारतीय विद्याभवन दिल्ली में सर्वप्रथम अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम से ज्योतिष की शिक्षा आरंभ की। आईकास की दिल्ली शाखा ने यह कार्य प्रारंभ किया था। ध्येय था कि शिक्षित वर्ग के ज्योतिष सीखने के बाद, उस विषय पर शोध की संभावना होगी। आज सैंकड़ों डॉक्टर, इन्जीनियर, सी.ए., सी.एस., एम.बी.ए., प्रोफेसर, व्यापारी, उद्योगपति, आईकास द्वारा लगाई गई कक्षाओं से 'द्विवर्षीय कोर्स' कर चुके हैं। डाक्टर रोगी के उपचार विशेषतया शल्य चिकित्सा से पहले उसकी जन्मकुंडली पर विचार करने लगे हैं और उन्हें सफलता भी मिल रही है। यदि इस पर शोध होने लगे तो यह विज्ञान मानव कल्याण व विश्व शांति की स्थापना में सबसे अधिक उपयोगी होगा। पूर्व आचार्यों व ऋषियों का ध्येय किसी व्यक्ति विशेष को लाभ पहुंचना नहीं था वह तो **वसुधैव कुटुम्बकम** को मानने वाले थे और **सर्वेभवन्तु सुखिन** की भावना से ज्योतिष नियमों को प्रतिपादित किया था। दुर्भाग्य से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोई शोध नहीं हो रहा है, हां विद्वान यह दावा कर रहे हैं कि वह शोध कर रहे हैं और अंतर्राष्ट्रीय शोध संस्थान भी अनेकों खुल गए हैं। हम भी आशा करते हैं कभी तो लहर आयेगी, कोई तो आगे आयेगा और एक दिन वास्तव में शोध होगा, इस ही भावना से अपने अनुभव से शिक्षा देकर व पुस्तक लिखकर ज्ञान बांट सकते हैं। शोध किसी एक व्यक्ति के बस की बात नहीं है इसके लिए बड़ी संख्या में विद्वान जुड़ें और सभी स्थानों (प्रांतों) में ऐसी शाखाऐं चलें, तो कुछ वर्षों में यह कार्य अवश्य फल लायेगा।

4.7 भारत की ऋतुओं तथा वर्षा की स्थिति

यह षड्ऋतु का देश है। सूर्य का द्वादश राशियों में भ्रमण इसको नियन्त्रित करता है। प्रत्येक दो राशियों में सूर्य का गोचर एक ऋतु को बनाता है।

(अ) चंद्रमास (विक्रमी सम्वत् के मास)

1. प्रत्येक मास का नाम किसी न किसी नक्षत्र पर आधारित है। नक्षत्र तो सत्ताइस हैं, इसलिए केवल बारह नक्षत्रों के आधार ही द्वादश मासों का नामकरण हुआ है।

2. नक्षत्र व उनके स्वामी

(i)			स्वामी
1. अश्विनी	10. मघा	19. मूला	केतु
2. भरणी	11. पू. फा.	20. पू. आषाढ़	शुक्र
3. कृत्तिका	12. उ. फा.	21. उ. आषाढ़	सूर्य
4. रोहिणी	13. हस्त	22. श्रावण	चंद्रमा
5. मृगशिरा	14. चित्रा	23. घनिष्ठा	मंगल
6. आर्द्रा	15. स्वाति	24. शतमिषा	राहु
7. पुनर्वसु	16. विशाखा	25. पू. भाद्रा	गुरु
8. पुष्या	17. अनुराधा	26. उ. भाद्रा	शनि
9. अश्लेषा	185. ज्येष्ठा	27. रेवती	बुध

जिस नक्षत्र में चंद्रमा पूर्णिमा के दिन था, उस गत मास का नाम उस ही नक्षत्र के आधार पर रख दिया गया। चंद्रमास अमावस्या से प्रारंभ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होकर पूर्णिमा के दिन पूरा होता है। अमावस्या के समय सूर्य तथा चंद्र एक ही अक्षांश पर होते हैं, जैसे ही चंद्रमा आगे बढ़ता है (न्यू मून) नया मास प्रारंभ हो जाता है वह शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा होती है। जिस समय सूर्य से चंद्रमा 180 अंश पर होता है वह पूर्णिमा होती है, जैसे ही चंद्रमा 180 अंश से आगे बढ़ता है कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा होती है, इस ही समय से नया चंद्रमास प्रारंभ होता है। पैरा 3.2(1) (क) में देखें चैत्र मास फाल्गुन पूर्णिमा के बाद कृष्ण प्रतिपदा से प्रारंभ होकर चंद्रमा जब पुनः कन्या राशि में चित्रा नक्षत्र में होता है चैत्र मास की पूर्णिमा होती है। आज इतने वर्षों के बाद कभी-कभी थोड़ा अन्तर आ जाता है। परंतु मास के नाम वही रहते हैं।

(*ii*) द्वादश चंद्र मास

1. चैत्र	5. श्रावण	9. मार्गशीर्ष
2. वैशाख	6. भाद्रपद	10. पौष
3. ज्येष्ठ	7. अश्विन	11. माघ
4. आषाढ़	8. कार्तिक	12. फाल्गुन

(*iii*) नक्षत्र जिनके आधार पर चंद्रमास का नाम करण हुआ

1. चित्रा	5. श्रावण	9. मृगशिरा
2. विशाखा	6. पू./उ. भाद्रपद	10. पुष्या
3. ज्येष्ठा	7. अश्विनी	11. मघा
4. पू./उ. आषाढ़	8. कृत्तिका	12. पू./उ.फा.

(आ) अयन–सूर्य के द्वादश राशियों में गोचर (अयन) को दो भागों में बांटा गया-एक **'उत्तरायण'** दूसरा **'दक्षिणायन'** सूर्य के सायन कर्क (12 जून के आसपास) में प्रवेश से दक्षिणायन प्रारंभ होता है तथा सायन मकर (22 दिसम्बर के आसपास) में प्रवेश से **उत्तरायण** प्रारंभ होता है। इन दोनों आयन का ऋतु से विशेष संबंध है। **उत्तरायण** में दिनमान अधिक रात्रिमान कम होता है, सूर्य पृथ्वी के समीप होता है, इस कारण ऋतु गरम होती है। उधर **दक्षिणायन** में रात्रिमान अधिक दिनमान कम होता है, सूर्य पृथ्वी से दूर होता है, ऋतु ठंडी होती हैं। **दक्षिणायन** में देवताओं की रात्रि तथा **उत्तरायण** में देवताओं का दिन होता है। आषाढ़ शुक्ल एकादशी (सामान्यतः सायन कर्क के सूर्य में) को देवता शयन में चले जाते हैं। कार्तिक शुक्ल एकादशी (सूर्य के सायन मकर प्रवेश से पहले) हरिबोधिनी एकादशी को देवता जाग जाते हैं। इस बीच में विवाह, गृह प्रवेश, मूर्ति स्थापना आदि शुभ कार्य नहीं किये जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तरायण में सभी शुभ कर्म करने की अनुमति है और वह शुभ फलदायक होता है।

(इ) गोल–भचक्र को भी दो भागों में विभाजित किया पहला 'उत्तरी गोल' दूसरा 'दक्षिणी गोल'। इसका भी ऋतुओं पर विशेष प्रभाव है। सूर्यदेव का सायन मेष में प्रवेश से (20-21 मार्च) उत्तरगोल का प्रारंभ होता है और सूर्य के सायन तुला में (22 सितम्बर) प्रवेश से दक्षिण गोल का प्रारंभ होता है। पाश्चात्य देशों में इन्हें स्प्रिंग सीजन (Spring) तथा आटम (Autumn) सीज़न के नाम से जाने जाते हैं।

षड ऋतुओं की सारिणी

ऋतु का नाम	सूर्य की स्थिति	हिन्दी मास (विक्रमी संवत्सर का मास)
1. वसंत	सायन सूर्य का मीन में प्रवेश 19 फरवरी 2015 से 20 अप्रैल 2015 तक	फाल्गुन, चैत्र
2. ग्रीष्म	सायनसूर्य का वृष राशि प्रवेश 20 अप्रैल 2015 से 21 जून 2015	वैशाख-ज्येष्ठ
3. वर्षा	सायन सूर्य का कर्क राशि प्रवेश 21/22 जून 2015 से 23 अगस्त 2015	आषाढ़-श्रावण भादों
4. शरद	सायन सूर्य का कन्या राशि प्रवेश 23 अगस्त 2015 से 23 अक्टूबर 2015	आश्विन-कार्तिक
5. हेमन्त	सायन सूर्य का वृश्चिक राशि प्रवेश 23 अक्टूबर 2015 से 22 दिसम्बर 2015	मार्गशीर्ष-पौष
6. शिशिर	सायन सूर्य का मकर राशि प्रवेश 22 दिसम्बर 2015 से 19 फरवरी 2016	माघ-फाल्गुन

सूर्य तथा चन्द्रमा की गति से मास का निर्धारण, दोनों के भोगांशों के अन्तर से तिथि, दोनों के भोगांश जोड़ने से योग का पता चलता है। सूर्य ऋतुओं का नियंत्रक है, बुध तथा शुक्र जो आंतरिक ग्रह सूर्य के पास ही रहते हैं वह ऋतु के परिवर्तन में अथवा उनके सुहावना, तीव्र, लाभप्रद, हानिकारक आदि होने में सहयोग देते हैं। तापमान का घटना, बढ़ना, वर्षा का होना, कम होना या अतिवृष्टि सभी पर इनका भी प्रभाव बना रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4.8 ऋतुओं के अध्ययन की आवश्यकता

सभी ऋतुएं पृथ्वी पर पूरा प्रभाव डालती हैं। प्रत्येक ऋतु की उपज अलग-अलग है। ऋतु अच्छी होने से तथा उसके अपने समय से होने से खेतीबाड़ी 'वृक्षों पर फल-फूल' आदि के उत्पादन में वृद्धि होती है। ऋतु में विघटन होने पर सभी का उत्पादन प्रभावित होता है एवं रोग फैलता है। गर्मी के ठीक होने से वर्षा ठीक होने की संभावना होती है और वर्षा ठीक होने से सर्दी ठीक पड़ती है। कोई भी ऋतु अनियमित हो जाए तो फसल खराब हो जाती है। ऋषियों ने गहन शोध व अध्ययनोपरांत कुछ (नियम) सूत्र प्रतिपादित किए जिनके आधार पर आगे आने वाली ऋतु के विषय में पहले से ही भविष्यवाणी की जा सकती है। सब ऋतुओं का प्रभाव वर्षा ऋतु पर और वर्षा ऋतु का प्रभाव खेती पर और अनाजादि के उत्पादन पर, इन सबका प्रभाव बाजार भाव पर और बाजार भाव पर, देश की जनता की खुशहाली निर्भर करती है। वर्षा ऋतु के विषय में यहाँ चर्चा करेंगे।

4.9 ऋतुओं के संबंध में भविष्यवाणी करने के सूत्र

(*i*) मंत्री परिषद के पदाधिकारी

(*ii*) आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य के प्रवेश के दिन तथा समय के आधार पर बनाई गई कुण्डली 'आर्द्रा प्रवेश कुण्डली'। इसकी तिथि सामान्यतः 21-22 जून प्रतिवर्ष होती है।

उस ही दिन सूर्य सायन कर्क में प्रवेश करता है और दक्षिणायन शुरु होता है।

(*iii*) सप्तनाड़ी-चक्र (पैरा 4.10.3)

(*iv*) ग्रहों द्वारा बने योग व उनकी परस्पर स्थिति का अध्ययन जैसे-

एकराशि गतावेतौ धरापुत्रांगिरः सुतौ।

तथा मेघः न वर्षन्ति नवर्षाकाले न संशय।।

(*v*) अभी तक जिन सूत्रों का अध्ययन किया उनके साथ-साथ निम्नलिखित बातों को भी ध्यान देना है।

(क) अष्ट नाग

संवत्सर 2072 में सुतक्षक नामक नाग है।

जल बहुल, अल्प-उपज 'सिंघाड़ा, चावलादि प्रचुर मात्रा में, वर्षा अधिक, रोग, रोगाणु के कारण बढ़ेंगे, मलेरिया, डेंगू, स्वाइन फ्लू का अधिक भय, सर्प, विषधारी जीव के डंक से खतरा। बाढ़ से हानि की आशंका।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) द्वादश नाग में कंवल नाग–वर्षा कम व अन्न कम होता है।

(ख) सप्तक वायु में 'अतिवह' का फल

इस सम्वत् 2072 में अतिवह नामक वायु है। भीषण आँधी तूफान आदि के प्रकोप से वृक्षों व फसलों की हानि। प्रबल चक्रवात से आवासीय क्षेत्रों में जन-धन की हानि।

(ग) चर्तुस्तम्भ

पूर्ण ब्रह्माण्ड जल, वायु, अन्न तथा जड़ी बूटियों पर आधारित है। इसलिए चार स्तंभ, जल, तृन, वायु तथा अन्न का अध्ययन भी जनता की खुशहाली के लिए आवश्यक है। यह राष्ट्र की धन सम्पत्ति तथा प्रगति के विषय में भी ज्ञान देते हैं।

1. जल स्तम्भ–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को यदि रेवती नक्षत्र हो और उसका मान अधिक हो तो वर्षा अच्छी हो, गेहूँ, चना, चावल की उपज अच्छी हो। इनके मूल्यों में कमी का संकेत मिलता है।

सम्वत् 2072 में रेवती नक्षत्र का मान 12.22 प्रतिशत है जो बहुत कम है, नकारात्मक फल होंगे, खण्ड वृष्टि, पेय व सिंचाई, जल की कमी, दुभिक्ष की स्थिति भूमिगत जल में भी कमी। अनाज आदि महंगे, अकाल की संभावना तथा पानी की कमी।

2 तृण स्तंभ–वैशाख शुक्ल प्रतिपदा का यदि भरणी नक्षत्र हो तो उसका मान पशुओं के चारे व दूध की मात्रा पर प्रभाव डालेगा। सम्वत् 2072 में वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का मान 28.67 प्रतिशत है, इसलिए पशुओं के चारे की अच्छी उपज ना होगी। फल, फूल, सब्जी तथा जड़ी बूटी की मात्रा बहुत कम उपलब्ध होगी तथा वनस्पतियों की मात्रा में हानि।

3. वायु स्तंभ–ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को यदि मृगशिरा नक्षत्र हो तो उसका मान वर्ष में वायु किस प्रकार की रहेगी इसका ज्ञान देगा। सम्वत् 2072 में जयेष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र नहीं है। इसलिए वर्ष में वायु स्तंभ जलद मेघ वायु प्रवाह की कमी के कारण अभीष्ट दिशा निर्मित नदी में आगे नहीं बढ़ पायेगा। मानसून में देरी होगी तथा इसका अभाव रहेगा। फलस्वरूप वायुवेग क्षीण रहेगा, वातावरण में प्रदूषण के कारण तथा प्राकृतिक प्रकोप से कृषि उपज की हानि, अत्यधिक गर्मी के कारण वायुमण्डल के प्रदूषण से जनता को कष्ट, फसल व उत्पादन में क्षति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. अन्न स्तंभ–आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को यदि पुनर्वसु नक्षत्र उपलब्ध हो तो उसका मान इस विषय में जानकारी देगा।

सम्वत् 2072 आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का योग 31.49 प्रतिशत है। इसलिए अनाज की उपज कम होगी, गेहूँ, मक्का आदि के भाव चढ़ेंगे तथा जनता बेचैन रहेगी।

चारों स्तंभ कम है। अपर्याप्त हैं, इसलिए अल्पवृष्टि, अनावृष्टि, कुछ क्षेत्रों में अतिवृष्टि के कारण जन-धन का नाश, जलाभाव के कारण पलायन करना पड़े, आवास संकट उत्पन्न है। सरकार को इसका उपाय पहले ही करना होगा।

नोटः विस्तृत जानकारी आगे अनुलग्न में दी जा रही है।

(घ) चतुर्मेघ–अवर्तक, समवर्तक, पुष्कर तथा द्रोण।

सम्वत् 2072 में द्रोण मेघ होने का फल होगा कि धनधान्य परिपूर्ण, वर्षा पर्याप्त कुछ स्थानों पर बाढ़, जलपलायन से हानि।

मेघ की गणना–शक सम्वत् की संख्या में से 1509 घटाऐं, चार से भाग दें जो संख्या बचे वही मेघ होगा। इस वर्ष शक सम्वत् 1937–1509 = 428 ÷ 40 अतः मेघ वरुण होगा। अग्निहोत्र व कर्म काण्ड वाले ब्राह्मणों को, सात्विक जनों को मान मिलेगा। वर्षा अधिक व बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होगी।

(ङ) (अ) रोहिणी निवास

सूर्य जिस दिन मेष राशि में प्रवेश करे उस दिन के नक्षत्र की संख्या से रोहिणी नक्षत्र (चार) तक गिनती करें जो संख्या आए उसे नीचे दी गई संख्याओं में देखें–

रोहिणी वास	दिन नक्षत्र संख्या	समय वास	
तट पर	3, 7, 10, 14, 17, 21, 24, 28 = 8	साधारण वर्षा	धोबी
समुद्र में	1, 2, 8, 9, 15, 16, 22, 23 = 8	अति वृष्टि	माली
संधि	4, 6, 11, 13, 18, 20, 25, 27 = 8	खण्ड वृष्टि	व्यापारी
पर्वत	5, 12, 19, 26 = 4	छिड़काव	कुम्हार

नोटः अभिजित नक्षत्र नं 22 है।

सम्वत् 2072 में रोहिणी निवास समुद्र में है।

(आ) समय निवास

ऊपर देखें रोहिणी निवास कहाँ है और फिर नीचे दी गई स्थिति देखकर निर्णय करें–

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तट पर समय निवास धोबी के घर में।

समुद्र में–समय निवास माली के घर में, पर्याप्त वर्षा, सभी नदी, नालों, तालाबादि ज़ल से परिपूर्ण। समुद्र से प्राप्त वस्तुओं की मात्रा अधिक।

संधि–समय निवास वैश्य के घर में (व्यापारी के यहाँ)।

पर्वत–समय निवास कुम्हार के घर में

सम्वत् 2072 में रोहिणी निवास हुआ समुद्र में (समुद्रे तु महावृष्टि), समय निवास माली के घर में तो वाहन हुआ चातक इसलिए वर्षा पर्याप्त होगी। कुएं, तालाब, नदी में पानी खूब रहेगा।

(*vi*) **मन्दगति वाले ग्रह** जैसे गुरु व शनि की स्थिति व दृष्टियों का विचार करें, इनका प्रभाव भी कम नहीं होता।

(अ) गुरु का गोचर सम्वत् 2072 कर्क में वर्षारंभ से 13 जुलाई 2015 तक रहेगा। 14 जुलाई 2015 (मंगलवार) 6 घण्टे 26 मिनट पर सिंह राशि में प्रवेश कर वहाँ सम्वत् के अंत तक रहेगा।

वृहस्पतिर्यदा कर्क स्वल्पां मेघ प्रवर्षति।
राजभित्रिहश्चैक दुर्भिक्षं युत्र जायते।।

वर्षा की कमी और कृषि की उत्पत्ति कम होगी, दुभिद्यु होगा, विग्रह चौपाये महंगे, सोना, चांदी, घी, तेल, चावल महंगे। दामों में तेजी होगी। गुड़ चीनी के व्यापार में घाटा। शासकों में विवाद, संघर्ष अराजकता, राजविग्रह प्रजा के कष्ट, रोग का फैलाव; अनावृष्टि, रस, घृत, तिल, गुड़, शक्कर, कपास, खाद्यान्नों में तेजी। कर्क के गुरु होने से इस वर्ष का नाम 'आषाढ़ वर्ष' होता है। उसमें कंबल 'नामक' मेघ दक्षिण पूर्व में वर्षा करता है।

यदा सिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं तत्र जायते।
मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहुसस्या च मेदिनी।।

सिंह राशि में गुरु का गोचर

देव ब्राह्मण पूजा स्थान्नराणां मान्यताम् सताम्।
रोग विवादश्चान्योन्यं चतुष्पाद महर्घता।।

जब गुरु सिंह राशि पर संक्रमण करता है तो देव ब्राह्मणों धर्मनिष्ठ सज्जनों का मान सम्मान बढ़ता है। चाँदी, ताँबा, पीतल, चावल, तेल, गेहूँ के भावों में तेजी।

मलेच्छदेशे महायुद्धं छत्रमंश्च विड्वरम' यवन देशों में/राष्ट्रों में महायुद्ध एवं छत्र भंग हानि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुभिक्षं सर्पदशश्च मेघोप्याषाढ़भाद्रयोः।
श्रावणे वृष्टिरल्पैव सुकालः कीर्तिकेमतः

सिंह राशि में गुरु से सुभिक्ष होता है। कहीं-कहीं सर्पदंश का भय होता है अर्थात् रोगाणुओं से मलेरिया आदि का रोग फैलता है। आषाढ़ तथा भाद्रपद मास में अच्छी वर्षा, श्रावण मास में वर्षा की कमी एवं कार्तिक मास में सुकाल होता है। सुभिक्ष कारक मन्दी, तथा कृषी की अच्छी उपज होती है। गुरु के सिंह में गोचर के कारण इस वर्ष का नाम 'श्रावण' संज्ञक होता है। वासुकी मेघ होता है। आषाढ़ मास में गुरु का राशि परिवर्तन शासकों में क्लेश, मन्त्रियों को शारीरिक कष्ट, वर्षा का अवरोध, फसल की हानि, पूर्वोत्तर प्रदेशों में उत्तम वर्षा, दक्षिणी क्षेत्रों में भी उत्तम वर्षा।

(आ) शनि का गोचर तथा शनि की दृष्टियाँ

विभिन्न राशियों में शनि के विषय में नीचे पढ़ें

मेष, वृष तथा मिथुन मे	पूर्व की ओर
कर्क, सिंह तथा कन्या से	दक्षिण की ओर
तुला, वृश्चिक तथा धनु से	पश्चिम की ओर
मकर, कुंभ तथा मीन से	उत्तर की ओर

2 नवम्बर 2014 को (रविवार) 35 घटी/3 पल पर शनि वृश्चिक राशि में प्रवेश कर गए तथा वर्ष के आरंभ में अनुराधा नक्षत्र में (7/10°-50') विचरण रहे होंगे तथा 28 दिसम्बर 2015 तक इस ही नक्षत्र मे रहेंगे। इसलिए हिमाचल का कुल्लु क्षेत्र, तङगण, खस (नेपाल), कश्मीर के लोगों, मन्त्री और चक्रधर। (कुम्हार) तेली, पौंटरी उद्योग से सम्बन्धित लोग, शिल्पी पीड़ित रहेंगे। मित्रों में परस्पर तनाव, मतभेद, व टकराव उत्पन्न हैं।

ज्येष्ठा में शनि का फल (28 दिसम्बर 2015 से)

राजा, पुरोहित, राजाओं से पूजित, शूरगण एवं प्रधान कुल के लोगों को पीड़ित करता है।

25 मार्च 2016 को शनि (वक्री) होकर और ज्येष्ठा में ही भ्रमण कर रहे होंगे। पति/पत्नि की चिन्ता, धन का अपव्यय, बाहर के स्थानों से सम्बन्धित परेशानियाँ

शनि वृश्चिक राशि में संचार कर रहा होगा।

यदा वृश्चिकाः सौरिर्मेदिनी दुःख संयुता।
वर्षामात्रमर्थो चोर्ध्वमिन्द्रप्रस्थो विनश्यति।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब शनि वृश्चिक राशिगत हो तब पृथ्वी दुख से मुक्त रहे और एक वर्ष बाद दिल्ली को क्षति पहुँचे। वृश्चिक राशि के शनि में राजकोष, पक्षियों में युद्ध (आज के युग में वायुयानों का युद्ध), भूकम्प, मेघों का विनाश, मनुष्यों में कलह, कार्यों में विफलता, शत्रुओं को कलेश और अनेक प्रकार की बीमारियाँ उत्पन हों। चेचक, हैजा और क्षयरोग का प्रसार हो। कास-श्वास का रोग बढ़े, राजधानी में गड़बड़ उठा पटक, अनाजों में तेजी, रुई, चाँदी में अति तेजी। पूर्वीय देशों में युद्ध, उपद्रव की आशंका। दुर्भिक्ष के आचार।

कोई 'वार' चंद्रमास में चार बार से अधिक हो, वर्षा पर कृषि उत्पादन, बजार भाव तथा राजनैतिक घटनाओं पर विशेष प्रभाव होगा।

उदाहण–मार्गशीर्ष मास में पाँच शनिवार तथा पाँच रविवार पड़े जिसके फलस्वरूप पूर्णिमा के दिन (26 दिसम्बर, 2004) सुनामी आया और तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, अंडेमान निकोबार, सुमात्रा, श्रीलंका, इंडोनेशिया, मलेशिया आदि में विनाशलीला हुई।

नोटः इस बिन्दु पर विस्तार से विचार आगे अध्याय व अनुलग्न में किया जाएगा।

4.10 वर्षा विज्ञान के विषय में भविष्यवाणी के ज्योतिषीय यंत्रों व योगों पर विचार

4.10.1 आकाशीय परिषद-संवत्सर के काउंसिल के पदाधिकारी।

4.10.2 आर्द्रा प्रवेश कुंडली-सूर्य ने आर्द्रा नक्षत्र में 22 जून 2015 को 16 घण्टे 45 मिनट पर प्रवेश करना है। उस समय की कुण्डली नीचे दी जा रही है।

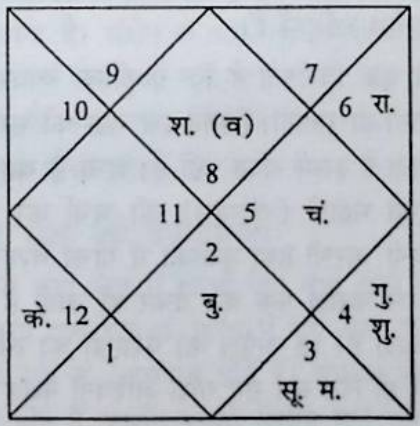

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4.10.3 सप्तनाड़ी चक्र

28 नक्षत्रों (अभिजित नक्षत्र को मिलाकर) को सात नाड़ियों में बांटा तो चार-चार नक्षत्र एक नाड़ी में आए। लिखने का क्रम कृतिका (3) सबसे पहले लिखें और आखिरी नाड़ी में आश्लेषा (9) आयेगा, आखिर से शुरु करें आश्लेषा के नीचे मघा (10) लिखें और पहले तक आए कृत्तिका (3) के नीचे विशाखा (16) आयेगा, तीसरा दौर विशाखा (16) के नीचे अनुराधा (17) लिखें। उपरोक्त क्रम से लिखते जाए, चतुर्थ दौर के अंत में अनुराधा (17) के नीचे भरणी आयेगा। ध्यान रहे 22 वाँ नक्षत्र अभिजित होगा।

	शुष्क			सौम्य	जलीय		
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चंद्रमा
नाड़ी	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
न	3 प	4 प	5 प	6 स	7 स	8 स	9 स
क्ष	16 न	15 स	14 स	13 स	12 स	11 स	10 स
त्र	17 न	18 न	19 प	20 प	21 प	22 प	23 प
	2 प	1 प	28 प	27 प	26 प	25 प	24 प

नोट प = पुल्लिग स = स्त्रीलिंग न = नपुंसकलिंग

सातों नाड़ियों के नाम व उनके स्वामी

नाडी	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चंद्रमा

पहले तीन शुष्क नाड़ियाँ हैं, मध्य में चतुर्थ नाड़ी सौम्य नाड़ी है और अंत में तीनों नाड़ियाँ जलीय नाड़ियाँ हैं।

इस चक्र की एक विशेषता है कि प्राकृतिक व्यवस्था की इससे सुन्दर कोई और व्याख्या नहीं हो सकती। जिसने इस चक्र को समझ लिया वह प्रकृति का उपासक बन जाता है इसमें संदेह नहीं है। **धन्य है वह ऋषि जिनकी यह रचना है।** पीछे हिन्दी महीनों (चंद्रमास) की चर्चा कर चुके हैं, उन्हें ध्यान रखें। सूर्य का अश्विनी, भरणी तथा कृतिका में गोचर वैशाख मास (अप्रैल) में होता है। उसी मास में फसल पक कर तैयार हो जाती है किसान उसे काटने के लिए तत्पर हो जाता है। 13 अप्रैल को वैशाखी का त्यौहार मनाया जाता है और उस 13/14 को ही दिन सूर्य मेष राशि अश्विनी नक्षत्र पवन नाड़ी में प्रवेश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करता है। इससे पहले रेवती नक्षत्र में दहन नाड़ी में होता है। प्रचण्ड नाड़ी (भरणी व कृत्तिका नक्षत्र) का स्वामी शनि एक शुष्क ग्रह है, इस समय में फसल पककर कटने के योग्य बन जाती है। वैशाख में किसान फसल काट लेता है। अब फसल से अनांज का दाना और भूसा अलग-अलग करने के लिए उसे छाड़ता है, छड़ने के बाद भूसा अलग करने के लिए हवा चाहिए, अब तक सूर्य पवन नाड़ी (रोहिणी नक्षत्र) में प्रवेश कर लेता है। पवन दाने से भूसा उड़ाने में सहायक होती है। अब अनाज खलियानों में चला गया, सूर्य दहन नाड़ी (मृगशिरा नक्षत्र) में आ गया, तो पृथ्वी तपने लगती, पुनः आने वाली फसल के उगाने की शक्ति का अर्जन होने लगा। ज्येष्ठ आषाढ़ तक यह खेत तपते हैं। आषाढ़ मध्य में सूर्य आर्द्रा में प्रवेश करता है। ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ऋतु का आगमन होता है। सूर्य के आर्द्रा से लेकर हस्त नक्षत्र तक भ्रमण काल में 'वर्षा ऋतु' रहती है। हस्त नक्षत्र सौम्य नाड़ी में पड़ता है, सूर्य के इसमें भ्रमण से वर्षा से संतप्त हो चुकी जनता को राहत होती है। शरद आगमन की प्रतीक्षा शुरु हो जाती है। किसान खेत में बीज रोपण कर देता है। सूर्य का भ्रमण (चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा तथा मूल (19वाँ) नक्षत्रों) दहन पवन, प्रचण्ड नाड़ियों में होता उस समय में जनता तेज सर्दी का आनन्द लेती है, उधर सर्दी की फसल तैयार होने लगती है और वर्षा की प्यास उठ जाती है, पू. आषाढ़ सौम्य नाड़ी में सूर्य के गोचर से पुनः वर्षा का योग बनता है सूर्य के धनु में प्रवेश ही धान्येश का निर्णय करता है। शरद ऋतु के बाद वसंत का आगमन होता है। सूर्य उत्तर आषाढ़ (21) नक्षत्र में प्रवेश करते हैं। इनका भ्रमण उ. आषाढ़ से श्रावण तक पौष तथा माघ महीनों का रहता है। 13 जनवरी को लोड़ी तथा 14 जनवरी को मकर संक्रांति का उत्सव मनाया जाता है। दक्षिण में पोंगल के नाम से उत्सव मनाते हैं कारण सर्दी की फसल (खरीफ की फसल) का तैयार होना है। संक्षेप में चक्र की सुन्दरता तथा उपयोगिता का वर्णन किया है। अनाज के पकने के बाद फाल्गुन में उत्तर में होली तथा पंजाब में होला मनाया जाता है। होली की अग्नि में अनाज का भोग लगाया जाता है चना और गेहूँ की नई फसल तैयार हो जाती है।

4.10.4 सप्तनाड़ी चक्र की उपयोगिता

इसके प्रयोग से वर्षा ऋतु में किसी दिन वर्षा होगी या नहीं इसका पता कर सकते हैं। प्रति वर्ष वर्षा ऋतु के प्रारंभ में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है। बुध व शुक्र भी सूर्य के आसपास होते हैं। बुध व शुक्र भी वर्षा के पूरे नियंत्रण में सहायक होते हैं अर्थात् इनकी स्थिति वर्षा की मात्रा का निर्धारण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करती है। चंद्रमा की भूमिका भी किसी से कम नहीं है। नीचे दिए गए योग इस बात की पुष्टि करेंगे कि चंद्रमा, बुध तथा शुक्र वर्षा ऋतु पर पूरा नियंत्रण रखते हैं।

(क) ग्रहों की परस्पर स्थिति।

(ख) सप्तनाड़ी चक्र की विभिन्न नाड़ियों में उनका गोचर।

(ग) (बड़े ग्रहों) मन्दगामी ग्रहों के सप्तनाड़ी चक्र में गोचर की भूमिका।

मन्दगति ग्रह भी अपना पूरा प्रभाव डालते हैं। शनि के प्रभाव से बाढ़ तूफान, खण्डवृष्टि आदि का भय रहता है। परन्तु यह एक ही राशि में बहुत समय तक रहते हैं। इनका प्रभाव सम्पूर्ण देश व पृथ्वी पर बना रहता है, इनकी विशेष दृष्टियाँ भी होती हैं जबकि अन्य ग्रहों की एक-एक दृष्टि (सप्तम दृष्टि) ही होती है। इसीलिए इनको बड़े ग्रह (Major Planets) कहते हैं। शनि के एक राशि में रहने के समय में वर्षा ऋतु दो या तीन बार भी आ जाती है तो क्या तीनों वर्ष एक ही प्रकार का प्रभाव पड़ेगा, जो संभव नहीं है। एक राशि में तीन नक्षत्र होते हैं ऐसे ग्रहों के नक्षत्र में विचरण से प्रभाव जाना जाता है। राशि में गोचर का प्रभाव तो है ही परन्तु नक्षत्र में गोचर का प्रभाव पहले वाले प्रभाव में कुछ परिवर्तन अवश्य लगता है। फलित करते समय इसका ध्यान भी करना होता है।

4.10.5 मेघों का गर्भाधान

गोचर करते समय सूर्य जब धनुराशि में, पूर्व आषाढ़ नक्षत्र में (संभवतः 28/29 दिसम्बर को) प्रवेश करता है वह समय बादलों के गर्भाधान का होता है। विक्रमी सम्वत् में चंद्रमास मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा के बाद जब चंद्रमा पूर्व आषाढ़ नक्षत्र में प्रवेश करता है। (वराहमिहिर)

अगले वर्ष में होने वाली वर्षा का आकलन करने के लिए दीवाली के तुरन्त बाद से ही इस कार्य को प्रारंभ किया जाता है। हर साल कार्तिक/मार्गशीर्ष मास अगले वर्ष होने वाली वर्षा के गर्भधारण या बीजारोपण उपयुक्त मास हैं।

नोटः पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का स्वामी 'आप' है। अतः मार्गशीर्ष शुल्क प्रतिपदा के बाद जिस दिन चंद्रमा इस नक्षत्र में गोचर करे, उस ही दिन भावी वर्षा का आधार बनना प्रारंभ हो जाता है। गर्ग ऋषि का कथन है।

शुल्कादौ मार्गशीर्षस्य पूर्वाषाढाव्यवस्थिते।
निशाकरे तु गर्भाणां तत्रादौ लक्षणंवदेत।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीजारोपण के चिन्हों को ध्यान दें। चिन्ह इस प्रकार हैं–

(*i*) सामान्य गति से पूर्वी या उत्तरी हवा चले

(*ii*) साफ या कुछ अधिक चमकीला आकाश

(*iii*) काले बादल या चंद्रमा के चारों ओर बादलों का गोल घेरा

(*iv*) कम ठण्ड, पाला न हो, बादल घिरना, वर्षा न होना।

(*v*) माघ में तेज सर्द हवाऐं, सूर्य का धुँधलापन उदयास्त के समय सूर्य के पास बादल होना, साधारण वर्षा।

(*vi*) फाल्गुन में रुखी हवा, सिर्फ बादल छा जाना।

(*vii*) चैत्र में बूंदा बांदी या साधारण वर्षा

(*viii*) रात में तारे खूब चमकना, बादल गड़गड़ाना, पेड़ पौधों में अंकुरण सर्व सामान्य है।

सन् 2015 सम्वत् 2072 में अधिक आषाढ़ मास होने के कारण सूर्य मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी (6 दिसम्बर) बुधवार को धनु राशि में प्रवेश करेगा तथा चन्द्रमा भी घनिष्ठा नक्षत्र से पू. भाद्रा नक्षत्र में जायेगा।

घाघ कवि का कहना है जो पुरवा लावे पुरवाई, सूखे नाद में नाव चलाई। अर्थात् यदि आषाढ़ के दिन पूर्वी हवा चले तो वर्षा ऋतु में सूखी नदी में भी नाव चलाई (गहरा पानी होगा) जा सकती है। (अति वृष्टि होगी)

नोट: कुछ विद्वानों के मतानुसार गर्भाधान निम्नलिखित दिन होता है–

(*i*) ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी से चार दिन के भीतर।

(*ii*) कार्तिक शुक्ल पक्ष में।

(*iii*) सिद्ध सेन तथा कुछ अन्य आचार्यों का मत है कि कार्तिक पूर्णिमा के बाद, मार्गशीर्ष ऋण पक्ष में गर्भाधान होता है परंतु अधिक विद्वान इस मत के विरुद्ध हैं।

(*iv*) ऋषि गर्ग, पाराशर, वशिष्ठ, ऋषिपुत्र कश्यप आदि ने वराहमिहिर के मत की पुष्टि की है।

अधिकतर विद्वानों का मत भी है और अनुभव में भी यह आया है कि **चंद्रमा का पूर्व आषाढ़ा** नक्षत्र में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में अर्थात् धनु की अमावस्या के बाद गर्भाधान होता है।

'गर्भाधान' नक्षत्र संख्या 20 (पूर्व आषाढा) जो सौम्य नाड़ी में पड़ती है में होता है। इससे ठीक 14वें नक्षत्र आर्द्रा (6) में सूर्य प्रवेश के समय प्रसूति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होती है। जिस दिन चंद्रमा गर्भ ठहरने की पुष्टि कर दे उस दिन से 195 दिन या 6 मास 15 दिन के (लगभग) बाद प्रसूति होती है। यह गणना सायन के अनुसार (सूर्योदय से सूर्योदय तक एक दिन होगा) होगी।

4.10.6 सप्तनाड़ी चक्र तथा वर्षा

यह चक्र केवल वर्षा ऋतु के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक ऋतु के विषय में तथा उसके प्रत्येक दिन का विवरण मिल सकता है। वर्षा ऋतु में कब कितना पानी पड़ेगा इसकी जानकारी भी इस चक्र से मिलती है। वर्षा ऋतु कैसी रहेगी जानने के लिए आर्द्रा प्रवेश की कुण्डली बनाते हैं। अन्य ऋतु में सप्तनाड़ी चक्र यह बताता है कि गर्मी, सर्दी, शुष्क, नम कैसा मौसम रहेगा आंधी, झंझावात साइक्लॉन व सुनामी व बाढ़ आदि का भी पता लगाने में सहयोग प्राप्त होता है। सर्दियों की वर्षा के विषय में भी इसी से पता चलता है। उ. आषाढ़ा, अभिजित, श्रावण, घनिष्ठा, शतभिषा व पूर्वभाद्रा नक्षत्र में सर्दी की वर्षा होती है (21 वें नक्षत्र से 26 वें नक्षत्र तक)। शुक्र, बुध तथा चन्द्रमा जब जलीय नाड़ियों में भ्रमण करते हैं तो वर्षा होगी या मौसम ठंडा होगा। सुहावना होगा। वर्षा ऋतु में वर्षा हो सकती है। शुष्क नाड़ियों में गोचर गर्मी, गर्म हवाएं, शुष्क हवाऐं उत्पन्न करता है–

(क) मंगल, शुक्र तथा बुध प्रचण्ड नाड़ी में हो (सूर्य भी उस समय प्रचण्डादि में हो सकता है) दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, यू.पी. तथा हिमाचल प्रदेश में हल्की वर्षा, पहाड़ी क्षेत्र में हिमपात और कुछ प्रदेशों में अच्छी वर्षा हो सकती है। यहाँ प्रचण्ड नाड़ी का अर्थ होगा नक्षत्र विशाखा तथा अनुराधा जो (नवम्बर व दिसम्बर) मार्गशीर्ष मास व हेमन्त ऋतु होगी। (यदि प्रचण्ड नाड़ी में कृत्तिका व भरणी नक्षत्रों में हो तो वैशाख का महीना होगा, शुष्क हवाएँ चलेंगी।)

(ख) सर्दियों में मंगल तथा शुक्र सौम्य नाड़ी में हो या नीर नाड़ी में हो, ठण्डी हवा, वर्षा और कुछ स्थानों में हिमपात हो सकता है।

4.10.7 गर्भ की जाँच

स्त्रियों के संदर्भ में गर्भ की जाँच होती है उसी प्रकार बादलों के गर्भ की भी जाँच का प्रावधान है जिसे वायु परीक्षरण के नाम से जाना जाता है। निम्न प्रकार से यह प्रतिक्रिया की जाती है–

(अ) गर्भाधान के दिन, यानि जिस दिन चंद्रमा पूर्व आषाढ़ा नक्षत्र में प्रवेश करता है (मार्गशीर्ष शुक्ल) सूर्य की गर्मी व हवा की दिशा को देखा जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*i*) हल्की, सुहावनी, मध्यम गति से वायु प्रवाह हो जो शरीर को सुखदायक लगे और उत्तर, उत्तर-पूर्व की हो, आकाश निर्मल व स्वच्छ हो, सूर्य व चंद्रमा की चमक साफ हो उनके चारों ओर चक्र दिखाई दे।

(*ii*) गहरे और घने बादल आकाश में 'फावड़े' या 'उस्तरे' जैसी आकृति और कौए जैसे रंग के हो परन्तु चंद्रमा व तारे भी चमकते हैं।

(*iii*) फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा यानि होली दहन के समय होली की लपटों की दिशा देखी जाती है। (आगे अनुलग्न में विवरण देखें)

(*iv*) ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी, नवमी, दशमी तथा एकादशी (मई/जून) 'वायु धरण' (वायु परीक्षा) गर्भ की स्थिति (स्वास्थ्य) देखने के लिए किया जाता है। यदि आर्द्रा से स्वाति तक किसी नक्षत्र में पृथ्वी हल्की वर्षा से गीली हो जाए तो आषाढ़ तथा श्रावण में वर्षा नहीं होती। यदि नर्म तथा सुखदायक वायु उत्तर, उत्तरपूर्व या पूर्व की वहे, आकाश में चमकदार व चिकने बादल हो, भविष्य में अच्छी वर्षा होगी। इस मास में स्वाति नक्षत्र पड़े तो उससे चार नक्षत्रों तक (स्वाति, विशाखा, अनुराधा तथा ज्येष्ठा) यदि वर्षा हो, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन या कार्तिक में वर्षा नहीं होगी।

(*v*) आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा 'प्रसूति के बाद' भी वायु परीक्षण होता है जो वर्षा ऋतु के भविष्य के बारे में फलित करेगा। यदि इस मास में आर्द्रा से स्वाति नक्षत्रों में हल्की वर्षा हो और पृथ्वी भीग जाए, तो आषाढ़ श्रावण से अनावृष्टि कहें।

(*vi*) सायंकाल में इन्द्रधनुष दिखाई दे, आकाश में मेघों की श्रुति मधुर ध्वनि हो, बिजली चकमती हो तथा सूर्य के प्रकाश की चमक आ रही हो।

(*vii*) जंगली पक्षियों, पशुओं की दृष्टि उत्तर पूर्व की ओर हो और सूर्य के चक्र की ओर न हो और लुभाने वाला स्वर कर रहे हों।

(*viii*) चैत्र मास में यदि बादल छायें हों, हल्की फुआर पड़ रही हो या वैशाख का महीना हो, आकाश में बिजली चमक रही हो, हल्की वर्षा हो, वर्षा ऋतु स्वस्थ और पर्याप्त जल बरसाने वाली होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ix*) *तपै मृगशिरा जोय पूरन बरखा होय* (घाघ कवि) यदि मार्गशीर्ष में सर्दी कम हो तो वर्षा ऋतु में अच्छी बरसात होगी।

(*x*) गर्भ के समय में आकाश में बादल हो परन्तु सूर्य का प्रकाश पूरा हो, साथ ही मन्द वायु का प्रवाह हो, वर्षा ऋतु में अधिक जल बरसेगा।

(*xi*) यदि उलकापात हो, सितारे टूट-टूट कर गिरें, धून उड़ाती वायु चले, दिशाएं रक्तवर्ण की हो, भूकम्प आए, धूमकेतु दिखाई दे, आंधी तूफान आदि हो, *गर्भ की हानि होने* की संभावना होगी और वर्षा ऋतु में अनावृष्टि होगी।

(*xii*) अतिवृष्टि

यदि पूर्व भाद्रा, उत्तर भाद्रा, पूर्व आषाढ़ा रोहिणी नक्षत्र में *गर्भ के चिन्ह* (लक्षण) *दिखाई दें*, वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होगी।

(*xiii*) यदि शतभिषा, आर्द्रा, स्वाति, मघा, आश्लेषा में *गर्भ के* (चिन्ह) लक्षण दिखाई दें तो वर्षा काफी लम्बे समय तक होगी।

(क) यदि उपरोक्त पांचों नक्षत्रों में मार्गशीर्ष मास में *लक्षण दिखाई दें*, तो *195 वें दिन के बाद* लगातार आठ दिन तक वर्षा होगी।

(ख) यदि पौष माह में तो छः दिन, माघ में 16 दिन तक, फाल्गुन मास में हो ता 24, चैत्र मास में हो तो 26 दिन तथा वैशाख मास में तीन दिन तक वर्षा होगी।

(*xiv*) यदि पवन बह रही हो, हल्की-हल्की वर्षा हो रही हो, बिजली चमक रही हो, बादल गरज रहे हों और भरपूर बादल हों, यदि यह पांचों *लक्षण गर्भ के समय हों, तो गर्भ का ठहरना पक्का हो जाता है।* वर्षा ऋतु में पर्याप्त वर्षा होगी।

यदि उपरोक्त परिस्थिति में ज्यादा वर्षा हो तो खेतों पर पाला पड़ेगा और वर्षा नहीं होगी।

4.10.8 (क) नक्षत्रों के लिंग पर विचार

(*i*) स्त्रीलिंग आर्द्रा से स्वाति (6 से 15 तक) = 10

(*ii*) पुल्लिग अश्विनी से मृगशिरा (1 से 5 तक) = 5

(*iii*) नपुंसकलिंग विशाखा, अनुराधा व ज्येष्ठा (16 से 18 तक) = 3

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) सूर्य व चंद्र का नपुंसक (16 से 18 तक) नक्षत्रों में गोचर हो तो वायु चलेगी। यदि स्त्रीलिंग (स्त्री) नक्षत्रों (16 से 15 तक) में सूर्य व चंद्रमा गोचर करें तो आकाश में बादल छायें रहेंगे। पुरुष नक्षत्र (1 से 5 तक) में हों तो अच्छी वर्षा होगी। **(श्लोक 1 तथा 2 वृहदसंहिता)**

(ग) शुष्क/जलीय राशियाँ

पूर्ण जलीय = कर्क

अर्धजलीय = वृष तथा सिंह

चतुर्थ जलीय = तुला

शुष्क = कन्या

(केवल वर्षा ऋतु के विषय में)

उपरोक्त राशियों में सूर्य के भ्रमण काल में वर्षा होती है।

नोटः अधिक प्रभाव नक्षत्रों में गोचर का होता है।

4.11 वर्षा ऋतु का काल

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के समय से (22 जून के लगभग) वर्षा ऋतु का समय आरंभ होता है। स्वाति नक्षत्र का भ्रमण पूरा करते-करते वर्षा ऋतु समाप्त हो जाती है। चंद्रमास आषाढ़ कृष्ण पंचमी से कार्तिक कृष्ण एकादशी तक रहता है। सप्तनाड़ी चक्र के अनुसार आर्द्रा प्रवेश (सौम्य नाड़ी) से प्रारंभ होकर हस्त नक्षत्र (सौम्य नाड़ी) तक वर्षा ऋतु होती रहती है।

4.12.1 (क) सूर्य व चन्द्रमा के नक्षत्र

सूर्य के-रोहिणी, मृगशिरा, पू. फाल्गुणी, उ. फाल्गुणी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्टा, मूल, शतभिषा तथा पू. भाद्रा। (13 नक्षत्र)

चंद्रमा के–अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्या, आश्लेषा, मघा, पू. आषाढ़, उ. आषाढ़, श्रावणा, घनिष्ठा, उ. भाद्रा तथा रेवती। (14 नक्षत्र)

(ख) सूर्य तथा चंद्रमा के एक दूसरे के नक्षत्र में होने का फल

(*i*)	चंद्रमा के स्वनक्षत्र में	पवन बहे
(*ii*)	चंद्रमा सूर्य के नक्षत्र में हो	वर्षा होगी
(*iii*)	सूर्य स्वनक्षत्र में हो	अनावृष्टि
(*iv*)	सूर्य तथा चंद्रमा, दोनों चंद्रमा के नक्षत्र में	कम वर्षा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ग) सूर्य तथा चंद्रमा विभिन्न लिंगों के नक्षत्र में

(*i*)	सूर्य तथा चंद्रमा एक पुरुष तथा दूसरा स्त्री नक्षत्र में	**वर्षा होगी**
(*ii*)	सूर्य तथा चन्द्रमा एक स्त्री तथा दूसरा नपुंसक	**कही कहीं होगी**
(*iii*)	सूर्य तथा चंद्रमा दोनों स्त्री नक्षत्र में/या पुरुष नक्षत्र में हो	**बादल छाये रहें**
(*iv*)	सूर्य चंद्रमा दोनों नपुंसक नक्षत्र में हो	**वर्षा नहीं होगी**
(*v*)	सूर्य तथा चंद्रमा चंद्रमा के नक्षत्र में हो	**कम वर्षा**

(घ) सूर्य का द्वादश राशियों में प्रवेश तथा वर्षा ऋतु

यदि सूर्य संक्रांति के दिन वर्षा हो तो

संख्या	चंद्रमास	राशि	वर्षा का प्रकार
(*i*)	कार्तिक	तुला	मध्यम
(*ii*)	मार्गशीर्ष	वृश्चिक	मध्यम
(*iii*)	पौष	धनु	उत्तम वर्षा
(*iv*)	माघ	मकर	उत्तम वर्षा
(*v*)	फाल्गुन	कुंभ	अच्छी वर्षा (त)
(*vi*)	चैत्र	मीन	अच्छी वर्षा (क)
(*vii*)	वैशाख	मेष	अच्छी वर्षा
(*viii*)	ज्येष्ठ	वृष	अच्छी वर्षा
(*ix*)	आषाढ़	मिथुन	रोग का फैलना[x]
(*x*)	श्रावण	कर्क	उत्तम वर्षा
(*xi*)	भाद्रपद	सिंह	रोग का फैलना
(*xii*)	अश्विन	कन्या	अच्छी वर्षा

नोट: 1. वैसे इन सभी मासों में सूर्य की संक्रांति होती है। फिर भी विचार करके देखते हैं।

2. आषाढ़ कृष्ण 3 (रविवार) को 11 बजकर 1 मिनट पर सूर्यदेव मिथुन राशि में आये। आज फरवरी 2015 में स्वाइन फ्लू सारे देश में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(विशेषतया गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश व राजस्थान में एक भयानक रूप ले चुका है।)

(क) चैत्र कृष्ण अष्टमी (शनिवार) 14-3-2015 को सूर्य मीन में प्रवेश करेगा, जिसके अनुसार अच्छी वर्षा होनी चाहिए देखेंगे।

(त) फाल्गुन कृष्णा नवमी (शुक्रवार) 13-2-2015 को सूर्यदेव कुंभ में प्रवेश कर गये। 25 फरवरी तथा 2 तथा 15/16 मार्च को देश में अति वृष्टी, ओले तथा तेज हवा से फसल को नुकसान हुआ।

बेमौसम वर्षात

नोटः अप्रैल के प्रथम सप्ताह 3 व 4 तारीख को मथुरा क्षेत्र, राजस्थान व श्रीनगर में 300/400 ग्राम के ओलों की वर्षा हुई।

(ङ) उदाहरण

जुलाई 2004 में बंगलौर में वर्षा

8 जुलाई 2004 चंद्रमा उ. भाद्रा में (चंद्रमा के नक्षत्र में जो पुरुष नक्षत्र है) था।

सूर्य पुनर्वसु में (चंद्रमा के नक्षत्र में, जो स्त्री नक्षत्र में है) था।

सूर्य व चंद्रमा-एक स्त्री तथा दूसरा पुरुष नक्षत्र में थे-फलतः वर्षा हुई।

सायंकाल 16 घण्टे 30 मिनट पर जोरदार वर्षा हुई।

15 जुलाई, 2004

कर्नाटक के किसानों का मानना है कि यदि पुनर्वसु में वर्षा हो तो सुभिक्ष होगा तथा सारी रुकावटें दूर हो जायेंगी।

"सारे प्रांत में अच्छी वर्षा नहीं थी। मेघ छुपा छुपाई का खेल खेलते रहे, किसान आकाश की ओर एक 'पपीहे' की तरह देख रहा थां और प्रार्थना कर रहा था कि क्या वर्षा इस मौसम में आएगी, यह केवल परमात्मा जानता है।" (टाइम्स आफ इण्डिया)।

20 जुलाई, 2004 (टाइम्स आफ इण्डिया का समाचार)

'हा'! वर्षा के देवता तुम कहाँ हो प्यासा किसान कराहा रहा था

पिछले वर्ष कर्नाटक में अथाह दुख के कारण सैंकड़ों किसान आत्महत्या कर गए। इस वर्ष पुनः ऐसा ही हो रहा है। *'मूसलाधार' पानी मौसम में पहले ही बरस गया* खेत पानी में डूब गए तथा जो बीज बोया था वह बह गया। अभी प्रांत में बरसात पूरी तरह नहीं आई है। विशेषज्ञों का कहना है कि मानसून समय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से पूर्व ही समाप्त हो रहा है (tapering off prematurely) और इसके पुनः जागृत होने की संभावना न्यून है। वर्षा की प्रतीक्षा इस प्रकार करने लगे हैं जैसे भक्त भगवान की करते हैं।

प्रांत पिछले चार वर्षों से सूखे का सामना कर रहा था, जब वर्षा क्षितिज में मृगतृष्णा बन गई थी। अधिक सूखा पड़ना जनता को अधिक संघर्ष तथा दुःख दे गया है, फलस्वरूप कितने ही किसान आत्महत्या कर गए। इस वर्ष अति वर्षा हुई परन्तु समय से पूर्व हुई जिसने कृषकों को थोड़े समय के लिए प्रसन्न कर दिया जब खेत पानी से भर गए थे, परन्तु बोये गए बीज या तो बह गये या सड़ गए, जिससे किसानों की बहुत अच्छी फसल की प्राप्ति की आशा ठगी गई। यह स्थिति अप्रैल-मई 2004 की रही।'

''जून जुलाई 2004 से वर्षा कम रही परन्तु पिछले वर्ष 10 प्रतिशत के मुकाबले इस वर्ष 5 प्रतिशत ही रही।''

प्रांत के 14 जिलों में साधारण से कम वर्षा रही (जून जुलाई 2004) जबकि बारह जिलों में साधारण से अधिक वर्षा रही। तटीय क्षेत्रों में साधारण से हटकर 21 प्रतिशत तथा मलण्ड में 8 प्रतिशत वर्षा रही। **कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक ने टाइम्स आफ इण्डिया को बताया कि वर्षा हल्की रही अगर ऐसा ही समय और पंद्रह दिन रहा तो फसल के नष्ट होने की संभावना है।''**

साधारण से अच्छी वर्षा–मलण्ड क्षेत्र, शिमोगा, कोलाड आदि में।

चिंताजनक स्थिति के क्षेत्र–उत्तरी कर्नाटक, धारवाड जिला, नवलूगुण्ड, हुबली, कुण्डगौल, उत्तर कन्नड़ के गाँव।

वर्षा की संभावना–भाद्रा व शारावथी क्षेत्र में।

यह जानकारी विभिन्न जिलों के विभागों से प्राप्त है जैसे बंगलौर, चिकमंगलूर, शिकोगा, धारवाड, देवनागरी, मैसूर, चित्रादुर्ग तथा कोलाड़।

नोट–यदि इस प्रकार का अध्ययन ज्योतिष में भी हो सके, सभी प्रांतों में केन्द्र खोले जाएं और इस प्रकार का विवरण संकलन किया जाय, जो वर्षा ऋतु के समय प्रति सप्ताह का विवरण संकलित कर सके तो एक दशक के बाद किसानों के लिए सही भविष्यवाणी की जा सकती है।

उत्तर भारत की भी अधिक गर्मी व वर्षा की कमी से स्थिति चिन्ताजनक रही।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4.12.2 सूर्य की अन्य ग्रहों से युति का प्रभाव

वर्षा ऋतु के समय यदि सूर्य की युति अन्य ग्रहों के साथ हो तो वर्षा होने या न हो ने की स्थिति निम्न प्रकार की होगी–

(*i*) सूर्य + बुध — तटीय क्षेत्रों में हवा के झटके होंगे, हवा का दबाव बढ़ेगा अथवा कम होगा यदि शीतकाल में ऐसी स्थिति हो तो शीत लहर चलने की संभावना होती है।

(*ii*) सूर्य + शुक्र — वर्षा अधिक तथा हिमपात हो। (मार्च 2005 के प्रथम सप्ताह में मीन राशि में दोनों थे, कश्मीर हिमाचल में हिमपात हुआ।)

15, 16 फरवरी 2015 को सूर्य 10/1-53 से 10/2-55 तक शुक्र 10/27-30 से 10/28-44 तक रहे, यू. पी. में कई स्थानों पर वर्षा के साथ ओले पड़े।

(*iii*) सूर्य + मंगल — मौसम में गर्माहट होती है (ऋतु के अनुसार)

नोट–वर्षाकाल में मंगल के सूर्य से आगे होने पर वर्षा होने में रुकावट उत्पन्न होती है *(आगे मंगल पीछे भान वर्षा होवे ओस समान)* तापमान अधिक होता है।

(*iv*) सूर्य + गुरु — शुष्क मौसम (यह सूखे का कारण भी बनता है)

(*v*) सूर्य + शनि — वायु का दबाव स्थिर/सम रहता है, प्रत्येक ऋतु में तीव्रता उत्पन्न करता है। 8 जुलाई 2004 शनि तथा सूर्य दोनों 22 अक्षांश के करीब थे (मिथुन राशि में) उस दिन बहुत अधिक वर्षा हुई परन्तु तापमान उत्तरी भारत में ऊँचा ही रहा। यह लेखक का अपना अनुभव है पाठक इसको जाँच करें।

(*vi*) सूर्य + राहु — तूफान आदि आना ऋतु को कष्टप्रद बनाता है।

(*vii*) सूर्य + केतु — मौसम थोड़े-थोड़े समय के बाद बदलता रहता है।

4.12.3 वर्षा तथा बाढ़ के विषय में भविष्यवाणी करने की विधि

(*i*) **बादलों का गर्भधारण:** इस विषय पर वायु परीक्षण पर पीछे चर्चा की जा चुकी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ii*) **सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेशः** इस पर भी कुण्डली बनाकर पीछे चर्चा की जा चुकी है।

(*iii*) **सूर्य का मकर राशि में प्रवेश (मकर संक्रांति):** इस समय की कुण्डली संहिता में भी उपयोगी होती है। सूर्य के मकर राशि प्रवेश के समय की कुण्डली बनाकर राष्ट्रीय प्राकृतिक आदि घटनाओं की भविष्यवाणी की जाती है। 13 जनवरी को लोड़ी तथा 14 जनवरी को मकर संक्रांति, पोंगल आदि त्यौहार मनाए जाते हैं।

(*iv*) रोहिणी, स्वाति नक्षत्रों में प्रवेश तथा आषाढ योग।

(*v*) **सप्तनाड़ी चक्र** इसकी भी चर्चा पहले पृष्ठों में की जा चुकी है।

(*vi*) ग्रहों की परस्पर स्थिति का विचार भी एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है। इस विषय पर पिछले पृष्ठों में विचार किया जा चुका है और आगे अध्याय में विस्तार से चर्चा करेंगे।

(*vii*) **सूर्य पर धब्बे**–पश्चिम में किए गए अध्ययन में भी सूर्य पर धब्बों के कारण अधिक वर्षा व भूकम्प आदि का होना पाया गया है।

सागर में तूफान व ज्वारभाटा आने का कारण भी सूर्य व चंद्रमा की स्थिति पर निर्भर करता है। यहाँ तक की पृथ्वी पर भी प्रभाव पड़ता है।

4.12.4. सूर्य पर धब्बों के आकार व आकृति का फल

वराहमिहिर दो हजार वर्ष पूर्व इस सूर्य पर धब्बे के प्रभाव के विषय में लिख गए जबकि पाश्चात्य देशों को इसकी जानकारी भी नहीं थी।

सूर्य के धब्बे, भूकम्प, झंझावात, भयंकर आंधी व असाधारण वातावरण उत्पन्न करते हैं। पाश्चात्य वैज्ञानिकों के अनुसार भी 11 वर्ष के आसपास सूर्य की शक्ति का विस्फोट होता है। सूर्य के धब्बों के कारण ऐसी शक्ति का निकास होता है जिसके कारण शक्तिशाली प्राविधिक चुम्बकीय (Technical magnetic storm) तूफान व आंधी आती है। ऋषि वराहमिहिर के अनुसार यदि सूर्य में धब्बों की आकृति निम्नलिखित हो तो :

(*i*) एक छड़ीनुमा-राजा की मृत्यु का संकेत।

(*ii*) शीश रहित धड़-महामारी का होना।

(*iii*) कीटक (वृक्ष की मोटी छाल)–आकाल पड़ना।

(*iv*) राजसिंहासन, छत्र, घोड़े आदि–सत्ता परिवर्तन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*v*) धुआँ, अग्नि की लपट-भयंकर रोग व सामुहिक हत्याएं।

(*vi*) **सूर्यचक्र में वेध-एक जगह** तो अकाल, यदि **दो स्थानों** पर तो राजा की मृत्यु। **यदि अधिक हों** तो सत्ता परिवर्तन।

यदि **सफेद धब्बा** हो-ब्राह्मण व शिक्षित वर्ग

लाल रंग हो-क्षत्रिय सेना, नेता

पीला रंग हो-व्यापारी वर्ग

काला रंग हो-पिछड़ी जाति को हानि देती है।

मौसम के विषय में भविष्यवाणी बहुत सही-सही की जा सकती है, यदि सूर्य पर होने वाले चिन्हों व परिवर्तनों को ठीक प्रकार अध्ययन किया जा सके। जिसमें अन्य ग्रहों की स्थिति 'सन्निधान सानिध्य' का विचार भी करना है। स्थान की भौगोलिक स्थिति व ऋतुओं का भी पूर्ण ज्ञान आवश्यक है।

नोट : पहली अगस्त 2004 को मंगल सिंह राशि में गुरु के साथ युति करेगा जबकि गुरु अंशों में भी काफी आगे होगा जिसका विशेष प्रभाव ऋतु पर व सामाजिक व राजनीतिक स्थिति पर पड़ेगा तथा इस वर्ष भी 15 सितम्बर से 3 नवम्बर 2015 तक मंगल + गुरु दोनों सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। जिसमें 17 व 18 अक्टूबर को दोनों के अंश बराबर होंगे, फिर मंगल आगे चलेगा।

4.13 ग्रहों की स्थिति व कुछ योग तथा उनका वर्षा पर प्रभाव

अ-अतिवृष्टिः

(*i*) यदि सूर्य, चंद्रमा, मंगल, शनि तथा राहु जलीय राशियों में हो तथा बुध व शुक्र की युति स्थिर राशि में हो तो अधिक वर्षा होगी।

(*ii*) सूर्य, बुध तथा शुक्र का एक ही राशि में तथा एक ही नवांश में होना (युति होना) भी अधिक वर्षा का योग है।

(*iii*) सूर्य, बुध तथा शुक्र की युति जलीय राशि में हो।

(*iv*) यदि बुध तथा शुक्र एक ही राशि/नवांश में हो, शुक्र अस्त हो और मंगल के पीछे हो तो भी अधिक वर्षा होती है।

(*v*) चंद्रमा, बुध तथा शुक्र जलीय राशि/वर्गों में हो और उस समय सूर्य, पृथ्वी तत्व राशि में हो (वृष तथा कन्या क्योंकि इन ही पृथ्वी तत्व राशियों में सूर्य वर्षा ऋतु में होता है) साथ ही पश्चिमी आकाश में इंद्रधनुष दिखाई दे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*vi*) चंद्रमा तथा शुक्र जलीय वर्गों में हो तथा शनि पृथ्वी तत्व राशि में तथा इंद्रधनुष पूर्वी क्षितिज में दिखाई दे।

नोट : वर्षा ऋतु में यदि इंद्रधनुष पूर्वी क्षितिज में दिखाई दे, तो वर्षा नहीं होती है। यदि इंद्रधनुष पश्चिमी क्षितिज में दिखाई दे तो वर्षा होगी है। सामान्यतया ऐसा मत है।

परंतु चंद्रमा तथा शुक्र की युति जलीय वर्गों में होने व शनि की पृथ्वी तत्व में स्थिति वर्षा का विशेष योग बताया है।

(*vii*) शुक्र व बुध का अस्त/उदय होना भी वर्षा को लाता है।

(*viii*) *संक्रांति के दिन/पूर्णिमा के दिन/अमावस्या* के दिन यदि चंद्रमा जलीय राशि में हो, बुध या शुक्र से युति करे तो इतनी वर्षा होती है कि जैसे समुद्र पृथ्वी पर बह रहा हो।

नोट : (1) 14 अक्टूबर (अमावस्या) को चंद्रमा तुला में प्रवेश करके बुध (12 ता. को तुला में प्रवेश किया) से युति की, तो 14 व 15 ता. को बहुत वर्षा हुई। यह लेखक ने बंगलौर में देखा।

(2) 16 जुलाई 2015 अमावस्या के दिन सूर्य कर्क राशि (जलीय राशि) में प्रवेश करेगा और 21 जुलाई को बुध भी कर्क में प्रवेश करेगा। इस का अर्थ हुआ कि अधिक वर्षा होगी।

(*ix*) शनि, मंगल तथा गुरु यदि *शुक्र की राशि* में हो या *किसी भी राशि* में एक साथ हों, तो भी अधिक वर्षा होती है।

नोट : यह योग युद्ध जैसी स्थिति भी उत्पन्न करता है।

उदाहरण : 7 जून 2000 की ग्रह स्थिति को देखें जब मंगल ने मिथुन राशि में रात्रि को प्रवेश किया था। उससे पहले मंगल 1/29°-43', गुरु 1/1°-01', शनि 1°/01-0', शुक्र 1/21°-29', चंद्रमा 3/24°-49' तथा बुध 2/16°-30'

परिणाम :

(क) उस दिन दिल्ली व उसके आसपास के क्षेत्र में बहुत भारी वर्षा हुई (मैट्रोलोजी वालों के अनुसार आकाश में बादल तथा दो बौछार होने की घोषणा थी।)

(ख) 400 भारतीय सैनिक सेपरालियोन (Siepra Leone) में कोलहम के पास जो, यू.एन. शान्ति सेना के एक हिस्सा थे, का विद्रोहियों ने घेराव किया (6 जून 2000)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ग) श्रीलंका के एक नेता व 23 अन्य व्यक्तियों की एल.टी.टी के 'आत्महत्यारे बम' विस्फोट में हत्या हुई (7 जून 2000)

(*x*) यदि शुक्र, मघा पू. फाल्गुनी, उ. फाल्गुनी, हस्त, चित्रा नक्षत्रों में हो और पूर्व में उदय हो तो लगातार वर्षा होने की संभावना होती है।

(*xi*) यदि शुक्र स्वाति, पुनर्वसु, अनुराधा में हो और पश्चिम में उदय हो, तो वर्षा अधिक होगी।

(*xii*) शनि व बुध की परस्पर दृष्टि हो (तापमान बढ़ेगा परन्तु सीमा में रहेगा) और शुक्र से दृष्ट हो (वायु में नमी, गर्म हवा) साधारण से अधिक वर्षा होगी।

(आ) साधारण वर्षा

(*i*) तीव्र गति ग्रह मन्द गति ग्रह से आगे हो।

(*ii*) सौम्य ग्रह यदि वक्री हो तो वर्षा लाता है (लेखक के अपने अनुभव से)

नोट–28 फरवरी 2015 को गुरु कर्क राशि में वक्री थे, परन्तु 28 की रात्रि को 4 बजे बाद से 3 मार्च तक बहुत वर्षा हुई।

(*iii*) ग्रह/ग्रहों की स्थिति में कोई परिवर्तन हो तो कोई विशेष घटना का संकेत मिलता है। वर्षा ऋतु में यदि वर्षा नहीं हो रही हो तब भी हो जाती है। लगातार वर्षा हो रही हो तो रूक जाती है (ऐसा अनुभव में आया)

(क) सूर्य से 2 डिग्री के अंतर में ग्रह के उदय/अस्त होने का समय।

(ख) सूर्य से अस्त ग्रह (एक डिग्री के अंदर)

(ग) एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र में जब कोई ग्रह प्रवेश करे।

(घ) ग्रह का राशि परिवर्तन उपरोक्त कथन वराहमिहिर का है।

उदाहरण : 31 जुलाई 2004 (पूर्णिमा के दिन) मंगल ने सिंह राशि में प्रवेश किया, साथ ही मघा नक्षत्र में (24 घंटे 59 मिनट पर) शुक्र ने मिथुन राशि में उस ही दिन 7 घण्टे 44 मिनट पर प्रवेश किया तथा चंद्रमा का श्रावण नक्षत्र में 15 घण्टे 40 मिनट पर प्रवेश हुआ, जिसके फलस्वरूप दिल्ली, हरियाणा, यू.पी., हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में बहुत तेज व अधिक वर्षा हुई। आज 26 अगस्त 2004 को यह कहा जा सकता है कि एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगस्त 2005 से वर्षा ऋतु का प्रारंभ हुआ। 23 अगस्त 2004 से लगातार वर्षा हुई जिसका कारण 23 अगस्त को बुध की सूर्य से पूर्ण युति होकर अस्त होना था। पूर्व कथित प्रांत पिछले एक माह से वर्षा की प्रतीक्षा कर रहे थे। (समाचार पत्र की सूचना के आधार पर)

(*iv*) सभी ग्रहों की युति यदि एक ही राशि में हो (17 अगस्त 2004 से 27 अगस्त, 2004 तक सूर्य, बुध, मंगल तथा गुरु, सिंह राशि में थे)

(*v*) शनि से चंद्रमा की त्रिकोण में स्थिति।

(*vi*) शुक्र की चंद्रमा से युति।

(*vii*) शुक्र का चंद्रमा के नक्षत्र में अथवा चंद्रमा का शुक्र के नक्षत्र में होना।

(*viii*) शुभ ग्रहों की चंद्रमा से युति भी वर्षा करती है।

(*ix*) यदि पूर्णिमा को भूकम्प आ जाए तो उस दिन भी वर्षा होती है।

(*x*) चंद्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो या चंद्रमा शुक्र से सप्तम हो अथवा शनि चंद्रमा से नवम, पंचम तथा सप्तम में हो।

(इ) अनावृष्टि/वर्षा थोड़ी-थोड़ी देर के लिए/वर्षा में रूकावट।

(*i*) *जब मन्द गति ग्रह तीव्र गति ग्रह से आगे हो।*

जुलाई 2004 में सूर्य शनि के पीछे (6 जुलाई तक) चल रहा था। 8 जुलाई को सूर्य 2/22-15 तथा शनि 2/22-49 (प्रातः 5-30 बजे) था। 35° सूर्य पीछे था जिसको 12 घण्टे का समय आगे आने के लिए चाहिए था। **16 घण्टे 30 मिनट बजे वर्षा आ गई।** सूर्य के आगे निकलते ही वर्षा हो गई। परन्तु मंगल भी सूर्य से आगे कर्क राशि में भ्रमण कर रहा था जो पुनः वर्षा में रूकावट करता है **आगे मंगल पीछे भान वर्षा होवे ओस समान।** मंगल के आगे मन्दगति ग्रह गुरु था। वर्षा रुक-रुक कर होती रही।

(*ii*) वक्री ग्रह वर्षा में रूकावट देता है।

(*iii*) यदि अशुभ/क्रूर ग्रह चंद्रमा के साथ हो, तो वर्षा नहीं होगी/कम होगी।

(*iv*) ज्येष्ठ तथा श्रावण मास में पाँच ग्रह यदि सूर्य के साथ हो, तो वर्षा कम होती है। (यही योग छत्र भंग या किसी महान व्यक्ति का निधन दिखाती है।)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*v*) यदि शुक्र अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, पू. आषाढ, उ. आषाढा, श्रावणा, धनिष्ठा, शतभिषा, पू./उ. भाद्रा, रेवती नक्षत्रों में उदय हो तो वर्षा नहीं होती।

(*vi*) मंगल तथा शनि, गुरु तथा शुक्र, सूर्य तथा मंगल यदि एक ही राशि में हो अथवा समसप्तम हों तो वर्षा के न होने की संभावना रहती है।

(*vii*) बुध, शुक्र तथा सूर्य एक ही राशि में हो तो वर्षा की कमी होती है।

(ई) तापमान में परिवर्तन

(*i*) बुध तथा शुक्र जब सूर्य पर से गुजरते हैं तो मौसम नम व हवादार होगा।

(*ii*) बुध और सूर्य की युति शरद ऋतु में हो तो शीत लहर चलेगी।

(*iii*) (क) बुध की मंगल से युति व समसप्तम स्थिति।

(ख) बुध व सूर्य की युति (Superior Conjunction)।

(*iv*) गुरु सूर्योच्च (Aphelion) में हो तो अधिक ठंडी ऋतु और सीलन होगी।

(*v*) मंगल तापमान को बढ़ाता है, वातावरण में शुष्कता लाता है, अकाल पे अकाल लाता है, आकाश में बिजली चमकती है। हवा के झोकों व बिजली के गिरने से जहाज नष्ट हो, शक्तिशाली जलीय तूफान (तूफानी वर्षा) देता है तथा अति गर्मी ग्रीष्म ऋतु में देता है।

(*vii*) शनि तथा मंगल की युति बिजली की कड़क पैदा करता है तथा पानी ही पानी भर देता है।

(*viii*) बुध तेज तथा भयानक हवा उत्पन्न करता है।

शुक्र धूप वाला मौसम/साफ व चमकदार धूप देता है।

(*ix*) शनि का संबंध बार-बार भयानक बादलों का छा जाना तथा सामान्य से हट कर वर्षा देता है।

(उ) अकाल/बाढ़ादि

(*i*) एक ही राशि में पांच ग्रहों का अवस्थित होना:

(क) कार्तिक मास में असामयिक वर्षा होगी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) वर्षा ऋतु में बाढ़ आने की संभावनाएं।

(ग) मार्गशीर्ष मास में अकाल, सामूहिक हत्याएं तथा राजा को भय।

(*ii*) मंगल का आश्लेषा नक्षत्र में होना, कम वर्षा व अकाल का द्योतक है।

(*iii*) बृहस्पति का 'रविनीच' (perihilion) होना सूखा दिखाता है।

(*iv*) शुक्र का ज्येष्ठा से श्रावण नक्षत्रों में उदय होना/अस्त होना भी अशुभ फल दर्शाता है।

(*v*) बृहस्पति तथा शनि की एक ही राशि मे अवस्थिति (यह स्थिति 1999 में, 2000 में तथा जून 2001 तक रही जिस समय में वह मेष तथा वृष राशियों में रहे और स्थिति चिन्तनीय ही रही।)

(*vi*) शुक्र का मघा या उ. आषाढ नक्षत्रों में अस्त/वक्री होना।

(*vii*) धनु राशि में गुरु व शनि की मंगल से युति, वर्षा की आशा करना व्यर्थ हैं।

(*viii*) मंगल तथा शनि की युति।

(*ix*) सूर्य, मंगल तथा शुक्र यदि एक ही राशि में हो।

(*x*) शनि मेष, सिंह या धनु राशि में, अन्य ग्रह से दृष्ट (क्रूर ग्रह से) हो।

(*xi*) गुरु का सूर्य, मंगल तथा शुक्र के साथ एक ही राशि में होना।

नोट–ग्रहों की उपरोक्त स्थिति बहुत ही कम होती हैं।

4.14 अच्छी वर्षा/पर्याप्त वर्षा के शकुन

(*i*) (क) बर्तन में रखा पानी गर्म हो जाए तथा सभी दिशाऐं निर्मल हो।

(ख) बर्तन में रखे पानी का स्वाद बिगड़ जाए, आकाश निर्मल या कौए के अण्डे जैसा नीले रंग का हो।

(ग) वायु बहना बन्द कर दे।

(घ) मछली आदि पानी से बाहर कूदे।

(ङ) मेंढक टर्राए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ii*) (क) बिल्ली पृथ्वी खोदने लगें।

(ख) चींटियां अण्डे लेकर भागने लगें।

(ग) सर्प वृक्ष पर चढ़ने लगे/संभोग करने लगें।

(*iii*) गाय सूर्य की ओर देखे या पक्षी (चिड़ियाँ) नहाने लगें।

4.15 प्रश्न शास्त्र द्वारा वर्षा की भविष्यवाणियाँ

यदि कोई व्यक्ति वर्षा के विषय में प्रश्न करे तो निम्नलिखित ग्रह योगों के आधार पर उत्तर दिया जा सकता है। उस समय का चक्र बनाकर उसमें उन ग्रह योगों के तथा पृच्छक के हावभाव को देखकर, भविष्यवाणी की जा सकती है।

(*i*) प्रश्न कुंडली में शुक्लपक्ष का चंद्रमा जल राशि में केन्द्र में हो तो स्थिति अच्छी वर्षा का सूचक है।

(*ii*) यदि पृच्छक जल को छुए या जल संबंधी कार्य करे या प्रफुल्लित होकर जल शब्द का प्रयोग करे या सूर्य बहुत गर्म हो, तो शीघ्र वर्षा होने की संभावना होती है।

(*iii*) वर्षा ऋतु में यदि गर्मी असहनीय हो जाए, तो उस ही दिन वर्षा होती है।

(*iv*) चंद्रमा शुक्र से सप्तम भाव में हो और किसी सौम्य ग्रह की दृष्टि पड़ती हो अथवा चंद्रमा शनि से पंचम, सप्तम या त्रिकोण में हो, तब भी वर्षा होगी।

(*v*) सौम्य ग्रह जलीय राशि में हो या केन्द्र में हो या तृतीय भाव में हों शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा जलीय राशि में हो तो वर्षा अधिक होगी।

(*vi*) (क) चंद्रमा तथा सूर्य से सप्तम में शुक्र तथा शनि हों।

(ख) चंद्रमा तथा शुक्र व शनि तथा सूर्य एक दूसरे से सप्तम में हो।

नोट–जो संभव नहीं है क्योंकि सूर्य से सप्तम में शुक्र नहीं हो सकता इसलिए (क) को यदि ऐसा पढ़े कि शुक्र से सप्तम में चंद्रमा व शनि से सप्तम में सूर्य अथवा शनि व चंद्रमा सूर्य व शुक्र से सप्तम में हों। पूर्वाचार्यानुसार चंद्रमा का शनि से त्रिकोण व शुक्र से सप्तम में होना वर्षा लाता है।

यदि वर्षा ऋतु में शनि व शुक्र की युति चंद्रमा से सप्तम में या चतुर्थ व अष्टम में अथवा लग्न से सप्तम, चतुर्थ, अष्टम, तृतीय व एकादश में हो तो वर्षा होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*vii*) यदि जो ग्रह सूर्य से पीछे हों और जब वह सूर्य पर होकर आगे निकले (सूर्य को पार करें) तो वर्षा बहुत तेज/सभी स्थानों पर होती है।

(*viii*) सूर्य शुक्र व बुध के मध्य हो, तो वर्षा में रूकावट होगी। यदि उनके निकट हो, तो अच्छी वर्षा होगी।

उदाहरण

8 जून 2004 को सूर्य वृष राशि में (1/23°–37′–33″) विचरण कर रहा था। बुध पश्चिम वृष राशि में 7 जून 2004 को 26 घंटे 21 मिनट पर अस्त हुआ (1/10°–52′–10″)। बुध पीछे था तथा शुक्र (व) वृष में सूर्य से आगे (1/24°–12′/05″) था। उस दिन वर्षा हुई। यहाँ शुक्र सूर्य के निकट तथा वक्री होने के कारण पीछे जाने वाला था।

18 जून 2004 को लेखक बंगलौर के लिए रवाना हुआ, सारे मार्ग भर ठंडा मौसम रहा, सभी स्थानों, पर कुछ शहरों को छोड़ कर, वर्षा हो रही थी। 19 जून 2004 को सूर्य बुध समान अंशों पर थे परन्तु बुध सूर्य से आगे था, शुक्र सूर्य से पीछे, वर्षा में रुकावट होनी चाहिए थी परन्तु सूर्य के अति निकट होने के कारण वर्षा हुई।

बुध सूर्य से आगे चल रहा था, 24 जून, 2004 को सूर्य 2/6°–54′–23″, बुध 2/15°–7′–15″ (सूर्य से आगे) तथा शुक्र (व) 1/16°–24′–34″ इस स्थिति में भी बंगलौर मं (19 घण्टें 15 मिनट बजे) वर्षा हुई। परन्तु उत्तरी भारत में नहीं हुई। शनि मन्द गति वाला ग्रह सूर्य, बुध तथा मंगल से आगे था। यह योग वर्षा में अवरोध दर्शाता है जबकि 24 जून 2004 को वर्षा हुई क्योंकि चंद्रमा पू. फाल्गुनी नक्षत्र (शुक्र के नक्षत्र में) तथा शुक्र वृष राशि में स्वगृही तथा रोहिणी नक्षत्र में (चंद्रमा नक्षत्र में) अथवा चंद्रमा व शुक्र का नक्षत्र परिवर्तन साथ ही गुरु व चंद्रमा की सिंह राशि में युति वर्षा का एक महत्त्वपूर्ण योग हैं। पैरा 4.11 (ग) को देखें जहाँ कर्नाटक में वर्षा की पूर्ण चर्चा की गई है।

आद्रा प्रवेश का चक्र तथा आकाशीय परिषद के दस पदाधिकारी (अध्याय 3) के अध्ययन से अच्छी वर्षा के योग बने हैं। परन्तु नकारात्मक योग जो गोचर में है उनके कारण, देश में वर्षा की कमी, उसके कारण चिन्ताजनक स्थिति प्रतीत हुई। कुछ स्थानों में वर्षा अधिक और कुछ में कम वर्षा हुई।

टाइम्स आफ इण्डिया दिनांक 21-9-2004 नई दिल्ली, खरीफ की फसल के कम होने की भविष्यवाणी केंद्र सरकार ने सोमवार को घोषण की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि खरीफ के अनाज तथा तेल के बीजों के उत्पादन की कम रहेगी। असामयिक तथा कम वर्षा के कारण ऐसा हुआ कृषि मंत्री श्री शरद पवार का कहना है। यह आशा भी की गई कि राबी की फसल में यह कमी पूरी होगी। खरीफ की अनाज की उत्पत्ति 12 लाख टन कम रही। राज्याधिकारियों तथा वैज्ञानिकों के द्विदिवसीय सम्मेलन में राबी की फसल (सर्दियों की फसल) अच्छी हो इसके उपाय के विषय में चर्चा हुई।

(*ix*) यदि प्रश्न कुंडली का लग्न कर्क, मकर या कुंभ हो तथा चंद्रमा लग्न में हो या शुक्ल पक्ष का चंद्रमा केन्द्र में हो:

(क) सौम्य ग्रह की दृष्टि पड़ने पर पर्याप्त वर्षा या अधिक वर्षा कह सकते हैं।

(ख) यदि क्रूर ग्रहों की दृष्टि पड़े तो वर्षा न होने की संभावना होगी।

(*x*) यदि प्रश्न लग्न कर्क, मकर या मीन हो और शुक्र लग्न में हो तथा शुक्ल पक्ष का चंद्रमा केन्द्र में हो और

(क) सौम्य ग्रहों से दृष्ट हो तो अच्छी वर्षा होगी।

(ख) क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो वर्षा कम/नहीं होगी (अल्प वर्षा का योग है)

(*xi*) चंद्रमा यदि जल राशि में हो तथा लग्न कर्क, कुंभ, मीन या कन्या, उत्तरार्ध मकर

(क) सौम्य ग्रह केन्द्र में वर्षा भारी होगी।

(ख) क्रूर गृह केन्द्र में हो तो अल्पवर्षा या थोड़ी-थोड़ी देर के लिए वर्षा हो।

(*xii*) (क) शनि तथा राहु चतुर्थ भाव में हो तो भयंकर सूखे/अकाल की संभावना होती है। (महाघोर दुर्भिक्ष)

(ख) यदि सभी केंद्रों में सौम्य ग्रह स्थित हों, ग्रहों से प्रतिनिधित्व क्षेत्रों में, अच्छी फसल होने की संभावना हैं।

(ग) यदि अवस्थित शुभ ग्रहों पर शनि की दृष्टि पड़ती हो तो उस क्षेत्र में अकाल पड़ेगा।

(*xiii*) यदि पृच्छक अपनी पांचों उंगलियां पकड़े हो और प्रश्न करे या अंगूठा पकड़े रहे, भारी वर्षा का योग है। यदि सबसे छोटी अंगुली (अनामिका) पकड़े हो तो अल्प वर्षा का योग होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xiv*) वार, तिथि तथा नक्षत्र की संख्या को जोड़कर दो से गुणा करें तथा तीन से विभाजित करें। शेष की संख्या के आधार पर निम्न भविष्यवाणी करें:

(क) एक शेष हो तो शुभ फल।

(ख) दो शेष हो तो अशुभ फल।

(ग) तीन शेष होने पर अकाल।

(*xiv*) लग्न से दूसरी या तीसरी राशि यदि जलीय राशि हो और उसमें जलीय ग्रह चंद्रमा, बुध, गुरु तथा शुक्र अवस्थित हो, तो अच्छी वर्षा होने की संभावना होगी।

मेघालोके भवति सुखिनोप्यन्यथावृत्ति चेतः।
कण्ठाश्लेष प्रणायिनि जने किं पुरदूरसेस्थे॥ मेघदूत 1/3॥

❑❑❑

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय

5 ज्योतिष तथा बाजार भाव

5.1 परिचय

ग्रहों, राशियों तथा नक्षत्रों द्वारा सभी वस्तुओं जैसे दालें, बीज, मसाले, तेल, रुई तथा शेयर मार्किट आदि का प्रतिनिधित्व होता है। ग्रहों का राशियों तथा नक्षत्रों पर से भ्रमण बाजार भावों में उतार-चढ़ाव उत्पन्न करता है। राशियों और नक्षत्रों द्वारा जिन वस्तुओं का प्रतिनिधित्व होता है उन ही वस्तुओं के भाव तथा उत्पत्ति प्रभावित होती है। ग्रहों के गोचर का प्रभाव उनके स्वभावानुसार पड़ता है। भाव में उतार-चढ़ाव व्यापारियों के भाग्य को प्रभावित करते हैं। जातक की आर्थिक स्थिति व भविष्य उसके पूर्व जन्मों के कर्मफल पर आधारित होता है। कथन है कि **'लाभ हानि जीवन मरण यश अपयश प्रभु हाथ' 'जैसी करनी वैसी भरणी', अवश्यमेव भुक्तव्यम् कृतं कर्मं शुभाशुभं** आदि अनेकों ऐसी कहावतें शास्त्रों में आती हैं। फिर भी मनुष्य को कर्म तो करना ही है, ग्रहों के गोचर द्वारा उसके कर्मों के फल उजागर होते हैं। ग्रहों का प्रभाव उसके जीवन में उतार चढ़ाव लाता है, जिसके फलस्वरूप उसके कर्मक्षेत्र/व्यापार में उन्नति/अवनति होने की संभावना होती है। कभी-कभी अचानक कोई घटना हो जाती है जिसका जातक को आभास भी नहीं होता। यदि किसी को हानि हो भी गई तो ऐसा नहीं है कि सदैव हानि होती जाएगी, हो सकता है कि भविष्य में इतना लाभ हो कि हानि का प्रभाव ही समाप्त हो जाए। मानव को भगवान ने 'कर्म योनि' प्रदान की है और साथ ही विवेक दिया है। वह अपने पूर्व जन्मों के कर्मानुसार फल तो भोगता ही है परन्तु अपने ज्ञान व बुद्धि द्वारा कर्म करके भोग में परिवर्तन लाने की चेष्टा कर भविष्य को उज्जवल बनाता है। बुद्धिमान व्यापारी ज्योतिष शास्त्र द्वारा प्राप्त ज्ञान से ग्रहों के होने वाले प्रभाव का पूर्वाभास कर बाजार में आने वाली तेजी, मन्दी के विषय में जानकर ही लेनदेन/क्रय-व्यय द्वारा लाभ उठाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम् के अनुसार जो उसका है वह उसे ही मिलेगा, दूसरा व्यक्ति वह प्राप्त नहीं कर सकता। जो भी/जितना भी लाभ उसके भाग्य में है वह पाता है न उससे अधिक और न ही उससे कम। परन्तु बिना सोच विचार के निर्णय लेने से हानि हो सकती है। इसलिए ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र द्वारा ग्रहों के प्रभाव से भविष्य में होने वाली घटनाओं का फलादेश करने की सामर्थ्य प्रदान की है। चतुर व्यापारी भविष्य में होने वाली हानि से अपने आप को बचा लेता है और समय ठीक होने पर सौदा करता है।

वास्तव में क्रूर ग्रहों के राशियों व नक्षत्रों पर विचरण से वस्तुओं के उत्पादन में कमी आती है और उन वस्तुओं के भाव में तेजी आ जाती है। उधर सौम्य ग्रहों के गोचरवश वस्तुओं का उत्पादन अच्छा होता है बाजार भाव में मन्दी आ जाती है। 'मांग और पूर्ति' के नियम का प्रभाव बाजार भाव पर सबसे अधिक पड़ता है।

क्रूर ग्रहों के गोचरवश राशियों और नक्षत्रों के पीड़ित होने से वर्षा का कम होना, बाढ़/आंधी तूफान आना, फसलों का नष्ट होना, युद्ध/उपद्रव होना, प्राकृतिक प्रकोपों व सामाजिक विघटन, सरकार द्वारा बनाई गई गलत नीतियाँ बाजार भाव पर गलत प्रभाव डालती हैं।

5.2 सामान्य नियम

विभिन्न पंचांगों में दी गई भविष्यवाणियाँ, निम्नलिखित शास्त्रीय सूत्रों पर आधारित होती हैं–

(*i*) **संक्रांति**–सूर्य के विभिन्न बारह राशियों व सत्ताइस नक्षत्रों में प्रवेश और उस समय की तिथि और वार का प्रभाव। विभिन्न राशियों में सूर्य प्रतिवर्ष निश्चित तारीख को प्रवेश करता है परंतु उस संक्रांति का सदैव एक सा फल नहीं होता। कारण है कि प्रत्येक मास के प्रवेश के समय एक ही तिथि व वही नक्षत्र नहीं होता इसलिए *तिथि, वार* तथा *नक्षत्र* के सूर्य के साथ योग से संसार में होने वाली घटनाओं का पता चलता है।

(*ii*) ग्रहों के विभिन्न राशियों में योग से होने वाले प्रभाव। जैसे शनि-मंगल का एक दूसरे से संबंधों के होने वाले प्रभाव। जैसे शनि-मंगल का एक दूसरे से केंद्र में होना, ***प्राकृतिक दुर्घटनाओं,*** युद्धाधि का संकेत देता है। बुध व चंद्रमा की युति व एक दूसरे के नक्षत्र में होना **'भूकम्प योग'** शुक्र व चंद्रमा की युति व एक दूसरे के नक्षत्रादि में होने से **वर्षा ऋतु** पर प्रभाव होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iii*) आकाशीय लक्षण जैसे बादलों की स्थिति इन्द्रधनुष, सूर्य पर धब्बे आदि।

(*iv*) तिथि की वृद्धि/क्षय होना।

(*v*) ग्रहों की परस्पर स्थिति। जैसे चंद्रमा का शनि से त्रिकोण में होना वर्षा लाता है। *गुरु व शनि का एक दूसरे से केन्द्र में होना अमरीका के राष्ट्रपति पद का परिवर्तन।* अब जनवरी 2005 से पुन: बुश नये राष्ट्रपति रहेंगे (2 नवम्बर, 2004 को चुनाव में जीते हैं) उस समय शनि मिथुन में तथा गुरु कन्या में होंगे।

(*vi*) ग्रहों का विभिन्न राशियों में प्रवेश।

(*vii*) ग्रहों का विभिन्न नक्षत्रों में प्रवेश।

नोट: (क) 7 अक्टूबर 2004 को (20 घण्टे 35 मिनट पर) गुरु का बाल्यत्व समाप्त, 8 अक्टूबर, 2004 को बुध ने चित्रा-नक्षत्र में (13 घण्टे 3 मिनट पर) प्रवेश किया।

परिणाम: इजिप्ट के सिना पेनिनसुला में एक विस्फोट में 31 व्यक्ति (अधिकतर इजराइल के यात्री) मारे गए, 120 घायल जबकि एक पंचतारा होटल तथा रिसॉर्ट जो कि छुट्टी मनाने के लिए आए यात्रियों से भरे थे। एक के बाद एक विस्फोट हुए। एक कार जिसमें विस्फोटक पदार्थ भरे थे दस मंजिल वाले भवन में घुस गई और वह भवन नीचे बैठ गया, एक 'आत्मघाती विस्फोटक' बम के साथ अपने आप को ताल के पास जाकर उड़ाता है।

(ख) पेरिस में इन्डोनेशिया के *राजदूत भवन* पर आक्रमण-एक बम प्रात: 5 बजे (भारतीय समयानुसार) व 03.00 जी एम टी पर फटा।

(ग) गोहाटी-आसाम: उत्तर-पूर्व में तेज वर्षा के कारण भूस्खलन से 11 व्यक्तियों की मौत हुई। शिलांग व मेघालय में इस घटना ने पिछले 15 वर्षों का रिकार्ड तोड़ा।

9/10 अक्टूबर 2004 को शुक्र का पू. फाल्गुनी नक्षत्र में (28 घण्टे 4 मिनट पर प्रवेश, 10 अक्टूबर को सूर्य ने (11 घण्टे 5 मिनट पर) चित्रा नक्षत्र में प्रवेश किया।

(घ) गोलापारा जिले में पुन: बाढ़ आई, गारो पहाड़ियों से मेघालय में पानी आया और **कृष्णाए** क्षेत्र के लोग धोखे से फंस गए। कामरूप, मौरीगांव, नौगांव, धेमाजी तथा लखीमपुर प्रभावित हुए। कपिली नदी, में बाढ़ से नौगांव का बहुत बड़ा क्षेत्र पानी में डूब गया। 23000 व्यक्ति लखीमपुर में प्रभावित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुए। इस तीन दिन के समय में और भी बहुत सी दुर्घटनाएं हुईं जिसका उल्लेख यहाँ संभव नहीं।

5.3 शास्त्र में दिए गए सूत्रों का आधार

लेखक के अध्ययनुसार निम्नलिखित आधार पर शास्त्रीय सूत्र बनाए गए होंगे ऐसा प्रतीत होता है–

(क) प्रत्येक नक्षत्र किसी न किसी वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है, तथा वर्षा व (सप्तनाड़ी) चक्र में की गई चर्चा को ध्यान दें) फसल के अच्छे/बुरे होने पर पूर्ण अधिकार रखता है। फसल के ऊपर ही बाजार भाव निर्भर करते हैं और आम जनता की खुशहाली निर्भर करती है।

(ख) प्रत्येक ग्रह भी किसी न किसी वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है। उनकी गोचर में स्थिति वर्षा, फसल, देश, प्रदेश आदि पर पूर्ण प्रभाव डालती है।

(ग) प्रत्येक राशि भी ग्रह तथा नक्षत्र की भांति वस्तुओ, कृषि उत्पादन, दिशाओं व किसी न किसी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है।

सप्ताह के वार, तिथि, ग्रह एवं नक्षत्रों से बने योग सभी प्रकार की घटनाओं, चाहे वह राजनीतिक व प्राकृतिक हो या बाजार भाव, कृषि उत्पादन, उद्योग, सामान्य जनता की खुशहाली आदि, से संबंधित हों, पर पूर्ण नियंत्रण रखती है।

5.4 ग्रह और उससे प्रतिनिधित्व वस्तुएं आदि

सूर्य मोती, मानक, स्वर्ण, ताम्र, रेशम, चमड़ा, चर्म, भूसा, अनाज, वृक्ष, तीखे पदार्थ, रुपये पैसे, अग्नि से संबंधित वस्तुएं, विष, बीज, सभी प्रकार के खदान, सरसों, लाल रंग की वस्तुएं रसदार, गन्ध युक्त वस्तुएं।

चंद्रमा मधु, फल, फूल, जल से उत्पन्न वस्तुएं/जीव, चावल, गेहूँ, जौ, रस, मोती, गन्ना, शंख, चांदी, श्वेत वस्त्र, नमक, तरल पदार्थ तथा जो किसी अण्डे में से निकले।

मंगल लाल रंग के फल तथा फूल, गुड़, मदिरा, तीखे स्वाद वाले फल पारा, मसूर, ताम्र, लाल रंग की धातु एवं वस्तु, शस्त्र, मूंग, बकरा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध मूंग, जौ, मटर, अरहर, कोई अनाज को दो भागों में विभाजित हो। (चने की दाल, मूंग व उड़द की दाल, बादाम, काजू आदि) सब्जी, हरे रंग की चीजें, तेल के बीज, खट्टे पदार्थ, गन्ध, इत्र, पक्षी, हरे रंग के मूल्यवान पत्थर, नग इत्यादि।

गुरु पीला पुखराज, हल्दी, जटामसी, तगर, मोम, पीले रंग की वस्तुएं, पहाड़ी नमक, फल तथा सब्जियाँ जो बेल पर उत्पन्न होती हैं। (तोरी, सेम/गन्ना, अंगूर, घिया आदि) सरसों, गेहूँ, जौ, गनना, घोड़े, गाय, कपूर आदि।

शुक्र हीरा, मूल्यवान नग, जेवर, रेशम, कंबल, साफ व धुले रेशमी कपड़े, कीमती/उच्च किस्म के सूती कपड़े, लगाव, दयाभाव, मिलाजुला अनाज, चांदी, जल से उत्पन्न वस्तु, त्रिफला (अहड़, बहड़, तथा आंवला), चोब-चीनी, जायफल, अंगूर की बेल, स्फटिक (कांचमणि), अगर, मिर्च, मेवा, पंसारी का सामान, रुई (कपास)।

शनि नीला पुखराज (नीलम), कड़वी स्वाद वाली वस्तुएँ, भैंस, गधा, ऊँट, चना, मटर, कोगुनी, कोदों, तिल, उड़द, वात वाली तासीर की चीजें, ऊन, चमड़े का सामान, काला नमक, नील, सभी काली वस्तुएँ।

राहु-केतु गोमेद, सुरमा, रागँ, लोहा, शीशा, घटिया/छिलके सहित चावल (धान) नीले रंग की वस्तुएं, हड्डी, मज्जा, कोन, कोदों, कंगुनी, तिल, उडद, बकरा, सुअर व गधा।

5.5 राशियाँ तथा वस्तुएँ आदि

मेष कपड़े, भेड़, पशु, कम्बल, ऊन, शाल, कुटुम, (भेड़ के बच्चे के कोमल बालों से तैयार किया गया कम्बल), पीपा, (घी तथा तेल रखने का बर्तन), मसूर, लाल गेहूँ, राल, जौ, बाजरा, औषधी वाले पौधे, जड़ी-बूटी, जल में उत्पन्न पौधे, ताम्र स्वर्ण, लाल रंग वाली वस्तु, सरसों, गोंद, लाल चंदन की लकड़ी (नवीन/विद्वानों की मान्यता-मशीनरी, शेयर, लोह आदि)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृष नमक, फूल, जौ, सफेद गेहूँ, बैल, दूध, घी, सूती कपड़े (नवीन विद्वानों की मान्यता-रुई-कपास)

मिथुन फसलें तथा शरद ऋतु में उत्पन्न चीजें जैसे जौ, बाजरा, मक्का, ग्वार, मूंग, मोठ उड़द, मूंगफली, तोरिया आदि।

रुई, बिनौला, जूट, वारदाना, बेल, कमल, कुमकुम, जड़ व तना, केसर, कस्तूरी, हल्दी, जिमिकन्द, बिदारी, खाण्ड (नवीन विद्वानों की मान्यता-रेलवे, पुस्तक, पत्र, समाचार पत्र प्रकाशन आदि)

कर्क कन्दमूल, प्याज, फल, केला, मोचरस, कोन्दो, दूब घास, तेजपात, दालचीनी सभी प्रकार की वृक्ष की छाल, पंसारी का सामान, चांदी, पारा आदि।

सिंह सभी प्रकार के रस, धान से निकलने वाला अनाज, गेहूँ, चावल आदि, चने लिनोनियम, चीता, हिरण की खाल, लाल रंग की वस्तुएं (नवीन विद्वानों के मतानुसार-स्वर्ण)

कन्या सफेद गेहूँ, मूंग हरा, मसूर, दूध, कुल्थी, ग्वार, मटर, अरहर, अलसी, खांड, शक्कर, हरे उड़द (नवीनमतानुसार कपास तथा मजदूर)

तुला जौ, गेहूँ, उड़द, छिलके सहित सेम, वने, मटर, गोला, रूई, रेशम, चावल, सरसों, आदि (नवीन मतानुसार, चावल तथा सभी खाने वाली वस्तुएं)

वृश्चिक बकरा, बकरी, भेड़, गन्ना, सभी रसदार वस्तुएं, गुड़, शक्कर, मिठाई, लोहा, इरण्ड, शीशम, तिल सभी काली वस्तुएँ, चमड़ा, गंध वाली वस्तुएं, इत्यादि (नवीन विद्वानों के मतानुसार-ककड़ा, हल्दी)।

धनु आज, सीसम, तिल, जड़, नमक, टमाटर, सभी सरदार पदार्थ, कपड़े, शस्त्र, घोड़े, सफेद चावल, रबड़ (नवीन विद्वानों के मतानुसार-समुद्र से प्राप्त पदार्थ)

मकर गन्ना, स्वर्ण, लोहा, गोंद, बेल, पत्ते, फल, कन्द वृक्ष (नवीन विद्वानों के मतानुसार-कोयला, जस्त, टीन, कांसा, ताम्बा, शीशा)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुंभ फल-फूल, मूल्यवान नग, आकर्षक आकार व चमकदार रंग वाले पदार्थ, शंखादि जल से प्राप्त होने वाले पदार्थ, स्वीपादि, पंसारी का सामान, नकली रेशम, काला उड़द, तेल, तिल, लोहा (नवीन विद्वानों के मतानुसार-बिजली का सामान, शेयर आदि)

मीन रूई, अमूल्य रत्न/मणि, गजमुक्ता, गोरोचन, जल से प्राप्त होने वाले मूल्यवान नग/पत्थर, तरल पदार्थ, घी, तेल, मछली से प्राप्त विभिन्न वस्तुएं (नवीन विद्वानों के मतानुसार-मछली, युद्ध की सामग्री)

नोट: अवकहड़ाचक्र से किसी भी वस्तु के नाम के प्रथम अक्षर से नक्षत्र तथा राशि का पता लगाया जा सकता है।

5.6 (क) सभी वस्तु को तीन भागों में बांटा जा सकता है–

	वस्तु	ग्रह
(*i*)	धातु	शनि, राहू तथा मंगल
(*ii*)	मूल	केतु, शुक्र तथा सूर्य
(*iii*)	जीव	गुरु, बुध तथा चंद्रमा

5.6 (ख)

	रंग	ग्रह
(*i*)	सफेद	शुक्र तथा चंद्रमा
(*ii*)	लाल	सूर्य तथा मंगल
(*iii*)	पीला	गुरु
(*iv*)	हरा	बुध
(*v*)	काला	शनि
(*vi*)	नीला	राहू-केतु

बाजार भाव की रेखा ग्रहों के बलाबल जैसे गुरु, बुधादि के उच्च, मूलत्रिकोण, स्वराशि, स्वनवांश या मित्र गृहों से दृष्ट व शुभ वर्गों में होने पर निर्भर करता है। इस स्थिति के ग्रहों से प्रतिनिधित्व वस्तुओं का मूल्य नीचे या ऊपर की ओर जाता है।

5.7.1 सूर्य का द्वादश राशियों में संक्रमण

प्रत्येक वर्ष सूर्य प्राय: निश्चित तिथि व समय पर एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करता है। सूर्य का संक्रमण ऋतुओं का निर्माण करता है,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजनीतिक गतिविधियों पर, बाजार भावों पर, शेयर बाजार आदि पर प्रभाव डालता है। सूर्य के उत्तरायण के बाद शीतलहर समाप्त, गर्मी शुरु और दक्षिणायन शुरु होना वर्षा तथा सर्दी के आने का समय बताता है। क्या यह समझा जा सकता है कि प्रतिवर्ष सूर्य का मेष में या किसी और राशि में संक्रमण एक ही प्रकार के फल देता है। ऐसा नहीं हो सकता। हाँ सामान्य फल जैसे ऋतु परिवर्तन आदि अवश्य होते हैं। परन्तु निम्नलिखित कारणों से प्रतिवर्ष ऋतुओं का जो फल होंगे उनमें अंतर होगा–

(अ) संक्रमण के दिन के वार, तिथि व नक्षत्र के योग से।

(आ) उस समय के ग्रहों की सूर्य से स्थिति व उनके परस्पर संबंधों के कारण।

28 नक्षत्र, वर्ष के 360 दिन, सात दिन का सप्ताह, नवग्रह, द्वादश राशियाँ, ग्रहों की विभिन्न राशियों व नक्षत्रों में स्थिति, नक्षत्र परिवर्तन, राशि परिवर्तन तथा उनका भी तिथि और वार से सम्बन्ध, घटनाओं का नियंत्रण करते हैं। ऋतुओं, बाजार भाव के उतार चढ़ाव पर, राजनीतिक गतिविधियाँ प्राकृतिक दुर्घटनाएँ आदि सभी का प्रभाव पड़ता है। इस स्थिति पर प्रकाश कुछ उदाहरणों द्वारा डाला जाएगा।

5.7.2 *सूर्य को द्वादश राशियों में संक्रमण का राजनीतिक, प्राकृतिक तथा बाजार आदि पर प्रभाव*

I. मेष (वैशाख संक्रांति)

वायव्ये च सदा दृश्टिः सर्व सौख्य समन्विता।
सुभिक्षं च विजानीयात् नृपाणां च कलिर्भवेत्॥

राजनीति प्रसिद्ध नेताओं को कष्ट, किसी की मृत्यु/पदच्युति/चुनाव के कारण सत्ता में परिवर्तन, पूर्वी क्षेत्रों में युद्ध भय। दक्षिणी क्षेत्रों में अच्छी फसल तथा शान्ति तथा उत्तर पश्चिम में परेशानी, झगड़े आदि।

बाजार तेल, सरसों, तिल, सभी फलों, गुड़, खाण्ड, स्वर्ण, चांदी आदि भावों में तेजी। चावल, मूंग, चना, रूई, पटसन के भावों में तेजी/मंदी शुरु में परन्तु बाद में भावों में तेजी रहेगी।

नोटः यदि अनाज तथा दालों के भाव गिर जाएं तो संग्रह करना चाहिए तो भविष्य में लाभ होगा। सूर्य पर यदि सौम्य ग्रहों का प्रभाव (युति/दृष्टि) हो तो अच्छी फसल होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

II. वृष राशि (ज्येष्ठ संक्रांति)

सूर्य का वृष राशि में प्रवेश का प्रभाव खरीफ की फसल पर, ऋतु परिवर्तन व फसल में बीमारी फैलने आदि से दुष्प्रभाव होता है।

नैर्ऋत्ये च यदा दृष्टि भयक्तेसं च दारुणम्।
नपाणां च भवेन्नाशो दुर्भिक्षं च फलं भवेत्॥

राजनीति दक्षिण तथा पश्चिम में अकाल का भय, पूर्वी क्षेत्रों में अच्छी फसल व शांति उत्तरी क्षेत्रों में युद्ध की स्थिति।

बाजार घी, रूई, स्वर्ण, चाँदी, अलसी, सरसों, तिल, तेल, सुपारी तथा गोले की भाव में तेजी।

(अ) *वृष या वृश्चिक राशि में सूर्य के संक्रमण के समय निम्नलिखित ग्रह स्थिति का प्रभाव शुभ होता है–*

(*i*) सौम्य ग्रह सूर्य से केन्द्र में हो (सिंह/वृश्चिक/कुंभ)।

(*ii*) बलवान सौम्य ग्रह सूर्य को देखता हो/सूर्य से युति करे।

(*iii*) गुरु तथा चंद्रमा एक साथ या अलग-अलग होकर चतुर्थ या दशम (सिंह या कुंभ) में हो।

(*iv*) शुक्र/बुध द्वितीय या द्वादश में या एक द्वितीय तथा दूसरा द्वादश में हो और सूर्य गुरु से दृष्ट हों।

(*v*) शुक्र/बुध वृष या वृश्चिक के द्वितीय तथा द्वादश में हो और वृष में गुरु तथा चंद्रमा हो।

(*vi*) शुक्र एकादश, चन्द्रमा चतुर्थ तथा बुध सूर्य से द्वितीय में हो।

नोट–वृष से विचार करें तो सूर्य वृष में, बुध मिथुन में, चंद्रमा सिंह में तथा शुक्र उच्च का मीन में।

वृश्चिक से विचार करें तो सूर्य वृश्चिक मे, बुध धनु में, चंद्रमा कुंभ में तथा शुक्र कन्या में नीच का होगा।

उपरोक्त ग्रह स्थिति फसलों की रक्षा करती है उनमें कीड़ा लगने या किसी अन्य कारण से नष्ट नहीं होने देती। पर्याप्त वर्षा को इंगित करती है।

(आ) वह योग जो फसल का नाश दर्शाते हैं। अति वृष्टि/अनावृष्टि कीड़े आदि से फसल का नाश हो।

(*i*) गुरु कुंभ में, चंद्रमा वृष में, मंगल तथा शनि मकर राशि में।

(*ii*) वृष तथा वृश्चिक राशि के दोनों ओर क्रूर ग्रह हों (अशुभ कर्तरी योग)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iii*) सूर्य से सप्तम में शनि तथा मंगल।

(*iv*) शनि/मंगल सूर्य से द्वितीय में हो और कोई शुभ दुष्टि न हो।

(*v*) सूर्य से मंगल तथा शनि केंद्र (वृश्चिक, वृष, सिंह या कुंभ) में।

(*vi*) सूर्य से मंगल षष्ठ में तथा शनि सप्तम में हो।

(*vii*) सूर्य से शनि षष्ठ तथा मंगल सप्तम में हो।

III. मिथुन (आषाढ संक्रांति)

सूर्य का मिथुन राशि में प्रवेश और सौम्य ग्रहों से युति/दृष्टि संबंध हो तो अच्छी खेती की उपज की संभावनाएं होती हैं। परन्तु इस वर्ष 2003 में शनि से युति हुई तो वर्षा की कमी रही।

इशान्य यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितं।
देशभंगम् विजानीयत् शिशूनां च विनाशहि॥

राजनीति पूर्वी तथा उत्तरी क्षेत्र में कष्ट, परेशानियाँ, दक्षिणी क्षेत्र में बच्चों को कष्ट तथा युद्ध भय परन्तु पश्चिमी क्षेत्र में शांति व सुख समृद्धि।

बाजार मूल्यों में भारी वृद्धि।

IV. कर्क (श्रावण संक्रांति)

नैऋत्यै च यदा दृष्टिभयक्तेसं च दारुणाम्।
नृपाणां च भवेन्नाशो दुर्भिक्षं च फलं भवेत॥

दक्षिणायन में सूर्य प्रवेश/कर्क प्रवेश के समय में सौम्य ग्रहों का प्रभाव अच्छी व पर्याप्त वर्षा और अच्छी खेती की उपज की संभावना दिखाता है।

राजनीति दक्षिणी व पश्चिमी क्षेत्र में अकाल व उत्तरी क्षेत्रों में युद्ध भय तथा राजा को भय परन्तु पूर्वी क्षेत्रों में सुख, शांति तथा समृद्धि।

बाजार भावों में प्रारंभ में उतार चढ़ाव परन्तु बाद में बाजार सम/स्थिर रहेगा।

V. सिंह (भाद्रपद संक्रांति)

इशान्ये सत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितं।
देशभंगम् विजानीयात् शिशुनां च विनाशहि॥

राजनीति पूर्वी तथा उत्तरी (ईशान कोण) क्षेत्रों में अशांति, दक्षिणी क्षेत्रों में युद्धभय तथा बच्चों को कष्ट परन्तु पश्चिमी क्षेत्रों में शांति, सुख तथा समृद्धि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाजार स्वर्ण, रजत, तिलहर, घी, शक्कर, तेल तथा शेयर के भाव मन्दे परन्तु रूई के भाव में अचानक तेजी।

VI. कन्या (अश्विन संक्रांति)

आग्नेय्यां दृष्टिं मार्गस्तु वारूणादौयथा क्रमम्।
देश भंगं विजानीयात् सृष्टि संहार कारकम्॥

राजनीति दक्षिणी-पूर्वी (अग्निकोण) में अशांति व उपद्रव, पश्चिमी क्षेत्रों में युद्ध भय तथा उत्तरी क्षेत्रों में शांति व समृद्धि।

बाजार नारियल, सुपारी, तिल, तेल, रजत तथा रूई के भावों में तेजी। शेयर, स्वर्ण, गुड़, शक्कर, चीनी, घी, अलसी आदि में मन्दी होकर अच्छी तेजी आएगी।

VII. तुला (कार्तिक संक्रांति)

इशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितं।
देशभंगम् विजानीयात् शिशुनां च विनाशहि॥

मिथुन व सिंह की भांति प्रभाव होगा।

राजनीति

यहाँ सूर्य की युति बुध व केतु से हुई (अक्टूबर 2004)। द्वादश में मंगल था। दक्षिण में वर्षों के प्रयास के बाद डाकू वीरप्पन को मार गिराया गया। उत्तरी क्षेत्र जापान में टाइफून से 66 व्यक्ति मरे अधिक पानी के कारण (58 फुट गहरा) 6500 किलोमीटर के क्षेत्र में सभी कुछ बह गया।

बाजार रूई, रजत, आदि के भाव गन्दे परन्तु जौ, चना, अलसी, स्वर्ण, ताम्र, सुपारी, मजीठा आदि के भाव ऊँचे होंगे। प्रतिदिन की आवश्यकता वाली सभी वस्तुओं के भाव चढ़ेंगे।

VIII. वृश्चिक (मार्गशीर्ष संक्रांति)

सूर्य की वृश्चिक संक्रांति के फसल पर होने वाले प्रभाव की चर्चा II (अ) तथा (आ) में हो चुकी है, उसे ध्यान दें। इस संक्रांति का प्रभाव गर्मियों की फसल पर पड़ता है।

इशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितं।
देशभंगम् विजानीयात् शिशुनां च विनाशहि॥

राजनीति मिथुन व सिंह की भांति प्रभाव होगा।

पूर्वी/उत्तरी क्षेत्र में अशांति तो श्रीनगर में जब 17 नवम्बर 2004 को प्रधानमन्त्री की रैली थी तो 7.30 प्रातः से 12

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बजे तक आतंकवादियों के साथ सेना की गोलाबारी हुई। दक्षिण में बंगलौर में कन्नड़ फिल्म इन्डस्ट्रीज ने अन्य भाषाओं की फिल्म दिखाये जाने का विरोध शुरु किया। 17 नवम्बर को बंद रहा तथा 25-11-2004 को विधान सभा का घिराव व मुख्यमंत्री पर चप्पल जूते फेंके गए, लाठी चार्ज व बहुत तोड़फोड़ हुई। यह विरोध चलेगा ऐसी घोषणा हुई। उधर मुख्यमंत्री 'मंत्रिमण्डल' नहीं बना पा रहे थे।

बाजार रूई, ताम्बा, रजत, स्वर्ण, ऊनी कपड़े तथा सुपारी के भाव बढ़ेंगे।

IX. धनु (पौष संक्रांति)

मार्गशीर्षे धनुषिं ही यदायाति दिवाकरः
तथा दुर्भिक्षंक ज्ञेय विपरीत सुखभवेत्॥

पौष संक्रांति यदि मार्गशीर्ष मास में पड़े, तो राजनीतिक उथलपुथल, अशांति, खाद्य सामग्री की कमी, अकाल, अस्त व्यस्त कानून व्यवस्था, विद्रोह आदि होता है।

राजनीति उत्तर तथा पश्चिम में परेशानियों, पूर्व में युद्ध भय, दक्षिण में शांति परंतु राजनीतिक अस्थिरता।

बाजार रूई, तिल, तेल, स्वर्ण, रजत, गुड़, अनाज तथा शेयर के भाव बढ़ेंगे।

घटनाऐं—कांची कामकोटि के शंकराचार्य की गिरफ्तारी, वाराणसी के पास नक्सलवादियों द्वारा सशस्त्र पुलिस के ट्रक को उड़ाया जाना जिसमें 14 जवान मारे गए, बिहार में राजनीतिक दलों, जो केन्द्र की सरकार में साथ-साथ हैं, में टकराव व देश में खून खराबी।

चीन में लोहे की खान में आग, जो अन्य नौ खानों को भी लपेट गई।

ईराक में तेल के कुएं में आग, कोस्टारिका (सैन जोंस) 'जहाँ 21 राष्ट्रों' इबेरो अमेरिका की सभा में आए हुए थे, सभी सदस्य सुरक्षित रहे जबकि कितने ही व्यक्तियों की हृदयग्रति रूक गई और आठ व्यक्ति मर गए (टा.आ. इ. दिनांक 2 नवम्बर 2004)

नोटः 28 नवम्बर, 2004 तक प्रतिदिन समाचार कहीं न कहीं से गड़बड़ी का मिलता था। महाराष्ट्र में मंत्रिमंडल के बनाने का, कर्नाटक में मंत्रिमंडल बनाने का, बिहार की राजनीति हो चाहे यू. पी. की, धार्मिक मामला हो,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्सलवादियों से परेशानी हो (आसाम, मणिपुर), 26 दिसम्बर 2004 को दक्षिण-पूर्वी समुद्री तट पर 'सुनामी' के कारण महाविनाश लीला आदि अशुभ फल हो ही रहे हैं।

X. मकर (माघ संक्रांति)

आग्नेय्यं दृष्टि मार्गस्तु वारुणादौ यथा क्रमम्।
देशभंगम् विजायीनात् सृष्टि संहार कारकम्॥

राजनीति कन्या राशि के समान ही फल होंगे।

बाजार बाजार भाव बढ़ेंगे।

XI. कुंभ (फाल्गुन संक्रांति)

इशान्ये यत्रदृष्टिः स्यात् नृपमन्येन् ग्रसितं।
देशभंगम् विजानीयात् शिशुनां च विनाशहि॥

इस वर्ष फाल्गुन संक्रांति शनिवार (12 फरवरी 2004) को होगी जिसके फलस्वरूप मूल्यों में बढ़ोतरी होगी, सत्तारूढ़ दलों में टकराव, जनता में अशांति तथा राजनीतिक दलों में विस्फोटक स्थिति। रोग फैलेगा।

13-2-2015 शुक्रवार को सूर्य कुंभ में प्रवेश किया।

कुंभराशि यदा भानु समृद्धिस्तच जायते।
लवणं च तथा तैलं स्वल्पाघं चैव दापयेत॥

अन्न सस्ता होवे, लवण तथा तेल कुछ-कुछ महंगा हो। कुंभ संक्राति की दृष्टि नैऋत्य कोण में होने से पूर्व उत्तर के देशों में दुर्भिक्षका भय, दक्षिण के देशों में युद्ध व अशांति तथा पश्चिम में सुख-शान्ति होगी।

XII. मीन (चैत्र संक्रांति)

इशान्ये यत्रदृष्टिः स्यात् नृपमन्येन् ग्रसितं।
देशभंगम् विज्ञानीयात् शिशुनां च विनाशहि॥

मीन राशिगते भानु सर्वधान्यमद्रर्धता।
लवणं तिलतैलं च महर्धमुपजायते॥

सभी अन्न, लवण, तेल महँगे होंगे उत्तर के देशों में कष्ट तथा बालकों को पीड़ा, दक्षिण में युद्ध का भय पश्चिम में सुभिक्ष, सुख शान्ति होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5.7.3 (क) सूर्य का द्वादश राशियों में संक्रमण तथा दिक फल

दिशाएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
पूर्व	यु	शा	क	शा	क	क	क	क	यु	क	क	शा
पश्चिम	क	क	शा	क	शा	यु	शा	शा	क	यु.	शा	शा
उत्तर	क	यु.	क	यु.	क	शा	क	क	क	शा	क	क
दक्षिण	शा	क	यु.	क	यु	क	यु.	यु.	शा	क	यु	यु.

यु = युद्ध, क = कष्ट, शा = शांति

(ख) सूर्य का संक्रमण तथा बाजार का रुख

वस्तुओं के भाव में उतार चढ़ाव। सामान्यतया सूर्य के प्रत्येक राशि में संक्रमण का प्रभाव एक सा ही रहता है, ऐसा उपरोक्त व्याख्या से पता चलता है। सभी मामलों में वस्तुओं के भाव में तेजी बताई गई है। यदि हर मास भाव बढ़ते ही जाएं तो भयानक स्थिति होगी। वैसे देखा जाए तो स्वतंत्रता दिवस के बाद मूल्यों में लगातार वृद्धि हुई है। परन्तु ज्योतिषीय दृष्टिकोण से वैज्ञानिकों को संतुष्ट, केवल इस बात से नहीं किया जा सकता कि प्रतिमाह सूर्य के संक्रमण का प्रभाव ही मूल्यों में वृद्धि का कारण है। अर्थशास्त्री मानते हैं *'मांग तथा पूर्ति'* पर बाजार भाव आधारित होते हैं। परन्तु ज्योतिषीय सूत्र व्यापारियों का पूरा मार्गदर्शन करते हैं। वह सब सूर्य के संक्रमण के साथ-साथ अन्य ग्रहों की स्थिति (जिनकी चर्चा पहले भी कई बार कर चुके हैं) पर निर्भर करता है। यहाँ उन बिन्दुओं पर एक-एक करके विचार करते हैं।

5.8 सप्ताह का वार एवं सांसारिक घटनाएं

यदि कोई वार चन्द्रमास में पांच बार आ जाए (चार या चार से अधिक) उसका ऋतु, जनता की प्रसन्नता एवं शांति, बाजार भाव, फसल एवं राजनीतिक स्थिति पर पूरा प्रभाव पड़ता है, जैसे–

(*i*) रविवार

यत्र मासे रंवेर्वारा: जयन्त पंचसततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंगा स्यात दास्ते च महद्भयम॥

छत्र भंग (सरकार का गिरना, राजा की मृत्यु), मंत्रिमंडल में परिवर्तन, आम चुनाव आदि युद्ध भय/झगड़े, अकाल, मौत, भवनों व जन जीवन की हानि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ii) चंद्रवार

सोमस्तु पंचवारास्तु मासे भवन्तिहि।
धनधान्य समृहिदः स्याति सुख भवति सर्वदा।।

सभी ओर सुख समृद्धि, जनहिताय-जनसुखाय कार्य में वृद्धि, अच्छ फसल, गेहूँ चावल एवं खाद्य अन्न की बहुतायत।

(iii) मंगलवार

यत्रमासे मही सूनोर्जायनते पंचवासराः।
रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्र भगस्वदा भवेत्।।

सरकार का परिवर्तन/किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की मृत्यु, पदच्युति, कु राजनीतिक परिवर्तन आदि का संकेत होता है।

जनजीवन की हानि, हत्याएं व धार्मिक स्थल पर व तीर्थ स्थान प झगड़े, अग्निकांड, दुर्घटनाएं, जुर्मों की वृद्धि, खूनखराबी, वायु दुर्घटना आ का भय।

उत्तर तथा दक्षिण सीमाओं पर शत्रु की गतिविधियाँ।

दालों, पैट्रोल, दालचीनी, दैनिक उपयोग की वस्तुओं आदि के मूल्यों वृद्धि।

(iv) बुधवार

बुधश्च पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरम्।
प्रजानां सुखमत्यतं सुभिक्षं च प्रजायते।।

खाद्यान्न की मात्रा में वृद्धि, सभी ओर सुख शान्ति व उन्नति का संकेत

(iv) गुरुवार

खाद्यान्न की मात्रा में वृद्धि, सभी ओर सुख शान्ति व उन्नति का संकेत

(v) गुरुवार

यत्रमासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पते।
विग्रह पश्चिमे देशे खड़ग च जायते।।

पश्चिमी प्रांतों/देशों में छोटे-छोटे युद्ध एवं अशांति होने का भय।

(vi) शुक्रवार

शुक्रस्थ पंचवारार्स्युत्रमासे निर्रन्तरम्।
प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आम जनता समृद्धि व उन्नतिशील एवं प्रसन्न होगी। अच्छी फसल, पर्याप्त वर्षा, जन्मदर में वृद्धि तथा सभी ओर शांति व खुशी का वातावरण होगा।

(*vii*) शनिवार

शनिवारा: यदि पंच पाताले कम्पते फणी।
ईशान देश भंगश्च वहिन दाहों महर्घता।।

चीन, जापान अमेरिका, अफगानिस्तान, भारत (पहाड़ी क्षेत्र) में जीवन तथा भवन-हानि जिसका कारण भूकम्प होगा, बादलों का घिरा आकाश, बम विस्फोट, वायु दुर्घटना, अग्निकांड, बाढ़, प्राकृतिक आपदाओं से खूनखराबी व जनधन की हानि का भय।

नोट: मार्गशीर्ष मास सम्वत् 2061 (दिसम्बर 2004) पूर्णिमा के दिन 'सुनामी' आने से महान विनाश हुआ। इस मास में पांच शनिवार व पाँच रविवार थे।

सभी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि जिसके कारण जनता दुखी, केन्द्रीय मंत्रिमंडल में परिवर्तन तथा नया राजनीतिक गठबंधन बने।

5.9 (अ) पूर्णिमा का फसल, मौसम, बाजार भावों आदि पर प्रभाव

चैत्र पूर्णिमा *आकाश का बादलों से ढक जाना*, बिजली की चमक आदि होना व अच्छी फसल की आशा।

भाद्र पूर्णिमा *यदि आकाश साफ रहे* तो गेहूँ, जौ, अनाज तथा चावल का संग्रह करने से भविष्य में लाभ।

अश्विन पूर्णिमा *यदि आकाश बादलों से ढका रहे*, तो अनाज का संग्रह करने से चैत्र में लाभ होगा। इस पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा भी कहते हैं।

कार्तिक पूर्णिमा *यदि उस दिन कृत्तिका नक्षत्र* हो तो घी, अनाज, गेहूँ के मूल्यों में वृद्धि, यदि संग्रह करें तो भविष्य में लाभ।

माघ पूर्णिमा *यदि आकाश में बादल हों* तो अनाज का संग्रह किया जाए। सात मास के उपरांत लाभ होगा। यदि आकाश साफ रहे तो सभी प्रकार का अनाज आषाढ़ में सस्ता होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फाल्गुन पूर्णिमा *यदि उस दिन वर्षा हो,* तो अनाज संग्रह से सात माह उपरान्त लाभ, क्योंकि फसल के रोग जैसे रोली/कास तथा अंगारी के फैलने की संभावना रहेगी जिससे फसल का नष्ट होने का भय रहे।

5.9 (आ) अमावस्या का बाजार भाव व ऋतु पर प्रभाव

हरयाली अमावस्या को यदि बौछार हो रही है तो अच्छी फसल होगी।

कार्तिक अमावस्या (यह दीवापली की रात होती है।) यदि तेज हवा चले तो आने वाली सर्दी की फसल (रवि की फसल) नष्ट होने की संभावना होती है तथा मूल्यों में वृद्धि।

5.10 मास, तिथि का योग तथा वर्षा का प्रभाव

(*i*) **एकादश्यां पौष कृष्णे दक्षिण पवनो यदा।**
विद्युज्जलद संयुक्तस्तदा दुर्भिक्षः कारकः॥

यदि पौष कृष्ण एकादशी को दक्षिणी हवा बहे तथा बिजली कड़के तो भविष्य में अकाल पड़ने की संभावना होगी।

(*ii*) *यदि पौष कृष्ण पंचमी को वर्षा हो,* तो अच्छी वर्षा होगी *अथवा* पौष कृष्णा अष्टमी को यदि आकाश में बादल छाए हों या वर्षा हो, अनाज की कीमत मूल्य (फरवरी) माघ मास में बढेंगे।

(*iii*) *यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को वर्षा हो,* फसल बहुत अच्छी होगी।

(*iv*) *यदि ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीया को पछवा* (पश्चिम से हवा) चले तो घी, तेल आदि का व्यापार लाभ देगा।

(*v*) *यदि ज्येष्ठ कृष्णा दशमी को शनिवार* हो तो कुछ क्षेत्रों में थोड़ी वर्षा हो, रोग से पशुओं का नाश, प्राकृतिक प्रकोप से हानि व जनजीवन अस्त व्यस्त तथा दुर्घटना आदि का भय बना रहता है।

(*vi*) यदि चैत्र शुक्ल पंचमी को

(क). *पूर्व-दक्षिण (अग्निकोण) की हवा वर्षा के साथ चले,* अनाज के मूल्य अधिक बढेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) *यदि उस दिन सोमवार/गुरुवार हो*, तो सभी स्थानों पर बराबर/पर्याप्त वर्षा हो।

(ग) *यदि बुधवार* हो तब भी वर्षा बराबर बरसेगी।

(घ) *यदि शुक्रवार* हो तो फसलों का नष्ट होना संभव है।

(ङ) *यदि शनिवार, रविवार या मंगलवार हो*, फसलों का नष्ट होना व वर्षा कम हो (अल्पवर्षा) तथा अकाल हो। चैत्र शुक्ल पंचमी (मंगलवार) सम्वत् 2072, 24 मार्च 2015 का है। यह वर्ष कष्टप्रद रहेगा।

(च) *यदि उस दिन आर्द्रा नक्षत्र* हो तो अकाल होने की अधिक संभावना होगी।

(*vii*) *यदि वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र* हो और उस दिन वर्षा भी हो, बहुत अचछी फसल होने की संभावना होती है।

(*viii*) *यदि वैशाख शुक्ल पंचमी को बादल हों और सारे दिन आकाश में ध्वनि होती रहे* तो खाद्य सामग्री के मूल्य भाद्रपद मास में ऊँचे होंगे।

5.11 आकाशीय लक्षण तथा बाजार का रुख

(*i*) *यदि चैत्र शुक्ल पंचमी को दक्षिण-पूर्वी (अग्नि कोण) हवा के साथ वर्षा हो* तो अनाज के भाव आने वाले वर्ष में तीन गुणा हो जाएंगे।

चैत्रस्य शुक्ल पंचभ्यां वार्यु दक्षिण्पूर्वयों।
वष्ट्यासह तदावर्षे धान्ये त्रिगुणता चवेत्॥

(*ii*) *यदि वैशाख शुक्ल एकादशी को आकाश में बादल छाये रहें*, तो व्यापारियों को अनाज का संग्रह करना चाहिए अन्यथा हानि होगी।

(*iii*) *यदि वैशाख शुक्ल तृतीया/पंचमी को आकाश में बादल आच्छादित रहें और सारा दिन गरजते रहें* तो भाद्रपद में अनाज महंगा होगा (चार महीने बाद)।

(*iv*) *यदि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को दक्षिणी वायु बहे*, व्यापारी को घी, तेल तिलहन आदि का संग्रह कर लेना चाहिए ताकि चार माह पश्चात अश्विन माह में वह लाभार्जन कर सके।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*v*) *यदि ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को बादल गरजें साथ ही दक्षिणा बहे*, तो तिलहन का संग्रह करने से कार्तिक माह में लाभ होगा (छठे माह)।

(*vi*) *भाद्र कृष्ण तृतीया को यदि आकाश में बादल छाये रहें* तो आने वाले समय में अनाज महंगा होगा। यदि संग्रह किया जाए तो छः माह पश्चात् अधिक लाभ होने की संभावना होगी।

(*vii*) *अश्विन कृष्ण पंचमी रविवार को पड़े* तो माघ की अमावस्या को खाद्य सामग्री विशेषतया घी के दाम बहुत बढेंगे।

अश्विन कृष्णा पंचभ्यां रविवारः प्रवर्तते।

माघ मासस्यामावस्यायां महर्षि निश्चयाघृतम॥

(*viii*) *यदि अश्विन कृष्ण दशमी से द्वादशी तक बादलों का गर्जन व बिजली चमके* तो अनाजादि का संग्रह भविष्य में लाभप्रद होगा।

(*ix*) *यदि अश्विन कृष्ण नवमी को पुष्य नक्षत्र हो* (जैसा कि सम्वत् 2061 में था) तथा हल्की वर्षा हो तो गेहूँ, चावल, उड़द, दालों का संग्रह भविष्य में लाभ देगा।

(*x*) *यदि कार्तिक कृष्ण पंचमी मंगलवार की हो* फसलों का नष्ट होना और भावों का चढ़ना दिखाता है।

(*xi*) *यदि कार्तिक के कृष्णपक्ष में सूर्य के चारों ओर परिवेश दिखाई दे* तो सरसों का, तिलादि का संग्रह भविष्य में लाभ दर्शाता है।

(*xii*) *यदि फाल्गुन माह में बादल छायें और वर्षा आ जाये तो वर्षा ऋतु में वर्षा होने* की भविष्यवाणी की जा सकती है।

28 फरवरी 2015 फाल्गुन शुक्ल दशमी/एकादशी (शनि/रविवार) को बहुत वर्षा हुई जो 2 मार्च तक चली, इसका अर्थ हुआ 2072 में अच्छी वर्षा होगी।

(*xiii*) *टटीहारी ऊँची जगह पर अण्डे दे तो वर्षा होने की संभावना।* यदि थोड़े नीचे स्थान पर रखें तो कम वर्षा होगी, यदि तालाब में रखे या नदी, झील, किसी पानी के स्थान के किनारे रखे तो सूखा रहे (अनावृष्टि)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5.12 सूर्य की अन्य ग्रहों से स्थिति तथा उसका प्रभाव

सूर्य की अन्य ग्रहों से स्थिति के प्रभाव को जो अनुभूत किया, उन योगों को नीचे दिया जा रहा है। पाठक इनसे मार्गदर्शन लेकर अपने अनुभव को जोड़ सकते हैं।

(*i*) यदि राहू सूर्य से आगे हो

क्षेत्र उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और पंजाब।

प्रभाव उत्तर में तेज ठण्डी हवा तथा वर्षा, प्राकृतिक दुर्घटना, ओले पड़ना आदि परन्तु दक्षिण में तापमान बढ़ेगा।

(*ii*) सूर्य से आगे बुध हो

क्षेत्र हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान।

प्रभाव कई स्थानों पर साधारण वर्षा, तेज हवाएं ऋतु में परिवर्तन लाती हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में शीत लहर के साथ वर्षा होती है। समुद्र के निकट वाले क्षेत्रों में भारी वर्षा।

(*iii*) गुरु सूर्य से आगे

क्षेत्र राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, कश्मीर तथा मध्य प्रदेश।

प्रभाव कुछ स्थानों पर हवा के साथ पर्याप्त वर्षा।

(*iv*) सूर्य से आगे मंगल

क्षेत्र जो ऊपर (*iii*) में लिखे गए हैं।

प्रभाव वर्षा में रुकावट, कुछ क्षेत्रों में कम वर्षा (खण्ड वृष्टि) तथा तेज वायु। आगे मंगल पीछे भान वर्षा होवे ओस समान।

सम्वत् 2071 फाल्गुन मास (फरवरी 2015) में मंगल मीन में शुक्र व केतु के साथ सूर्य कुंभ राशि में था फिर भी 28 फरवरी दशमी की रात्री को 4 बजे तेज हवा के साथ भयंकर वर्षा हुई जो 2 मार्च तक चली। यह नियम नहीं लगा। कारण 1 मार्च को शुक्र रेवती नक्षत्र में प्रवेश कर गया। 3 मार्च को बुध धनिष्ठा में आ गया। 5 मार्च को मंगल रेवती में आ गया। 7 मार्च को चंद्रमा हस्त में आया तो वर्षा ज़ोरदार हुई, जबकि मंगल आगे था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*v*) बुध, गुरु तथा मंगल तीनों सूर्य से आगे

क्षेत्र जो ऊपर (*iii*) में लिखे गए हैं।

प्रभाव उपरोक्त पैरा (*iv*) में देखें।

(*vi*) सूर्य, शनि तथा मंगल के मध्य हो

क्षेत्र उपरोक्त फल के समान।

प्रभाव वर्षा में रुकावट।

नोट: गुरु के कारण प्रभाव के कुछ क्षेत्रों में अच्छी वर्षा विशेषतया पहाड़ी क्षेत्रों में परंतु राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश में खण्ड वृष्टि तथा कुछ भागों में अच्छी वर्षा होगी।

(*vii*) मंगल तथा बुध सूर्य के साथ परन्तु गुरु आगे

क्षेत्र उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, दिल्ली, आसाम, कर्नाटक, गोआ तथा उड़ीसा।

प्रभाव कुछ क्षेत्रों में वर्षा में अवरोध परन्तु कुछ क्षेत्रों में हवा के साथ वर्षा।

(*viii*) सूर्य, बुध तथा शुक्र के साथ हो (एक राशि में)

क्षेत्र दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश।

प्रभाव **एक राशौ गता हयेते सौम्य शुक्र दिनाधिपाः।**
तेज तथा गर्म हवाएँ बहें और रोग फैलने से जनता दुखी हो। वर्षा कम हो।

(*ix*) सूर्य, शानि तथा बुध के साथ

क्षेत्र (क) आसाम, केरल, उड़ीसा तथा महाराष्ट्र।
(ख) दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश तथा मध्य प्रदेश।

प्रभाव (क) वाले स्थानों में बहुत तेज वर्षा और (ख) वाले क्षेत्रों में खण्ड वृष्टि होगी।

(*x*) शनि तथा मंगल सूर्य से आगे

क्षेत्र हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा हरियाणा।

प्रभाव अल्प वर्षा। अधिक गर्मी तथा पानी की कमी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xi*) सूर्य से शुक्र आगे

क्षेत्र वही क्षेत्र जो (*ix*) में दिखाए गए हैं।

प्रभाव कुछ क्षेत्रों में अल्प वृद्धि तथा कुछ स्थानों में साधारण वर्षा।

(*xii*) सूर्य क्रूर ग्रहों के मध्य में

क्षेत्र वही क्षेत्र जो (*ix*) में दिखाए गए हैं।

प्रभाव अनाज के मूल्यों में वृद्धि क्योंकि खड़ी फसल के पानी की कमी के कारण नष्ट होने के योग।

(*xiii*) सूर्य के वृष तथा वृश्चिक में प्रवेश

5.13 टिप्पणी

सूर्य के साथ या सूर्य के बिना ग्रहों का योग पृथ्वी व संसार ब्रह्माण्ड में अपना प्रभाव डालते हैं जिनका शुभाशुभ फल उनके अपने स्वभाव व स्थिति पर निर्भर करता है। जिस राशि में यह योग बनता है उसके स्वभाव आदि का विचार करना भी आवश्यक है जैसे–

(*i*) *सूर्य, बुध तथा शुक्र की युति मिथुन राशि* में होने से तहलका मच जाता है, हवा के झोंके के साथ थोड़ी–थोड़ी देर बाद वर्षा के झटके आ सकते हैं।

क्षेत्र

हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश।

(*ii*) **सूर्य के शनि व बुध के साथ मिथुन में होने पर** कुछ वर्षा हो सकती है।

क्षेत्र (क) आसाम, केरल, उड़ीसा, महाराष्ट्र में कुछ वर्षा/अल्प वर्षा/कुछ वर्षा के झटके हवा के साथ।

(ख) दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा हिमाचल प्रदेश में खण्ड वर्षा।

(*iii*) **सूर्य, बुध तथा केतु तुला में होने से** तेज हवा के साथ वर्षा हो, तेज शीत लहर तथा पहाड़ी क्षेत्र में वर्षा।

क्षेत्र उत्तरप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, पंजाब, जम्मू तथा कश्मीर, मध्य प्रदेश तथा आसाम।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iv*) शुक्र, बुध तथा सूर्य की मकर में युति, हवा के साथ दक्षिण में वर्षा, पहाड़ी क्षेत्र में हिमपात तथा शीत लहर के कारण कड़ी ठण्ड, हल्की-हल्की वर्षा कुछ क्षेत्रों में होगी।

क्षेत्र हिमाचल प्रदेश, पहाड़ी क्षेत्र, पंजाब, दिल्ली, मध्य प्रदेश, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश।

सूर्य का द्वादश राशियों में भ्रमण षड़ ऋतुओं को जन्म देता है। ग्रहों की सूर्य से युति व दृष्टि ग्रहों के परस्पर योग से मौसम में तेजी/साधारण /स्थिति/असहनीयता/रमणीयता/वृष्टि/अतिवृष्टि/खण्डवृष्टि आदि देता है। वर्षा की स्थिति फसलों पर पूरा प्रभाव डालती है और फसल का अच्छा/नष्ट होना बाजार भावों तथा आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धि को नियन्त्रित करता है।

इनके द्वारा प्रभावित क्षेत्रों का पता लगाने के लिए नक्षत्रों, राशियों तथा ग्रहों आदि का अध्ययन करना होगा। पिछले अध्यायों में भी इसकी चर्चा की जा चुकी है अभी तक जिन योगों तथा सूत्रों की चर्चा की है वही ऋषियों तथा ज्योतिष के विद्वानों ने बताए हैं। उनसे भविष्य कथन करने में बहुत सहायता मिल जाती है। परन्तु उनके प्रयोग के लिए ज्योतिष शास्त्र के सभी नियमों व सूत्रों का पूर्ण अध्ययन आवश्यक है। मौसम ज्योतिष, संहिता तथा बाजार भावों के लिए योगों को समझने के लिए ज्योतिष शास्त्र के मूल सूत्रों को समझना होगा। कोई एक नियम सही फल कथन करने में सहायक नहीं होता। चाहे जातक की जन्मपत्री हो या संहिता ज्योतिष की बात हो।

5.14 ग्रहों के प्रभाव के रूख को समझने के कुछ संकेत

बाजार भावों पर तीव्र ग्रहों का प्रभाव, मन्द गति वाले ग्रहों से अधिक होता है। परन्तु मन्दगति ग्रहों के प्रभाव राजनीतिक, प्राकृतिक घटनाओं आदि पर पूरा नियंत्रण रखते हैं व प्रभावित करते हैं।

संहिता ज्योतिष एक विशाल एवं विस्तार वाला विषय है, जिसके प्रत्येक भाग जैसे बाजार भाव, वर्षा ऋतु, राजनीतिक गतिविधियाँ तथा शेयर बाजार आदि अपने आप में एक एक पूर्ण विषय है। इसके विषय में बात करना तो सरल है परन्तु सही-सही भविष्य कथन बहुत कठिन है। जितनी भविष्यवाणियाँ प्रकाशित होती हैं उनमें 75 प्रतिशत मिथ्या साबित होती हैं। एक विद्यार्थी होने के नाते इस पुस्तक में, जो कुछ भी गुरुओं की कृपा, शास्त्रों के अध्ययन व विद्वानों के लेख पढ़कर तथा अध्यापक के अनुभव व अपने शोध से सीख पाया वही सब कुछ पाठकों के लिए तथा शास्त्र सेवा के लिए लिख रहा हूँ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाठकगण यदि इसका अध्ययन करके सही-सही फलित कर पाए तो मेरा प्रयास सफल होगा। वह अपने अनुभव से मुझे अवगत कराए तो मैं कृतार्थ होऊँगा। मुझे मेरे लेख पढ़ने वालों व विद्यार्थियों के आग्रह पर यह पुस्तक लिखने का साहस करना पड़ा है।

तीव्र गति ग्रह बुध तथा शुक्र (inner planets) जो सदैव सूर्य के आसपास रहते हैं, जो ऋतुओं के नियंत्रक है तथा ब्रह्माण्ड में हो रही प्रत्येक गतिविधि के लिए उत्तरदायी है, चाहे वह वर्षा हो, भूकम्प हो, फसल का रोग हो, बाढ़ हो, बाजार भाव हो यानि पृथ्वी पर जो घटनाएँ घट रही हैं वह इन ग्रहों के योग से ही है। पूर्व चर्चा से इस बात की पुष्टि हो जाती हैं।

बुध व शुक्र के बाद तीसरा ग्रह मंगल (outer planets) जिसका प्रभाव भी किसी से कम नहीं है। इन ग्रहों का गोचर द्वादश राशियों तथा सत्ताइस नक्षत्रों में प्रवेश व सप्ताह का वार व वर्ष का मास जिसमें यह प्रवेश करते हैं, सभी पर वर्षा ऋतु के अच्छा/कम होने व फसल का अच्छा/नष्ट होना निर्भर करता है। फलतः इस सबका प्रभाव बाजार भावों के उतार-चढ़ाव पर पड़ता है। जो व्यापारियों के लाभ/हानि तथा आम जनता के सुख-दुख का कारण भी यह बनता है। ऐसे कुछ योगों का संक्षेप में विचार करते हैं।

5.15 (*i*) बुध के राशियों तथा नक्षत्रों में भ्रमण का प्रभाव

मेष राशि सरसों तेल, तिल, चीनी, घी, गुड़, चांदी के भावों में उतार-चढ़ाव, स्वर्ण के भाव सम व पशुओं के मूल्यों में वृद्धि।

यदा सौम्य स्थितौ मेषे महर्धं च चतुष्पदाम्।
स्वर्ण समतां याति तत्र कार्या विचारणं॥

वृष राशि जनता बेचैन, परस्पर झगड़े तथा भयावह वातावरण एवं अनिश्चितता बनी रहने से पृथ्वी पर सभी परेशान।

सोमपुत्रो वृषे एवं कुर्याच्च लक्षणम्।
मेदिनी नवखण्डेषु कलहश्च महद्भयम्॥

मिथुन राशि पशु के मूल्यों में वृद्धि, तेज हवा के साथ घने बादलों का छाना। (बुध का मिथुन प्रवेश वर्षा ऋतु के प्रारंभ होने के आसपास होता है, इसलिए अच्छी वर्षा और अच्छी फसल की आशा होती है। फस्ल के लिए बैल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खेत जोतने को चाहिए शायद इसलिए और फसल अच्छी है तो पशुपालन में सुविधा हो जाती है, धनागम होता है शायद इसलिए पशु के मूल्यों में वृद्धि कही गई है।)

बुधो मिथुन राशिस्थों महर्घ च चतुष्पदाम्।
तदा वायुर्विजानीयान्मेघश्च प्रचुरो भवेत्॥

आर्द्रा नक्षत्र बुध के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के फलस्वरूप वर्षा की अधिकता होगी एवं तेज वायु प्रवाह होगा।

आर्द्रायां वृष्टिरतुला ग्रहपाताः प्रवाहतः।

पुनर्वसु नक्षत्र बालकों को पीड़ा, कपास के भावों में मंदी का रुख एवं मनुष्यों में सद्भावना रहे।

पुनर्वसौ बालपीड़ा कापीसे सूत्र मन्दता। जनेषु सर्व संयोगाः।

कर्क राशि प्रजा को अत्यन्त दुख एवं सुभिक्ष कम होता है।

निशापतेश्च तनयः कर्क राशौ यदा भवेत्।
ततोति दुःख भवति सुभिक्षं स्वल्पकारकम्॥

पुष्य नक्षत्र **राज भयं पुष्यो राज्ञां भयं जनः**

राजा तथा प्रजा दोनों ही भयभीत रहें। रुई, चांदी, गुड़, चीनी के भावों में उतार-चढ़ाव रहे अन्ततः वृद्धि का रुख रहेगा। (अन्य मत)

आश्लेषा नक्षत्र अधिक वर्षा तथा तुष, धान्य की फसल अच्छी होगी।

आश्लेषायां महावृष्टि स्तुप धान्य समुद्भवं

सिंह राशि सभी धान्यों के समभाव एवं स्वर्ण व देवदारु के भाव में तेजी का रूख होगा।

सिंह राशौ बुधः स्याच्येत्सर्वधान्या महर्घता।
सुवर्ण देवदारुश्च महर्घं प्रभवेत्तंदा॥

मघा नक्षत्र वर्षा की कमी के कारण धान्य की खेती नष्ट। प्रजा में भय व्याप्त होगा।

मघाबुधेऽल्प वृश्टिश्च धान्यनाशः प्रजाभयम्।

पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र शासकों में संग्राम होता है, क्षेत्र बाधा उत्पन्न होती है एवं अन्न सस्ता होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूफायां नृपसंग्रामः क्षेत्रः वाधान्न मन्दता

कन्या राशि आगे छः महीने तक भाव बढ़ते रहें और स्वर्ण तथा शक्कर से लाभ होता रहे परन्तु उसके बाद भावों में गिरावट।

कन्या राशि गते ज्ञोहि कांचनं शुद्ध शर्करा।
मासे मासे षष्ठे ददेललाभं पुनः शस्तो भविष्यति।।

हस्त नक्षत्र सुभिक्ष, धान्य के उत्पादन में वृद्धि, जनता निरोगी, स्वस्थ तथा अच्छी वर्षा हो।

हस्ते बुधे सुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यम्म्बुदाः।

चित्रा नक्षत्र गणिका, कारीगर एवं द्विजों को पीड़ा हो एवं अल्प वर्षा की संभावना।

चित्रायां गणिका शिल्पिद्विज पीडाल्प वर्षणम्

तुला राशि अच्छी वर्षा, पृथ्वी पर कलह तथा कलेश एवं युद्धादि होता है।

यदा च तुला राशिस्थौ निशाकरसतस्तदा।
मेघश्च जायते तत्र मेदिनी कलहन्विता।।

वृश्चिक राशि धृत, तेल के भावों में तेजी का रुख तथा धान्य की फस्ल अच्छी होने से सुभिक्ष एवं जनता स्वस्थ, सुख का अनुभव करेगी।

बुधो वृश्चिक राशिस्थो धृततैल महर्घता।
सुभिक्षं तत्र धान्यानां लोकानां च शुभंभवेत्।।

ज्येष्ठा नक्षत्र पशुओं विशेषतया घोड़ों में रोग के फैलने का भय तथा घी के भाव में तेजी।

धनु राशि मृग हाथी आदि का नाश होता है, शासक एवं जनता में विरोध होता है। खल, बिनौला, शक्कर, तिल, चांदी तथा रसदार पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि का रूख। खाद्यान्न के भावों में मन्दी का रुख हो।

धने मीने बुधोयति मारयति मृगान गजान
राजा विरोधकृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नोटः बुध 24 नवम्बर, 2004 को 8 घंटे 34 मिनट पर धनु राशि में प्रवेश किया। दिनांक 29 नवम्बर को टी. वी. समाचार में देखा कि महाराष्ट्र में हाथियों से तंग आकर उन्हें कर्नाटक के जंगलों में भेजा जा रहा है।

मूल नक्षत्र रूई व सूत के भाव में अचानक गिरावट।

उ. आ. नक्षत्र अनाज के भावों में तेजी/मन्दी का रूख।

मकर राशि अन्नादि का समभाव रहता है तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल होते हैं। तांबा, चांदी, स्वर्ण, पीतल तथा लोहे के भाव ऊँचे रहें।

निशापतेश्चः तनयः शनिक्षेत्रे यदाभवेत्।
समभावः सुखं दुखं तथैव चं शुभशुभम्॥

कुंभ राशि अन्नादि का समभाव रहता है तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल होते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र धान्य, चावल, गेहूँ, उड़द, स्वर्ण के भावों में तेजी परन्तु रूई मंदी। चांदी के भाव में चढ़ाव तथा उतार का रुख रहेगा।

शतमिषा नक्षत्र स्वर्ण, चांदी आदि में अच्छी मंदी, अच्छी वर्षा कहीं-कहीं, दुर्भिक्ष की संभावना।

मीन राशि ऊपर धनु राशि में बताए गए फलानुसार जाने।

उत्तर भाद्रा शासकों में क्लेश तथा पशु पक्षियों को स्वस्थ रखता है। अनाज के भावों में उतार चढ़ाव रहे।

उभायां नृपतिक्लेश आरोग्यं पशु पक्षिणाम्।

रेवती नक्षत्र केसर के भावों में तेजी का रुख।

रेवत्यां नन्दनं चन्द्रो महर्घं कुकुमाद्यपि

5.15 (2) बुध की अन्य स्थितियों का प्रभाव

बुध (वक्री) गुड़, खाण्ड के मूल्यों में तेजी, परन्तु गेहूँ के मूल्यों में गिरावट/कमी।

बुधो वक्री यदा स्यात् चेदिक्ष्वादीनां महर्घता।
सुभिक्षं सर्वधान्यानि भविष्यति न संशयः॥

बुध मार्गी जीवन हानि, ऋतु में तेजी के कारण कष्टप्रद। घी, गुड़, चीनी, तेल, अरण्डी, रूई तथा शेयर के भाव में मंदी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का रूख परन्तु मूंगफली, खिलौने तथा पशुओं के चारे के भाव तेज होंगे।

नोटः बुध के विभिन्न राशियों में मार्गी/वक्री होने का उन राशियों से प्रतिनिधित्व वस्तुओं के बाजार भाव पर प्रभाव पड़ता है।

बुध पूर्व में अस्त

बाजारों के रूख में अचानक बदलाव।

बुध का पश्चिम में अस्त होना।

सोना, चाँदी, गेहूँ, अलसी, हींग, गूगल, पारा, गुड़, रूई आदि के भाव पहले गिरेंगे, फिर तेज होंगे।

वक्री बुध का उदय होना

यदि वक्रत्व में ही उदय हो प्राकृतिक दुर्घटना की संभावना होगी।

बुध का पूर्व में उदय होना

गेहूँ, चावल, खल, बिनौला, (रूई) बीज, लाक, उड़द, छोटी इलाइची के मूल्यों में तेजी।

बुध का पश्चिम में उदय होना

रूई तथा शेयर के भावों में उतार चढ़ाव

5.16 (आ) शुक्र का राशियों और नक्षत्रों में भ्रमण का प्रभाव

(*i*) मेष राशि	वर्षा की कमी/तेज हवा को कारण, गेहूँ, जौ, चने, घी आदि के मूल्यों में वृद्धि। गुड़, चीनी, पटसन के भावों में वृद्धि के बाद गिरावट। अरण्ड, सरसों, तेल अलसी के भाव सम तथा पशुओं में रोग का होना। पशु महंगे होंगे। स्वर्ण का मूल्य सम रहेगा।
अश्विन नक्षत्र	स्वर्ण, चांदी, गुड़, चीनी, रूई, तिल, सरसों, गेहूँ, उड़द, मोठ, अरहर आदि के मूल्यों में मंदी।
भरणी नक्षत्र	स्वर्ण, चांदी, चना, मूंग, मोठ, ज्वार के भाव गिरें। सरसों, रूई, तिल, तेल आदि के भावों में तेजी। अधार्मिक लोगों को कष्ट।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	कृत्तिका नक्षत्र	चावल, जौ, घी, हींग, तेल, सरसों तथा रूई के मूल्य गिरेंगे। वर्षा बहुत अच्छी होगी।
(ii)	वृष राशि	पृथ्वी पर (सुभिक्ष) शान्ति तथा प्रजा सुखी रहेगी। कुछ स्थानों पर विग्रह उपद्रव हो सकता है।
	रोहिणी नक्षत्र	मूल्यों में अचानक वृद्धि परन्तु बाद में गिरावट। घी, गुड़, खाण्ड तथा शक्कर के भावों में तेजी रहे। अनाज के भावों में गिरावट। अन्य मत–नारियल, सुपारी, स्वर्ण, चांदी आदि के भाव गिरेंगे। युद्ध व झगड़ों का भय बना रहे।
	मृगशिरा नक्षत्र	दाल, घी, रूई, गुड़, लाल मिर्च आदि के मूल्य तेज होंगे। गेहूँ चना आदि मन्दे। प्रजा में सुभिक्ष होगा।
(iii)	मिथुन राशि	गेहूँ, चावल, चना तथा जौं के भाव ऊँचे **मिथुने च यदा शुक्रो महर्घतत्र जायते।** **यवगोधूम् चणकाः शालिश्चैव विशेषतः॥**
	आर्द्रा नक्षत्र	घी, गुड़, खल, शक्कर के मूल्यों में तेजी, परन्तु अनाज के भावो में अचानक गिरावट। तेज हवा के साथ वर्षा होगी तथा प्रजा में सुभिक्ष होगा।
	पुनर्वसु नक्षत्र	अनाज, खल बिनौला, चीनी, शेयर तथा थोक बाजार भावों में तेजी। रूई के भाव मन्दे होंगे।
	अन्य मत	स्वर्ण, चांदी, रूई तथा बिनौला के भाव गिरे परन्तु अनाज व दालों के भाव में तेजी। वर्षा की कमी रहेगी।

उदाहरण–शुक्र ने 31 जुलाई 2004 को 7 घंटे 44 मिनट पर मिथुन राशि में प्रवेश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया। दिल्ली तथा महाराष्ट्र में पिछले एक माह से बहुत गर्मी पड़ रही थी। दोनों प्रांतों में लगातार 48 घंटे तक वर्षा होती रही। उसके बाद साधारण वर्षा होती रही (यह स्थिति 28 अगस्त 2004 तक रही।)

(*iv*) कर्क राशि — रसदार वस्तुओं के मूल्यों में तेजी। सभी धान्य सस्ते। वर्षा वाले बादल होंगे।

दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां व महर्घता।
सर्वधान्य सर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भूवि॥

पुष्य नक्षत्र — रूई, सिल्क, रेशम, ऊन अनाज के भावों में तेजी। गुड़ चीनी, कपूर, पारा, हींग, लाक तथा चमड़े के भावों में मंदी। पर्याप्त वर्षा होगी।

आश्लेषा नक्षत्र — गोले, सुपारी, तिल, तेल, चांदी, रुई, घी, अलसी तथा गेहूँ के मूल्यों में तेजी।

अन्य मत — चावल, मोठ, चना, चारा, अनाज के मूल्यों में अचानक गिरावट सर्प भय तथा वर्षा की कई स्थानों पर कमी होगी।

(*v*) सिंह राशि — सभी लाल रंग की वस्तुऐं, स्वर्ण पशु, अनाज आदि के भावों में तेजी तथा अच्छी वर्षा होने की संभावना होती है।

दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेमरक्तं चतुष्पदः।
धान्यानि चमहर्घाणि नाशं याति च वारिदः॥

मघा — चने व गेहूँ आदि के भावों में तेजी। अतिवृष्टि एवं पशुओं में रोग होगा।

पू. फा. नक्षत्र — गुड़, खाण्ड, अनाज, रूई तथा चांदी के भावों में तेजी होगी।

अन्य मत — गुड़, चना, उड़द, मूंग, ज्वार, बाजरा, मोती आदि के भावों में गिरावट। अच्छी वर्षा होने की संभावना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	उ. फा. नक्षत्र	बाजार भावों में बराबर तेजी बनी रहे। स्वर्ण व चांदी के भावों में उतार चढ़ाव। फसलें नष्ट होंगी।
(vi)	कन्या राशि	कृषि की हानि तथा धान्यों के भावों में तेजी तथा चावलों के भावों में विशेष तेजी।
		कन्या राशि गते शुक्रे सर्वसस्यंविनश्यति। **तत्र धान्य महर्घाणि शालिश्चैव विशेषतः॥**
	हस्त नक्षत्र	रुई, कपास, वारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड तथा अनाज के भावों में तेजी।
	अन्य मत	चावल, चांदी तथा रुई के भाव गिरें, स्वर्ण के भावों में तेजी, वर्षा में कमी तथा प्रजा दुखी रहे।
	चित्रा नक्षत्र	घी, खांड तथा चावल के भाव चढें। स्वर्ण, चांदी, धातु तथा अनाज के भावों में भी तेजी रहे।
(vii)	तुला राशि	प्रजा सुखी व निरोगी रहे, परन्तु कहीं-कहीं विरोध रहे। रूई, चांदी, स्वर्ण, चीनी, गुड़ आदि के भाव ऊँचे।
		यदा दैत्य गुरुश्चैव तुलाराशिं प्रवर्त्तते। **मेदित्यां क्षेमतारोग्यं किंचित्किंचिद्विरोधकृत्।**
	स्वाति नक्षत्र	स्वर्ण व चांदी के भावों में उतार चढ़ाव, गेहूँ आदि के मूल्यों में गिरावट, पर्याप्त वर्षा होगी। कुछ क्षेत्रों में चोर भय तथा झगड़े हों।
	विशाखा नक्षत्र	गेहूँ, स्वर्ण, चांदी, अलसी, सरसों, अरण्डी के भावों में तेजी। रुई के भावों में भारी गिरावट, व्यापारी वर्ग अस्थिर बाजार भावों से चिंतित। परंतु वर्षा बहुत अच्छी रहेगी।
(viii)	वृश्चिक राशि	सभी धान्य सस्ते होंगे और सब लोग निर्भय, सुखी स्वस्थ एवं प्रसन्नचित से रहेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृश्चिके च गते शुक्रे सर्वधान्य समर्घता।
लोकस्तु निर्भयस्तत्र सुखस्वस्थं प्रवर्द्धते।।

अनुराधा नक्षत्र रूई, गेहूँ, जौ आदि के भावों में तेजी होगी।

अन्य मत गुड़, चीनी, चावल, नमक आदि के भावों में गिरावट, पशुओं में रोग एवं भूकम्प आने की संभावना।

ज्येष्ठा नक्षत्र स्वर्ण, चांदी, सरसों, रुई, तेल आदि की कीमतों में गिरावट। अनाज के भावों में साधारण तेजी, वर्षा की कमी रहे एवं राजनीतिक क्लेश रहे।

(*ix*) धनु राशि सब धान्यों के भावों में तेजी का रुख रहे और कृषि की भारी हानि होने की संभावना हो। कपास के मूल्यों में अचानक गिरावट।

यदा च धनराशिस्थो देत्याचार्यः प्रवर्त्तते।
महर्घं च विजानीयात्सर्वसस्यं विनश्यति।।

मूल नक्षत्र अनाज के भावो में भारी वृद्धि, स्वर्ण के मूल्यों में उतार-चढ़ाव रहे। रुई के भावों में प्रारंभ में तेजी परन्तु बाद में गिरावट आए।

पू. आ. नक्षत्र मूल्यों की रेखा नीचे की ओर जाए।

अन्य मत उड़द, मूंग, मोठ, तिल, तेल, सरसों तथा नमक के भावों में गिरावट।

उ. आ. नक्षत्र रुई, स्वर्ण, रजत, गुड़ तथा घी के भाव बढेंगे।

अन्य मत गुड़, चांदी, स्वर्ण, चीनी, आदि के भावों में कमी रहे परन्तु अनाज व रुई का बाजार ऊँचा रहे। जनता रोग से दुखी रहे।

(*x*) मकर राशि कृषि की हानि और सब धान्य महंगे होंगे।

मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्य विनाशकृत।
जायतेऽत्र महर्घाणि नात्र कार्या विचारणा।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	श्रावण नक्षत्र	गेहूँ, चावल, जौं, अलसी, घी के भाव गिरेंगे, परन्तु स्वर्ण, चांदी तथा अन्य धातुओं के मूल्यों में वृद्धि।
	अन्य मत	स्वर्ण, चांदी, गुड़, चीनी, उड़द, मूंग, मोठ आदि के भाव मंदे परन्तु रुई, तिल, तेल, सरसों के भाव ऊँचे रुई का बाजार प्रारंभ में नीचा बाद में ऊँचा होगा।
	धनिष्ठा नक्षत्र	बाजार भावों के रुख में अचानक परिवर्तन। स्वर्ण, रजत, रुई, चावल, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, उड़द के भावों में तेजी परन्तु गेहूँ के भाव सस्ते रहे। हाथियों के लिए अच्छा नहीं है।
(*xi*)	कुंभ राशि	पर्याप्त वर्षा होगी, सुभिक्ष होता है तथा जनता निरोगी रहती है।
		कुम्भराशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम्। **भवत्यत्र नसंवदेहो लोकाः सर्वे निरामयाः॥**
	शतभिशा नक्षत्र	गेहूँ, गुड़, धान्य, घी, सरसों, रुई, स्वर्ण, चांदी आदि के भावों में तेजी का रूख रहे।
	पूर्वभाद्रा नक्षत्र	बाजार भाव में तेजी का रूख रहे।
	अन्य मत	रुई का बाजार बहुत ऊँचा, अनाज के भाव में भारी गिरावट। अति वृष्टि एवं जनता में कष्ट।
(*xii*)	मीन राशि	सभी वस्तुएँ अच्छी मात्रा में उपलब्ध हों और जनता में सुभिक्ष रहे, सुख समृद्धि अनाज की मात्रा में वृद्धि हो एवं फसल बहुत अच्छी रहे।
		मीन राशिगते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं भवेत।
	उ. भा. नक्षत्र	घी, गुड़, शक्कर के मूल्यों में गिरावट बाद में तेजी। शेयर बाजार में गिरावट।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नोटः 28 फरवरी 2015 को भारत का बजट पास हुआ

(*i*) पैट्रोल व डीजल के दाम बढ़े।

(*ii*) बाजार भावों में तेजी आई।

कारण–बुध, मकर राशि श्रावण नक्षत्र में तथा शुक्र मीन राशि उ. भाद्रा नक्षत्र में था।

अन्य मत	कपास, चावल, नमक, स्वर्ण, रजत, मोती, कपूर, खांडसारी, के भाव में गिरावट परंतु फलों के भाव ऊँचे।
रेवती नक्षत्र	घी, गुड़, अलसी, सरसों, मूँगफली, गेहूँ, चने, चावल, रूई, चीनी के भावों में उतार चढ़ाव तथा बाद में भावों में तेजी बनी रहे।
अन्य मत	रुई, चावल, चांदी, गुड़, चीनी आदि के भाव में भारी गिरावट।

5.17. मंगल का राशियों व नक्षत्रों में भ्रमण का वर्षा ऋतु, कृषि, बाजार, तथा राजनीतिक स्थितियों पर प्रभाव

(*i*) **मेष राशि**	गेहूँ, जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, अरहर के मूल्यों में गिरावट। स्वर्ण, चांदी, अन्य धातु, मूंगा, मोती और रत्न (मणि-मानकादि) के मूल्यों में वृद्धि। सूती धागे पटसन आदि के बाजार भाव बहुत ऊँचे। गुड़ तथा चीनी के भाव में उतार-चढ़ाव। जनता में दुर्भिक्ष एवं सत्तारुढ़ों में असंतोष, सांसारिक सुखों में वृद्धि।
अश्विन नक्षत्र	गेहूँ, ज्वार, बाजरा, मूंग, चना, स्वर्ण, गुड़, चीनी, के भावों में तेजी तथा चांदी आदि के भावों में गिरावट।
भरणी नक्षत्र	सभी प्रकार के अनाज, स्वर्ण तथा चांदी के भावों में तेजी का रूख।
कृत्तिका नक्षत्र	प्रारंभ में सब ही वस्तुएं महंगी हो परन्तु बाद में मूल्यों में गिरावट।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ii*) वृष राशि — सब ही लाल रंग की वस्तुएं, कपड़े आदि पटसन, रुई, पंसारी का सामान, धागे के मूल्यों में भारी तेजी, यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि या युति हो तो भावों में गिरावट, क्रूर ग्रहों की युति व दृष्टि हो तो भाव ऊँचे रहें।

रोहिणी — कपास, सूत तथा वस्त्र गुड़, चीनी, रेशम, हींग, लाल मिर्च, सरसों महंगे होते हैं। पशुओं को पीड़ा वृक्षों की हानि भी होती है।

वृक्ष पीड़ा श्वापदानां रोगः स्याद्रोहिणीकुजे।
महर्घतऽपि कार्पासे वस्त्रे सूत्रे विशेषतः॥

मृगशिरा — कपास की हानि, पृथ्वी जल से पूर्ण हो तथा सभी ओर सुभिक्ष हो शुभ फल कारक होता है।

कार्पाष नाशः प्रबलं सुभिक्षं मृगे कुजे भूर्जलपरितैव

(*iii*) मिथुन राशि — इसके प्रभाव वश प्रबल मेघ होंगे। सूत, गुड़, अलसी, मजीठ, सरसों, तांबा, स्वर्ण, लाल मिर्च एवं लाल रंग की वस्तुओं के भावों में तेजी का रुख होगा।

मिथुन च सदा भौमः मेघश्च प्रबलो भवत्।
आरक्तं सर्व द्रव्याणि महर्घाणि भवति ते॥

आर्द्रा नक्षत्र — भैसों व तिल का नाश, गुड़, चीनी, अलसी, रुई, धागे, नमक, तिल, तेल के मूल्यों में तेजी परन्तु चांदी सस्ती।

पुनर्वसु — भैंसों व तिल का नाश, पर्याप्त वर्षा, रुई, चांदी, नमक, तिल, तेल तथा सरसों के मूल्यों में तेजी।

(*iv*) कर्क राशि — सब धान्य, भैस व ईख के भावों में तेजी का रुख होगा। क्रूर ग्रहों के प्रभाव से गुड़, चीनी, घी, तेल, सरसों, ऐरण्डी के भाव बढें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिपुत्रो यदा कर्के सर्वधान्यामहर्घताः।
महिषीक्षु महर्घ च भवेनैवात्र संशयः॥

पुष्य नक्षत्र चोरों का भय, तनावपूर्ण वातावरण, रोग, अशुभ घटनाऐं, सत्तादल कमजोर पड़े। रुई, चांदी नमक, तिल, तेल, सरसों आदि के भावों में तेजी।

पुष्य कुजे चौर भयं विरोधाच्छुभं न किंचिन्नृपतेर्बजत्वम्।

आश्लेषा नक्षत्र वर्षा कम होगी, टिड्डी दल से धान्य का बहुत नाश, दुर्भिक्ष की संभावना एवं सर्पभय आदि हो।

सार्वेल्पवृष्टि बहुधान्य नाशो दुर्भिक्षमेवोरगदंश भीतिः

(*v*) सिंह राशि स्वर्ण, तांबा, चांदी एवं लाल रंग की सब वस्तुओं के भावों में तेजी का रूख होगा।

यदा सिंह गतो भौमः कांचनं रुकमताप्रकम।
आरक्त सर्वद्रव्याणि महर्घाणि भवंतिहि॥

मघा नक्षत्र तिल, मूंगफली, मोठ, मूंग, काली सरसों, उड़द या अन्य समाज के भाव तेज रहें। वर्षा की कमी रहेगी।

उदाहरण–मंगल 31 जुलाई 2004 को 24 घण्टे 59 मिनट पर सिंह राशि में प्रवेश किया। दिल्ली तथा आसपास के क्षेत्र व महाराष्ट्र में पिछले एक माह से तीव्र गर्मी से त्रस्त थे परन्तु पहली तथा दूसरी अगस्त 2004 को इतनी अधिक वर्षा हुई कि सड़के पानी में डूब गई, यातायात ठप्प हो गया। उसके बाद पूरे माह वर्षा होती रही। जनता को लगा कि वर्षाऋतु आ गई। उसी समय तेल, पेट्रोल, डीजल आदि के मूल्यों में सरकार ने वृद्धि की।

पू. फा. नक्षत्र वर्षा कम हो, प्रजा को पीड़ा हो, तेल, नमक, तिल, सरसों, लोहा, मूंगफली व घी के मूल्यों में वृद्धि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्याद्योनिजे भूमिज अल्पवृष्टिः प्रजासुपीड़ा गुरु तैलमूल्यम्

नोट—सरकार ने पैट्रोल के मूल्य बढ़ाए, साथ ही कर हटाकर बाजार भाव को बढ़ने नहीं दिया।

उ. फा. नक्षत्र अल्प वर्षा, पशुओं की हानि तथा घोड़ों का मूल्य अधिक होता है।

तथोत्तरायां जलवृष्टिः रोधाच्यतुष्पदे पीडनमश्वमूल्यम्

***(vi)* कन्या राशि** चंदन, रेशमी वस्त्र, लाल वस्तु तथा लाल रंग के द्रव्य, सूत, चंदन, पंसारी का सामान, लाल मिर्च, ऊनी, रेशमी कपड़े, अलसी आदि के मूल्य में वृद्धि होगी।

कन्या राशि गते भौमे चंदनं पटवस्त्रकम्।
आरक्ताद्यर्घवस्त्राणां प्रभवेतु महर्घता॥

हस्त नक्षत्र अल्प वर्षा, धान्य की उपज कम एवं घृत व लवण के भावों में तेजी का रूख रहेगा।

चित्रा नक्षत्र रोग एवं पीड़ा की वृद्धि। चावल, गेहूँ के भावों में तेजी का रूख होगा।

चित्रा कुजेऽतीव रुजोति पीड़ा शाशीष्टगोधूम-महर्घतापि।

***(vii)* तुला राशि** सब धान्यों में मूल्यों में तेजी का रूख रहे। उड़द, मूंग, सूत, कपास, मूंगफली, गेहूँ आदि के भावों में विशेष तेजी का रूख रहता है।

भूमिपुत्रस्तुलेजातः सर्वधान्य महर्घता।
माषामुव्दगास्तथा सूत्रं कापीसादि विशेषतः॥

स्वाति नक्षत्र घी, खाण्डसारी, चावल के भावों में तेजी व चाँदी के भाव में उतार-चढ़ाव परन्तु स्वर्ण का मूल्य सम रहे।

विशाखा नक्षत्र गेहूँ एवं कपास के मूल्यों में तेजी का रुख।

द्विदेवे कार्पासं गोधूम महर्घभावः

***(viii)* वृश्चिक राशि** सब द्रव्य महंगे होंगे तथा शासकों में क्रोध एवं ईर्ष्या होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जनता रोग व सरकार की गलत नीतियों के कारण दुखी रहे।

यदा वृश्चिक राशिस्थो जायते च महीसुतः।

महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्॥

अनुराधा नक्षत्र सुभिक्ष होता है परन्तु पशु-पक्षियों को पीड़ा भी होती है। लाल रंग की वस्तुएँ, लाल मिर्च तथा लाल चंदन के मूल्यों में वृद्धि।

मैत्र्ये सुभिक्षं पशुपक्षिपीड़ा

ज्येष्ठा नक्षत्र अल्प वर्षा तथा रोग होता है। चांदी व रुई के भाव मंदे।

ज्येष्ठाकुजे स्वल्पाजलं च रोगाः

(ix) धनु राशि मूल द्रव्य, तृण, काष्ठ, घृत, कपास और पशु यह सब महंगे होते हैं।

धन राशिगते भौमे मूल द्रव्य तृणानि च।

काष्ठं च घृत कार्पासं महर्घं च चतुष्पदाम्॥

मूल नक्षत्र अनाज, चांदी, चावल, स्वर्ण, रुई आदि के भाव बढ़ेंगे। ब्राह्मण व सैनिकों को कष्ट रहे।

पू. आ. नक्षत्र अतिवृष्टि, गौ दूध कम देंगी अनाज की उपज पर्याप्त, घी, उड़द, तिल तथा धान्य के भाव तेज रहें।

पूषा कुजे भूरिजलाः पयोदा
गावोऽल्पदुग्ध वसुधान्नपूर्णा।
महर्घता शालितिलाज्यमाषेष्वग्नौ हि
तत्पूर्ववदेवभावम्।

उ. आ. नक्षत्र घी, अनाज, धान्य, तेल, सरसों, उड़द, लाल मिर्च तथा रुई के भावों में तेजी। अच्छी वर्षा होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*x*) मकर राशि — घी, तेल के भावों में तेजी का रुख रहे तथा सब धान्यों, चीनी, तांबा, आदि के भावों में मन्दी का रुख रहे। परंतु जनता को दुःख एवं पीड़ा होंगी।

मकरे च स्थिते भौमे घृततैलमहर्घता।
सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःखनीडनम्॥

श्रावण नक्षत्र — जनता रोग से पीड़ित। वर्षा बाद में अच्छी हो तथा धान्य का उत्पादन पर्याप्त होता है। रूई के भाव ऊँचे। गेहूँ, चना, जौ आदि का रूख ऊँचा।

सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे सपौष्णे नरेषु रोगाबहुधान्यलक्षमा

अन्य मत — स्वर्ण, चाँदी के भाव में तेजी परन्तु अनाज के भावों में गिरावट होगी।

धनिष्ठा नक्षत्र — स्वर्ण, चाँदी, गेहूँ, गुड़, चीनी, तांबा, पीतल, रंग, लोहा आदि के भावों में तेजी का रूख होगा। जनता पीड़ित रहे।

(*xi*) कुंभ राशि — अनाज, स्वर्ण, गुड़ तथा चीनी के भावों में तेजी का रुख, रुई तथा चाँदी के भाव में तेजी फिर मन्दी।

क्रूर ग्रहों के युति व दृष्टि हो तो बहुत महंगे और यदि सौम्य ग्रहों का प्रभाव हो तो मूल्यों में भारी कमी।

शतमिषा नक्षत्र — स्वर्ण, रजत, रूई आदि के भाव में पहले मूल्यों में कमी के बाद तेजी का रूख। खाद्यान्न के भावों में गिरावट।

पूर्वभाद्रा नक्षत्र — स्वर्ण, रजत, अलसी, सरसों, तिल, मूंगफली, नारियल, सुपारी, तेल, रूई, सूत आदि के भावों में तेजी रहे।

(*xii*) मीन राशि — स्वर्ण, रजत, रुई, चारा, लकड़ी आदि के भावों में तेजी का रुख। मंगल के मीन राशि में होना ही बाजार भावों में तेजी दिखाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तरभाद्रा नक्षत्र	स्वर्ण, चांदी, रुई, गेहूँ, जौ, चने, आदि अनाज, चंदन की लकड़ी, कपूर, गंध वाली वस्तु, इत्र आदि के भावों में तेजी का रूख।
रेवती नक्षत्र	चांदी के भाव ऊँचे। गेहूँ, जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा के भावों में गिरावट परन्तु स्वर्ण के भाव साधारणतया ऊँचे। रुई के बाजार भावों में उतार चढ़ाव बना रहे।

5.17. (*i*) वस्तुओं एवं ग्रहों का संबंध

अन्न	बुध/सूर्य, बुध/चंद्रमा, बुध/शुक्र, बुध/शनि, बुध/राहु-केतु, बुध/ हर्शल, बुध/नेपच्यून, बुध/प्लूटों के बीच संबंध।
अरण्ड	शनि का संबंध, सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, राहु-केतु, हर्शल व प्लूटो से।
अलसी, ऊन	शनि का संबंध सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, राहु/केतु, हर्शल, प्लूटो, नेपच्यून से।
ईंट	मंगल का संबंध, सूर्य, चंद्रमा, बुध, गुरु, शुक्र, राहु/केतु, हर्शल, प्लूटो से।
एल्यूमिनियम	हर्शल का संबंध सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध से, शनि से
उद्योग	राहु/केतु, नेपच्यून का संबंध, सूर्य से प्लूटो का संबंध।
औषधि	**नेप्च्यून** से चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शनि, व राहु का संबंध।
	सूर्य से बुध, गुरु का संबंध
	गुरु से सूर्य चंद्रमा, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु/केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो का संबंध।
काँच	**सूर्य** का चंद्रमा व शुक्र से, **चंद्रमा का** मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु से केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो **मंगल का** शुक्र व बुध से
	बुध का शनि, राहु/केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो तथा शनि का शुक्र से संबंध।
कपास	**गुरु का** सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु/केतु, हर्शल, प्लूटो, नेपच्यून से तथा **नेपच्यून से** शनि व राहु का संबंध।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कागज	प्लूटो से सूर्य, बुध व चंद्रमा से तथा बुध का हर्शल से।
काफी	मंगल का सूर्य, चंद्रमा, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु/केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो से गुरु का चंद्रमा, शुक्र, हर्शल से संबंध।
क्लॉथ मिल्स	गुरु का सूर्य, चंद्रमा, बुध, राहु/केतु से संबंध।
मोटर	हर्शल का सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु से शनि का सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, शुक्र, राहु-केतु, नेपच्यून, प्लूटो तथा राहु का हर्शल से संबंध।
किराना	गुरु का सूर्य व चंद्रमा से संबंध।
कोयला	शनि का सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, राहु/केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो से संबंध।
काली मिर्च	शनि का सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, राहु/केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो से संबंध।
गिलट	सूर्य का अन्य ग्रहों से संबंध।
कृषि संबंधी यंत्र	शनि का सूर्य,चंद्रमा, मंगल तथा बुध से संबंध
खाद्य पदार्थ	शनि का सूर्य, चंद्रमा, मंगल तथा बुध से संबंध
गुड़	सूर्य-मंगल, सूर्य-नेपच्यून, सूर्य-गुरु, गुरु-चंद्रमा, गुरु बुध, गुरु-शुक्र, गुरु/हर्शल, राहु-मंगल।
गेहूँ	सूर्य-बुध, सूर्य-शुक्र, चंद्रमा-बुध, चंद्रमा-शुक्र, मंगल-बुध, मंगल-शुक्र, बुध-गुरु, बुध-शुक्र, बुध-शनि, शुक्र-शनि, राहु-बुध, राहु-शुक्र।
घी	सूर्य का चंद्रमा, मंगल, गुरु से व चंद्रमा का मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहु, नेपच्यून से, बुध से गुरु का संबंध। नोटः घी का भाव ग्रीष्म ऋतु व विवाहादि के समय में बढ़ता है।
घड़ियाँ	मंगल का संबंध सभी ग्रहों से व बुध-प्लूटो, गुरु-प्लूटो, शनि-प्लूटो, राहु-प्लूटो, शनि-हर्शल, आदि योग।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाँदी	**चंद्रमा का** संबंध, सूर्य, शुक्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहु/केतु, हर्शल, नेप्च्यून, प्लूटो से, **मंगल का** संबंध, चंद्रमा, गुरु, शुक्र, सूर्य से। **बुध का** संबंध मंगल, गुरु, शुक्र, शनि, राहु/केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो से। गुरु का संबंध शुक्र शनि, राहु/केतु, हर्षल, नेपच्यून, प्लूटो से **शुक्र-राहु** का परस्पर संबंध।
चावल	**सूर्य का संबंध** चंद्रमा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, राहु नेपच्यून से **चंद्रमा का संबंध,** मंगल, बुध, शुक्र राहु से, **मंगल का संबंध** बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु/केतु, हर्षल नेपच्यून, प्लूटो से। **बुध का संबंध** गुरु, शुक्र, शनि, राहु/केतु, हर्षल, नेपच्यून प्लूटो से। **शनि का संबंध** शुक्र से, शुक्र/राहु का संबंध।
चना	गुरु का संबंध सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु-केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो से हो।
चमड़ा	मंगल का संबंध सूर्य, चंद्रमा, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु/केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो से व सूर्य-नेपच्यून, **बुध**-प्लूटो, **शनि**-हर्शल, **शनि**-प्लूटो, **राहु**-प्लूटो।
चाय	मंगल का संबंध सूर्य, चंद्रमा, बुध, गुरु, शुक्र, राहु-केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो से, **चंद्रमा-नेपच्यून, बुध का** मंगल व नेपच्यून से। गुरु का चंद्रमा, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु-केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो से व राहु-नेपच्यून।
चीनी	**सूर्य का** मंगल, शुक्र, नेपच्यून से। **चंद्रमा का** बुध तथा शुक्र से। **मंगल का** बुध और शुक्र से। **बुध का** मंगल, गुरु, शुक्र, शनि, राहु-केतु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो से **शनि-शुक्र, गुरु-शुक्र, राहु-बुध, राहु-शुक्र** का संबंध।
आभूषण	**सूर्य का** चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो से संबंध।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जौ	सूर्य-शनि। चंद्रमा का मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, नेपच्यून प्लूटो से संबंध। मंगल का चन्द्रमा शनि राहु से संबंध।
जड़ी बूटियाँ	सूर्य का अन्य ग्रहों से संबंध व राहु-चंद्रमा का योग।
जायदाद पृथ्वी	मंगल का सूर्य, गुरु, शनि व राहु से संबंध।
जूते	शनि का अन्य सभी ग्रहों से संबंध।
ज्वार	गुरु-बुध व राहु-बुध।
तिलहन	मंगल तथा शनि का अन्य ग्रहों से संबंध।
तेल	मंगल का नेपच्यून व गुरु से। गुरु का अन्य सभी ग्रहों से तथा शनि-नेपच्यून। नोटः तेल कंपनियां भी उपरोक्त योगों से प्रभावित होती हैं।
तम्बाकू	गुरु का संबंध अन्य ग्रहों से। चंद्रमा का नेपच्यून व मंगल से। बुध का गुरु व नेपच्यून से। राहु-नेपच्यून।
तांबा	मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध। बुध का अन्य ग्रहों से संबंध। राहु का शनि, प्लूटो से। सूर्य का शुक्र व शनि से चंद्रमा का बुध व शनि से संबंध।
धातु	मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध।
नमक	बुध-सूर्य
पैट्रोलियम/ मिट्टी का तेल	चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध।
फिल्म उद्योग	हर्शल का सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु से संबंध। शनि का सूर्य, बुध, राहु/केतु, नेपच्यून, प्लूटो व हर्शल से संबंध।
बिजली का सामान	राहु का अन्य सभी ग्रहों से संबंध। मंगल-राहु/केतु, बुध-राहु/केतु, राहु-सूर्य, मंगल-हर्शल, शनि-चंद्रमा। नोटः 24 मार्च, 2005 को राहु शुक्र, बुध तथा सूर्य तीनों मीन राशि में, मिथुन के शनि की दशम दृष्टि तथा कन्या से चंद्रमा तथा गुरु की दृष्टि थी। सरकार ने सभी बिजली के सामानों गैस, डीजलादि पर टैक्स।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मशीनरी	मंगल के साथ अन्य ग्रहों का संबंध।
मोती	बुध का अन्य ग्रहों से, सूर्य-शुक्र, मंगल-शुक्र, गुरु-शुक्र, शनि-शुक्र व राहु-शुक्र का संबंध।
तिल का तेल	शनि का अन्य ग्रहों से संबंध।
मूंगफली	शनि का अन्य ग्रहों से संबंध।
मछली	चंद्रमा का अन्य ग्रहों से। बुध-नेपच्यून, गुरु का मंगल, शनि, राहु-केतु, नेपच्यून सें। शनि-नेपच्यून, राहु-नेपच्यून।
रूई	सूर्य क शुक्र, बुध से, चंद्रमा का बुध, शुक्र, नेपच्यून से, बुध का अन्य सभी ग्रहों से शुक्र का गुरु व शनि से संबंध।
लोहा	शनि का अन्य ग्रहों से, मंगल का सूर्य, चंद्रमा का शनि से संबंध।
वायुयान	मंगल, गुरु व राहु का संबंध हर्शल से।
वायरलेस	हर्शल का मंगल, बुध व राहु से। बुध-प्लूटो का संबंध।
शहद	सूर्य का अन्य ग्रहों से संबंध।
शेयर	सूर्य का शुक्र, मंगल, गुरु, बुध से। राहु-गुरु, मंगल-शुक्र के संबंध। इसके साथ गुरु का भी सभी ग्रहों से संबंध देखना चाहिए।
सोना	सूर्य या मंगल का अन्य ग्रहों से। बुध का सूर्य, चंद्रमा से। गुरु का सूर्य व मंगल से। शनि का सूर्य व मंगल से। राहु का सूर्य व मंगल से संबंध।
सरसों	सूर्य-शनि।
सीमेन्ट	शनि का अन्य ग्रहों से संबंध, मंगल-नेपच्यून का योग।
संगमरमर	बुध या शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध।
सीसा	सूर्य-प्लूटो, चंद्रमा, प्लूटो।
सीप	सूर्य-नेपच्यून।
सुगंधित पदार्थ	शुक्र व बुध का अन्य ग्रहों से संबंध।
हल्दी	सूर्य-नेपच्यून, राहु-गुरु।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5.18.2 नव ग्रह तथा पदार्थ (उत्तर कालामृत के अनुसार)

सूर्य अग्निमय सर्व पदार्थ, कांटेदार वृक्ष, ऊन, औषधि, कम्बल, कड़वे पदार्थ, भूमि, चौकोर पदार्थ, हड्डियाँ (गजदंत) घास, चौपाये, यात्रा संबंधी पदार्थ, सरकार से संबंधित, लकड़ी, सौराष्ट्र देश की वस्तुऐं, मोती, तांबा, रक्तदान, रक्तवृद्धि की औषधि, केसर, रस्सी, मधु, स्वर्ण (गिन्नी, अशर्फी), माणिक्य, लाल कपड़ा, पत्थर, लाल चंदन, स्फटिक, चमकीली वस्तु, जलोत्पन्न मछली तथा अन्य जीवन, साँप।

चंद्रमा जड़ी बूटी, ऐक्सपोर्ट-इमपोर्ट की वस्तु, पैट्रोल, फूल सुगंध, खटाई, जलीय पदार्थ, चांदी, स्थूल, गन्ना, मोती, श्वेत रंग, कांसा, नमक, हीरा, मधु, गेहूँ, प्लैटीनम, हाथी दाँत, चावल, कपूर, चीनी, मैंथल, खारी चीजें, नवरत्न, अच्छा रक्त, मछली, साँप, रेशमी कपड़ा, चमकीली वस्तु, स्फटिक, नरम कपड़ा, तीव्रतम गति के पदार्थ, रक्त (शरीर के हड्डी, मांस, मज्जा, वीर्य, मेदा-रूधिर आदि तत्व में रूधिर सबसे अधिक गतिशील है।).

मंगल भूमि (ईंट, लोहा, सीमेंट) शस्त्र, लाल रंग की वस्तु, पशु, राजा, अग्नि, टीन (धातु), तलवार, भाला, मणि, कड़वा, मिट्टी की बनी वस्तु, मांस, तिक्त स्वाद वाली वस्तु। खनिज पदार्थ, मशीनरी, सोना, गरमी की ऋतु, कुल्हाड़ा, तांबा, विचित्र कपड़ा, वृक्ष, तोप, खेत, सांप, रक्त, बिजली, रेडियो, भट्टी, जलाने वाली वस्तु, रक्तवर्धक, गेहूँ, चाय, काफी, कोक।

बुध घोड़ा, कोष, प्यादा, सेना, नया वस्त्र, बड़ा मकान, शिल्प, वाणिज्य, सुन्दर भूषण, त्वचा, गोलापन, कांसा, ऋतु, सुन्दर भवन, हेमन्त ऋतु, सान, (शस्त्र को पैना करने वाला यंत्र) मिश्रित वस्तुएँ, पक्षी, रत्नों की जांच परख, अखबार, प्रकाशन की कंपनियाँ, हरे रंग की वस्तु, व्यापार, गीली वस्तु, मिश्रित वस्तु (चूर्णादि), मूंग, चावल, अन्न, रुई, तांबा, निकल।

गुरु रथ, गौ, प्यादा, सेना, निधि, घोड़ा, दही, हाथ की संपत्ति, गोमेदक, रत्न, शिशिर ऋतु, रत्न का व्यापार, पीले रंग की वस्तु, गोल, डोली, मध्यम दर्जे का कपड़ा, नवीन गृह, वैदूर्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रत्न, मधुरस, स्वर्ण-भूषण, पुखराज, बड़े आकार वाली वस्तु, शिक्षा संबंधी, कानून, साहित्यिक पुस्तक, सिंहासन, बरतन, शरबत, रबड़ के पदार्थ, चना, नया मकान, उत्तर दिशा की वस्तुएँ, गांवों में प्रयोग वाली वस्तु, चरबी, आकाश, में चलने वाली वस्तु (वायुयान, हैलीकॉप्टर)

शुक्र कपड़ा, आयु, मनुष्य (द्विपाद), भोग्य वस्तु, पुष्ट, खट्टी वस्तु, वाहन, चाँदी, नमकीन, मोती, सुंदरता संबंधी वस्तु, जलीय स्थान, हाथी, घोड़ा, मणि, नौकर, इत्र, वीणा (वाद्य यंत्र), वस्न्त ऋतु, भूषण, कलाओं से संबंधित, श्वेत वस्त्र, काले बाल, पाउडर लिपस्टिक आदि, आग्नेय दिशा की वस्तुएं, वसंत ऋतु में पैदा होने वाले पदार्थ, चित्रकारी, चावल, गेहूँ, रूई, सूत, प्लास्टिक।

शनि घोड़ा, हाथी, चमड़ा, रोग, गधा, खच्चर, सेवक, शिशिर ऋतु, राख, काले धान्य, लोहा, कम्बल, कृषि, सीसा, लकड़ी, विष, बकरा, भैंस, कुत्ता, भूगर्भ वस्तुओं का अधिष्ठता, चोरी की वस्तु, ब्लैकमार्किट में बिकने वाली व जिन पर चुंगी लगती है, काले रंग की वस्तु।

राहु हड्डी, गरुड़, पर्वत, वाहन।

केतु डॉक्टर, कुत्ता, मुर्गा, सिद्ध, पत्थर, भोग सामग्री, सींगो वाले पशु, ध्वज, उत्कृष्टा का प्रतीक।

ग्रहों से संबंधित तथा राशियों से ग्रहों की युति हो तो राशियों से संबंधित वस्तुओं में तेजी-मंदी होती है। जैसे सूर्य 'मंगल की युति (दोनों कारक ग्रह हैं व क्रूर ग्रह हैं) इन ग्रहों से संबंधित वस्तुओं में काफी तेजी लाता है। यदि यह युति अग्नि प्रकृति की राशि में हो तो विशेष तेजी होगी। जैसे–

5.18.3 ग्रहों के परस्पर संबंध का बाजार भाव पर प्रभाव

सूर्य + चन्द्र = तेजी	सूर्य + हर्शल	=	अकस्मात तेजी
सूर्य + मंगल = तेजी	सूर्य + नेपच्यून	=	तेजी (मिथ्या अफवाह के कारण)
सूर्य + बुध = तेजी	सूर्य + प्लूटो	=	कम्पनियों के शेयर्स, भूगर्भ की वस्तुओं में तेजी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य + गुरु = तेजी

सूर्य + शुक्र = तेजी

सूर्य + शनि = तेजी

नोटः चंद्रमा की युति जिस दिन मध्यान्ह में हो उसी दिन प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। व्यापारी प्रतिकूल राशि में चंद्रमा के रहने पर तेजी का योग भी बने, तो सौदा नहीं करें। चंद्राष्टक वर्ग के बिन्दुओं पर विचार करें।

चंद्रमा + मंगल = तेजी विशेषतया तैयार खाद्य वस्तुऐं (होटल, मिठाई की कम्पनी के शेयर, पैट्रोल आदि जल में चलने वाले वाहन, मधु बनाने वाली कम्पनियों आदि के शेयर ऊँचे।)

चंद्रमा + बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु, आदि सभी ग्रहों से योग तेजी दिखाता है। (शुभ ग्रह उतनी तेजी नहीं करते जितनी क्रूर ग्रह करते हैं।

***(iii)* मंगल**–मंगल का अन्य ग्रहों से संबंधित वस्तुओं पर तो प्रभाव पड़ेगा परंतु उन ग्रहों का प्रभाव भी मिश्रित हो जाएगा।

मंगल + बुध = तेजी (किसी नवीन समाचार के कारण तेजी)

मंगल + गुरु = तेजी (धनिक वर्ग की अधिक खरीदारी के कारण)

मंगल + शुक्र = तेजी (मंगल की वस्तुओं में तेजी कम, शुक्र की वस्तुओं में तेजी अधिक, उपभोक्ताओं की अधिक मांग के कारण।)

मंगल + शनि = विशेष तेजी (दोनों क्रूर ग्रह हैं। **मंगल की गति 40 कला प्रतिदिन हैं, इसलिए 10-11 दिन बाद तक रहेगी।** बीच में समय में विशेष तेजी, शनि, रूकावट, विलम्ब, मजदूर का प्रतिनिधि है तो महंगाई के कारण हड़ताल भी हो सकती है। **मंगल के कारण उपद्रव व युद्ध भी हो सकता है।**)

मंगल + राहु = तेजी

नोटः मंगल + राहु की युति हो तो मंगल-केतु का प्रतियोग होगा। युति तेजी से प्रतियोगी मंदी। इसका अर्थ तेजी तो होगी परंतु अधिक नहीं, अपितु युति वाली राशि से प्रतिनिधित्व वस्तु महंगी हो।

मंगल + हर्शल = विशेष तेजी।

मंगल + नेपच्यून = तेजी (सच्ची झूठी अफवाहों के कारण उतार चढ़ाव, बाजार स्थायी नहीं रहता।)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल + प्लूटो **एल्बर्ट बेंजामिन ने प्लूटों के विषय में शिकागो (अमेरिका) में एक 12 पन्ने की पुस्तक प्रकाशित की, उसमें लिखा इस ग्रह का पता 1930 के लगभग लगा। यह मंगल की भांति तेज और शक्ति वाला है।**

(*iv*) बुध–गुरु की किसी भी ग्रह से युति तेजी कारक है। नेता या शासक वर्ग या प्रधान, अधिकारी का वक्तव्य प्रकाशित होगा। बैंक का आदेश या बदला संबंधी रेट भी तेजी का कारक हो सकता है।

नोटः 24 मार्च, 2005 को कन्या में गुरु तथा मीन में बुध थे, वैट पास हुआ और टैक्स बढ़ने की घोषणा।

बुध-शुक्र-फिल्म कंपनियों के शेयर्स, सुगंधित वस्तु, चांदी, मोती, रेशम, चीनी, रूई तथा विलासिता की सामग्री के मूल्य ऊँचे। चावल, खाने पीने की वस्तु भी महंगी। दोनों सौम्य ग्रह होने के कारण तेजी कम।

बुध + शनि, बुध + नेपच्यून, बुध + हर्शल, बुध + प्लूटो

कभी-कभी तीन बार युति होती है, तीसरी युति विशेष प्रभावशाली होती है।

नोटः बुध जैसे ग्रहों के साथ हो, उनके प्रभाव को अपने में आत्मसात कर लेता है।

(*v*) बृहस्पति–बहुत से ग्रंथों में टीन, जस्ता, चाँदी, शेयर्स विशेषकर बैंक आदि को गुरु से ही बताया है।

गुरु + शुक्र–दोनों की वस्तुओं में तेजी (जैसे जूट, कपास, कपड़े की मिलें, शक्कर, रेशमी वस्त्र, तम्बाकू, रबड़, नायलोन आदि कंपनियों के शेयर्स। **गुरु की गति 5 कला प्रतिदिन तथा शुक्र की 1 अंश, शुक्र के गुरु से 6 या 7 अंश पहले से ही बाजार भाव बढ़ने लगेगा।)**

गुरु + शनि दोनों की युति 20 वर्ष बाद ही होती है, (जिस राशि में दोनों युति होती है, 12 वर्ष बाद गुरु उस राशि में पुनः आता है परंतु शनि केवल 5 राशि ही चल पाता है इस प्रकार 20 वर्षों में प्रायः शनि-गुरु की युति होती है, किसी बार एक ही राशि में दो-तीन बार भी, (गुरु के वक्री होने के कारण व शनि के वक्री होने के कारण) युति होती है। इनकी युति का प्रभाव काफी समय तक रहता है। 1999 मई 26 से 2 जून 2000 तक मेष राशि में तदोपरांत 6 जून 2000 से पुनः गुरु व शनि की युति वृष राशि में 16 जून, 2001 तक रही। *कारगिल युद्ध एवं गुजरात भूकंप व गुजरात के झगड़े इनका प्रभाव रहा।*

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनकी युति से खनिज पदार्थ, लोहा, कोयला, तांबा, जस्ता, टीन, लोहे की मशीनरी, सन, पाट, चना, पीली वस्तुओं आदि के भावों में तेजी आती है।

नोट: 30 अगस्त 1979 से नवम्बर 1979 तक शनि + गुरु सिंह राशि में रहे। तदोपरांत 20 सितम्बर 1980 से 26 अक्टूबर 1981 तक कन्या में दोनों साथ रहे।

गुरु + राहु तेजी कारक होते हैं। परंतु केतु की प्रतियुति होने के कारण अधिक तेजी नहीं होती।

गुरु + हर्शल अकस्मात तेजी। बिजली से संबंधित वस्तु, हवाई जहाज से आने वाले पदार्थ, जूट, चना, तम्बाकू, बैंकों के शेयर्स, रेल, मोटर आदि।

गुरु + नेपच्यून मन्दी का कारक। परंतु अधिकतर इस युति से तेजी आई है। गुरु (हल्दी) व नेपच्यून (चूना) दोनों मिलकर लाल रंग देते हैं।

गुरु + प्लूटो = तेजी का कारक है (उथलपुथल करने वाला है)

(*vi*) शुक्र

शुक्र + शनि–दोनों से प्रतिनिधित्व वस्तुओं के भाव में तेजी। वृष या मकर राशि की युति अधिक तेजी। तुला व कुंभ (मूल त्रिकोण राशियाँ) में तेज़ी पर अधिक नहीं।

शुक्र + राहु = तेजी कारक हैं। परंतु केतु की प्रतियुति के कारण अधिक तेजी नहीं।

शुक्र + हर्शल = अचानक तेजी आए। रेल, वायुयान, बस, मोटर आदि की कंपनियों के शेयर के भाव बढ़े।

शुक्र + नेपच्यून = तेजी कारक (दोनों जल प्रधान है इसलिए जल संबंधित वस्तुएं प्रभावित हों)

शुक्र + प्लूटो = तेजी कारक

(*vii*) शनि

शनि + राहु = तेजी कारक

शनि + हर्शल = बहुत लम्बे समय के बाद तेजी होती है।

शनि + नेपच्यून = तेजीकारक परंतु यह भी लंबे समय बाद होती है।

शनि + प्लूटो = वर्षों बाद तेजी होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

5.19 मंगल का विभिन्न राशियों में उदयास्त, वक्री मार्गी होने का प्रभाव

ग्रह	उदय	अस्त	वक्री	मार्गी
	पश्चिम-दक्षिण क्षेत्र में वर्षा, व्यापारी वर्ग को पीड़ा, रूई व अलसी आदि के भावों में तेजी		दुर्भिक्ष-महाभय का कारक, लाल वस्तु में तेजी, अनावृष्टि	मार्गी हो तो मन्दी
मेष में	उड़द, तिल आदि में तेजी	पाषाण में तेजी	दुर्भिक्षकारी	पशुओं में मंदी, राजविग्रह
वृष में	दुधारू और वाहन पशुओं की क्षति	तृणादि वस्तुओं में मंदी	दुर्भिक्ष, राजनीतिक परिवर्तन, जनता को भय	रूई में तेजी आकर मंदी, चांदी में घटा बढ़ी
मिथुन	अन्नादि में तेजी	कहीं अतिवृष्टि व कहीं सामान्य वृष्टि	महायुद्ध, दुर्भिक्ष, अन्नानाश	पाश्चात्य देश में युद्ध
कर्क	अतिवृष्टि अधिक धान्योत्पत्ति व्यापारी वर्ग को पीड़ा	धान्य नाशक	गेहूँ, अलसी आदि में घटा बढ़ी, राजनीतिक उथलपुथल	महामारी, रोग वृद्धि
सिंह	चावल आदि के भावों में तेजी, विद्वतजन को पीड़ा	पशुओं के भावों में तेजी, खच्चरों को पीड़ा	दुर्भिक्ष, युद्ध, उपद्रव, अन्न नाश	अलसी, गेहूँ के भाव में एक मास के अंदर तेजी
कन्या	अच्छी धान्य उत्पत्ति, सरकार को पीड़ा।	गेहूँ, चना आदि में तेजी	दुर्भिक्ष, युद्ध, जनहानि	रूई, अलसी, गेहूँ, तेल में तेजी होकर मंदी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

तुला	सुभिक्ष कारक, शासन की नीति से जनता दुखी	अनाज महंगा	दुर्भिक्ष, राजनीतिक परिवर्तन जनता भयभीत	दक्षिणी क्षेत्रों में दुर्भिक्ष
वृश्चिक	अधिक अन्नोत्पादन	सुभिक्ष परन्तु राजभय उल्कापात	अनोत्पादन अधिक,	पशुओं में महामारी, समुद्री क्षेत्रों में उपद्रव
धनु	वर्षा अधिक	चावल, तुष, धान्य व अगर में तेजी	धान्य, धृत तेज, दुर्भिक्ष अन्नोत्पादन का अभाव	समस्त धान्य मंदे
मकर	चावल, गुड़ में तेजी, घृत व लाल वर्ण की वस्तु का उत्पादन अधिक, पश्चिमी क्षेत्र में अतिवृष्टि या अनावृष्टि के कारण धान्यनाश।	अति वर्षा, चौपादि के उपद्रव से जनता दुखी	लोहा, मशीनरी, विद्युत यंत्र, गेहूँ, अलसी आदि में तेजी भूकम्प, जनता में भय	पूर्वीय व पश्चिमी क्षेत्रों में राज विग्रह
कुंभ	चूहे, टिड्डीदल व अतिवृष्टि से धान्य नाश, गुड़, घृत लाल वस्तुओं में तेजी	राज विद्रोह, अशांति	धान्य के भाव मंदे, घृत तेल, रसादि पदार्थ, गेहूँ अलसी में तेजी	वृष्टि अच्छी व सुभिक्ष
मीन	दुर्भिक्ष की संभावना	सुभिक्ष कारक, सर्पभय	धान्य व धृत आदि में तेजी	ज्वारभाटा, तूफान, अभक्ष्य पदार्थ (मांसादि) में मंदी।

नोटः (*i*) शनि + मंगल मीन में वक्री हो तो दुर्भिक्ष, सस्यनाशक, युद्ध, जनहानि का भय।

(*ii*) रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, मूल हस्त, अनुराधा, नक्षत्रों में दोनों एक साथ वक्री हो तो महादुखदायी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

5.20 बुध का विभिन्न राशियों में उदयास्त, वक्री मार्गी होने का प्रभाव

राशि	उदय	अस्त	वक्री	मार्गी
मेष	गौआदि को पीड़ा, टिड्डी से कृषि हानि, धान्य में तेजी	सुभिक्ष कारक	इक्षु, खांडसारी, रसीले पदार्थ तेज, धान्य सस्ते, नारियल, किराने की वस्तु में तेजी	तृण, काष्ठादि में 13 दिन के अंदर तेजी। कपूर चंदन तिलहन, अलसी आदि मदें।
वृष	वृष्टि कारक	गाय, बैल, घोड़ा, हाथी आदि का नाश	चांदी में घटा-बढ़ी फिर तेजी	रूई, चांदी, गेहूँ, अलसी, शक्कर, सूत में मंदी।
मिथुन	अनावृष्टि पीड़ा, तेजी कारक	राजा को पीड़ा	रूई में तेजी, शाक भाजी में मंदी	चना, भूसा, मोठ आदि तथा हाथी, वाहन में मंदी
कर्क	सुख में वृद्धि, 6 मास तक दुर्भिक्ष व अति वृष्टि	अनावृष्टि व जनहानि चोरों का उपद्रव	सभी वस्तुओं में मंदी	चांदी, कपड़ा, चावल आदि मंदे, जलयान तेज।
सिंह	पशुओं में महामारी	अल्पवृष्टि	समस्त धान्य, तांबा, लोहा पीतल आदि में तेजी	पाट, शेयर्स, आदि पहले मंदे बाद में तेज
कन्या	धान्योत्पादन अच्छा जनता सुखी	अतिवृष्टि, चोरादिभय किराने की वस्तुओं में तेजी।	सर्व वस्तुओं में मंदी रूई में पहले तेजी फिर मंदी	चन्दन, सुपारी, नारियल, किराने की वस्तु, मद्य में तेजी
तुला	तेजी कारक, युद्धादि, पीड़ा-कारक, भूकंप की संभावना	किराने की वस्तुओं में तेजी	सोना आदि में तेजी व्यापारी वर्ग में घबराहट	धृत शक्कर, अलसी औषधि में तेजी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

वृश्चिक	सुभिक्ष कारक, राजभय कारक	सातों धातुओं में तेजी सरसों मंदी	गुड़, शक्कर, अलसी में तेजी, जनता भयभीत।	एरण्ड, बिनौले में तेजी
धनु	सुखकारी	राजाओं में भय उत्पन्न	मेवा फल आदि में तेजी	इक्षु, चावल आदि में तेजी राज विग्रह
मकर	धान्य व रसादि पदार्थ का अधिक उत्पादन	रोग वृद्धि, व्यापार में अल्प लाभ	तैल पदार्थों में तेजी धान्यों में मंदी।	वायु वेग हो तथा वृष्टि की संभावना
कुंभ	वायु-वेग अधिक	अति वायु व हिमपात का प्रकोप, कृषि व वृक्षों की क्षति।	रस, कस आदि पदार्थों में तेजी	सोना, सुपारी, सरसों, सोंठ, लाख, चमड़े में तेजी
मीन	दुर्भिक्ष, वायु प्रकोप अति वृष्टि	अन्न-धान्य की हानि राजाओं के लिए पीड़ाकारी।	शक्कर, चावल, धृत में तेजी तथा रूई वस्त्र में मंदी	धृत, गुड़, खांड, तेल, मूंगफली, आदि बिनौले, रूई में मंदी।

नोटः बुध के उदय से 10 दिन के अंदर रूई में व 40 दिन के अंदर धान्य में तेजी। यदि अस्त हो तो 10 दिन के अंदर रूई मंदी।

पूर्व दिशा में उदय–25 दिन के अंदर तेजी व राजपूताना में वर्षा। भाद्रमास में (अगस्त-सितम्बर) बुध का उदय श्रेष्ठ, सुभिक्ष व वृष्टिकारक होता है। **पूर्व दिशा** में अस्त हो तो 33 दिन में धान्य, घृतादि में मंदी आती है। व रूई में उतार-चढ़ाव होता है।

पश्चिम दिशा में बुधोदय हो तो 15 दिन में रूई, कपास, वस्त्र व धान्य में तेजी आती है। मार्गशीर्ष में उदय हो (नवम्बर-दिसम्बर) तो रूई में तेजी आती है। **पश्चिम में बुधास्त** तो रूई में 15 दिन में मंदी आती है। राजपूताने में वर्षा होती है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

5.21 गुरु का विभिन्न राशियों में उदयास्त, वक्री तथा मार्गी होने का प्रभाव

गुरु	उदय	अस्त	वक्री	मार्गी
मेष	अश्विनी भरणी में बाजार में तेजी मंदी होते हुए तेजी आ जाती है। कृतिका का प्रथम चरण में अति वृष्टि के तेजी कारण	वर्षा कां अभाव	अनावृष्टि तेजी, राजाओं में मतभेद अराजकता, राजविग्रह, जनता पीड़ित	मंदी
वृष	मंदीकारक	तेजीकारक	उपरोक्त	उपरोक्त
मिथुन	तेजी	तेजी का रुख	उपरोक्त	उपरोक्त
कर्क	तेजी, अनावृष्टि	वृष्टिकारक, बाजार, मंदा	उपरोक्त	उपरोक्त
सिंह	सुभिक्ष आरोग्यता	व्यापार में तेजी	उपरोक्त	उपरोक्त
कन्या	सुभिक्ष, मंदी, वर्षा अच्छी, उत्पादन अधिक	तेजी कारक	मंदीकारक	तेजी कारक
तुला	घृत, दूध, चंदन, रसादि पदार्थ धान्यों में तेजी, ज्वर, रोग, उपद्रव	मंदी कारक	पीतल, कपास, पाट आदि में तेजी	मंदी कारक
वृश्चिक	व्यापारिक वस्तु में तेजी	मंदी कारक	तेजी	मंदी
धनु	वर्षा की कमी, उड़द, मूंगफली के उत्पादन में वृद्धि, कपास, सन, अन्न, सांना में तेजी, परंतु घी, तेल, गुड़ आदि में मंदी	विपरीत	सातों धान्यों में अचानक मंदी, तिल, तेज, घी, मंदे	विपरीत
मकर	मंदी	तेजी	आरोग्यदायक धान्य में मंदी	विपरीत
कुंभ	मंदी	सुभिक्ष, मंदी	सुभिक्ष मंदी	तेजी
मीन	मंदी	तेजी	गुड़ादि, बारदाना, सरसों धान्य अलसी में तेजी	मंदी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5.22 (क) शुक्र के विभिन्न नक्षत्रों में उदय होने का प्रभाव

अश्विनी	अलसी, अरण्डी, सरसों, धृत, तिल, गुड़ व रसीले पदार्थों के भावों में तेजी। चांदी व रूई में भी तेजी का रूख। उड़द तथा जौ का उत्पादन कम होता है। जौ, चना, मटर, अरहर आदि अन्न कपास, पाट, बारदान, सोना, तांबा आदि सभी में तेजी।
भरणी	उड़द, मूंग, सरसों, चावल का उत्पादन कम, बाजार में मांग अधिक होने के कारण तेजी।
कृत्तिका	व्यापारिक वस्तुओं में तेजी।
रोहिणी	सुभिक्ष, जनता स्वस्थ।
मृगशिरा	सभी प्रकार के धान्यों में तेजी।
आर्द्रा	धान्य, चावल, जौ, शहद व रसादि पदार्थों में तेजी, वर्षा का अभाव।
पुनर्वसु पुष्य	व्यापारिक चीजों में तेजी।
आश्लेषा	वर्षा के न होने से अनाज के भाव ऊँचे।
मघा, पू.फा व उ.फा.	रोग, अशांति आदि का भय, पशु पीड़ित।
हस्त	सुभिक्ष, अच्छी वर्षा, कृषि उत्पादन अच्छा व जनता सुखी, अन्नादि के भाव मंदे।
चित्रा	तेजी कारक, रोग व शोक भय।
स्वाति	मंदीकारक व सुभिक्ष कारक।
विशाखा	तेजी कारक
अनु., ज्ये.	वर्षा का अभाव, भाव ऊँचे
मूल, पू. आ. उ. आ.	व्यापारिक वस्तुओं के भाव मंदे। सुभिक्ष कहीं-कहीं व अतिवृष्टि के कारण कृषि नाश।
श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा	सभी वस्तुओं के भावों में तेजी का रूख।
पू. भा., उ.भा.	सूतपाट, वारदाना, रूई आदि के भावों में तेजी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) नक्षत्र द्वार में शुक्रोदयास्त का प्रभाव

मेघद्वार *भरणी नक्षत्र से आठ नक्षत्र तक (आश्लेषा तक) शुक्र उदयास्त* वर्षाकारक, सुभिक्षकारक तथा मंदी लाता है। धान्य भाव मंदे, जनता स्वस्थ रहती है।

धूलिद्वार *मघा नक्षत्र से पांच नक्षत्र (चित्रा तक) शुक्रोस्त/उदय हो* वायु प्रकोप, धूलि उड़ना, वर्षा की कमी, बाजार भावों में तेजी का रुख।

राजद्वार *स्वाति नक्षत्र से सात नक्षत्र (उ. आषाढ़ तक) में शुक्र उदयास्त* हो, राजनीतिक उथल पुथल भावों का रूख तेजी की ओर और हानिकारक स्थिति होती है।

स्वर्णद्वार *श्रावण नक्षत्र से सात नक्षत्र (अश्विनी तक) में शुक्रोस्त/उदय* हो, सुभिक्ष, शुभ, वर्षाकारक व मंदी लाता है।

(ग) पूर्व व पश्चिम दिशा में उदय का प्रभाव

(*i*) स्वाती, विशाखा, अनुराधा नक्षत्रों में

पूर्व दिशा में उदय	अनावृष्टि
पश्चिम दिशा में उदय	वर्षा कारक

(*ii*) मघा, पू.फा., उ. फा. हस्त व चित्रा नक्षत्रों में

पूर्व दिशा में उदय	वर्षा कारक
पश्चिम दिशा में उदय	अनावृष्टि

नोटः शुक्र **पूर्व दिशा** में अस्त होकर दो मासोपरांत पश्चिम दिशा में उदय होता है। वक्रावस्था के बाद 22 दिन तक गोचर करता हुआ पश्चिम दिशा में **अस्त होता है।**

आठ दिन तक **अस्त** अवस्था में रहता है फिर **पूर्व दिशा में उदय** होता है। **पूर्व दिशा में उदय** होने के 22 दिन बाद **मार्गी** अवस्था होती है। आठ मास बाद **पूर्व में अस्त** होता है। (शुक्र की उदयास्त/वक्रीमार्गी अवस्थाएं गणित पर आधारित हैं) इसलिए शुक्र का स्वभाव, प्रकृति व गुण व्यापारिक वस्तुओं के लिए मंदी कारक होता है। पाप ग्रहों के संपर्क में होने से तेजी, शुभ ग्रहों के संबंध से मंदी होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(घ) तिथियों में शुक्रोदय का प्रभाव

प्रथमा, द्वितीया, तृतीया व चतुर्थी	सुभिक्ष
पंचमी, षष्ठी, सप्तमी व अष्टमी	चोरी, रोग आदि का भय
नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी	राजनीतिक उथल-पुथल
अन्य तिथियों में	तेजीकारक व हानिकारक

(ङ) शुक्रास्त

पक्ष में शुक्रोदयास्त का प्रभाव

(*i*) *मास के जिस पक्ष में अस्त हो, उस ही पक्ष में उदय हो*—अशुभ कारक, राजविग्रह, हानिकारक, शांति भंग, हिंसा, युद्ध।

(*ii*) *मास के जिस पक्ष में अस्त हो और उस मास के उस ही मास के दूसरे पक्ष में उदय हो।*

शुभ फल, सुभिक्ष, शांतिकारक, बाजार का रूख मंदी की ओर।

5.23 गणों का प्रभाव

देवगण *अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रावण, रेवती नक्षत्रों में शुक्रोदय* तो चांदी, सोना, रूई, कपास, पाट, वारदाना, खांडसारी, घी, तेल आदि के भाव तेज। अराजकता राजनीतिक उथल-पुथल। **यदि अस्त हो तो** धान्यों में तेजी के बाद मंदी, अशांति व अराजकता में वृद्धि। यदि उस समय वर्षा हो जाये तो व्यापारिक वस्तुऐं मंदी।

मनुष्यगण *भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, पू. फा., उ. फा. पू. आ., उ. आ., पू. भाद्रपद, उ. भाद्रापद में शुक्रोदय* तो कृषि की क्षति। अन्न भाव तेज, पशुओं में रोग वृद्धि, राजविग्रह हो **शुक्रास्त** हो तो तेजी के बाद मंदी, सुभिक्ष उसके बाद वर्षा हो तो सुभिक्ष।

राक्षसगण *कृत्तिका, आश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूला, धनिष्ठा, शतभिषा* में **शुक्रोदय** तो दुर्भिक्ष, उत्पात, राजविग्रह मूल्यों में अति वृद्धि, सिंधु देश में विग्रह। **शुक्रास्त** हो तो सभी अन्न, रूई, वारदाना, सभी धातुएं आदि के भावों में तेजी। वर्षा का अभाव।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5.24 शुक्र के विभिन्न राशियों में वक्री-मार्गी होने का प्रभाव

	वक्री	मार्गी
शुक्र	एक मास के अन्दर धान्य मंदा, व घी, तेल आदि के भावों में तेजी।	पांच दिन में सोना, चांदी, मोती आदि में मंदी।
मेष	पशुओं का क्षय, स्त्री जाति को कष्ट।	इक्षु, गुड़, तेल, तिल, अलसी आदि में मंदी।
वृष	रूई, चांदी, शक्कर आदि में तेजी	शक्कर, चावल घी आदि में एक मास के बाद तेजी।
मिथुन	शेयर्स, व रूई में अच्छी तेजी।	रूई, सूत व वस्त्रादि में मंदी।
कर्क	एक मास के अंदर रूई में तेजी, कहीं-कहीं वर्षा।	गाय, भैंस, बैल आदि के भाव मंदे।
सिंह	सोना, चांदी, पीतल, गाय, बैल आदि महंगे बिकें।	अनावृष्टि, जनता उपद्रव आदि से भयभीत, दुर्भिक्ष आदि हों।
कन्या	रूई, सूत, घी, चावल आदि के भावों में दो मास के अन्तर्गत तेजी।	चांदी, रूई, शक्कर, चावल आदि में मंदी।
तुला	धान्य, रसादि पदार्थों में मंदी।	सूत, घृत, चावल व हाथी दांत आदि में एक मास के अंदर तेजी।
वृश्चिक	अल्पवर्षा, राजविग्रह आदि की संभावना।	अतिवृष्टि, धान्य को अतिक्षति हो। रूई के भाव गिरे, पूर्वीय क्षेत्रों में राजभय।
धनु	सोंठ, मिर्च, पीतल, रूई, सूत आदि के भाव गिरे।	गुड़ के भाव गिरे, पूर्वीय क्षेत्र में राजभय
मकर	दक्षिणी व पूर्वीय प्रांतों में राजभय की संभावना।	गुड़, नारियल, अलसी आदि में तेजी बाद में मंदी।
कुंभ	पाश्चात्य देशों में दुर्भिक्ष, रोग व उपद्रव फैले।	रूई, सूत, वस्त्र, चांदी में पहले तेजी के बाद मंत्री।
मीन	रूई, सूत, वस्त्र आदि में दो मास के बाद मंदी।	समस्त पदार्थों में मंदी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5.25 (क) शनि का उदय/अस्त व वग्री/मार्गी होने का प्रभाव

राशि	उदय	अस्त
मेष	मंगल के घर, नीच राशि में होने से बाजार भाव में भारी उथलपुथल करता है अचानक भाव गिरें वर्षा अच्छी, सुभिक्ष जनता सुखी।	सभी प्रकार के धान्य व गल्लों में, लोहा, सरसों, तिलहन तथा रसादि पदार्थों में तेजी। रूई, शेयर्स, सोना, चांदी, पाट वारदाना आदि में मंदी। तिलहनों में अस्त होने से पहले की स्थिति का उल्टा। यदि उस समय वर्षा, वायु व तूफान का प्रकोप भी हो तो कृषि की क्षति होती है।
वृष	गुड़, खांडसारी, इखादि, रसीले पदार्थ के भावों में तेजी। गल्ले, तृण, घास, लकड़ी, पशुओं में भी तेजी का रूख।	तृण घास, श्वेत वस्तु, रसीले पदार्थों में तेजी सोना चांदी में अच्छी तेजी-मंदी रहे। रूई वारदाना, तिलहन, में तेजी/मंदी दोनों का रूख।
मिथुन	धान्यादि के भाव गिरे, वर्षा उत्तम, जनता निरोगी।	व्यापारिक वस्तुओं के दामों में उतार चढ़ाव।
कर्क	धान्य व रसादि पदार्थ महंगे। पाट, वारदाना, पटसन आदि में तेजी, वर्षा का अभाव, जनता में रोग उपद्रव व अराजकता में वृद्धि।	सोना, चांदी, रूई, पाट, वारदाना में घटा बढ़ी के बाद तेजी का रूख। वर्षा का अभाव। राजनीतिक स्थिति भी डांवाडोल।
सिंह	तेजी कारकः कहीं अनावृष्टि कहीं अतिवृष्टि कृषि की हानि, अशांति।	सोना, चांदी आदि धातु व शेयर्स में तेजी। जनता में महामारी।
कन्या	उड़द, तिलहन, शेयर्स, रसादि पदार्थ तेज, धान्य, मंदे, वर्षा का अभाव होता है।	सोना, चांदी, सभी धातुओं में तेजी। रूई, अरंडी, वारदाना, विठूल में घटा-बढ़ी के बाद तेजी का रूख।
तुला	धान्यादि, रसादि पदार्थ, घी आदि में तेजी। कहीं-कहीं वर्षा का अभाव।	धान्य भावों में तेजी, वर्षा का अभाव, कृषि उत्पादन में कमी।
वृश्चिक	रूई, पाट, बारदाना, गुड़, खांड, शक्कर, अनाज व तिलहन में तेजी। तेजी का तूफान अचानक आता है।	वर्षा के योग, झंझावत, तूफान व तेज वायु, कृषि को टिड्डी से हानि व अनाज में तेजी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनु	सभी धान्य व रसीले पदार्थ महंगे, जनता रोगादि से अशांत।	रूई, पाट, वारदाना, तिलहन, सातों धान्यों में मंदा, वर्षा ठीक तथा सुभिक्ष होता है।
मकर	धान्य मंदे, अन्य व्यापारिक वस्तुऐं मंदी, जनता में अराजकता।	लोहे की वस्तुऐं, धातुओं, शेयर्स, अलसी, सरसों, तिलहन, तेल तथा सभी अनाजों के भावों में तेजी। वायु वेग अधिक कहीं-कहीं वर्षा अधिक। कहीं वर्षा का अभाव और कृषि की हानि, जनता दुखी, पशुओं में रोग वृद्धि।
कुंभ	गेहूँ, चना, अन्य अन्न, धातु, रसीले पदार्थों में तेजी। वर्षा ठीक परंतु कृषि को कीड़ों, टिड्डीदल के उपद्रव से हानि व जनता दुखी। पशुओं में रोग।	बाजार भावों में घटा-बढ़ी के बाद तेजी। रूई, पाट, वारदाना, रसादि पदार्थ, तिलहन तेल आदि में तेजी का रूख। सोना चांदी में भारी उतार- चढ़ाव, वर्षा की कमी, शीत की वृद्धि, हिमपात व ओले की वृष्टि, कृषि की क्षति, अनाज भाव तेज, पशु-पक्षियों की हानि।
मीन	धान्यादि के भावों में तेजी, वर्षा का अभाव, कृषि उत्पादन कम, तृण, घास की कमी से पशुओं को कष्ट जनता दु,खी, राजनीतिक गड़वड़।	बाजार भावों में तेजी का रुख, जनता दुखी, राजनीतिक उथल-पुथल, पशु महंगे, वर्षा कम। धान्यों में तेजी, चांदी, चंदन, केसर आदि सुगन्धित वस्तुओं में बहुत तेजी।

नोटः वर्षाकाल में शनि अस्त हो तो वर्षा अच्छी होती है सुभिक्ष होता है धान्यादि मंदे होते है।

शनि के वक्री/मार्गी होने का प्रभाव

राशि	वक्री	मार्गी
मेष वृष	अनेकों कष्ट, दुर्भिक्ष धान्य नाश दुर्भिक्षकारक, धान्यनाश, युद्धकारक	अरब देशों में भयंकर दुर्भिक्ष दक्षिण देशों में युद्ध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुन	विश्व में तनावपूर्ण स्थिति	रूई, चांदी, घी आदि में तेजी के बाद मंदी।
कर्क	उत्तरी प्रदेशों में राजनीतिक उथलपुथल	तेल, मिर्च, तिल आदि में 12 दिन के अंदर भाव गिरें।
सिंह	हींग, सरसों, मजीठ आदि में मंदा होकर तेजी आए।	दुर्भिक्ष, धान्यनाश, युद्धभय, उपद्रव हो।
कन्या	दुर्भिक्ष, युद्ध भय, जनता, भयभीत	रस, तेल, कपूर आदि सस्ते
तुला	दुष्ट व्यक्तियों के कलह द्वारा नाश।	अलसी, सोंठ, पीपल, चांदी में तेजी।
वृश्चिक	घोर दुर्भिक्ष व महामारी से जनता त्रस्त	अदरक, मिर्च आदि में तेजी, धनिया आदि में मंदी।
धनु	दुर्भिक्ष, धान्य नाश युद्धादि का भय, जनता दुखी	धान्यनाश, उत्तरी देशों में चीनादि में भूकम्प।
मकर	पश्चिमी दक्षिणी प्रांतों में अशांति, पूर्वीय प्रांतों में भूकंप	व्यापारिक वस्तुओं में विशेष घटा बढ़ी।
कुंभ	पाश्चात्य देशों में युद्ध	जल-विप्लव
मीन	दुर्भिक्ष, युद्धभय	अतिवृष्टि, धान्यनाश

नोट: शनि के वक्री होने पर तीन महीने में हुंडी, प्रौमेसरी नोट, गेहूँ, मूंग, ज्वार, खजूर, जायफल, घी, हल्दी, नील, नीलाथोथा, धनिया, मैथी, जीरादि, घोड़ा आदि पशुओं में तेजी। सोना, चांदी, सर्वधातु, मणि, मोती, आदि रत्न तथा नारियल, पंसारी का सामान, तिल, तेल आदि में उतार चढ़ाव।

शनि मार्गी होने पर दो मास में तेल, सरसों, हींग, मिर्च आदि में तेजी। रूई में मंदी। सुभिक्ष कारक।

❑❑❑

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय

6 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाएँ

6.1 नवसंवत्सर की कुंडली

विक्रमी संवत्सर मीन राशि की अमावस्या के दिन से नव संवत्सर शुरू होता है और उस समय की कुंडली बनाई जाती है। चैत्र माह (चांद्र मास) शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, जिस समय ही शुरू होती है, वही समय लिया जाता है। (सूर्य, चन्द्रमा जब एक डिग्री व अंशों पर होते हैं तो अमावस्या होती है उसके बाद शुक्ल पक्ष शुरू होता है।) सम्वत् 2072 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अर्थात् 20 मार्च, 2005 की 15 घंटे 6 मिनट पर कर्क/आश्लेषा के तृतीय चरण में सम्वत् 2072 का आगमन होता है, जैसे:

लग्न	3/21°-25′
सू.	11/05°-23′
चं.	11/05°-22′
मं.	11/27°-30′
बु.	10/17°-14′
बृ. (व)	3/19°-06′
शु.	00/09°-30′
श. (व)	07/10°-49′-52
रा.	5/15°-53′-46
के.	11/15°-53′-46

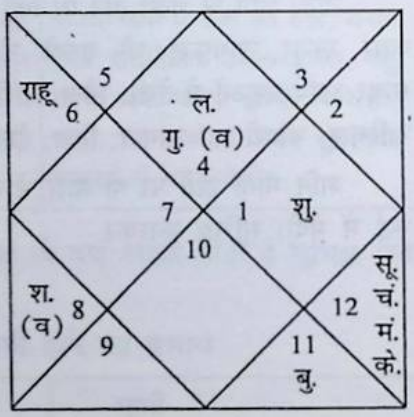

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवांश

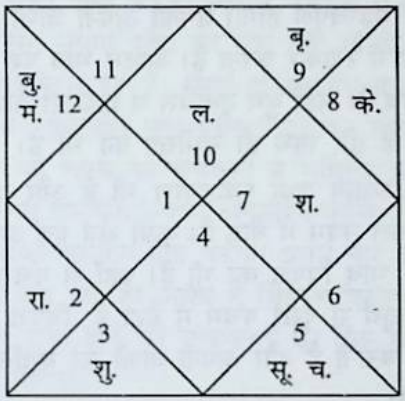

6.2 कुंडली का विश्लेषण

नवरात्री का शुभारंभ 21 मार्च, शनिवार की प्रातः सूर्योदय से होगा। इसको चंद्र-सौर मास प्रवेश कुंडली भी कहते हैं। कर्क लग्न आश्लेषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में मकर नवांश का उदय हुआ। लग्नेश चंद्रमा मीन राशि में धनेश (सूर्य) योगकारक पंचमेश व दशमेश मंगल के साथ भाग्य स्थान में चतुर्ग्रही योग बना रहा है। षष्ठेश व नवमेश गुरु लग्न में बैठकर अपने घर में बैठे इन सभी ग्रहों पर शुभ दृष्टि दे रहा है। नवमेश व लग्नेश का स्थान परिवर्तन भी बड़ा शुभ फलदायक एवं महत्त्वपूर्ण है।

यह स्थिति देश की आर्थिक उन्नति, शिक्षा का स्तर, सफल राजा (सरकार) तृतीयेश व द्वादशेश का अष्टम में बैठना पड़ोसी राष्ट्रों व विदेशी देशों के द्वारा गुप्त मन्त्रणा दिख रहा है। तृतीय में राहु भी मलेच्छों द्वारा विपता उत्पन्न दर्शाता है। तृतीय भाव का पीड़ित होना भी पड़ोसी राष्ट्रों से तनाव की स्थिति दिखाता है। परन्तु गुरु का लग्न में बैठकर सप्तम, नवम व पंचम को दृष्टि देना दिखाता है कि सरकार इन सभी का शमन करने में समर्थ होगी। लाभेश शुक्र का दशम में बैठना दर्शाता है कि पड़ोसी बड़े राष्ट्र भी हमारे देश की सहायता व उन्नति में योग दान देंगे। चतुर्थेश शुक्र दशम में बैठकर अपने घर को देख रहा है। इसका नियंत्रक मंगल नवम में बैठा है। विपक्षी दल सरकार के काम में रूकावट डालेंगें परन्तु सरकारी सफलता के योग उसे सहायक बनने को लाचार कर देंगें।

द्वितीय भाव देश की सम्पत्ति की स्थिति, व्यापार, राजस्व और विदेश मुद्रा भण्डार का है। नवम भाव में द्वितीयेश की स्थिति जो इस भाव के सभी शुभ फलों का आश्वासन दे रहे हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्या के क्षेत्र में उन्नति अति सराहनीय होगी। लेखकों, मीडिया, पत्रकारों का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण होगा। उनको अपनी वाणी व लेखनी का उपयोग राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर करना है। अष्टम भाव देश पर आने वाले संकटों (मृत्युदि) का भाव है। जहाँ बुध तृतीयेश व द्वादशेश बैठा है। अष्टम भाव गुप्त विषयों का है तो है ही, साथ ही गंभीरता का भी है।

चतुर्थ भाव स्वामी शुक्र एकादशेश भी है और दशम भाव में बैठा है, जिसका स्वामी मंगल नवम में बैठा है। कृषी क्षेत्र एवं आवासीय क्षेत्र में उन्नति का संकेत है। यह भाव विपक्ष का भी है। यहाँ से पंचम में बुध बैठा है, वहाँ पर स्वामी शनि चतुर्थ से दूसरे पंचम में बैठा है, विपक्ष को देशहित को ध्यान में रखकर योजना बनानी है और अपनी वाणी को संतुलित व सोच को जोड़ने वाली बनानी होगी।

पंचम में शनि (व) सप्तमेश व अष्टमेश का बैठना और गुरु की दृष्टि, युवा, विद्यार्थियों, शिक्षित वर्ग की विशेष भूमिका होगी। यदि आंदोलन विघटनकारी न हो तब गुरु (व) की दृष्टि सप्तम भाव (राष्ट्रीय संबंधों), जिसका स्वामी शनि पंचम भाव में बैठकर सप्तम पर दृष्टि दे रहा है। विदेशों के साथ अच्छे संबंध व समझौते होंगे।

इस वर्ष का जगत लग्न भी कर्क है। भारत का प्रभाव राशि मकर एवं मकर राशीश शनि पर भी गुरु की दृष्टि है। अत: यह विक्रमी सम्वत् विश्व के प्रतिष्ठित राष्ट्रों की श्रेणी में उज्जवल भविष्य पाने का प्रयास होगा।

'यदा शुभग्रहेर्दृष्टं लग्नं स्यातु शुभावहम्।
धन-धनादि सपूर्णं सर्व वर्ष शुभवहम्॥

सब कुछ ठीक होने पर भी उत्तरी एवं पश्चिमी प्रान्तों में उग्रवादजन्म, दुर्घटनाओं से जन जीवन त्रस्त रहे। कहीं दुर्भिक्ष भी हो सकता है। इस सम्वत् का राजा 'शनि' व मंत्री 'मंगल' होने से मुस्लिम राष्ट्रों के लिए अशान्ति दिखा रहा है।

'कन्या' नाम राशि–देश (पाक आदि) में किसी प्रतिष्ठित शासक या प्रभावी व्यक्ति को कठोर दंड या भयानक परिस्थिति का सामना करना पड़े।

स्वतंत्र भारत की कुण्डली वृष लग्न की है, जो कर्क लग्न का लाभ स्थान है और कर्क उसका तृतीय (प्राक्रम) स्थान है। वृष लग्न से एकादश भाव में चतुर्ग्रही योग है। जो भारत की चहु दिशा से लाभ व उन्नति दर्शाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवांश कुण्डली मकर लग्न की है, जिससे पंचमेश व द्वादशेश (शुक्र व बृहस्पति) गुरु परस्पर सम सप्तम दृष्टि का योग बना रहे हैं। लग्नेश दशम में तृतीयेश व द्वादशेश को दृष्टि दे रहा है। चतुर्थ दृष्टि संबंध बनाए है। दशम भाव (प्रधानमंत्री), (नवम में) एकादश भाव (राष्ट्रपति) का स्वामी शुक्र दशम में देश का प्रधानमंत्री देश के भाग्य को चमकाने व भविष्य उज्जवल बनाने का अविस्मरणीय कार्य करेगा। राष्ट्रपति उसका अनुमोदन करेंगे। विपक्ष को भले ही कुछ देर लगे परन्तु उसको सहयोग देना पड़ेगा। प्रथम बार कश्मीर में भाजपा ने मिली-जुली सरकार बना पाई है। आशा है सिंहस्थ वृहस्पति तक यदि यह चल गई तो अच्छे फल प्राप्त होने की संभावनाएं हैं। सिंह में गुरु के आते ही शनि का कुप्रभाव आ जायेगा।

6.3. संहिता शास्त्र में देश व प्रांत की कुण्डलियों को पढ़ने के लिए व राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के विषय में जानने के लिए द्वादश भावों के प्रभाव व 28 नक्षत्रों के प्रभाव का अध्ययन आवश्यक है। उनके प्रभाव के कारण होने वाली घटनाओं को जानने के लिए निम्नलिखित बातों पर विचार करेंगे।

6.4 द्वादश भाव व उनके कार्यक्षेत्र

भाव	कार्यक्षेत्र/महत्त्व
I. गृह मंत्रालय	जनता की विचारधारा, पूरे राष्ट्र के विषय में जानकारी व नई योजनाएं देश की आंतरिक सुरक्षा, जनता का स्वास्थ्य व आर्थिक स्तर देश में सरकार की स्थिरता व राष्ट्र की उन्नति, सरकार का मन्तव्य तथा देश पर आने वाला कष्ट। जनता में राष्ट्र प्रेम, नैतिकता, देश की शांति ही देश का स्वस्थ स्वास्थ्य है।
II. वित्त/खाद्य मंत्रालय तथा शेयर बाजार व अन्य धन संबंधी संस्थाऐं	राष्ट्रीय कोष, आयकर, बैंक, व्यापारिक संस्थाऐं, रिजर्व बैंक, राष्ट्र की आर्थिक उन्नति व स्थिति, धनसंबंधी गतिविधियाँ, रूपये की क्रय शक्ति, ब्याज की दर, कर की दर, बाजार भावों का चढ़ना तथा शेयर बाजार।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

III. यातायात, रेल मंत्रालय, संचार विभाग, जहाजरानी, डाकखाना, वायुयान, टी.वी, तार विभागादि।

पड़ोसी राष्ट्र, प्राँत, सीमाऐं, दूरदर्शन, रेडियो, समाचार पत्र, प्रैस, दूरभाष, हाईवे, वायुयान, जलमार्ग, जहाज, आदि प्रकाशन संस्थाऐं, पत्रकार, संवाददाता, बुद्धिजीवी, कलाकार, कारीगर, स्कूल, कालिज, अध्यापक, लेखक, वक्ता, ट्रेड यूनियन, नेता, हड़ताल, मंत्री, स्टेनोग्राफर, खिलाड़ी दुर्घटनाएं आदि।

IV. खाद्य मंत्रालय, कृषि मंत्रालय, भवन निर्माण कार्यालय, राष्ट्रीय सम्पत्ति, भवन, पृथ्वी

लोकसभा, राजसभा, पृथ्वी, भवन, खेत व खेती की जमीन, खेतों की उपज, खान, पुरानी बस्ती, होटल, ऋतु संबंधी विभाग या जानकारी, ज्वालामुखी, बाढ़, भूस्खलन, आम जनता, विपक्षी दल, उपचुनाव का परिणाम, स्कूल/कॉलिज के भवन, देश की आंतरिक स्थिति। सामान्य जन व भूमि वाहनादि।

V. शिक्षा मंत्रालय तथा योजना आयोग

विद्यार्थी, बोर्ड आफ एजुकेशन, विश्वविद्यालय, विद्या की सभी संस्थाएं, कला व संगीत आदि की संस्थाएं, राजसत्ता की योजनाएं व विचारधारा, शेयर बाजार का रूख, जनता के लिए बाग बगीचे, क्लब, जुऐं के अड्डे, मनोरंजन के साधन/स्थान, शोभादार उत्सव, स्टेडियम, खेलकूद की संस्थाएं, अभिनेता, जन्मदर तथा देश की जनता आदि।

VI. रक्षा मंत्रालय, पुलिस तथा स्वास्थ्य संबंधी विभाग

ऋण, रोग, सीमा के झगड़े, रक्षा विभाग, पुलिस, आक्रमण, ध धरना, प्रदर्शन, युद्ध, नौकरी करने वाले लोग जीवन रक्षा करने वाली संस्थाएं, स्वास्थ्य सेवाएं, निगम की सेवाऐं जैसे सफाई वगैरा, नर्से, डाक्टर, सामाजिक सुरक्षाऐं, कर्मचारियों का, जीवन बीमा उद्योग, हड़ताल आदि। श्रमिकों से संबंधित मामले।

VII. विदेश मंत्रालय

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, समझौते, नीतियाँ, अंतर्राष्ट्रीय झगड़े, युद्ध आदि। कोआपरेटिव सोसाइटीज, विवाह, तलाक, गुप्त शत्रु का नाश (द्वादश भाव गुप्त शत्रु का होता है।) प्रजा की विचारधारा, जनसेवि संस्थाऐं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

VIII. स्वास्थ्य मंत्रालय तथा बीमा कम्पनी राष्ट्रीय शोक

आयुर्वेद, मैडिकल विज्ञान (आयुर्विज्ञान) स्वास्थ्य तथा आयु, प्रीवी काउंसिल, सरकार का गिरना, पब्लिक डैट, विदेशी कर्ज, ब्याज की देनदारी, वैज्ञानिक संस्थाएं, विरासत, बीमा निगम, पेन्शनर्स, गड़ा/छुपा धन व बातें, पकड़ा हुआ धन/वस्तु, दुर्घटना, रोग के कारण/प्राकृतिक आपदाओं से/दुर्घटनाओं/युद्ध/आत्महत्याओं आदि के कारण मृत्यु दर, राजशोक **(अष्टम, अष्टमेश का दशम से संबंध हो तब ऐसा होता है)**

IX. कानून तथा न्याय मंत्रालय या विदेशी मामले

धर्म, धार्मिक नेता, धार्मिक संस्थान, न्यायालय, अध्यापक, उपदेशक, उच्चतम न्यायालय, कचहरी, विश्व संस्थाएं, वैज्ञानिक/शिक्षा संस्थाऐं, टैक्स्ट बुक, आई.सी.सी.आर, सी.एस.आई.आर. आदि। उच्च शिक्षा संस्थान, धर्म व न्यायपालिका में आस्था।

X. उद्योग मन्त्रालय, प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति/राज्यपाल सचिवालय

सत्तारूढ दल, केन्द्रीय व राज्य सरकार के प्रमुख जैसे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मेयर किसी भी संस्था का अध्यक्ष तथा सरकार की स्थिरता।

XI. वित्त मंत्रालय/लोकसभा/राजसभा आदि

लोकसभा, राज्यसभा, आय का स्रोत, व्यापार उद्योग कर आदि से प्राप्त आय, लोकसभ द्वारा पारित कानून, राष्ट्र के मित्र देश आदि। केंद्र व राज्य सरकारों के परस्पर संबंध।

XII. गृह मंत्रालय/विदेश मंत्रालय/स्वास्थ्य/योजना आयोग

वर्तमान में आने वाले सम्वत्सर 2072 की कुण्डली

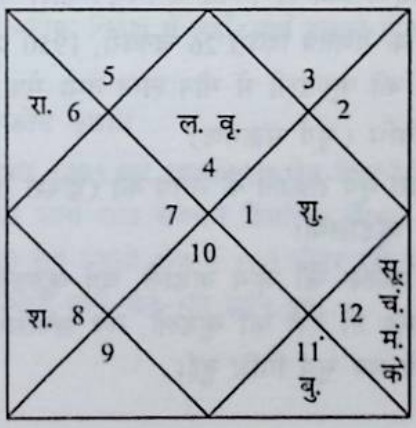

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्क लग्न जिसमें नवमेश गुरु बैठे है और लग्नेश चंद्रमा नवम स्थान में बैठ गये जहाँ उनकी युति योगकारक मंगल व धनेश सूर्य से हो गई। जो भारत के लिए उज्जवल भविष्य दिखाता है। धर्म भी देश में बढ़ेगा। पंचमभाव भी देश की जनता की शिक्षा, बुद्धि का भाव नवमेश गुरु से दृष्ट है तथा पंचमेश नवम में बैठा है इसका अर्थ है कि जनता का शिक्षा स्तर बढ़ेगा। उच्च शिक्षा की व्यवस्था होगी। सप्तमेश का पंचम में जाना और गुरु से दृष्ट होना, विपक्ष भी कहीं न कहीं देश के प्रति सरकार का सहयोग देगा। पड़ोसी (तृतीयेश) विदेशी द्वादशेश अष्टम भाव में बैठे है जो कही न कही ताक लगाये हुए है और अचानक कष्ट देगें परन्तु दशमेश (प्रधानमंत्री) इतना बुद्धिमान (पंचमेश + दशमेश की युति लग्नेश से नवम में) है कि वह उनसे निबटने की योजना पहले से ही बनाऐं रखेगा।

6.5 भविष्यवाणी के लिए कुछ विशेष आधार

(*i*) नववर्ष/नव विक्रमी सम्वत्सर की कुंडली।

(*ii*) जगत कुंडली।

नोट: इनकी संक्षेप में चर्चा की जा चुकी है।

(*iii*) भारत की राशियाँ

(क) वराहमिहिरानुसार 'मकर राशि' मानी गई है।

(ख) आधुनिक कुछ विद्वानों द्वारा 'कन्या राशि' मानी गई है।

(*iv*) भारत के स्वतन्त्रता दिवस 15 अगस्त, 1947 को रात्रि के 24 घंटे/शून्य घण्टे के आधार पर वृष लग्न व कर्क राशि हुई।

नोट: पाकिस्तान ने यह अधिकार 24 घंटे पहले प्राप्त किया था इसलिए उसका लग्न मेष व मिथुन राशि बनी।

(*v*) भारत के गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 1950 प्रात: 10 बज कर 15 मिनट की कुण्डली में मीन लग्न तथा मेष राशि हुई।

(*vi*) सूर्य विधि (सूर्य संक्रमण)

प्रतिमास सूर्य संक्रांति के समय की (द्वादश राशियों में सूर्य प्रवेश) द्वादश कुंडलियाँ।

नोट: जातक की जन्म कुंडली, वर्ष कुण्डली एवं प्रश्न कुंडली की तरह ही देश की कुंडली, नव संवत्सर की कुंडली, जगत कुंडली एवं सूर्य विधि हुई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6.6 सूर्य विधि का प्रयोग

इससे प्रति मास होने वाली घटनाओं का पता चलता है। उस मास में होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी बहुत सरल हो जाती है। जिस देश के विषय में जानना हो उसकी राजधानी के अक्षांश-रेखांश को लेकर वहाँ के स्थानीय समय के अनुसार सूर्य के राशि प्रवेश के समय की कुंडली बनाई जाती है। इसी प्रकार जब भारत के विषय में भविष्यवाणी करनी होती है तो नई दिल्ली (भारत की राजधानी) को लेकर कुंडली बनाते हैं। यदि किसी भारतीय प्रांत के विषय में चर्चा करनी हो तो उस प्रांत की राजधानी से विचार करते हैं।

दिनांक 17 सितम्बर, 1995 को 9.26 बजे प्रातः सूर्य के कन्या राशि में प्रवेश के समय की कुंडली नीचे दी जा रही है:

लग्न	6/12°-43′
सू.	5/00°-00′
चं.	2/03°-04′
मं.	6/12°-47′
बु.	5/25°-02′
बृ.	7/14°-42′
शु.	5/07°-24′ (अ)
श.(व)	10/27°-16′
रा.	6/03°-12′

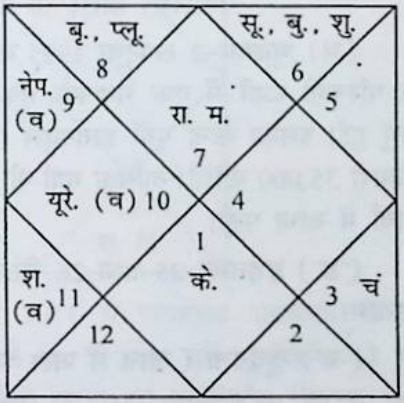

6.7 इस मास में जो घटनाएँ हुई उनमें से कुछ मुख्य को नीचे दिया जा रहा हैं।

(क) धार्मिक-गणेश कृपा का चमत्कार, 21 सितम्बर, 1995 को गणेश जी ने पूरे भारत में नहीं बल्कि विदेश में जहाँ-जहाँ उनकी प्रतिमा थी श्रद्धालुओं के हाथ से दूध पिया।

(ख) बम विस्फोट आदि

(*i*) 25 सितम्बर 1995 को लालकिला क्षेत्र दिल्ली में सायं सात बजे तथा दूसरा सायं सात बजकर पैंतालिस मिनट पर लोधियाँ पुल चौक छत्ता रेल (उसी क्षेत्र में 100 मीटर दूरी पर) बम विस्फोट हुआ। जिसमें भारी जन-धन हानि हुई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ii*) 26 सितम्बर, 1995 को दो बम विस्फोट दिल्ली तथा पानीपत में हुए। एक रेल के प्लेटफार्म के ऊपर दूसरा एक स्कूटर मैकेनिक की वर्कशाप के आंगन में।

(*iii*) 4 अक्टूबर 1995 को नया बाजार दिल्ली में हुआ।

(ग) (*i*) रुपये के मूल्य में गिरावट-रूपये का मूल्य डॉलर के मुकाबले गिर कर 34.94 हो गया, परन्तु रिजर्व बैंक के बीच में आने से मूल्य वृद्धि होकर 34 रूपये हुआ और एक सप्ताह के बाद 34.50 रह गया।

(*ii*) आर्थिक स्थिति-भारतीय विदेश करेंसी रिजर्व 31 मार्च, 1995 को 20.80 बिलियन डॉलर था जो वर्षान्त में 19.6 बिलियन डॉलर रह गया।

(घ) **भूकम्प**-2 अक्टूबर 1995 को 17.57 घण्टे (15-57 जी एम टी) पर पश्चिमी टर्की में एक भयानक भूकम्प आया जिसमें 100 व्यक्तियों की मृत्यु हुई। इसका केन्द्र पूर्वी इस्तनबुल (दिनार कस्बे के पास) था। जिसकी आबादी 35,000 की है। अधिक वर्षा के होने तथा बिजली फेल होने से बचाव कार्यों में बाधा पड़ी।

(ङ) **हड़ताल**-25 तथा 26 सितम्बर 1995 को बैंक कर्मचारियों की हड़ताल।

(च) दुर्घटना (खान में जल भरने से दुर्घटना)

(*i*) 27 सितम्बर 1995 को धनबाद में कोयले की खान में पानी भरने से 74 व्यक्तियों की मृत्यु हुई।

(*ii*) 28 सितम्बर 1995 को कलवा तथा नहालपुर (पटना के पास) के मध्य जहानाबाद, अड़वाल मार्ग पर नहर में एक बस गिरने से 5 व्यक्ति मरे और 13 व्यक्ति घायल हुए।

(*iii*) पश्चिमी बंगाल में 11 जिले बाढ़ के पानी से प्रभावित हुए जिसमें 35 जानें गईं।

(*iv*) दो साइकिल पोलो के खिलाड़ी कोलार नदी (खापर खेडा के पास) में डूब गये।

भाद्रपद शुल्क पक्ष षष्ठी (बुधवार) विशाखा नक्षत्र, वैधृतियोग, तैतिल्यकरण दिन मरन 30 घटी 52 पल, सूर्योदय 6-7 सूर्यास्त 18-26 बुध हस्त नक्षत्र में (स्वाति नक्षत्र)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि + राहु की युति द्वादश भाव में (तुला) 14 से 17 तक, गुरु मिथुन मे अपने नक्षत्र में तथा मेष नवांश में है और सर्प द्वादशांश में है।

चंद्रमा पुष्कर नवांश में परन्तु सर्प द्वादशांश में है।

स्थिर लग्न अति शुभ है। लग्नेश तथा नवमेश का स्थान परिवर्तन गुरु चंद्रमा से अष्टम में। (अच्छा है)

नवांश चक्र

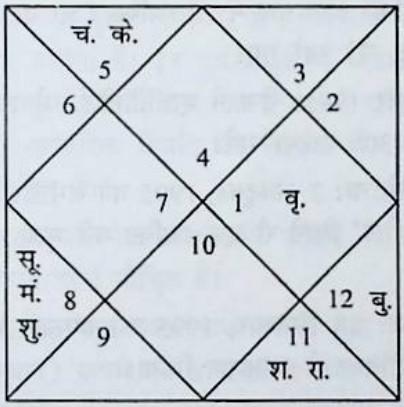

इससे पहले दिसम्बर 2011 में प्रकाशित संस्करण में पृष्ठ 251-52 पर लेखक ने 16-7-2004 की सूर्याविधि की चर्चा करते समय में संभावित घटना का ज्योतिषीय विवरण प्रस्तुत करते समय लिखा था, (समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार का संदर्भ देते हुए), केदार नाथ को घतरा है, क्योंकि ग्लेसियस् पिघल रहे हैं जिसके कारण केदारनाथ मन्दिर का नाम निशान नक्शे पर से मिट सकता है।

(छ) सड़क दुर्घटनाऐं

(*i*) 2 अक्टूबर 1995 बरेली में एक बस के पलटने से तीन व्यक्ति मरे और 60 घायल हुए।

(*ii*) जयपुर में एक ट्रक तथा जीप के टकराने से चार व्यक्ति मरे।

(*iii*) दुर्गा उत्सव की यात्रा के रथ (ट्रक) से एक व्यक्ति की मृत्यु।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(छ) आतंकवाद/अग्नि काण्ड

(*i*) 23 सितम्बर, 1995 को श्री लंका में 34 बच्चों की मृत्यु, एल.टी.टी.ई. ने लंका की वायुसेना को दोष दिया।

(*ii*) 28 सितम्बर, 1995, एल.टी.टी.ई. ने पूर्व श्रीलंका में एक पुलिस स्टेशन पर हमला किया और 24 पुलिस सिपाही मारे गए।

(*iii*) क्रोधित यात्रियों ने थाने (महाराष्ट्र, मुम्बई) सबर्बन रेलवे में आग लगाई।

(*iv*) एक भयंकर आक्रमण में 70 व्यक्ति (50 एल.टी.टी.ई के व्यक्ति सम्मलित थे) मारे गए।

(*v*) 3 अक्टूबर 1995, सेना ने एल.टी.टी.ई. के टाइगरों के हमले के उत्तर में 300 टाइगर मारे।

(ज) अन्य दुर्घटना: 2 अक्टूबर, 1995 को रामलीला मैदान ज्योतिनगर, दिल्ली में 'जायण्ट व्हील' गिरने से एक व्यक्ति की मृत्यु तथा 14 घायल हो गए।

(झ) अपहरण: 28 सितम्बर, 1995 को इम्फाल में 5 कुर्की औरतों का हथियार बंद एक्टीविस्ट ने अपहरण किया।

(ञ) दहेज के कारण मृत्यु/हत्या

(*i*) 23 सितम्बर, 1995 बुध विहार, दिल्ली में ससुराल वालों ने एक स्त्री की हत्या कर दी।

(*ii*) 1 अक्टूबर, 1995 ए.आइ.ए.डी.एम.के (सदस्य) कार्यकर्ता ने श्रीमती जयललिता के पुत्र की शादी में अधिक व्यय के लिए आयकर विभाग की जांच के विरूद्ध आत्मदाह कर लिया।

6.7 ऊपर चर्चित 24 दुर्घटनाओं के 'ज्योतिषीय योगों' की व्याख्या:

प्रत्येक घटना की ज्योतिषीय चर्चा में उपरोक्त क्रम को बनाए रखा है

(क) **धार्मिक:** नवम भाव धर्म का भाव है, पंचम भाव पूजा, साधना मंत्र, जप आदि का है, लग्नेश का द्वादश भाव में नवमेश के साथ बैठना, गुरु, धर्म का कारक द्वितीय भाव में बैठकर दशम भाव (कर्म) को दृष्टि दे रहा है। दशमेश चंद्रमा नवम भाव में बैठा है, पंचमेश शनि (व) (योगकारक) दशम व एकादश भावों व गुरु को दृष्टि दे रहा है। गोचर में चंद्रमा सिंह में आया और योग को गति दी। ग्रहों ने नक्षत्र परिवर्तन किया है जैसे: (*i*) राहु तथा मंगल,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ii*) गुरु तथा शनि, (*iii*) सूर्य स्वनक्षत्र में (*iv*) बुध नवमेश उच्च का (*v*) लग्नेश शुक्र नीच का परन्तु नीच भंग/नवमेश व एकादशेश (बुध व सूर्य) धर्म का फैलाव/प्रचार दिखाता है।

(ख) लग्न मंगल व राहु से पीड़ित, चतुर्थ भाव व यूरेनस मंगल से पीड़ित, अष्टम भाव पर मंगल व षष्ठेश गुरु की दृष्टि। मंगल व राहु की युति (आतंकवाद, दुर्घटनाएं), मंगल की चतुर्थ पर दृष्टि आंतरिक समस्याऐं, दुर्घटनाएं विस्फोट आदि। लग्नेश की द्वादश भाव में नीच का शत्रु सूर्य के साथ और अस्त होना, शनि की दृष्टि लग्न पर होना, अष्टम भाव का पीड़ित होना, मृत्यु दर्शाता है। इन दर्शाता है। इन दुर्घटनाओं में विस्फोट व आतंकवाद व बारूद जो मंगल व राहु से प्रतिनिधित्व पाते हैं का ही दायित्व है। वृश्चिक राशि दिल्ली, चतुर्थ भाव आन्तरिक स्थिति को दिखाता है। मकर राशि भारत की राशि तो वह भी पीड़ित है।

नोट: कालपुरुष की मेष राशि अति पीड़ित है। अष्टम भाव वृश्चिक राशि व उसका स्वामी दोनों पीड़ित हैं।

(ग) (*i*) द्वितीय भाव धन भाव रूपये तथा एकादश भाव (लाभ स्थान) रूपये की क्रय शक्ति तथा गुरु सभी पीड़ित है। गुरु तृतीयेश (आदान प्रदान क्रय-विक्रय) भी पीड़ित है।

(*ii*) आर्थिक स्थिति के लिए बृहस्पति (कारक) द्वितीय भाव में व एकादश भाव पीड़ित तथा षष्ठेश गुरु द्वितीय में पीड़ित, धनेश मंगल लग्न में राहु व शनि से पीड़ित।

(घ) भूकम्प का कारण बड़े ग्रहों के द्विर्द्वादश, षडाष्टक, एक दूसरे से केंन्द्र/त्रिकोण स्थिति, लग्न से चतुर्थ, चंद्रमा तथा बुध दोनों मंगल के नक्षत्र में गोचर के चंद्रमा ने उस समय मकर में प्रवेश किया अष्टम का पीड़ित होना भूकम्प के योग हैं। राहु तथा मंगल एक साथ, मेष में केतु उस पर इन दोनों की दृष्टि व शनि की तृतीय दृष्टि। मेष राशि इटली को दर्शाती है।

(ङ) तृतीय भाव ट्रेड यूनियन का है, षष्ठ भाव हड़ताल, गुरु (बैंक), षष्ठभाव (कर्मचारी), शनि (कर्मचारी) की द्वितीय, द्वितीयेश, एकादश व कारक गुरु पर दृष्टि। तृतीयेश व षष्ठेश गुरु दशम को प्रभावित कर रहा है। 24 तारीख को (अमावस्या के दिन) चंद्रमा ने कन्या में प्रवेश किया था।

(च) (*i*) पृथ्वी तत्व राशियाँ मकर तथा कन्या व जल तत्व राशियाँ, कर्क, मेष राशि (खान), वृश्चिक व मिथुन पीड़ित, अष्टम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भव (खान, मृत्यु) पीड़ित, शनि (कोयला) मकर चतुर्थ भाव पीड़ित चतुर्थ में यूरेनस। गोचर का चंद्रमा तुला में प्रवेश किया।

(*ii*) तृतीयेश गुरु जल राशि में पीड़ित, चतुर्थ (वाहन) भाव पर मंगल की दृष्टि, शुक्र (कारक) द्वादश में नीच का पीड़ित, चतुर्थ (वाहन) भाव में यूरेनस। चंद्रमा का वृश्चिक में प्रवेश।

(*iii*) बाढ़-बुध व शुक्र की युति, शनि व चंद्रमा की नवपंचम स्थिति, राहु व मंगल का नक्षत्र परिवर्तन, लग्न में मंगल राहु पर शनि की दृष्टि अधिक वर्षा और उससे हानि दर्शाता है।

(*iv*) ऊपर च (*i*) दर्शाए गए नियमों के साथ षष्ठ भाव व तृतीय भाव (खिलाड़ी) जोड़ने से स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

(छ) तृतीय भाव (मार्ग, सड़क), चर्तुथ भाव (वाहन) षष्ठ भाव (चोट, टक्कर) अष्टम भाव (अचानक) व लग्नेश का विचार करना है। लग्न में मंगल राहु, चतुर्थ भाव पर मंगल (आग) व दुर्घटना की दृष्टि, अष्टम पर मंगल की दृष्टि, लग्नेश द्वादश में अस्त, शनि के षष्ठ भाव व षष्ठेश गुरु पर दृष्टि आदि इनके कारण हैं।

(ज) (*i*) से (*v*) मंगल (सेना), बृहस्पति (बच्चे), तृतीय भाव व चतुर्थ भाव (सड़क-यातायात-वाहन) एल.टी.टी.ई मंगल व राहु के पीड़ित होने के कारण यह घटनाऐं हुई।

(झ) (न) (त) सप्तम भाव, वधु, विवाह, स्त्री, केतु, मंगल व शनि से पीड़ित, मंगल, द्वितीयेश लग्न में बैठकर, सप्तम को देख रहा है तथा मंगल शनि से पीड़ित है। विवाह का कारक शुक्र नीच का व अस्त। आत्मदाह के लिए मंगल (सप्तमेश)-राहु का लग्न में बैठकर शनि से दृष्ट होना, सप्तम में केतु लग्नेश का द्वादश में जाना, सूर्य के साथ होना, अष्टम भाव पर मंगल (अग्नि) की दृष्टि शुक्र से अष्टम में केतु/मंगल व राहु व शनि की दृष्टि वधु को जलाए जाने का भी योग दिखाती है। अग्नि तत्व राशि मेष व सिंह दोनों पीड़ित है, शुक्र से अष्टम अग्नि तत्व राशि हैं।

6.8 घटनास्थल का ज्ञान

भविष्य में होने वाली दुर्घटना का आभास तो हमें पिछली चर्चा में बताए सूत्रों के आधार पर सरलता से हो सकता है। समस्या है घटना स्थल को जानने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की होती है। यदि यह जानकारी भी मिल जाए तो सरकार समय से पूर्व ही प्रबंध कर सकती है। अति वृष्टि के कारण यदि विनाश दिखता है तो वर्षा ऋतु में होगा और जहाँ अधिक वर्षा के क्षेत्र हैं वहीं होगा, बाढ़ नदी के आसपास व भूस्खलन पहाड़ी क्षेत्र में होगा, तूफान समुद्र में आएगा आदि भौगोलिक स्थिति पर निर्भर है। भूकम्प के अध्याय में ज्योतिषीय योगों की चर्चा की जा चुकी है, भूकम्प भी उन क्षेत्रों में आता है जो संवेदनशील हैं। फिर भी घटनास्थल की जानकारी के लिए शोध की आवश्यकता है जो किसी एक विद्वान का कार्य नहीं है। भगवान जाने कब शोध होगा हालाँकि बहुत से ज्योतिष के विद्वान दावा करते हैं कि वह कई वर्षों से शोध कर रहे हैं और कई शोध वह कर चुके हैं परन्तु अभी तक शोध प्रकाश में नहीं आए हैं। यह बात सत्य है क्योंकि जितनी भविष्यवाणियाँ, समाचार पत्रों, रेडियो, दूरदर्शन व पत्रिकाओं में प्रकाशित होती है उनमें से अधिकांश गलत और हास्यास्पद होती हैं। वर्ष 2004 में लोकसभा चुनाव के विषय में ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ शतप्रतिशत गलत रहीं। इस प्रकार की दी गई भविष्यवाणियाँ शास्त्र के सम्मान को कम करती हैं।

श्री के. एन राव जी द्वारा दी गई भविष्यवाणी

Shri K.N. Rao claims in his article 'Indian Elections 2013–2014 published on 26th January 2013 at 9-05 p.m. "According to my own research in Mindana astrology brings about, in post independence Indian radical changes in the Central Govt. and then as Saturn prepares to move into Poorvashadha, the two major planets will transform the national political scene, through a poll, not a revolution but a pall which will have the tones of a revolution through a ballot".

"In 1977, Jupiter was in Taurus, when something of a revolution through ballot had taken place, earlier transitting between Aries and Gemini, this planet, Jupiter had taken away Nehru, brought in Lal Bahadur Shastri, whose brief tenure ended tragedly and then come in India. Now again Jupiter is there again. I remember J.P. on this occassion, particularly when Saturn is preparing to effectuate the classical"Chattra Bhanga Yoga" (*i.e.,* transit of Saturn in Libra).

His predictions in the article:

(*i*) Jupiter in Taurus these days and the mood of the nation...may be swinging against the present coalition UPA III is power in the centre. What appears is that the Congress Party will find it difficult to return to power at the Canter."

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ii*) Hindu New Year 2013's chart, which is warning to the central government the disasters visible will the concentration of planets in eight house. Suffice to say that we have a difficult period ahead to face. "Exchange of 10th lord Venus with the eighth lord Jupiter which is showing a terrible upset for the government in power. (The same parameter discussed by M.N. kedar in the book).

Points: The Chart

(*i*) India can fear a devastating earthquake followed by a tsunami. (A parameter discussed by author in the book.)

(*ii*) Mass deaths visible will be caused by some disease which may be a water borne disease.

(*iii*) State governments will be found waiting in coping with these disasters leading to mass disillusionment demanding a change of government.

(*iv*) Comtion which is the burning issue in the election after the most publicized Delhi rape case of 16th December, 2012.

(*v*) In Indian Republican horoscope, the Mahadasha of Jupiter (in eleventh house) is the period of some good law coming in this period and such measures as will protect women.

Congress Party chart, discussed and predicted thast running periodof Jupiter/Saturn (between February and July it will be the pratyantara of Rahu is a clean indication of some tragedy and heart searching. The party is not regarding power in this period or men later when general elections will be declared faving in surmountable problems in the antardasha of Saturn (11th ad 12th low posited in 6th hours, Leo in 3rd from Jupiter and in the next autardare of Mercury lord of 4th and 7th posited in ninth and sixth from Jupiter, it will have to remain content with the role of an opposition only.

Note: Very correct, the congress got 3 seats only and was not given status of opposition also.

BJP Chart

Mahadasha of Sun (3rd lord in the tenth house) in exchange with Jupiter (10th lord) which is pos..ed with Saturn, Rahu and Mars in third house, because of which this party has never been able to form a government without many coalition partners in the period between 1998 and 2014.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

This party may never be able to form a single party government as the Congress party had for many years since independence of India.

In its Sun dasha it is again nearing the power greater in a coalition.

It can therefore surmised that in the next coalition it is the NDA government that will be formed at the centre with BJP joining it in a prominent way.

श्री के. एन. राव जी द्वारा प्रकाशित पत्रिका में एक हिन्दी लेख "भविष्य की संभावना: नरेन्द्र मोदी में निम्नलिखित कुण्डली दिखाकर चर्चा की गई है।

जन्म तिथि : 17 सितम्बर 1950

जन्म समय : 12-09

जन्म स्थान : महसाना (गुजरात)

वर्तमान में चंद्रमा में राहु का अंतर चल रहा है। 4 नवम्बर को गुरु का अंतर आ गया। जैमिनी दृष्टिकोण से मेष की दशा है जो सितम्बर, 2014 तक चलेगी, मेष को आत्मकारक शनि तथा अमात्यकारक शुक्र से दृष्ट है जो राजयोग है। मातृकारक गुरु मातृकारक चंद्रमा तथा प्रलयकारक मंगल की दृष्टियों में मेष को बली बना रही हैं।

मेष में कर्क का अंतर जिस पर भी इन कारकों की दृष्टियाँ पड़ रही हैं। इसलिए आगे सुखद समय की आशा की जा सकती हैं। भाजपा की कुण्डली में सूर्य/राहु चल रहा है। चुनाव में विजय के लिए जोर शोर से प्रचार करना होगा।

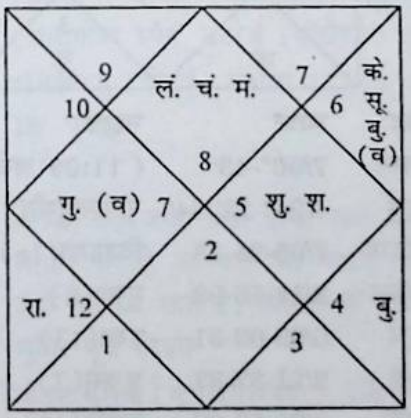

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यक्तिगत तौर पर श्री नरेन्द्र मोदी की कुण्डली में उनके राजयोग फलीभूत होने का समय है। ध्यान रहे संसद में विपक्ष का नेता होना भी राजयोग है। किसी राज्य में लोकप्रिय मुख्यमंत्री बने रहना भी राजयोग है। लेकिन इसी समय में चरमोत्कर्ष पर पहुँचेगा कहना कठिन है।

नोटः देखा जाये तो किसी हद तक भविष्यवाणी अच्छी भविष्यवाणी की गई है।

6.9 श्री केदार नाथ मन्दिर में पूजा प्रारम्भ होगी (टाइम्स आफ इन्डिया 11-9-2013 का) श्री डी. एस कुमार समाचार प्रवक्ता का कथन–

उस मुहूर्त की कुण्डली

दिनाँक 11-9-2013

समय 11-09 से 13-26 घण्टे

स्थान केदारनाथ (उत्तराखण्ड)

D/1

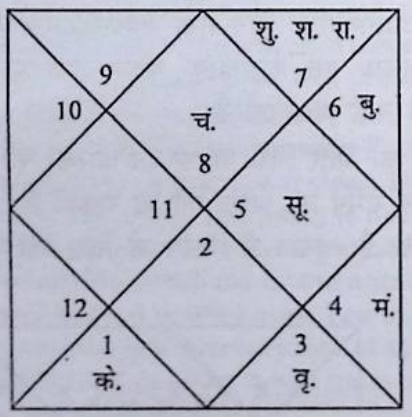

ग्रह	स्पष्ट	नक्षत्र	नवांश	सप्तचाड़ी
लग्न	7/00°-43′	(11:09 बजे)	स्थिति	चक्र
सूर्य	4/24°-22′-44″	पू.फाल्गुणी(11)	वृश्चिक	जल
चंद्रमा	7/05-24-33	विशाखा(16)	कर्क	प्रचण्ड
मंगल	3/14-56-08	पुष्या(8)	वृश्चिक	जल
बुध	5/09-09-51	हस्त(13)	मेष	सौम्य
गुरु	2/21-37-37	पु.वसु(7)	मेष	नीर
शुक्र	6/05-57-27	स्वाति(15)	धनु	पवन
शनि	6/13-58-22	स्वाति(15)	कुंभ	पवन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राहु	6/14-49-25	स्वाति(15)	सिंह	पवन
केतु	00/14-49-25	भरणी(02)	कुंभ	प्रचण्ड
हर्षल	11/17-21-31	रेवति(28)	धनु	दहन
प्लूटो	8/14-57-18	पू.आषाढ(20)	सिंह	सौम्य
नेपच्यून	10/09-30-36	शतमिषा(25)	धनु	जल

नोटः 13-26 बजे धनु लग्न आ जायेगा।

6.10 द्वादश राशियों से स्थान, क्षेत्र देश की जानकारी

I. मेष

स्थान परिचय पहाड़, जंगल, खान, पहाड़ी मैदान, रेतीला क्षेत्र, छुपने का स्थान, चरागाह, रत्नों व खनिज पदार्थों की खान, सैन्य गोदाम (शस्त्रागार), बंजर भूमि। **पूर्व दिशा**

देश इंग्लैंड (यू.के), डेनमार्क (उत्तर पश्चिमी यूरोप), जर्मनी (जी.डी.आर), पश्चिमी पोलैण्ड (सैन्ट्रल यूरोप), पैलेस्टाइन (इजराइल-जोरडन), सीरिया (दक्षिण-पश्चिम एशिया), जापान (पूर्व एशिया), लेबनान (पश्चिम एशिया)।

शहर मरसेल्लस (फ्रांस) अ. 43°-30′ उ. रेखांश 3°-30′ पू., नेपल्स (आइटल, नेपाली-इटली) फ्लोरैन्स (फिरेंजी-इटली), बरमिंघम, अक्षांश 50°-59′ उ. रेखांश 1°-50′ पू. (इंग्लैंड), वेरोना (इटली), लैनकास्टर (इंग्लैंड), क्रैको (कराकोआ, पोलैण्ड, सारागोस्सा (जारागोजा स्पेन, उटरेज (हॉलैण्ड) आदि।

भारत में तमिलनाडु (चेन्नई) अक्षांश 13°-05′ उ. रेखांश 80°-18′ पूर्व।

II. वृष राशि

स्थान परिचय जंगल, वह जगह जहाँ हाथी रहते हैं, खेतीबाड़ी की जगह, जंगली जानवरों का पहाड़ी क्षेत्र, वह स्थान जहाँ किसान रहते हैं, चावलों के खेत तथा उपजाऊ भूमि। **पूर्व दिशा**

देश व्हाइट रशिया (यू.एस.एस.आर), दक्षिण रशिया. परशिया, (ईरान अक्षांश 33° उ. रेखांश 55° पू.), आयरलैण्ड (रिपब्लिक आफ पश्चिमी यूरोप), साइप्रस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(मैडीटरेनियन समुद्र) एशिया माइनर, पोलैण्ड (सैंट्रल यूरोप), ज्योर्जिया (रिपब्लिक आफ यू एस एस आर), स्विटजरलैंड (यूरोप अक्षांश 47° उ. रेखांश 8° पू.), हॉलैण्ड अक्षांश 53°-0 उ. रेखांश 5°-0 पू, नीदरलैंड पश्चिमी यूरोप, कौसासस पर्वत (यू.एस.एस.आर)

शहर सेंट लोयस (सेनेगाल, अफ्रीका), लेपजिग, मनटुआ, डबलिन पारमा (इटली), पालेर्मो (इटली), रोडेशिया (एजियन सागर टर्की के पास) ल्युसरने (स्विटजरलैंड)।

भारत में मथुरा (अक्षांश 27°-30′ उ. रेखांश 77°-43′ पू हस्तिनापुर), मत्स्य, यमुना, अयोध्या।

नोट: गुजरात (अक्षांश 2°3 उ, अक्षांश 76°-36′ पू. 2001-2002 में घटित घटनाओं के आधार पर)

III. मिथुन राशि

स्थान परिचय खेल के मैदान, पहाड़ियाँ, खुले मैदान, हवाई अड्डा, संचार विभग (टेलिफोन, मोबाइल, दूरभाष टी.वी आदि) कलाकारों का स्थान, वैश्या घर, जुआ घर, खलियान, विद्या प्राप्ति का स्थान। अग्निकोण (पूर्व-दक्षिण)

देश अमेरिका, यू.एस.ए, पश्चिमी इंग्लैंड, बेलजियम (पश्चिमी यूरोप), अरमीनिया (यू.एस.एस.आर.), लोअर इजिप्ट, त्रिपोली (लेबनॉन), उत्तर-पूर्वी अफ्रीका का तट, सरदिनीया (इटली), वेल्ज़ (ग्रेट ब्रिटेन), कनाडा, (उत्तर अमेकि)।

शहर बरसेल्स (फ्रांस), नर्नमवर्ग (बवाना, एफ.आर.जी), मैलवोर्न, (विक्टोरिया, आस्ट्रेलिया), लन्दन (यू.के.), सैनफ्रांसिसको, प्लाइमौथ (इंग्लैंड), ब्रूजेज़ (बेल्ज़ियम वौलवर), केलिफोंनिया (यू.एस.ए.)

भारत में हस्तिनापुर, कपूरथला, पू. पंजाब, जलगांव आदि।

IV. कर्क राशि

स्थान परिचय समुद्र तटीय क्षेत्र, जलीय स्थान, नदी, नहर, झाड़ी वाले स्थान, पवित्र स्थान (तीर्थ स्थान) सुन्दर स्थान, झील, सागर, कुआँ, झरने, जल के खेत (जहाँ धान,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंघाडे आदि उपजाए जाते हैं) तालाब, वृक्ष, नमी वाला क्षेत्र जहाँ झाड़झंकार उगा हो, झाड़ियों, कार पार्किंग, सिंक (हाथ धोने के नलवाला टब), मछली पालन आदि। **दक्षिण दिशा।**

देश स्कॉटलैंड (ग्रेट ब्रिटेन), हॉलैण्ड (नीदरलैंड, यूरोप), मॉरिशस (हिन्द महासागर), उत्तर-पश्चिम अफ्रीका, न्यूजीलैंड (आस्ट्रेलिया अक्षांश 40° द. रेखांश 175° पूर्व प्रशांत महासागर, तसमान सागर) पैरागुए (दक्षिण अमेरिका) तथा चीन।

शहर न्यूयॉर्क (यू.एस.ए), वेनिस (वेनेजिया, इटली), स्टॉकहोम (स्वीडन), मैनचेस्टर (इंग्लैंड), एमस्टरडम (हॉलैण्ड), अलजीरिया (उत्तर-पश्चिम अफ्रीका), मिलन (इटली), कॉन्सटैनटीपोल (इस्तनबुल, टर्की), टयूनिस (उत्तरी अमेरिका), सेन्ट ऐन्ड्रीयूज (स्कॉटलैंड, ग्रेट ब्रिटेन), बरनि (स्विटजरलैंड), ल्यूबी (एफ.आर. जी अक्षांश 53°-50′ उ., रेखांश 10°-40′ पू.), मगडेबर्ग (जी.डी.आर अक्षांश 52°-08′, रेखांश 11°-38′ पू.), कैडिज (स्पेन, अक्षांश 36°-32′ उ. रेखांश 6°-17′ प.), जेनेवा (स्विटजरलैंड, अक्षांश 46°-12′ उ. रेखांश 0°-00′ पू.) जॉर्जिया (रिपब्लिक आफ यू.एस.एस. आर अक्षांश 41°-40′ उ. रेखांश 45°-0′ पू) सिंध।

भारत में कलकत्ता, हैदराबाद।

V. सिंह राशि

स्थान परिचय पहाड़, पहाड़ियों वाला क्षेत्र, पहाडियाँ, किले, जंगल, भंडार जहाँ रसायन आदि का संग्रह किया हो, घने जंगल व गहरी पहाडियाँ जहाँ जंगली पशु घूमते हों, होटल, सिनेमा हाल, नाटयशाला, शिकार खेलने का क्षेत्र, संग्रहालय, सरकारी भवन, क्लब, मनोरंजन के स्थान, बच्चों के खलने का मैदान आदि। **दक्षिण-दिशा।**

देश इटली (दक्षिणी यूरोप) अक्षांश 45° उ. रेखांश 12° पू. फ्रांस (पश्चिम यूरोप अक्षांश 48° उ. रेखांश 2° पू.), रोमानिया (पूर्व यूरोप, अक्षांश 46° उ. रेखांश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

25° पू), सिसिली (इटली), टाइपरे (सूर), लेबनान (पश्चिम एशिया), वोस्सो (निगर-79 एच.आर)

शहर रोम (इटली), फिलेडेल्फिया (पेनिसियलवेनिया), यू. एस.ए अक्षांश 39°-57′ उ. रेखांश 75-10 प. प्रागुओ (सैन्ट्रल यूरोप) चैकोस्लोवाकिया अक्षांश 50°-05′ उ. रेखांश 14°-25′ पू.), पोर्ट माउथ (इंग्लैंड), चिकागो (इलियोनौयस, यू.एस.ए अक्षांश 42° उ. रेखांश 87°-40′ प. डमैसकस (सीरिया, दक्षिण-पश्चिम एशिया), ब्रिसटन (इंग्लैंड) अक्षांश 44°-24 उ. रेखांश 12°-11 पू., टाउंट (इंग्लैंड अक्षांश 51°-02′ उ. रेखांश 3°-05′ प.) लंकाशायर को (इंग्लैंड) काबुल।

भारत में मुम्बई, विन्ध्याचल, उड़ीसा, कलिंग।

VI. कन्या राशि

स्थान परिचय बाग, शुष्क तथा नम भूमि, मक्का की फसल (खेत), गोदाम, पुस्तकालय, डेयरी, फल तथा सब्जी का भंडार, सेवकों का निवास, औषधि भंडार, पंसारी की दुकान, भंडार, वेयरहाउस, अनाज के खेत, शिक्षा संस्थाएं, हस्पताल, स्वास्थ विभाग, कारखाना, वेश्याओं का अड्डा, नैऋत्य कोण **(दक्षिण-पश्चिम)**।

देश टर्की (पश्चिम एशिया), स्विटजरलैंड (यूरोप), वेस्टइंडीज (सैन्ट्रल अमेरिका अक्षांश 20° उ. रेखांश 75° प.), ग्रीक (दक्षिणपूर्व यूरोप), मेसोपटानिया, केलिफोर्निया (यू.एस.ए), वर्जीनिया (यू.एस.ए), ऐस्सियन्ट (सट्टालैंड, स्काटलैंड में झील)।

शहर पेरिस (फ्रांस), जेरूसलेम (इजराइल, जॉर्डन), वोसटॉन (मासाचुसेट्स, यू.एस.ए), लॉस एंजिल्स (केलिफोर्निया, यू.एस.ए), मडीसॅन (विसकौन्सिन, यू.एस.ए), स्ट्रैसबर्क, वर्जीनिया, टाउलाउस (फ्रांस अक्षांश 43°-36′ उ. रेखांश 1°-26′ पू.), हेयडलवर्ग (जर्मनी), लियौंस (फ्रांस, अक्षांश 45°-29′ पू. रेखांश 4°-50′ पू.) ब्रिन्डिस्ट (इटली अक्षांश 40°-38′ उ. रेखांश 18°-0′ पू.) पाकिस्तान, बगदाद। तिब्बत का कुछ भाग।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारत में सम्पूर्ण भारत। कन्या भी भारत की राशि मानी गई है पूना तथा नागपुर।

VII. तुला राशि

स्थान परिचय शहर के बीच में खुली गलियाँ, वह स्थान जहाँ खुली हवा आए, चौराहा, आँगन, कोर्ट हाउसेस, म्यूजियम, ब्यूटी पॉर्लर, जेवरों की दुकान, फूलों वाला बगीचा, शयन कक्ष, आरा मिल, फर्नीचर कारखाना, पहाड़ी की चोटी तथा ढलान, ऐश्वर्य पूर्ण बंगला/फ्लैट/रहने के स्थान। पश्चिम दिशा।

देश उत्तरी चीन (दक्षिण पूर्व एशिया), तिब्बत, चीन का बाहरी क्षेत्र, बर्मा (दक्षिण एशिया), इन्डो चीन, जापान (पूर्व एशिया), अपर इजिप्ट (यू.ए.आर, उत्तरी अफ्रीका), आस्ट्रिया (यूरोप), अर्जेन्टीना (दक्षिण अमेरिका) अक्षांश 35° द. रेखांश 65° प.), लिवोनिया, सवौय, म्यांयार, आस्ट्रेलिया।

शहर लिस्वौन (लिस्वौआ, यू.एस.एस.आर, अक्षांश 54°-40′ रेखांश 25°-30 पू. विएन्ना (वेन, आस्ट्रिया अक्षांश 48°-00′ उ. रेखांश 16°-22 पू.) ऐन्टवर्प (बेल्जियम अक्षांश 51°-13 उ. रेखांश 4°-24° पू.) फ्रेंकफर्ट (जी.डी.आर जर्मनी), जोहन्सवर्ग (रिपब्लिक दक्षिण अफ्रीका, आर.एस.ए), चार्लसटॅन (दक्षिण केलिफोर्निया, यू.एस,ए अक्षांश 32°-50′ उ. रेखांश 79°-58′ प.) फ्रीबर्ग (पश्चिमी जर्मनी अक्षांश 48° उ. रेखांश 7°-52 पू.)

भारत में काश्मीर। तथा मारवाड।

VIII. वृश्चिक राशि

स्थान परिचय ऊँची भूमि, धार्मिक स्थान, सेना के रहने का स्थान (बेरैक्स), जहाँ मगरमच्छ, घड़ियाल पाये जाएँ, कुआ, नाली, जहाँ पानी भरा रहे उसके बहने में रुकावट हो, प्रदूषित झील, तालाब, नदी, आपरेशन थियेटर, विष, शास्त्रागार, कीचड़वाली जगह, रसोई का बगीचा, श्मशान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमि, मकबरा, रसायन प्रयोगशाला, खान, कसाई की दुकान, गोश्त का बाजार, पशु काटने का स्थान, गुप्त तथा छिपा स्थान, वेश्यावृत्ति का स्थान, पुराने मकानों की बस्ती। पश्चिम दिशा।

देश नारवे (उत्तर पश्चिमी यूरोप अक्षांश 62° उ. रेखांश 10° पू.) अलजीरिया (उत्तर पश्चिमी अफ्रीका), मोरक्को (उत्तर पश्चिम अफ्रीका), ट्रांसवाल (दक्षिण अफ्रीका), उत्तर सीरिया (दक्षिण पश्चिम एशिया), क्वींसलैंड (स्टेट आस्ट्रेलिया अक्षांश 26° दक्षिण रेखांश 147° पू.), स्वीडन (उत्तरी यूरोप), ब्राजील (दक्षिणी अमेरिका अक्षांश 10° द. रेखांश 55° प.), जटलैंड (जइलैंड, डेनमार्क)।

शहर वाशिंगटन (डी.सी डिस्ट्रिक कोलंबिया अक्षांश 38°-55 उ., रेखांश 77°-04 पू.), डी.सी लिवरपुल (इंग्लैंड), न्यू औरलिअन्स (लोसियाना, यू.एस.ए), डोवर (इंग्लैंड), बाथ (इंग्लैंड), हैलीफैक्स (नोवा स्काटिया, कनाड़ा), न्यू कैसल (न्यू दक्षिणी वेल्स, आस्ट्रेलिया), वालेन (सिया स्पेन), फैज़ (मोरक्को अक्षांश 34°-08 उ. रेखांश 5-06 पू. सेंट जॉन, न्यू फाउण्डलैंड (कनाड़ा) न्यू कैसल ऑन टाइने (इंग्लैंड), सिनसिन्नाटी (ओहियो, यू.एस.ए. अक्षांश 39° उ. रेखांश 84°-30 प.)

भारत में दिल्ली, बम्बई, चोल देश, सूरत, उड़ीसा।

XI. धनु राशि

स्थान परिचय राजा का स्थान, घोड़े व हाथियों को रखने का स्थान, गौ को रखने की जगह (तबेला), कुठियार, गोदाम, नीची भूमि, घुड़सवारी, मैदान, स्कूल, कॉलिज, विश्वविद्यालय, प्रकाशन गृह, कचहरी का कमरा, प्रीवी काउंसिल के सदस्य, बड़े-बड़े भवन जिनके बाहर (सामने) विशाल मैदान हो (धनाडय लोगों व राजाओं के महल) शस्त्रागार, चर्च, मंदिर, मस्जिद आदि। वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देश — आस्ट्रेलिया, स्पेन, मदगास्कर (मागसी, हिन्द महासागर), हंगरी (दक्षिण पूर्वी यूरोप), डलमेशियन आइलैंड (यूगोस्लाविया), फ्रांस, स्कलवोनिया, इटली, अरब देश।

शहर — ब्राण्डफोर्ट (इंग्लैंड), बर्नसविक (एफ.आर.जी.), टोलैडो (ओहियो, यू.एस.ए), टोरैन्टो (औनटारियो, कनाड़ा), सुन्दरलैंड (इंग्लैंड), स्टटगार्ट (एफ.आर.जी अक्षांश 48°-47 उ. रेखांश 9°-11 पू.), शैफील्ड (इंग्लैंड), नॉटिंघम् (इंग्लैंड), नरबोनन (फ्रांस अक्षांश 43°-11 उ. रेखांश 3°-11 पू.), कॉलाग्ने (एफ.आर.जी), ऊवीगनन (फ्रांस अक्षांश 43°-57) रेखांश 4°-49 पू।

भारत में — उत्तर प्रदेश, मध्य प्राँत, महाराष्ट्र, काठियावाड़, कोल्हापुर।

X. मकर राशि

स्थान परिचय — कारागार, हस्पताल, मकबरा, पशु का तबेला, बैलों व बकरी का अस्तबल; भीड़ का क्षेत्र, पुराने मकान, टैंक, नदी के किनारे, घने जंगल, खान, सुरमा तथा रांग की खान, कोयला तथा हीरे आदि की खान, बंजरभूमि, पुलिस स्टेशन, कचहरी, जूते का कारखाना, ऊनी कपड़े की मिल, मंदिर, सीमा (दो देशों के बीच में।) उत्तर दिशा

देश — आर्कने (स्काटलैंड अक्षांश 59° उ. रेखांश 3° पू.), लिथूनिया (यू.एस.एस.आर अक्षोश 54°.40 उ. रेखांश 25°-30 पू.), मेक्सिको (उत्तरी अमेरिका अक्षांश 19°-26′ रेखांश 99°-01 पू.), ग्रीक (दक्षिण पूर्व यूरोप), सीरिया (दक्षिण-पश्चिम एशिया), बलगेरिया, (दक्षिण-पूर्वी यूरोप) अलबेनिया (दक्षिण यूरोप), मोरिया (ग्रीक), मोरक्को (उत्तरा पश्चिम अफ्रीका), थ्रेस अफगानिस्तान (एशिया), भारत (एशिया) तथा बंग्लादेश। (1949 में बने चीन का लग्न मकर है)

शहर — केंघले (इंग्लैंड अक्षांश 53°-53 उ. रेखांश 1°-55 पू.), ब्रूसेल्स (बेल्जियम), कौन्सटैंस (स्विटजरलैंड), टरटौन्स (यू.ए.आर), पोर्ट सैड (यू.ए.आर), ऑक्सफोर्ड (इंग्लैंड)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारत में पंजाब तथा पश्चिमी बंगाल उत्तराखण्ड, बंगला, इलाहाबाद।

XI. कुंभ राशि

स्थान परिचय जुऐं का अड्डा, झाडीदार वृक्षों की जगह, सुरंग, प्रयोगशाला, पुरातत्व विभाग द्वारा खोदी हुई जमीन (एयरकन्डीशन), वातानुकूल इकाई, जनसभागार, फव्वारे के पास का स्थान, रेडियो, टी.वी., ट्रांजिस्टर आदि रखने का स्थान। **उत्तर दिशा।**

देश पेडमोन्ट (क्यूबेक), वालेयिया (रोमानिया, दक्षिणी यूरोप), लिथुआनिया (यू.एस.एस.आर), स्वीडन (पश्चिमी यूरोप), पोलैंड (सैन्ट्रल यूरोप), अरेबिया (दक्षिण पश्चिम एशिया), रूस, प्रूस्सिया, एबीसीनिया।

शहर सैलिस्बरी (रोहडेसिया) अक्षांश 17°-54 रेखांश 31°-30 पू., हैमवर्ग (एफ.आर.जी), सैलिसबरी (इंग्लैंड अक्षांश 51°-04 उ. रेखांश 1°-48 पू.), इनगलस्तडी (एफ.आर.जी), ब्रेमन (एफ.आर.जी), ब्राइटन (इंग्लैंड)।

XII. मीन राशि

स्थान परिचय महासागर, मछली पालन का तालाब, नम व गीली भूमि, पानी में डूबी भूमि, तेल खनिज के कुएँ, मन्दिर, बन्दरगाह, स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान (सेनिटोरियम), पुराने मकान व गिरे व टूट फूटे भवन, बाढ़ में डूबा क्षेत्र, नदी, अनाथालय, गुप्त व छुपने के स्थान, धार्मिक स्थल, तीर्थ केन्द्र, शिक्षित व विद्वानों की सभास्थल व बैठक। **ईशान काण (उत्तर-पूर्व)।**

देश सहारा रेगिस्तान (अफ्रीका), न्यूबियन रेगिस्तान (सूडान, यू.ए.आर), नौर्मैण्डी (फ्रांस), पुर्तगाल (पश्चिमी यूरोप) तथा इजिप्ट।

शहर ग्रिम्सबी ग्रेट (इंग्लैंड), रिगेन्सवर्ग (एफ.आर.जी), क्राइस्टचर्च (न्यूजीलैंड), बौर्ने माउथ (इंग्लैंड), सेविडा (स्पेन), वौर्म्स (एफ.आर.जी), रैटिशन अलैक्जैंडर (यू.ए.आर)।

भारत में हिमाचल प्रदेश, पंजाब, पानीपत, बनारस।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6.11 ग्रह-भारत एवं पड़ौसी क्षेत्र तथा वस्तुएँ

(*i*) सूर्य

स्थान — मगध, असम, चीन, बिहार, उड़ीसा, नर्मदा, कंभोज, पूर्वी तामिलनाडु, कौशम्भी, मगध, कलिंग, यवनों का क्षेत्र, चीन, मेखला, बर्मा, यमुना के दक्षिण-पश्चिम किनारे का क्षेत्र, पश्चिम तटीय प्रदेश, विंध्या जंगल, बरवान उत्तरी भारत। शक प्रदेश (मुलतान व अफगान) कांटेदार वृक्ष, पर्वतों की श्रंखला, राजस्थानी पूजा स्थल सागर, प्रदर्शनी, किला आदिवासी, पूर्वी भाग।

वस्तुएं आदि — बीज, भूसा, पूड़, अग्नि, स्वर्ण, डाक्टर, औषधि, राजा, संस्था आदि का प्रमुख, प्रसिद्ध व्यक्ति, पुलिस, सरकार, तस्कर, गेहूँ, हड्डियों का उपचार, तांबा, सूदखोर, ऊन, चर्म, रेशमी कपड़ा, शस्त्र, विष, कृषक, लकड़ी, बिजली, राजदूत, सभी पशुओं का कारक है।

(*ii*) चंद्रमा

स्थान — केरल, बिहार, उत्तरप्रदेश, भोजपुरी क्षेत्र, स्त्री राज्य, बनवासी, रोम, इटली, अरब देश, महासागर, द्वीप, टापू, वर्ष से ढ़के, क्षेत्र, कौशल, किला, यवन।

वस्तुएं आदि — पानी, मिठाई, तरल पदार्थ, नमक, फल, मूल्यवान पत्थर, मोती, चावल, जौ, जड़ी-बूटी, गेहूँ, युवती, चावल सुगंध वाली वस्तु, रसदार वस्तु, जलीय पदार्थ, सागर, झील देवी का मंदिर, वर्षा, रसायन औषधि, चावल खाद्य पदार्थ, मद्य, दूध, मधु, जौ, गेहूँ, किसान आदि। उत्तर-पश्चिम (वायत्व कोण) समुद्र से प्राप्त वस्तु, फर्म प्रधान लोग, प्रसिद्ध शासक, ब्राह्मण।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iii*) **मंगल**

स्थान आन्ध्र, कोंकन (गोआ), केरल, द्रविड़, अवन्तिका, चोल, मलाया, विंध्या, विराट, नर्मदा, सिंधु, महानदी, क्षिप्रा, भीमारथी, मन्दाकिनी, सोन नदी का पश्चिमी क्षेत्र, गोदावरी, गंगा उज्जैन, उत्तरी अरण्य, दंडकबन, तापती तथा सोमाली का क्षेत्र, म्लेच्छ प्रदेश। नीलगिरी, गोवा, करेल, कसाई, बौद्ध-जैन सन्यासी अधिक खाने वाले, पाखण्डी होटल, रसोई, छापेखाने (प्रैस) शस्त्र भण्डार, सैन्य क्षेत्र। दक्षिण दिशा।

वस्तुएं आदि शस्त्र फल-फूल, मूल्यवान पत्थर, अग्नि पर काम करने वाले (लोहार, अग्निहोत्री जाति, भाड़, बिस्कुट फैक्ट्री आदि), खेत, जो जंगल में रहते हैं, सेना अध्यक्ष, रासायिक मूंगा, गुड़। स्वतंत्रता, युवक, रक्त, राजदूत, वायुयात्रा, कपड़ा बुनना, लाल रंग वाली वस्तु, अग्नि स्थान, रसोई, मशीन रूम, उबालने वाला पात्र, हड़ताल आदि। लाल पदार्थ, मदिरा, भण्डार।

(*iv*) **बुध**

स्थान सौराष्ट्र, हिमालय प्रांत, सिंधु, बिहार का नेपाली क्षेत्र, गंगा, सरजू, कम्भोज, लोहित्यार गंगा, गुजरात और कौशिकी आदि सब नदियाँ मथुरा की पूर्वाद्ध, गोमन्त क्षेत्र, अवध, सरयु, गोमन्त, चित्रकूट, पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले लोग। उत्तर दिशा। जलमार्ग, ललित कला से संबंद्ध लोग, गायक, लेखक, पत्रकार, अभिनेता, नकशानवीस।

वस्तुएं आदि कुएं, विद्वान व्यक्ति, गणितज्ञ, कवि, पाखण्डी, झूठा, प्रचार करने वाले, मस्खरे, मजाक करने वाले, राजदूत, नपुंसक, हिजड़े, काले जादू करने वाला, घी, तेल, रसायन व्यापार, लेनदेन का बाजार, व्यापारिक गतिविधि, अमूल्य पत्थर, पन्नाआदि। हरे रंग की वस्तु व्यापारिक गतिविधि,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खेल का मैदान, बाग, जुऐं के अड्डे, हरे रंग पन्ना, सुरमा, तेल के बीज (खाने वाले तेल), पीतल, जल, शिक्षा, लेखक, शाही भवन, घोड़े, डॉक्टर, व्यापारी रंगरेज, पेंट करने वाला।

(*v*) गुरु

स्थान — पूर्वी पंजाब, पश्चिमी यू.पी., मथुरा का आधा भाग, पूर्ण उत्तरी भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, काश्मीर, सिंध का पूर्वी भाग, व्यास नदी, विपासा नदी का क्षेत्र। (पूर्व-उत्तर) वैदिक विद्वान, प्रॉफेसर, कानून वेत्ता, सलाहकारा। ईशान कोण

वस्तुएं आदि — घोड़े, हाथी, पुरोहित, मन्त्री, कोष, स्वर्ण, स्वस्थ भोजन, शक्तिवर्द्धक औषधि, वस्तुएं बेचने वाला सौदागर, धार्मिक व्यक्ति, दानी सज्जन, छत्र, लालची व्यक्ति आदि, चना, कीमती पत्थर, पुखराज। पीले रंग की वस्तु, मोम, धार्मिक वातावरण, विद्वान लोग, शिक्षामंत्री, परामर्शदाता आकाश, चांदी, इलायची, मोमबत्ती उद्योग, नमक, दाले, मीठे पदार्थ, मंगल व शुभ कार्यों का स्थान, बैंक आदि।

(*vi*) शुक्र

स्थान — गान्धार, तक्षशिला, मालवा, इरावती, कैकय प्रदेश, चंद्रभागा, रावी व चिनाव, नदी का क्षेत्र (महाराष्ट्र), पाकिस्तान का कुछ क्षेत्र, कंधार, अफगानिस्तान, कश्मीर, कीकट देश। **अग्निकोण (पूर्व-दक्षिण)**

वस्तुएं आदि — मंत्रीवर्ग, हाथी, घोड़े, धनवान लोग, कानून वेत्ता, युवती-युवक, अमूल्य पत्थर, हीरा, जेवर, होटल मंत्री, विद्वान लोग, रेशम, चंदन, काला मूंगा, उड़द, चावल आदि। चाँदी जड़ी बुटियों का काम, सफेद वस्तु, नृत्यशाला, संभोग, गन्ना, रूई, आरामदायक वस्तु, सुगंध, संगीत वाद्य। नोट; शेयर बाजार, विलासिता सामग्री, ब्युटीपार्लर बाग-बगीच, पानी के खेल, मनोरंजन स्थल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*vii*) **शनि**

स्थान राजस्थान, सौराष्ट्र, थानेश्वर, आर्वत, आभीर, प्रभास (सोमनाथ मंदिर तथा भगवान कृष्ण की निजधाम यात्रा का क्षेत्र), पुलिन्द, पंजाब व हरियाणा का क्षेत्र, दिल्ली, पुष्कर, कुरुक्षेत्र, अर्बुद, जिस देश में सरस्वती नहीं दिखाई देती, पश्चिमी क्षेत्र। शूद्र, दरिद्र, छापा, मारने वाला, शिकारी।

वस्तुएं आदि तेली, कैदी, शिकारी, पिछड़ी जाति व नीच जाति के लोग, विधवा, तस्कर, भैंस, गधा, चने, मटर, जेलर, मछेरा। काले रंग की वस्तु, जुआ स्थल, वायु, पहाड़, जंगल, गंदे स्थल, शमशान, कब्रिस्तान, जेल, वृद्ध, कुब्जा, मोटा अनाज, भैंस, गधे, बूढ़ी स्त्रियाँ, मृग, कस्तूरी, पशु चमड़े का व्यापार, चना, जौं, तेल।

(*viii*) **राहु**

स्थान सुलिकास, मलेच्छों का क्षेत्र, ज्वालामुखी, गुफा, कन्दरा, किन्नौर क्षेत्र, विदेश यात्रा, षडयंत्र, निम्न जाति के लोग, चर्म, घाटी में रहने वाले लोग, गुफा, पहाड़ी क्षेत्र, पहाड़ों में सुरंग। नैऋत्य कोण (**दक्षिण-पश्चिम**)।

वस्तुएं आदि किन्नर, निम्न जाति के लोग, तेल का व्यापारी, ठग, चालबाज, गुप्तचर, अपाहिज़, शिकारी, चोर, अधार्मिक लोग, असामाजिक तत्व, उड़द तिल विषैले पदार्थ, पशु चिकित्सक, मीनार व टाबर आदि।

(*xi*) **केतु**

स्थान ईरान, अफगानिस्तान, चीन, हूण, लोगों का क्षेत्र, चोल, पल्लव, रेगिस्तान, पहाड़। **नैऋत्य कोण।**

वस्तुएं आदि हूण जाति, गुफाओं में रहने वाले, बहादुर, मिलावट करने वाला, मूर्ख, दुष्ट, कुल्थी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपरोक्त द्वादश राशियों व नवग्रहों के विवरण का प्रयोग करके राष्ट्र, ऋतु, प्राकृतिक प्रकोप, शुभाशुभ घटनाओं के विषय में भविष्यवाणी करके ज्योतिष शास्त्र की सार्थकता दर्शाइ जा सकती है।

उदाहरण

6.12.1 सूर्य विधि, द्वादश राशियाँ तथा गोचर का फलित कथन

(*i*) **ग्रहों का गोचर**

एक राशि यदायांति चत्वारः पंच खेचरा।
पलावयंति महीं सर्वारूधिरेण जलेन वा।

यदि पांच ग्रह एक ही राशि में हो तो बाढ़, दुर्घटना, खून खराब/धन-जीवन की हानि होने की संभावना होती है।

पंच ग्रहः हनंति चतुष्पदाश्च पांच ग्रहों का योग पशुहानि दर्शाता है।

(*ii*) *ग्रहों का राशि/नक्षत्र प्रवेश या उनकी स्थिति में परिवर्तन*

(क) शुक्र ने 16 दिसम्बर, 1995 को 23 घण्टे 16 मिनट पर मकर में प्रवेश किया।

(ख) बुध ने 27 दिसम्बर, 1995 को 26 घण्टे पर मकर राशि में प्रवेश तथा 22 जनवरी 1996 को वापिस धनु राशि में प्रवेश।

(ब) मंगल ने मकर राशि में 31 दिसम्बर, 1995 को 18 घंटे 12 मिनट पर प्रवेश किया।

नीचे 16 दिसम्बर, 1995 को 11 बज पर 43 मिनट पर सूर्य ने धनु राशि में प्रवेश किया, उस समय की दिल्ली की सूर्यविधि नीचे दी जा रही है:

कुंडली 2

लग्न	10/15°-44′
सू.	8/00°-00′
चं.	5/12°-00′
मं.	8/18°-10′
बु.	8/14°-12′
बृ.	8/02°-05′
शु.	8/29°-17′
श.	10/24°-43′
रा.	6/00°-46′
के.	6/00°-46′

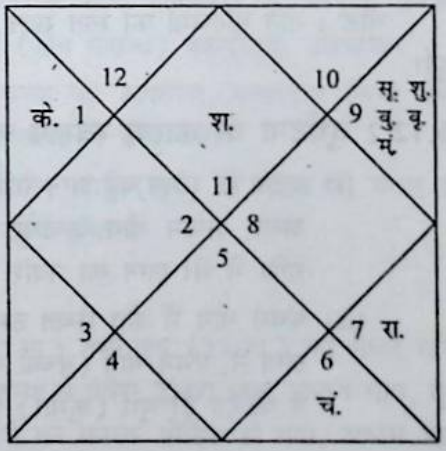

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iii*) **घटनाएं:**

(क) 25 दिसम्बर, 1995 (शनिवार) को दाबवाली, माण्डी (हरियाणा) के एक स्कूल में 6-56 बजे एक भयंकर आग उस समय लगी जब 1200 बच्चे अपने 'स्कूल सत्र का अंतिम दिन' का उत्सव मना रहे थे। 441 बच्चे मारे गए, उस घटना के समय का तथा उसी ही स्थान का चक्र नीचे दिया जा रहा है।

कुंडली 3

लग्न	8/3°-35′
सू.	8/6°-55′
चं.	8/20°-43′
मं.	8/23°-25′
बु.	8/23°-4′
बृ.	8/3°-38′
शु.	9/7°-48′
श.	10/25°-11′
रा.	6/0°-11′
के.	0/0°-11′

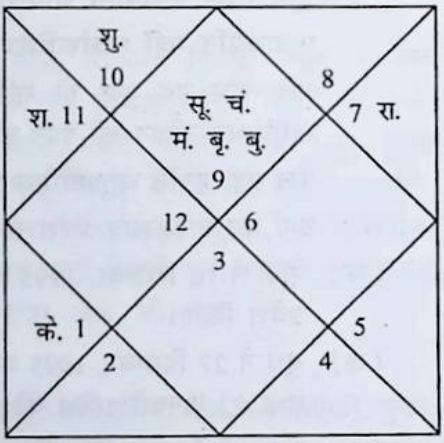

देखें पैरा 6.12.1 (*i*) नियम लगता है।

(*ii*) भी लागू होता है, सूर्य व गुरु द्वारा नक्षत्र चरण परिवर्तन।

नोट : तीन मुल्जिमों को सात साल बाद सन 2002 में 2 वर्ष की जेल हुई।

6.12.2 दुर्घटना के कारण स्वरूप ज्योतिषीय योग/ग्रहस्थिति

(*i*) घटना के समय की लग्न राशि में पांच ग्रह लग्न में और लग्नेश अस्त, अष्टम भाव अष्टमेश पीड़ित तथा सब ही अग्नि तत्त्व राशि में थे। लग्न का नवांश भी अग्नि तत्व का था।

(*ii*) पंचम भाव में केतु स्थित उसपर शनि की दृष्टि, पंचमेश मंगल लग्न में, पंचम भाव (बच्चों का) कारक गुरु लग्न में और अस्त व पीड़ित है। बुध (कुमार) पुनः स्कूल के बच्चों का प्रतिनिधि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वहीं स्थित है और मंगल से पीड़ित है। उस दिन मंगल व बुध एक ही अंश पर थे, लग्न, लग्नेश व सूर्य सभी केतु के नक्षत्र में थे। बुध ने उस ही दिन नक्षत्र बदला। तीनों अग्नि तत्त्व राशियाँ पीड़ित थी।

(*iii*) स्कूल के खेल का मैदान जहाँ कैम्प लगा वह मिथुन राशि एवं भवन के आगे खुला मैदान धनु राशि दोनों पीड़ित हैं। यहाँ मंगल (अग्नि) की भूमिका, राशियों वह ग्रहों को पीड़ित करने में सबसे अधिक है, मंगल अग्नि व दुर्घटना का प्रतीक है।

(*iv*) सूर्य विधि में पंचम भाव, भावेश दोनों मंगल से पीड़ित हैं, धनु व मिथुन राशियाँ पीड़ित हैं तृतीय भाव व षष्ठ भाव पीड़ित है।

(*v*) अमावस्या (22 ता.) का दिन, चंद्रमा पीड़ित (निर्बल)

उपरोक्त कारणों से यह दुर्घटना हुई, व क्षीण चंद्रमा ने जैसे ही सूर्य आदि पर से गोचर किया स्थिति भड़क उठी।

उपरोक्त सूर्य विधि के समय में और बहुत सी घटनाएँ हुई जैसे–

(अ) एक दीवार के गिरने से तीन व्यक्ति मरे।

(आ) ढाका रेल दुर्घटना में 20 व्यक्ति मरे (10 जनवरी 1996 को)

(इ) 13 जनवरी, 1996 को दिल्ली में 13 घण्टे तक अंधेरा (बिजली की सप्लाई फेल होने के कारण) (सूर्य बिजली)

(ई) 3 जनवरी, 1996 को सदर बाजार, दिल्ली में बम फटा।

(उ) पांच लड़कियों के साथ बलात्कार के पश्चात उनकी हत्या की गई (यौन मदान्ध) बहादुरगढ़, हरियाणा।

(ऊ) 6 वर्ष की कन्या का अपहरण, बलात्कार किया तथा बेहोशी की अवस्था में छोड़ गए।

नोटः शुक्र वर्गोत्तम, शत्रु क्षेत्रीय, शत्रु (सूर्य) के नक्षत्र में, मंगल से पीड़ित, नवांश में भी मंगल की चतुर्थ दृष्टि है।

6.12.3 अन्वेषण/व्याख्या

मंगल (31 ता.), शुक्र (17 ता.) तथा बुध (27 ता.) को मकर राशि में प्रवेश तथा राहु (25 ता.) का कन्या में प्रवेश, द्वादश भाव, सप्तम भाव, सूर्य विधि के पीड़ित हो गए। शुक्र नारी का कारक पीड़ित हो गया, अष्टम भाव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में चंद्रमा पर गोचर का राहु आने से अष्टम (मृत्यु) भाव पीड़ित हो गया, वहाँ का स्वामी बुध भी पीड़ित हो गया, सप्तम, अष्टम व द्वादश यौन संबंधों के भाव व शुक्र (नारी) बुध (धोखा) तुला (काल पुरुष का सप्तम भाव) आदि सभी पीड़ित हो गए। उस समय चंद्रमा का गोचर लग्न व शनि पर से हो रहा था।

6.13. अग्नि कांड

एक और उदाहरण किसी और स्कूल में लगी आग की घटना का लेते हैं जो 16 जुलाई 2004 को तमिलनाडु के एक गाँव में हुई। पूर्वचर्चित नियमों की सार्थकता स्पष्ट हो जाएगी, दोनों घटनाओं में अंतर 9 वर्ष का है, दोनों की ग्रह स्थिति में बहुत अंतर आ चुका होगा परन्तु ज्योतिष के नियम अकाट्य है अथवा पूर्ण वैज्ञानिक है।

घटना (अ)

16-7-2004 को कुम्ब कोनम कस्बा (तमिलनाडु) अरब सागर के पास एक स्कूल की रसोई में 11 बजे प्रात: आग लगी, तुरन्त ही फूसे वाली छत ने पकड़ ली और आग ने पूरे स्कूल के भवन को लपेट लिया। 100 बच्चे मारे गये, 30 घायल हुए यह सभी बच्चे कक्षा में थे, कुल 900 बच्चे वहाँ स्कूल में थे। देखें सूर्य विधि।

कुंडली 4

लग्न	4/05°-16'
सू.	3/00°-00'
चं.	2/15°-07'
मं.	3/24°-07'
बु.	3/24°-32'
बृ.	4/21°-51'
शु.	1/20°-10'
श.	2/24°-00'
रा.	0/14°-16'

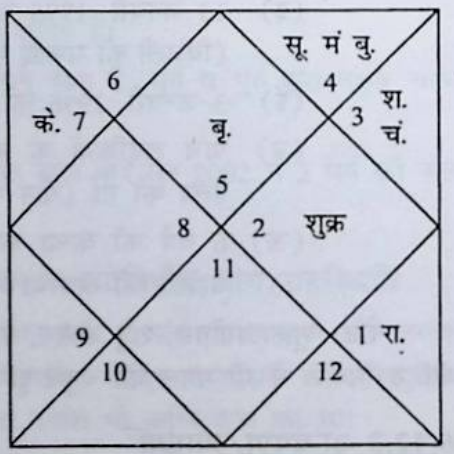

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याख्या सूर्य विधि दिनांक 16-7-2004 8-26 बजे प्रातः मद्रास की।

(*i*) प्रथम श्रावण मास (लौंद का महीना) में पाँच शनिवार थे जो दुर्घटनाओं के द्योतक हैं (पिछले अध्याय में भी इस सूत्र की चर्चा हो चुकी है।)

(*ii*) सूर्य ने उस ही दिन कर्क राशि में प्रवेश किया प्रातः 8-26 बजे (केवल 1 घण्टा 40 मिनट पहले) और उसी समय दक्षिणायन शुरू हुआ, इन दोनों का फल, दक्षिण व पश्चिमी क्षेत्रों में दुर्भिक्ष व दुष्प्रभाव की संभावना दिखाता है।

(*iii*) (अ) सूर्य विधि के लग्न पर शनि (लग्नेश के शत्रु) की दृष्टि होने से पीड़ित है। लग्नेश नीच के मंगल के साथ है।

(आ) सूर्य व चंद्रमा (क्षीण चंद्रमा कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी का) दोनों ही पीड़ित हैं।

(इ) सप्तम भाव पर मंगल (अग्नि) की अष्टम दृष्टि है। मंगल दुर्घटना का कारक भी है। अष्टमेश गुरु लग्न में षष्ठेश व सप्तमेश शनि से दृष्ट है। चंद्रमा से अष्टम पर मंगल, सूर्य व बुध की दृष्टि है। अष्टम से अष्टम, तृतीय भाव में केतु वह भी मंगल से दृष्ट है।

(ई) षष्ठेश शनि लग्न, अष्टम तथा अष्टमेश गुरु को भी दृष्टि दे रहा है।

(उ) पंचम से अष्टम भाव में सूर्य तथा मंगल स्थित है।

(ऊ) शनि व मंगल दोनों द्विर्दादश हैं, मंगल तथा राहु एक-दूसरे से केन्द्र में हैं, यह स्थिति भी दुर्घटनाओं, भूकम्पादि व दुर्भिक्ष दर्शाते हैं।

(ए) स्कूल तथा स्कूल के बच्चे जहाँ शिक्षित व विद्वान एकत्रित हों वह धनुराशि अग्नि, मंगल की युति सूर्य (अग्नि बिजली), चंद्रमा (युवती), बुध (कुमार) इन सब का पीड़ित होना, चतुर्थेश मंगल द्वादश में सूर्य के साथ। अग्नि तत्त्व राशियाँ (मेष, सिंह व धनु पीड़ित है) काल पुरुष की चतुर्थ राशि (कर्क) पीड़ित है, पंचम राशि (सिंह) प्रथम राशि मेष पीड़ित है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपरोक्त ग्रह स्थिति व राशियों की स्थिति, इस दुर्घटनाओं के ज्योतिषीय योग, जो पूर्व उदाहरण में भी बताए गए ऐसी घटना की संभावनाओं की ओर संकेत करेती हैं।

घटना (आ)

21 जुलाई, 2004 को इराकी आतंकवादी के एक समूह ने तीन भारतीयों को बन्दी बना लिया, उनके साथ दो कीनिया के तथा एक इजिप्ट का व्यक्ति भी था।

पूर्व चर्चित योगों का संदर्भ लेते हुए हम इस घटना के ज्योतिषीय योगों पर प्रकाश डालते हैं।

(*i*) 17 जुलाई, 2004, शनिवार को अमावस्या, शनैश्चरी अमावस्या के दिन चंद्रमा के कर्क राशि (14-18 बजे) प्रवेश से चतुर्ग्रही योग बना जिसके फलस्वरूप रक्तपात, जनधन हानि, बाढ आदि होने की संभावना बनती है।

(*i*) **शनैश्चपंच के दृष्ट्वा पाताले कपंतेफणी।**
इशानदेश भंगश्च वहिन दाहो महर्घता।।

इस मास में पांच शनिवार होने से इशान देश का भंग, अन्न के भावों में तेजी, अग्नि भय एवं भूकम्प आदि दुखद घटनाएँ होने की संभावना होती है।

(*iii*) लग्नेश सूर्य, बुध (मारकेश) के तथा मंगल (आतंकवादी) के साथ द्वादश (विदेश), कन्या राशि (बगदाद) का स्वामी बुध लग्नेश के साथ, चंद्रमा गोचर में जैसे ही सिंह राशि (लग्न) में प्रवेश किया यह घटना घटी। बुध ने सिंह में प्रवेश किया।

31 जुलाई 2004 को शुक्र ने मिथुन में प्रवेश किया और शनि से युति की, इसके साथ ही उग्रवादी कुछ नम्र हुए और सभी छः व्यक्तियों को मारने की धमकी न देकर पहली अगस्त 2004 को अपनी धमकी वापिस ली। *शनि के कर्क राशि में प्रवेश (5 सितम्बर 2004), बुध के मार्गी होने (2 सितम्बर 2004) तथा शुक्र के मिथुन में (1 सितम्बर, 2004) प्रवेश के फलस्वरूप उनका छूटना संभव लगता था। द्वादश भाव विदेश तथा विदेश में बन रही जालसाजी को बताता है।*

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नोट: टाइम्स आफ इंडिया 2 सितम्बर, 2004 को प्रकाशित हुआ कि 42 दिन बाद उन सभी को छोड़ दिया गया। *उपरोक्त घटना की भविष्य वाणी, चर्चा तथा योग अंग्रेजी की पुस्तक में उनके छूटने से पहले ही प्रकाशित हुई थी।*

घटना (ई)

अग्निकांड 2 अगस्त, 2004 को येउआ वोलामौस सुपर मार्केट, पैरागुए (आसूनसियन यू.एस.ए)

पिछली आधी सदी में पहली बार एक भयानक दुर्घटना हुई, जिसमें 311 व्यक्ति मरे, सैंकड़ों घायल हुए जब बहुमंजिला येउआ बोलानोंस सुपर बाजार को आग की लपटों ने घेर लिया। आग से एक मंजिल गिर गई जिसमें दर्जनों कार जो पार्किंग में खड़ी थी सभी को अग्नि घर कर गई। इससे पहले 1947 में एक सेना का विद्रोह विफल हुआ जिसमें 8000 व्यक्ति मरे थे।

पैरागुए देश वेरिविया, अर्जेन्टीना तथा ब्राजील के मध्य है।

कुण्डली 5

उस दिन की ग्रह स्थिति

सू. 3/16°
चं. 10/3°
मं. 4/01°
बु. 4/12°
बृ. 4/25°
शु. 2/1°-30′
श. 2/26°
रा. 0/12°-27′
के. 6/12°-22′

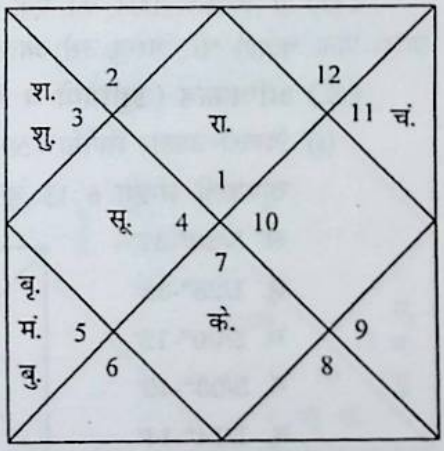

पैरागुए कर्क राशि के क्षेत्र में आता है। कार पार्किंग भी कर्क राशि में ही आती है। ब्राजील कन्या राशि में आता है। कुंभ राशि वह भंडार है जहाँ बिजली का सामान, टी.वी., वातानुकूल (ए.सी.) आदि रखे हों, वह स्थान (हाल) जहाँ जनता एकत्रित हो। सिंह राशि मनोरंजन का स्थान, सरकारी भवन, क्लब तथा मिथुन राशि भंडार का प्रतिनिधित्व करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आजकल खरीदारी के लिए व जनता की सुविधा के लिए, शापिंग माल, प्लाजा, सुपर बाजार आदि बन गए हैं जहाँ सभी प्रकार की वस्तुएँ, खाद्य सामग्री, सिनेमा हॉल, मनोरंजन जलपानादि की दुकानें होती हैं।

ज्योतिषीय विश्लेषण

(*i*) कर्क राशि मंगल तथा शनि की अशुभ कर्तरी में है।

(*ii*) मिथुन तथा सिंह राशि शनि से पीड़ित है।

(*iii*) सिंह तथा कुंभ राशि मंगल से पीड़ित हैं। (एक दिन पहले मंगल कर्क से सिंह राशि में आया था।)

(*iv*) चंद्रमा कुंभ में मंगल से पीड़ित था।

उपरोक्त राशियों, ग्रहों व गुरु व शुक्र, बुध, शनि, मंगल (अग्नि) का पीड़ित होना, सूर्य विधि (16-7-2004) में भी इस प्रकार की घटनाओं का संकेत है, कर्क राशि व राशीश दोनों पीड़ित हैं। इसलिए ऐसी घटना की संभावना भी होती है।

(ख) 9 अगस्त 2004 को एक कन्या विद्यार्थी जो एम.बी.बी.एस में प्रवेश पाना चाहती थी परन्तु उसे आत्महत्या करनी पड़ी (बंगलौर में)।

(ई) अग्निकांड (झुग्गियों व रेल में) की कुछ दुर्घटनाए

(*i*) दिल्ली उपहार सिनेमा (59 लोगों की मृत्यु)

कुण्डली संख्या 6 13 जून, 1997 14 घण्टे शुक्रवार

ल. 5/20°-37′
सू. 1/28°-33′
चं. 5/00°-12′
मं. 5/03°-40′
बु. 1/14°-14′
वृ. 9/28°-04′
शु. 2/17°-24′
श. 11/24°-34′
रा. 5/00°-39′

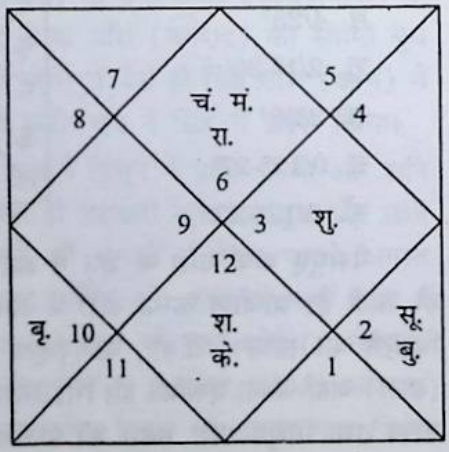

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ii*) यमुना पुस्ता, दिल्ली 1-3-1999 एक भयानक आग झुग्गियों में फैल गई। रबड़, टायर, पी.बी.सी तथा प्लास्टिक के कारण और भयानक हो गई।

कुंडली 7

ल. 3/02°-25′
सू. 10/29°-28′
चं. 9/15°-23′
मं. 6/18°-14′
बु. 11/09°-07′ (व)
बृ. 11/12°-56′
शु. 0/01°-15′
श. 0/07°-36′
रा. 3/28°-00′

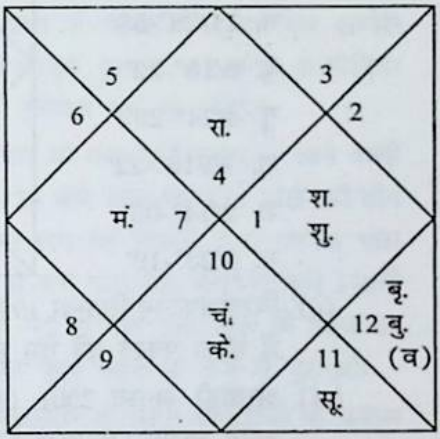

(*iii*) **कुंडली 8**

बीनस सर्किल, बंगलौर, फरवरी, 1981

ल. 2/01°-54′
सू. 10/02°-00′
चं. 2/05°-43′
मं. 10/12°-17′
बु. 10/08°-26′
बृ. 5/16°-04′
शु. 9/19°-03′
श. 5/15°-33′
रा. 3/17°-11′

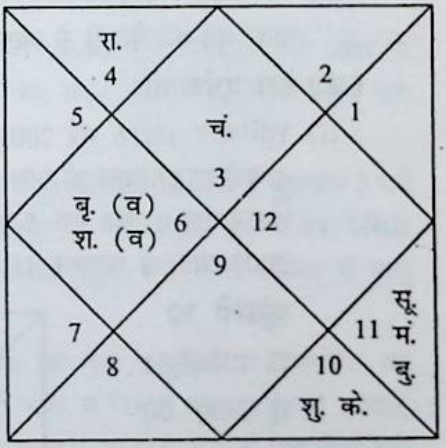

(*iv*) **कुंडली 9**

दिनांक 23-1-2004, 10 बजे प्रातः श्री रंगम तमिलनाडू एक विवाहोत्सव में बिजली की चिंगारी के कारण आग लगी और वधू जल गई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ल. 11/03°-45′
सू. 9/08°-35′
चं. 9/26°-07′
मं. 11/28°-58′
बु. 8/15°-22′
गु. 4/24°-29′
शु. 10/16°-22′
श. 2/14°-05′
रा. 0/23°-19′

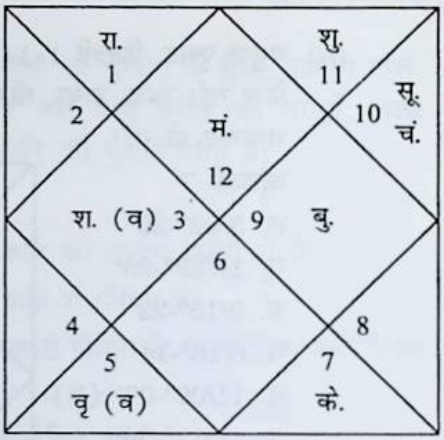

(*v*) विशाखापटनम् सितम्बर 1997 (35 व्यक्ति मरे) एक तेल रिफाइनरी में खाना पकाने की गैस से भरे टैंक में आग लग गई।

(*vi*) अरवाडी अगस्त 2001 (बुद्धि से कमजोर) 28 पागल व्यक्ति अपने आश्रम (पागलखाने) में सोये-सोये आग में भस्म हो गए।

(*vii*) आगरा, मई 2002

एक जूते की फैक्ट्री में आग लगने से 42 व्यक्तियों की मृत्यु हुई।

(ड) रेल दुर्घटनाऐं

(*i*) लुधियाना 15/16 मई 2003 शुक्रवार को फ्रन्टियर मेल में प्रात: 4 बजे लाड्डोवाल के पास आग लगी (कोच नं. एस-5) से शुरु होकर एस-3 तथा एस-5 तक पहुँच गई। देखें सूर्य विधि 15 मई 2003 प्रात: 8 बजकर 41 मिनट की।

कुंडली 10

ल. 2/16°-51′
सू. 1/00°-00′
चं. 6/15°-32′
मं. 9/19°-36′
बु. 0/18°-13′ (व)
बृ. 3/16°-39′
शु. 0/04°-30′
श. 2/03°-40′
रा. 1/05°-27′

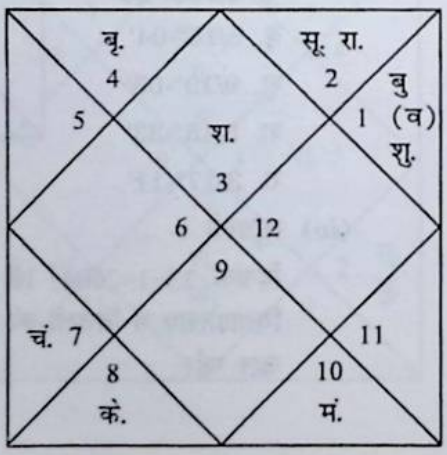

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीय भाव मार्ग या रेलवे लाइन (अग्नि तत्व राशि) पर मंगल (अग्नि), शनि (वायु) की दृष्टि, तृतीयेश सूर्य वृष राशि (वायु) में राहु (वायु) के साथ पीड़ित, शुक्र (कारक वाहन) तथा चतुर्थेश बुध अग्नि तत्व राशि में मंगल से दृष्ट। बुध लग्नेश चतुर्थेश अग्नि तत्व राशि में पीड़ित, अष्टम भाव मंगल से पीड़ित। अष्टम से अष्टम तृतीय व तृतीयेश सूर्य भी पीड़ित।

(*ii*) 28 मई, 2003 को जलालाबाद के बाद फिरोजाबाद से आने वाली एक गाड़ी के इंजन में 13-20 बजे आग लगने से पीछे की तीन बोगी (डिब्बों) में भी आग लग गई जिससे 800 व्यक्ति फंस गए। परन्तु सभी चमत्कार से बच गए। यह संभवत: बुध (मार्गी हुआ 20 मार्च को) चंद्रमा मेष में बुध तथा शुक्र के साथ आ गया। दो-दो सौम्य ग्रह मिल गए। चंद्रमा से केंद्र में गुरु था।

(*iii*) 1 जून, 2003 को मगध एक्सप्रेस के पटरी से उतरने के कारण एक व्यक्ति की मृत्यु हुई। यह घटना बुदार में 3-45 बजे प्रात: हुई। चंद्रमा गोचर करते-करते वृष में आ गया।

(ऊ) (*i*) **श्री हरिकोटा फरवरी 2004 (6 व्यक्ति मरे और 3 घायल)** इण्डिया स्पेस सैंटर में एक रॉकेट मोटर टेस्ट करते समय आग लग गई।

(*ii*) कोलाबा (दक्षिण मुम्बई) में **4 अगस्त, 2004 (बुधवार)** को एक बहुमंजिला भवन में आग लग गई जिसमें नूतन (एक प्रसिद्ध अभिनेत्री) के पति,श्री रजनीश बहल की 31वीं मंजिल में मृत्यु हो गई।

16 जुलाई, 2004 की सूर्य विधि को देखें (कुंडली 4) क्योंकि यह घटना उस ही मास में हुई और उस ही मास में स्त्रियों पर जुल्म की हत्याएं, आत्महत्या, अग्निकांड आदि की अनेक घटनाएं समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई। शुक्र का पीड़ित होना, 31 जुलाई से शुक्र का मिथुन-राशि में प्रवेश के बाद शनि से पीड़ित होना, तुला राशि (शुक्र की), काल पुरुष का सप्तम भाव पीड़ित तथा जो कारण उदाहरण (अ) में दिए गए हैं के प्रभाव से उपरोक्त घटनाऐं घटित हुई।

नोट: इन्जीनियरिंग तथा मेडिकल में सी.इ.टी. के द्वारा प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी (जो सारे देश में कर्नाटक, मुम्बई व पूना आदि में आए) को परेशानी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का सामना करना पड़ा क्योंकि 80 कर्नाटक से बाहर के विद्यार्थियों के प्रवेश नामंजूर कर दिए गए। काल पुरुष का प्रथम भाव, पंचम भाव (सिंह राशि) (कर्क) चतुर्थ भाव, नवम भाव (धनु राशि) उच्च शिक्षा, गुरु (विद्या, विद्यार्थी तथा बच्चों), बुध (विद्या) तथा शुक्र सभी पीड़ित हैं।

कुंडली नं 6 से 10 तक का विश्लेषण कर पूर्वचर्चित नियमों की पुष्टि

(*i*) शनि व मंगल समसप्तम है, शनि व राहु समसप्तम है, मंगल तथा राहु की युति, चंद्रमा का पीड़ित होना, सूर्य का वृष राशि के अंतिम अंशों में होना (कुंडली नं 6)।

(*ii*) शनि व मंगल समसप्तम, शनि से राहु व मंगल से राहु केन्द्र में है। शुक्र तथा चंद्रमा अति पीड़ित हैं, चन्द्रमा अमावस्या के बिलकुल समीप है (कुंडली नं 7)।

(*iii*) शनि व मंगल षडाष्टक में है, व राहु व मंगल षडाष्टक में है, सूर्य पीड़ित है। शुक्र व बुध पीड़ित हैं। (कुंडली नं. 8)

(*iv*) शनि व मंगल परस्पर केन्द्र में, मंगल व राहु द्विर्द्वादश, मंगल व गुरु षडाष्टक, अमावस्या का चंद्रमा, शुक्र अशुभ कर्तरी में तथा शनि की दृष्टि से पीड़ित व लग्नेश गुरु से षडाष्टक, गुरु पीड़ित, सप्तमेश बुध पीड़ित लग्न में मंगल। (कुंडली नं 9)।

(*v*) शनि तथा मंगल षडाष्टक में शुक्र व बुध पीड़ित, शनि व राहु द्विर्द्वादश तृतीय भाव व तृतीयेश पीड़ित (कुंडली नं 10)

(ए) बगदाद (इराक) में 2 अगस्त, 2004 सोमवार को एक बम फटा।

गिरजाघरों पर कारबमों (मोटर बम) के फटने से 11 व्यक्तियों की मृत्यु। आतंकवादियों ने ईसाइयों को देश से भगाने के लिए यह आक्रमण किया। योजनानुसार रविवार को प्रार्थना के समय (सायंकाल) पांच गिरजाघरों में आक्रमण करने का विचार था परन्तु वह बम फटे सोमवार को।

6.14 भारत के स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस की कुण्डलियाँ

निम्नलिखित दो कुण्डलियाँ भारत के स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस की है, जिनके आधार पर भारत के भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वानुमान किया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(अ) स्वतंत्रता दिवस की कुंडली

तिथि 15 अगस्त, 1947 रात्रि के 0 घण्टे पर नई दिल्ली/दिल्ली की कुण्डली दी गई है। ग्रह स्पष्ट इस प्रकार हैं।

ल. 1/07°-45′, सू. 3/27°-59′, चं. 3/03°-59′,
मं. 2/07°-28′, बु. 3/13°-41′, बृ. 6/25°-52′,
शु. 3/22°-35′, श. 2/20°-30′, रा. 1/05°-45′

कुंडली नं 11

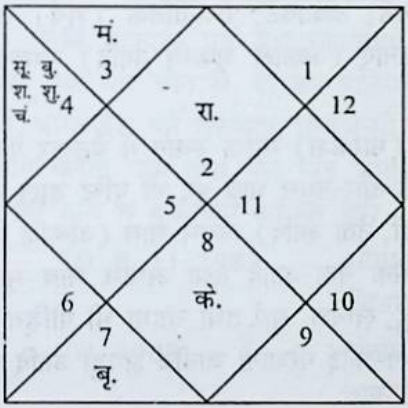

नवांश

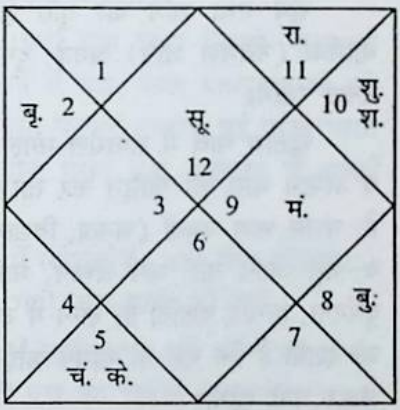

भोग्य दशा शेष–शनि की 18 वर्ष 0 मास 23 दिन

कुण्डली का ज्योतिषीय विश्लेषण

राष्ट्रीय घटनाऐं ग्रहों की स्थिति तथा गोचर पर आधारित होती है। स्वतंत्रता दिवस की कुंडली में विद्यमान योगों का विचार करना होता है, साथ ही वराहमिहिर द्वारा निर्देशित **मकर** राशि व आधुनिक विद्वानों द्वारा मान्य **कन्या** राशि से भी विचार करना होता है।

(*i*) लग्नेश शुक्र, अन्य चार ग्रहों के साथ तृतीय भाव जिससे पराक्रम, सीमा, पड़ौसी, यातायात, संचार, डाक, दूरभाष, टी.वी. रेडियो, प्रैस, कला, तकनीकी उन्नति शोध, अष्टम से अष्टम व नवम से सप्तम आदि का प्रतिनिधित्व होता है, में अवस्थित है।

(*ii*) लग्नेश शुक्र तृतीय भाव में तृतीयेश चंद्रमा (क्षीण अमावस्या का) शनि (योगकारक भाग्येश, कर्मेश, तकनीकी, दृढ़ संकल्प, परिश्रमी, दीन/हीन/सेवक आदि) सूर्य (क्षत्रिय राजा, सरकार, इलैक्ट्रानिक शक्ति आदि) बुध (संचार, वाणिज्य, पत्रकारिता, विद्या आदि) से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

युति कर रहा है। शुक्र स्वयं भी कम्पयूटर, वाणिज्य, आर्थिक विकास, सम्पन्नता, चहुदिश समृद्धि आदि का प्रतिनिधित्व करता है। चंद्रमा तथा शुक्र दोनों ही नारी के प्रतिनिधि हैं इसलिए नारियों के विकास की भी बहुत संभावनाऐं हैं।

तृतीय भाव में लग्नेश, योगकारक शनि, धनेश व पंचमेश बुध, चतुर्थेश सूर्य की युति (उज्जवल भविष्य दर्शाता है) सप्तमेश व द्वादशेश मंगल द्वितीय में प्रत्येक प्रकार की सहायता जैसे धन, तकनीकी ज्ञान आदि विदेशों के साथ समझौते आदि से लाभ दर्शाता है।

सूर्य तथा शनि की युति झगड़े, रूकावटें, राजनीतिक (सूर्य) तथा धार्मिक (नवमेश शनि) झगड़े, दुर्घटनाऐं (अकाल भूकम्प आदि) समस्याऐं बनाए रखेंगे।

द्वितीय भाव में सप्तमेश मंगल (मारकेश) मारक स्थान में बैठकर पंचम व अष्टम भाव को पीड़ित कर रहा है और नवम भाव पर भी दृष्टि डाल रहा है। पंचम भाव बच्चों (जनता, विद्यार्थी, नेता आदि), नवम भाव (अध्यक्ष देश व प्रांत आदि का, धर्म सथान, धार्मिक नेता आदि तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, हत्याएं दर्शाता है। लग्न में राहु, लग्नेश, सूर्य तथा चंद्रमा भी पीड़ित है, जो दर्शाते हैं कि देश के सामने कोई-न-कोई परेशानी जातीय झगड़ों आदि को लेकर बनी रहेगी।

इस स्वतंत्र भारत की नींव ही खून की नदी बहाकर रखी गई। उस समय शत्रुता का वातावरण तथा सभी ओर अशांति थी।

मर्मज्ञ स्थान जब भी पीड़ित होंगे देश पर कोई न कोई विपत्ति आने का भय रहेगा।

इस बालारिष्ट योग के कारण देश पर कष्ट तो आया परन्तु बाद में ठीक होता गया। शनि की दशा योग कारक ग्रह की दशा होने के कारण देश निरंतर उन्नति करता गया।

(*i*) 20 अक्टूबर, 1962 को शनि महादशा में राहु का अंतर पुनः एक विपत्ति चीन का भारत पर आक्रमण लाया।

(*ii*) शनि/बृहस्पति में पंडित नेहरू की मृत्यु 27 मई, 1964 को हुई उस समय शनि में गुरु की दशा थी।

(*iii*) सबसे पहले शनि/शनि/शुक्र में 30 जनवरी, 1948 को महात्मा गांधी का निधन और उसके कारण पूना में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने मराठियों की हत्याऐं की, आर.एस.एस. के स्वयं सेवकों के साथ ज्यादती व उन्हें कारागार में डाला गया। देश में त्राहि-त्राहि मच गई।

(*iv*) 11 सितम्बर, 1948 को भारत ने निज़ाम हैदराबाद पर कब्जा किया जिसका श्रेय सरदार बल्लभ भाई पटेल को जाता है। शनि में गुरु के अंतर ने पं. जवाहरलाल नेहरू को हम से छीना, उधर श्री लाल बहादुर शास्त्री को भारत का प्रधानमंत्री बनाकर भारत को युद्ध में पाकिस्तान पर विजय दिलवाई।

शनि महादशा एवं बुध महादशाऐं 1982 तक चली जिसमें भारत के सामने एक बार चीन से, दो बार पाकिस्तान से युद्ध, लाल बहादुरशास्त्री की मृत्यु, बांग्लादेश की सहायता, एमरजैन्सी जैसी घटनाएं अवश्य हुई परन्तु भारत उन्नति करता गया तथा यश मान प्राप्त होता गया। *केतु महादशा में अच्छी घटनाऐं कम व दुर्घटनाऐं अधिक हुई।*

(*i*)	8-11-1982	सौराष्ट्र में साइक्लॉन (200 मील प्रतिघण्टा) जिसमें भारी जान-माल की हानि।
(*ii*)	1983	पंजाब में खालिस्तान की माँग को लेकर अकाली दल का विद्रोह (ऐजीटेशन)।
(*iii*)	2 जुलाई 1983	प्रथम 235 मैगावाट का न्यूक्लियर पावर स्टेशन कलपक्कम की स्थिति बिगड़ गई।
(*iv*)	4 सितम्बर 1984	इनसैट आइ. बी. का फेल होना।
(*v*)	5-4-1984	स्काड्रन लीडर राकेश शर्मा भारत का प्रथम स्पेसमैन बना जो रूस द्वारा छोड़े गए सोयज़ टी-11 में अंतरिक्ष में गया।
	5-6-1984	ब्लू स्टार आपरेशन पंजाब में स्वर्ण मंदिर से आतंकवादियों को सेना ने खदेड़ा।
	7-6-1984	दिल्ली व श्रीनगर में खून खराबा।
	5-7-1984	इण्डियन ऐयरवेज की बस का अपहरण।
	26-8-1984	इण्डियन एयरलाइंस का बोइंग 737, 68 यात्री तथा 6 क्रू के सदस्यों का अपहरण करके लाहौर ले जाया गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

25-9-1984	सेना स्वर्ण मंदिर से वापिस बुलाई गई। अकाल तख्त की मरम्मत पूरी कर दी गई।
31-10-1984	को इंदिरा गांधी की हत्या। सारे देश में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सिक्खों की हत्याऐं कीं।
3-11-1984	भोपाल में गैस के फैलने से 2500 व्यक्ति मारे गए व सैंकड़ों घायल हुए।
14-12-1984	प्रथम मिग 27 एयरक्राफ्ट एच.ए.एल. उड़ाया गया।
10-8-1986	जनरल ए.एस. वैद्य जो ब्लू स्टार आपरेशन के समय चीफ ऑफ आरमी स्टॉफ थे को गोली मारकर हत्या कर दी गई।
11-5-1984	पंजाब में राष्ट्रपति शासन।

ग्रहों की स्थिति भारत की सीमाओं को लेकर लगातार परेशानी, आंतरिक क्लेश आदि घटनाएं दिखाती हैं, साथ ही राजयोगों के फलस्वरूप चहुं ओर प्रगति भी दिखा रही हैं। भूतकाल में घटी सभी घटनाओं की चर्चा करना इस पुस्तक में संभव नहीं है। आगे इस कुण्डली को लेकर कुछ उदाहरण दिये जाएंगे।

(आ) गणतंत्र दिवस की कुंडली

कुंडली 12 दिनांक 26 जनवरी, 1950, 10-18 प्रातः

ल. 11/12°-44′
सू. 9/12°-30′
चं. 0/12°-35′
मं. 5/16°-14′
बु. 8/25°-31′
बृ. 9/13°-15′
शु. 9/20°-45′
श. 4/25°-40′
रा. 11/16°-35′

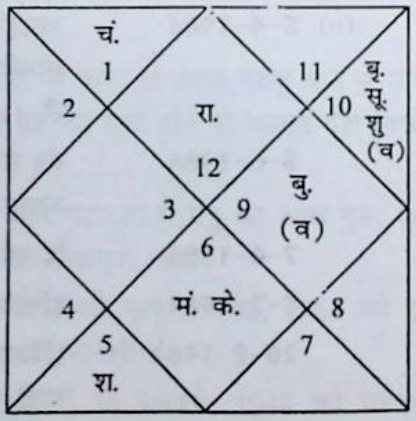

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केतु महादशा भोग्य 0 वर्ष 4 दिन मास 22 दिन

केतु महादशा 19-6-50 तक	चंद्रमा 19-6-1986
शुक्र 19-6-70 तक	मंगल 19-6-1993
सूर्य 19-6-76	राहु 19-6-2011 तक
	वृ. 19-6-2027 तक

पीछे चर्चित दोनों कुण्डलियों के आधार पर हम भारत के भविष्य में होने वाली घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

राष्ट्र की साधारण स्थिति, जनता की सुख-दुख के विषय में जानकारी, सरकार की नीतियों आदि का ज्ञान स्वतंत्रता दिवस की कुंडली से जाना जा सकता है। विशेषतया लोकसभा/राज्यसभा की गतिविधियाँ, चुनाव व लोकसभा द्वारा पारित नियम, लोकसभा भंग होना आदि के लिए गणतंत्र दिवस की कुंडली से फलित किया जा सकता है।

6.15 हत्याऐं: राजनीतिक नेताओं की हत्याऐं, सरकार में परिवर्तन, रेल दुर्घटना तथा ग्रहों के गोचर का प्रभाव

सूर्य विधि दिनांक 17 अगस्त, 1995 प्रातः 9-28 प्रातः

ल. 5/06°-35′	सू. 4/00°-00′	चं. 0/19°-18′
मं. 5/22° 33′	बु. 4/18°-33′	बृ. 7/12°-02′
शु. 3/28°-57′	श. 10/29°-30′	रा. 6/04°-52′

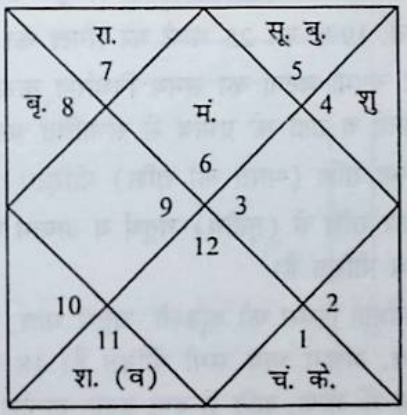

नोट–1. रेल दुर्घटना फिरोज़ाबाद के पास हुई यदि वहाँ की सूर्यविधि बनाऐ तो लग्न कन्या लग्न ही आता है।

2. शनि मीन राशि से वापिस 10 अगस्त 1995 को कुंभ में आ जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुंडली का विवेचन

(*i*) लग्न मंगल से पीड़ित है, जो क्रूर ग्रह, तृतीयेश व अष्टमेश है।

(*ii*) लग्नेश द्वादश भाव में द्वादशेश सूर्य के साथ तथा षडस्थ शनि (व) से पीड़ित है।

(*iii*) चंद्रमा केतु के साथ अष्टम भाव में शनि और मंगल से पीड़ित है।

(*iv*) अष्टम भाव अत्यन्त पीड़ित है।

(*v*) तृतीय भाव शनि से दृष्ट, तृतीय का कारक बुध (संचार, यातायात) भी पीड़ित है।

(*vi*) चतुर्थ भाव तथा चतुर्थेश दोनों पीड़ित हैं। शुक्र (कारक) शनि (व) से पीड़ित, नवांश में उच्च का परंतु पीड़ित है। (कुंडली में वक्री शनि की शुक्र पर दृष्टि है।)

(*vii*) सप्तम भाव व सप्तमेश, सप्तम का कारक सभी पीड़ित है।

(*viii*) दशमेश बुध तथा दशम का कारक (सूर्य) भी पीड़ित है।

इस मास में ग्रहों के राशि/नवांश/नक्षत्र आदि का परिवर्तन

(*i*) 18 अगस्त, 1995 को प्रात: 5-52 बजे शुक्र ने सिंह में प्रवेश किया।

(*ii*) 24 अगस्त, 1995 को 20-45 घण्टे पर बुध का कन्या में प्रवेश।

(*iii*) 28 अगस्त, 1995 को 25 घण्टे पर मंगल का तुला में प्रवेश।

(*iv*) गोचर का चंद्रमा घटना का समय निर्धारण करता है। कुंडली में पीड़ित भावों व ग्रहों के प्रभाव से संभावित घटनायें हुईं–

(क) कन्या राशि (भारत की राशि) पीड़ित।

(ख) मकर राशि से (तृतीय) चतुर्थ व अष्टम व नवम व दशम भाव पीड़ित है।

(ग) स्वतंत्रता दिवस की कुंडली, चतुर्थ भाव, पंचम भाव, षष्ठ भाव, अष्टम भाव सभी पीड़ित हैं। 18 तारीख को शुक्र सिंह में आया, शनि से दृष्ट हुआ, लग्नेश बुध का पीड़ित होना। 24 तारीख को बुध, द्वितीयेश व पंचमेश कन्या में प्रवेश कर पीड़ित हो गया। मंगल का तुला में प्रवेश (28 ता. को) मकर राशि तथा स्वतंत्रता दिवस के लग्न को भी पीड़ित कर दिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ घटनाओं की कुण्डलियों का अध्ययन

(*i*) रेल दुर्घटना

19/20 अगस्त, 1995 2 घ. 55 मिनट प्रातः शनिवार/रविवार को पुरुषोत्तम एक्सप्रेस व काकीनाड़ा एक्सप्रैस की टक्कर हुई।

(क) **सूर्य विधि** के द्वादश भाव में शुक्र (वाहन का कारक) का 18 अगस्त को प्रवेश और सूर्य व शनि से पीड़ित होना, उस ही दिन शुक्र व मंगल ने नक्षत्र बदले।

(ख) चतुर्थ भाव तथा तृतीय भाव मंगल व शनि से पीड़ित।

(ग) शनि व मंगल दोनों एक दूसरे से षडाष्टक में। भाद्रपद मास में पाँच शनिवार।

(घ) अष्टम भाव में चंद्रमा तथा केतु उन पर षष्ठेश शनि तथा मंगल की दृष्टि, तृतीय भाव व वहाँ स्थित चतुर्थेश गुरु, द्वादश भाव में अवस्थित लग्नेश (बुध) द्वादशेश (सूर्य) तथा द्वितीयेश, नवमेश शुक्र (वाहन का कारक) पर भी शनि की दृष्टि।

(ङ) संघटा चक्र में राहु से कुंभ राशि तथा वृष का वेध हो रहा है।

संघट चक्र

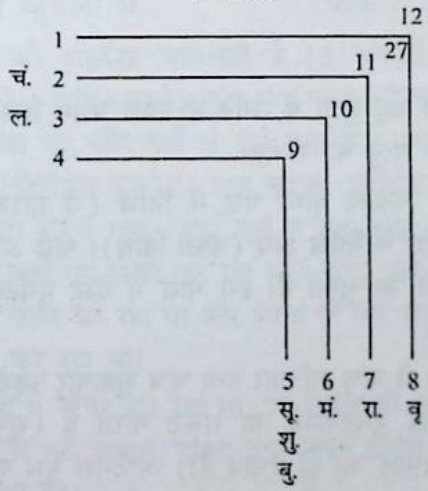

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपरोक्त ग्रह स्थिति जिसकी चर्चा पहले भी कर चुके हैं, वह सभी रेल दुर्घटना की संभावना बताते हैं। सूर्य, चंद्रमा, लग्न, लग्नेश व अष्टम भाव सभी पीड़ित होना सामुहिक मृत्यु दिखाता है।

दुर्घटना के दिन की कुण्डली में तृतीय भाव, तृतीयेश (सूर्य) लग्नेश व चतुर्थेश (बुध), पंचमेश, द्वादशेश (शुक्र) सभी पीड़ित हैं। चंद्रमा ने 20 अगस्त को ही (5 बजे प्रातः) मृगशिरा में प्रवेश किया।

(*ii*) **सत्ता परिवर्तन/नेता का परिवर्तन**

24 अगस्त, 1995 को आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री एन.टी. रामाराव को तेलगू देशम पार्टी की अध्यक्षता तथा मुख्यमंत्री आंध्र प्रदेश सरकार के पद से पदच्युत होना पड़ा। उनको हटाने में उनके दामाद श्री चंद्रबाबू नायडू का हाथ रहा। (कन्या राशि में बुध ने प्रवेश किया और मंगल से युति की और यह घटना हुई।)

(*iii*) **किसी राजनेता की मृत्युः** (31-8-1995 को 14 घंटे पर) श्री एन. टी. रामाराव को अपना त्यागपत्र देते ही दिल का दौरा पड़ गया।

(*iv*) **राजनेता/राजप्रमुख की हत्याः** (31 अगस्त, 1995 17-07 बजे चंडीगढ़) पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार बेअन्त सिंह की एक बम विस्फोट में मृत्यु।

ज्योतिषीय योग

(क) मंगल व राहू तुला में, शनि से नवम पंचम स्थिति किसी प्रमुख नेता की मृत्यु का संकेत।

(ख) चंद्रमास भाद्रपद कृष्ण पक्ष में **तिथि** (दो द्वादशी) **वृद्धि** तथा शुक्ल पक्ष में **तिथि क्षय** (षष्ठी तिथि)। पीछे अध्यायों में इसकी चर्चा की जा चुकी है। इस मास में ऐसी दुर्घटना की संभावना होती है।

(ग) इस मास में पांच शनिवार तथा पांच शुक्रवार पड़ते हैं जो पुनः इस प्रकार की दुर्घटनाओं का संकेत करते हैं (सूर्य विधि दिनांक 17-8-1995 का ही प्रभाव है।) अष्टमेश बुध दशमेश मंगल के साथ कन्या लग्न में आया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(घ) सूर्य विधि में शनि/मंगल का षडाष्टक, मंगल/केतु का षडाष्टक, मंगल राहु द्विर्द्वादश, शनि/राहू नव पंचम तथा अष्टम भाव का पीड़ित होना।

दशमेश, बुध, सूर्य राजा का कारक, चंद्रमा अष्टम में पीड़ित, गुरु (पंजाब) का पीड़ित होना। तुला राशि में वक्री शनि की दृष्टि से मंगल (आंध्र), मघा में शुक्र एवं सूर्य पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र में (यह दोनों नक्षत्र आंध्र प्रदेश को दर्शाते हैं) में बुध जिन पर शनि (व) की दृष्टि है। कूर्म चक्र में *आश्लेषा, मघा व पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र* आंध्र प्रदेश को दर्शाते हैं। इसलिए कर्क (हैदराबाद) व सिंह राशि को आन्ध्रप्रदेश का लग्न माने तो

(अ) कर्क से दशम भाव पर (तुला से) मंगल की दृष्टि, दशमेश मंगल शनि व राहु से पीड़ित।

(ब) सिंह से दशम भाव पर मंगल की अष्टम दृष्टि, दशमेश शुक्र सूर्य के साथ शनि से दृष्ट।

नोटः सूर्य विधि में कर्क तथा सिंह दोनों से अष्टम पीड़ित है। कर्क से अष्टमेश शनि त्रिकोणेश व दशमेश मंगल से संबंध है तथा दशम भाव पर दृष्टि दे रहा है वरना षडाष्टक योग तो कुंडली में था ही। सिंह से अष्टमेश गुरु, दशमेश शुक्र को और दशम भाव को देख रहा है।

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली में

शुक्र में चंद्रमा की अंतर्दशा चल रही है (8 जनवरी, 1994 से 8 सितम्बर, 1995 तक थी।) शनि (वक्री) कुंभ से (भारत की कुंडली के दशम भाव से) गोचर कर रहा था, और वहाँ से सूर्य चतुर्थेश (राजा का कारक), शनि (दशमेश), बुध (द्वितीयेश पंचमेश) तथा चंद्रमा (तृतीयेश) जो तृतीयस्थ है, को दृष्टि दे रहा था। चतुर्थ भाव (जहाँ सूर्य व बुध तथा शुक्र गोचर कर रहे थे), सप्तम भाव (जहाँ गुरु गोचर कर रहा था), षष्ठ भाव, जहाँ अष्टमेश गुरु बैठा है (जहाँ राहु गोचर कर रहा था और घटना के दिन मंगल भी आ गया था) को शनि पीड़ित कर रहा था।

मंगल कन्या/तुला में गोचर कर रहा था, जो भारत की कुंडली के पंचम व षष्ठ भाव है। जहाँ से वह अष्टम, द्वादश तथा नवम द्वादश व लग्न (तुला से) को पीड़ित कर रहा था।

राहु तथा केतु छठे व द्वादश भाव को प्रभावित कर रहे थे। षष्ठ भाव में अष्टमेश गुरु पर से राहु व मंगल दोनों गोचर कर रहे थे। सूर्य, बुध तथा शुक्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थ से दशम पर दृष्टि दे रहे थे। दशम से अष्टम में मंगल का गोचर। 24 अगस्त को चंद्रमा कुंडली के चंद्रमा पर से (कर्क में) गोंचर कर रहा था तथा 31 अगस्त को तुला में, कुंडली के अष्टमेश गुरु व षष्ठ भाव पर से गोचर कर रहा था। उसी ही दिन सूर्य मघा से पूर्व फाल्गुणी में प्रवेश किया।

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली में घटना के दिन मंगल की नवम पर दृष्टि, अष्टमेश गुरु, शनि, मंगल तथा राहु से पीड़ित, दशम भाव में शनि का गोचर व सूर्य की दृष्टि आदि उपरोक्त दोनों मुख्यमंत्रियों के लिए घातक स्थिति दर्शाते हैं। तृतीय भाव प्रांतों का माने तो दशम भाव (कर्क से) मेष राशि केतु, शनि तथा मंगल से पीड़ित, मुख्यमंत्री के लिए अशुभ।

(ङ) 31 अगस्त, 1995 को सायं 5 बजकर 7 मिनट पर चंडीगढ़ का मकर लग्न उदय हो रहा था, जिससे दशम भाव में राहु तथा मंगल शनि से पीड़ित थे। दशमेश शुक्र तथा दशम भाव का कारक सूर्य, शनि से पीड़ित। अष्टमेश सूर्य व दशमेश शुक्र दोनों अष्टम भाव में पीड़ित थे।

उपरोक्त ग्रह स्थितियाँ किसी दुर्घटना के कारण सरकार में परिवर्तन व विशिष्ट व्यक्ति के शोक में झण्डा झुकना (राजशोक) का इशारा करती है।

(*v*) **रैंट कंट्रोल एक्ट/हड़ताल**

सूर्यविधि के चतुर्थ भाव, कारक शुक्र, चतुर्थेश गुरु के पीड़ित होने से इस एक्ट के पास होने में बाधा व हड़ताल हुई दिल्ली के दुकानदारों ने 25 (बुध के कन्या में प्रवेश व मंगल से युति) से 28 (मंगल का कन्या से तुला में जाना) अगस्त तक हड़ताल की।

(*vi*) **आंध्रप्रदेश की नई सरकार शपथ ग्रहण**

1 सितम्बर, 1995 को 12.16 मध्यान्ह में चंद्रबाबू नायडू ने शपथ ली तथा दस एम.एल.ए लेकर सरकार बनाई।

निष्कर्ष/घटनाओं के ज्योतिषीय कारण

उपरोक्त सूर्य विधि (17-8-1995) की चर्चा से राशियों, भावों, सूर्य प्रवेश, ग्रहों की स्थिति, तिथियों की क्षय/वृद्धि, भास में पंचवार होना (किसी वार का पांच बार होना) आदि पूर्व चर्चित योगों की सार्थकता दर्शाना था। इस प्रकार के योगों के बनने पर भूस्खलन, बाढ़, दुर्घटनाएं आदि का होना संभव है। ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि, एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र में प्रवेश, अस्त होना, मन्दगामी/शीघ्रगामी होना, अस्त व उदय होना, वक्री/मार्गी होना, किसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभाशुभ घटना का होना, ऋतु में परिवर्तन तापमान में परिवर्तन आदि की ओर इंगित करता है। ज्योतिषी को उपरोक्त बिन्दुओं का विचार करने से भविष्यवाणी करने में बहुत सहयोग प्राप्त होता है। अधिकतर यह योग/ग्रह स्थिति में ही आकाश में पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं के कारण पाये जाते हैं। पूर्व अध्यायों में भूकम्प, वर्षा, आकाश, बाढ़, रेल/रोड वायुयान दुर्घटनाओं की चर्चा में भी इन योगों की सार्थकता दिखाई गई है।

समस्या यदि कोई विशेष है तो घटना स्थल के विषय में जानने की है।

हालांकि पीछे राशियों तथा ग्रहों से प्रतिनिधित्व स्थानों की चर्चा भी व उदाहरण भी दिए जा चुके हैं। परन्तु फिर भी पूर्ण सफलता नहीं मिल पाई है। अभी और विचार की आवश्यकता है। इस विषय पर कूर्म चक्र का प्रयोग करेंगे जो अधिक सहायक है।

6.16 कूर्म चक्र

(क) घटना स्थल के विषय में जानकारी के लिए गहन अध्ययन की आवश्यकता है। आज अन्य विषयों में दक्ष जैसे डॉक्टर, इन्जीनियर, एम.सी.ए., आई.ए.एस. बहुत व्यक्ति ज्योतिष सीख चुके हैं और भारी मात्रा में प्रतिवर्ष ज्योतिष कक्षाओं में प्रवेश पा रहे हैं। संभव है उनमें से कुछ ज्योतिष के शोध कार्य में भी लग जाऐं और लुप्त सूत्रों व उनके अर्थों का उपलब्ध करा पाऐं। ऋषियों ने कूर्म चक्र की चर्चा की है। यहाँ नक्षत्रों का प्रयोग करके (भारत ही का उदाहरण लेंगे) घटना स्थलों का पता लगाया जाता है। क्रूर ग्रहों का गोचर जिन नक्षत्रों पर होता है वहाँ के प्रदेशों में कष्ट और सौम्य ग्रहों का गोचर सुभिक्ष दर्शाता है। सबसे पहले जिस क्षेत्र के विषय में भविष्यवाणी करनी हो वहीं के भूगोल, ऋतुएं एवं वातावरण (जो नैसर्गिक है) का ज्ञानार्जन आवश्यक है।

नोट: सर्वतोभद्रचक्र से भी शतप्रतिशत सही फलित किया जाता है। उसका प्रयोग पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार बेअन्त सिंह के विषय में करके देखा तो सही उतरा।

पं. हरदेव शर्मा शास्त्री के विश्वविजय पंचांग सन् 1995 सम्वत् 2052 के पृष्ठ 45) पर लिखा था पंजाब तथा हिमाचल का भविष्य शीर्षक में प्रकाशित था: *मास के प्रथमार्ध में सरदार बेअंत सिंह, मुख्यमंत्री पंजाब को अधिक भय, उन्हें अपनी सुरक्षा व्यवस्था को बढ़ाना चाहिए और सतर्क रहना चाहिए।*

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) पृथ्वी की स्थिति

शृंग प्रदेश में तैंतीस करोड़ देवता वास करते हैं, सुमेरू पर्वत, पृथ्वी के मध्य में स्थित है, इस प्रकार आठ पर्वत, महासागर और द्वीप इस पृथ्वी पर हैं। वराह भगवान ने पृथ्वी को अपने जबड़े पर उठा रखा है जो ऐसा प्रतीत होता है जैसे विशालकाय भालू शेष नाग के मस्तक पर एक मच्छर सा बैठा प्रतीत होता है।

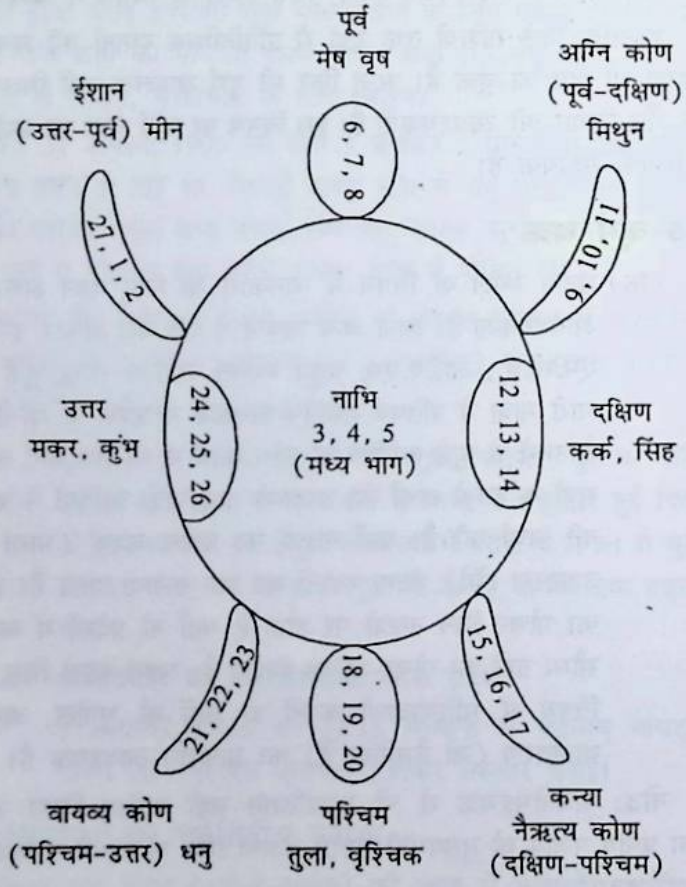

(कवि नरपति जयचरिया की पुस्तक से लिया गया है)

शेष नाग देवता कुंडली मारकर कछुवे की कमर पर बैठे हैं। शेष नाग कमल की डंडी सा प्रतीत होता है। कूर्म की आधी पूंछ, दोनों कोख, एक करोड़ तथा दस हजार योजन की जिव्हा तथा सात करोड़ योजन का मस्तक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दोनों नेत्रों के मध्य एक करोड़ योजन की दूरी है। दो करोड़ योजन का मुख तथा चार करोड़ योजन के पैर तथा नख से उंगली का माप दस योजन है। यमल शास्त्र में कूर्म का ऐसा विवरण उपलब्ध है।

इसको किसी भी देश व स्थान व भवन के नक्शे पर रख दें तो उसके सभी स्थानों का इसमें बैठाए गए नक्षत्रों से पता चल जाएगा।

6.17 राज्य, क्षेत्र, शहर आदि का नक्षत्रों द्वारा परिचय

(i)	नाभि	नक्षत्र कृत्तिका (3), रोहिणी (4) तथा मृगशिरा (5),
	क्षेत्र/राज्य	पश्चिमी उत्तप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, विन्ध्य प्रदेश, यवनों का प्रदेश तथा सरस्वती नदी का क्षेत्र।
	शहर	अयोध्या, हस्तिनापुर, कुरु, मथुरा, पाण्डु, कपिथला, पांचाल, साकेत, मिथिला, चम्पा, कौशंबी, अहिछत्र, गया, मेखला, कन्याकुब्ज, प्रयाग, अलवर (सलवा) उज्जिहान (वदायू व कानपुर का क्षेत्र), मरूभूमि (राजस्थान, रेगिस्तान)।
(ii)	पूर्व	नक्षत्र आर्द्रा (6), पुनर्वसु (7) तथा पुष्य (8)
	स्वामी	सूर्य।
	क्षेत्र/राज्य	आसाम, पंचराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, पूर्वी उत्तर प्रदेश, बंगाल का कुछ भाग, नेपाल, सहारा रेगिस्तान।
	शहर	काशी, अयोध्या, उत्कल, मिथिला, पौंड्र, गौड, भाद्र, हस्तिबंध, कामराओं, मगध, वर्धवान, मेखला, चंदापुर।
(iii)	अग्निकोण (दक्षिण पूर्व)	नक्षत्र-आश्लेषा (9), मघा, (10) पू. फा (11)।
	स्वामी	शुक्र
	क्षेत्र/राज्य	विंध्याचल का दक्षिणी भाग, आंध्र प्रदेश, विदर्भ, कावेरी तथा महेन्द्रा नदियों का क्षेत्र।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	शहर	अंग, बंग, कलिंग, कौशल, उड़ीयाम, वराड़, गोवर्धन, चित्रकूट, कोल्हापुर, चौल, दण्डाकराण्यम, कांची।
(*iv*)	**दक्षिण**	उत्तर फाल्गुनी (12), हस्त, (13) तथा चित्रा (14)
	स्वामी	मंगल
	क्षेत्र/राज्य	केरल, श्रीलंका, मलाया, महाराष्ट्र (का कुछ भाग), कर्नाटक, सिंघल द्वीप, महेन्द्र, ताप्ती, भागीरथी आदि नदियाँ तथा त्रिकूट, मलय, श्रीपर्वत, नीलगिरि पर्वतों का श्रेय तथा दक्षिणी महासागर।
	शहर	कोंकण (गोआ के पास), वनवासी, नासिक, दुर्दर, किष्किधा, उज्जैन, मरूकच।
(*v*)	**नैऋत्य कोण** (दक्षिण-पश्चिम)	नक्षत्र स्वाति (15), विशाखा (16), अनुराधा (17)
	स्वामी	राहु
	क्षेत्र/राज्य	इन्डस (सिंध) द्राविड़ अरब, यवन, अफगान बलोच आदि, बरबरा, किरात, तमिलनाडु, सौराष्ट्र, गुजरात, पल्लव, सिन्धु, मरुप्रदेश।
	शहर	चेनचू, कम्भोज, कपिल, हेमगिरी, नासिक, मालवा, पर्याली, प्रकाश, कोकण-खेतपुर, द्वारिका, काठियावाड़।
(*vi*)	**पश्चिम**	नक्षत्र ज्येष्ठा (18), मूल (19), पूर्व आषाढ़ (20)
	स्वामी	शनि
	क्षेत्र/राज्य	संसार का पश्चिमी भाग (अपरान्तक), पारावत, मारुत, कच्छ, अवन्ति, पूर्व मालवा, पाराशर, बर्बद्वीप, सौराष्ट्र, सैन्धेव, स्त्री, राज्य, सकदेश, पश्चिम पंजाब, म्लेच्छ क्षेत्र, पश्चिमी महाराष्ट्र, पश्चिम एशिया।
	शहर	मनिमान, मेधवान पर्वत, सिंध तथा मुलतान आदि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*vii*)	वायव्य (उत्तर पश्चिम)	नक्षत्र-उ. आ. (21), श्रावण (22), धनिष्ठा (23)
	स्वामी	चंद्रमा
	क्षेत्र/राज्य	गुजरात, यमुना, मरूप्रदेश, वराट, रेतीला क्षेत्र, (समुद्र के समीप), मेरू, श्रिंग, नीची पहाड़ी के क्षेत्र, पश्चिमी पाकिस्तान (कुछ भाग), हिमालय (उत्तर-पश्चिम) भारत के प्रांत)।
	शहर	चंडीगढ़, जलंधर (उसके आसपास का क्षेत्र), कुल्लू, श्रीनगर, काश्मीर, स्त्री राज्य (गुरु, नानकदेव स्त्री राज्य में गये थे तथा वहाँ का चित्र अमृतसर में गुरुद्वारा खडूर साहिब में उपलब्ध है।)
(*viii*)	उत्तर	नक्षत्र-शतभिषा (24), पूर्वभाद्रा (25) तथा उत्तरभाद्रा (26)।
	स्वामी	बुध
	क्षेत्र/राज्य	कुकछी, बर्फ के ढके क्षेत्र, नेपाल, मलेचछ राज्य तथा खस, केदार मंडल, चपटी नाक वाले लोगों का क्षेत्र, अरूणाचल प्रदेश, नागालैंड, मालवा, काश्मीर का उत्तरी भाग, भारत के अन्य उत्तरी क्षेत्र, कैलाश, कणकान प्रदेश, मेरुगिरी, क्रौंच देश।
	शहर	गुन्जन, मथुरा, खुरसन, श्रीनगर, काठमांडू।
(*ix*)	ईशान (उत्तरी पूर्वी)	नक्षत्र-रेवती (27), अश्विनी (1) तथा भरणी (2)।
	स्वामी	गुरु
	क्षेत्र/राज्य	अश्वचक्र, गजकर्ण, काश्मीर, चीन, लद्दाख, रूस, तिब्बत, नेपाल, सिक्किम, ब्रह्मपुत्र नदी का क्षेत्र तथा उत्तरी-पूर्वी भारत।
	शहर	हरिद्वार, कुरूक्षेत्र, हस्तिनापुर, श्रीकंठ, गांधार।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6.18 गोचर के ग्रहों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव

(*i*) बुध का गोचर तथा राजनीतिक घटनाएं

(क) मेष से मीन में वक्र गति से प्रवेश करने, से सत्तारूढ दल के लिए भारी, दो देशों के बीच तनाव, काश्मीर, दिल्ली और अन्य बड़े शहरों के लिए कष्टप्रद, मुस्लिम संस्थाओं, सीमाओं पर विस्फोट आदि द्वारा, वायु दुर्घटना, जान व माल का नाश।

नोट: 22 अप्रैल, 2004 को बुध (व) ने मीन में प्रवेश किया और 30 अप्रैल को मार्गी होकर मेष में पुन: 9 मई 2004 में प्रवेश हुआ।

परिणाम: केन्द्र सरकार के लिए यह समय कष्टप्रद रहा चुनाव हुए और सरकार गिरी।

(ख) बुध का पुष्य नक्षत्र में प्रवेश (जनता को भय)

(ग) पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र में बुध का प्रवेश (झगड़ा, राजाओं/सत्तारूढ़ दलों में टकराव, सीमा विवाद, सीमा क्षेत्र में कोई झगड़ा।)

(घ) बुध (वक्री) मघा नक्षत्र में जनता में भय।

(*ii*) मंगल का गोचर

पुष्य नक्षत्र में मंगल का गोचर (सत्तारूढ़ दल की पकड़ में ढील/कमजोर/सत्तारूढ़ दल) का हटना। मंगल एक राशि में चवालिस दिन (लगभग) तक रहता है परन्तु कभी-कभी छ: महीने व उससे अधिक भी रहता है। जैसे 1999 में जनवरी से अगस्त तक तुला राशि में रहा जिस समय में कारगिल की लड़ाई हुई। मंगल की असाधारण स्थिति के कारण यह घटना हुई। 4 फरवरी 2014 को मंगल तुला में प्रवेश कर। मार्च को वक्री हुआ, तथा 26 मार्च को वापिस कन्या राशि में गया, 20 मई को मार्गी हुआ पुन: 15 जुलाई को तुला राशि में प्रवेश किया। जहाँ 4 सितम्बर, 2014 तक रहा।

जिस समय में केंद्र सरकारें व दिल्ली सरकार बदली।

(*iii*) शनि तथा मंगल की परस्पर स्थिति

(क) **द्विर्दादश स्थिति**-भयावना वातावरण, शांति वार्ता का विफल होना।

(ख) **शनि तथा मंगल की युति एक ही राशि में**–अग्नि कांड, वाहन दुर्घटना, आतंकवादी हमले, विश्व शांति को भय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ग) **शनि तथा मंगल की समीपस्थ स्थिति**–गड़बड़ियाँ, झगड़े एजीटेशन, कैबिनेट/राजसभा में परिवर्तन असंतोष आदि उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, आसाम, श्रीलंका, पूर्वी क्षेत्र आदि प्रभावित होंगे। मूल्यों में वृद्धि के कारण जनता में असंतोष।

नोटः यह योग अप्रैल से मध्य जून 2004 में मिथुन राशि में था। केन्द्र सरकार में परिवर्तन तथा कई प्रांतों की सरकारें बदलीं (चुनावों के कारण)

(घ) शनि तथा मंगल की षडाष्टक स्थिति विश्व शांति को भय, दुर्घटनाओं, खून खराबा आदि का भय। मुस्लिम राष्ट्रों, अमेरिका, चीन, रूस आदि को कष्ट। कुछ राष्ट्रों में तनाव/झगड़े की स्थिति।

(ङ) शनि, मंगल की समसप्तम स्थिति–किसी विदेशी राष्ट्र के कारण तनाव, विदेशों में अशांति, दुर्घटनाएं, आतंकवाद में वृद्धि और भय का बना रहना, जान व माल की हानि आदि की संभावना।

प्राकृतिक प्रकोप से नाश, बाढ़ादि में क्षेत्रों का डूबना, भूकम्प तथा राजनीतिक उथल पुथल की संभावना।

6.19 तिथि के महत्त्व का उदाहरण

(अ) तिथि तथा वार का योग

(*i*) **यदि शनिवार को नवमी तिथि पड़े**–शत्रु राष्ट्रों/विपक्षियों के साथ टकराव/झगड़ा, नेताओं को कष्ट, सीमाओं की सुरक्षा को लेकर सरकार की चिन्ता।

(*ii*) **तिथि क्षय**–सत्ता परिवर्तन, किसी प्रसिद्ध नेता का पदच्युत होना।

(क) प्रथम शुद्ध। श्रावण कृष्ण चतुर्थी (5 जुलाई, 2004) सोमवार, प्रथम (अधिक) श्रावण शुक्ल चतुर्दशी (30 जुलाई, 2004) शुक्रवार दोनों तिथियाँ क्षय थीं।

(ख) *आषाढ़ कृष्ण द्वितीय शुक्रवार* (4 जून, 2004) को भी तिथिक्षय।

श्रावण शुक्ल पक्षे च तिथि काऽपिक्षया भवेत्।
तदा वै कार्तिके मासे छत्र भंग प्रजायते॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि श्रावण शुक्ल नक्ष में तिथि क्षय हो, संसार में कष्ट रहे, झगड़े, हलचल, सत्ता परिवर्तन, राजा का बदलना कार्तिक मास में संभव हो। (महाराष्ट्र व अमेरिका में चुनाव हुए।)

(*iii*) *श्रावण कृष्ण नवमी* को शनिवार (10 जुलाई 2004)

श्रावण नवमीयुक्ता शनि सन्तानकारकः।
छत्र भंग विजानीयादाश्विनानते न संशयः॥

अचानक किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु, जिससे सत्ता परिवर्तन हो! ऐतिहासिक परिवर्तन अश्विन मास के अन्त व कार्तिक मास में।

(*iv*) *भाद्र शुक्ल चतुर्थी यदि शनिवार को पड़े*

किसी विशिष्ट व्यक्ति का मरण उसके उपरान्त कानून व्यवस्था बिगड़े और विद्रोह हो।

शनि भाद्रपदे शुक्ल चतुर्थी जायते।
देशभंगश्च दुर्भिक्ष स्वस्थस्योदरपूरणम्॥

नोटः 2 अगस्त, 2000 को यह योग था और उसके फलस्वरूप गुजरात में आए भूकम्प (265 जनवरी, 2001) को नहीं भुलाया जा सकता।

(*v*) अश्विन शुक्ल तृतीया यदि शनिवार/मंगलवार को पड़े, अग्निकांड आदि होने की संभावना होती है।

आश्विनेहि तृतीयायां यदि भौमः शनैश्चराः।
तदाग्नि प्रबलो भूम्पयामन दीनां महर्घता॥

नोटः यह स्थिति 20 सितम्बर, 2000 को थी।

(आ) ग्रहों के योग/युति

(*i*) *सूर्य, शनि, बुध*-प्राकृतिक प्रकोपों में वृद्धि।

(*ii*) *शुक्र का सूर्य के ऊपर से भ्रमण*-राजनीतिक मतभेद, कैबिनेट में परिवर्तन।

8/9 जून 2004 को शुक्र (वक्री) वृष में सूर्य से युति कर रहा था उस समय केरल तथा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री बदले।

(*iii*) *चतुर्ग्रही योग*–समस्याओं में वृद्धि, जानमाल की हानि, अकाल, बाढ़, दुर्घटनाओं आदि की संभावना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iv*) *मंगल, गुरु तथा सूर्य पर शनि की दृष्टि*–वायुयान दुर्घटना, राजनीतिक उथल-पुथल, प्राकृतिक आपदाऐं, जनता का आक्रोश, जानमाल व सम्पत्ति की हानि, राष्ट्रों के मध्य तनाव, मुस्लिम राष्ट्रों में अशांति, आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि सीमाओं पर तनाव।

(*v*) *मंगल तथा गुरु पर शनि की दृष्टि*–सीमाओं पर झगड़े, भूकंप, बादलों का फटना, भूस्खलन आदि से जनजीवन तथा संपत्ति का विनाश, वायु दुर्घटनाओं में वृद्धि।

(*vi*) मंगल, सूर्य, गुरु, बुध की युति–अचानक समस्याऐं, अग्नि काण्ड, शांति का भंग होना, आतंकवाद की घटनाऐं तथा भूकम्प।

नोटः 16 अगस्त, 2004 को सूर्य ने सिंह राशि में प्रवेश किया और चंद्रमा, मंगल, बुध तथा गुरु से युति की। शनि की उन पर दृष्टि थी। चंद्रमा के सिवाय सारे ग्रह 27 अगस्त, 2004 तक उस स्थिति में रहे।

एकराशौ यदा यांतिचत्वारः पंचखेचरः

महीं सर्वा रूधिरेण जलननवा

फलतः पृथ्वी जल में डूबे (अर्थात् अति वृष्टि) दुर्घटनाऐं, जन-धन संपत्ति की हानि।

(इ) अतिचारी तथा वक्री ग्रह

यदा क्रूर ग्रहों वक्रीहि अतिचारी सौम्यकः।

पीड़ा व्याधि भयं तत्र रदुर्भिक्षं राज्य विग्रहम॥

(*i*) *गुरु अतिचारी तथा शनि वक्री*

कहीं अकाल का भय, कानून व्यवस्था भंग, आवश्यक्र वस्तुओं के दाम ऊँचे, जनता में असंतोष व घबराहट, रोग का फैलना, राजनेताओं में टकराव, प्रगति में रूकावट, सरकार के कार्यकर्ता विफल।

(*ii*) *शुक्र अतिचारी तथा शनि वक्री*

युद्धादि भवति दुर्भिक्षं राज्ञां वैर परस्परम।

झगड़ों, सीमा पर सेना की लड़ाई (झगड़े) आदि का भय हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण

कुंडली 15

14/15-3-99 को 26 घंटे 50 मिनट पर दिल्ली की सूर्य विधि

ल. 8/26°-00′
सू. 11/00°-00′
चं. 9/12°-07′
मं. 6/18°-11′
बु. 11/08°-44′
बृ. 11/13°-03′
शु. 0/00°-45′
श. 0/07°-38′
रा. 3/28°-00′

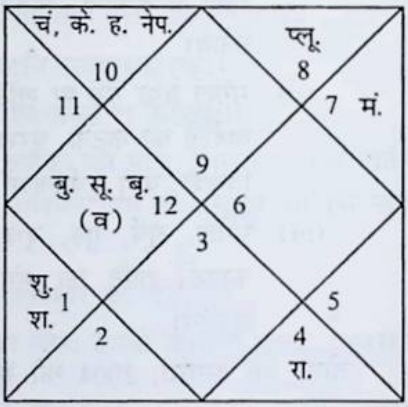

सूर्यविधि के (दिनांक 15 मार्च, 1999) समय में (एक मास में) ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन नीचे देखें:

(*i*)	18 मार्च, 1999	मंगल 19 घंटे, 10 मिनट पर वक्री हुआ।
(*ii*)	19 मार्च, 1999	बुध का अपोजीशन 24 घंटे 53 मिनट पर।
(*iii*)	20 मार्च, 1999	गुरु 27 घंटे, 26 मिनट पर अस्त हुआ और 19 अप्रैल 1999 को 13 घंटे 53 मिनट पर उदय हुआ।
(*iv*)	25 मार्च, 1999	बुध ने कुंभ राशि में 16 घंटे 52 मिनट पर प्रवेश किया।
(*v*)	27 मार्च, 1999	बुध का उदय होना।
(*vi*)	7 अप्रैल, 1999	शुक्र का वृष राशि में प्रवेश।
(*vii*)	10 अप्रैल, 1999	बुध ने मीन राशि में 24 घंटे 44 मिनट पर प्रवेश किया।

I. उपरोक्त कुंडली का विश्लेषण एवं संभावित घटनाऐं–

(क) लग्नेश व चतुर्थेश गुरु चतुर्थ में, नवमेश सूर्य (धर्म, धार्मिक संस्थाऐं, धार्मिक नेता, शिक्षक, उपदेशक), दशमेश अध्यक्ष (किसी संस्था का) राजा, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री आदि व सप्तमेश (अंतर्राष्ट्रीय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0.,In Public Domain. Digitization by eGangotri

मामले/समझौते आदि) के साथ बैठा है। चतुर्थ भाव आम जनता, राष्ट्रीय संपत्ति, भवन आदि व आंतरिक स्थिति का है।

(ख) शुक्र षष्ठेश व एकादशेश (स्त्री का कारक), पंचम भाव (योजना, सरकार के विचार, शिक्षा, धर्म, उत्सव, चरित्र आदि) में शनि द्वितीयेश व तृतीयेश के साथ अवस्थित है (तृतीय भाव पंचमेश व द्वादशेश सरकारी खजाना, भाषा, संचार, बातचीत आदि) पंचमेश (बुद्धि, विवेक, योजना) मंगल (सेना, पुलिस, आतंकवाद) की पंचम भाव व शनि शुक्र पर दृष्टि।

(ग) मीन राशि तीर्थ स्थान, विद्वानों का स्थान है।

I. धार्मिक गतिविधियाँ तथा धार्मिक स्थल/पर प्रभाव

(*i*) सत्य साई बाबा की दिल्ली यात्रा तथा प्रधानमंत्री से इण्डिया इन्टरनेशनल सेंटर लोधी रोड, दिल्ली में उनका मिलन।

दशमेश बुध (प्रधानमंत्री) तथा नवमेश सूर्य (संत, महात्मा, धार्मिक नेता, प्रचारक तथा सूर्य पुनः प्रधानमंत्री को दर्शाता है।), गुरु (धर्म का कारक) के साथ चतुर्थ स्थान मीन राशि (मनोरंजन का स्थान, अतिथि गृह, विद्वानों के विचार गोष्ठी का स्थान आदि) में अवस्थित है। गोचर का चंद्रमा धनु राशि यानि लग्न में भ्रमण कर रहा है।

(*ii*) 16 मार्च, 1999, सरदारनी जागीर कौर (प्रथम युवती 75 वर्षों के इतिहास में) श्री गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की अध्यक्षता चुनी गई। उस दिन चंद्रमा मीन राशि में था शुक्र (नारी) तृतीयेश (मतदाता) शनि के साथ पंचम में व पंचमेश (मतदान) मंगल से दृष्ट है। सप्तमेश बुध (नारियों/विपक्षी) नीच का लग्नेश गुरु तथा नवमेश (भाग्य, धर्म) सूर्य के साथ राजयोग बना रहे हैं तथा चतुर्थ में बैठकर दशम स्थान (अध्यक्ष पद) को देख रहे हैं। चतुर्थ भाव विपक्ष का होता है, उससे अष्टम में मंगल बैठा है। पंचम भाव (विचारधारा, योजन) में शुक्र (स्त्री) षष्ठेश व लाभेश को तृतीयेश शनि की युति साथियों का सहयोग व मंगल (पंचमेश द्वादशेष) की दृष्टि जो चतुर्थेश से अष्टम में बैठकर विपक्षी को परास्त कर रहा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*i*)	28 मार्च, 1999	*गढ़वाल चमोली रूद्रप्रयाग जिले में तथा टिहरी में 12 बजकर 35 मिनट मध्यान्ह को 6.8 रिक्टर स्केल का भूकम्प आया।* 27 मार्च को बुध (उदय हुआ था) एक धार्मिक क्षेत्र में यह घटना हुई। चंद्रमा सिंह तथा कन्या में गोचर कर रहा था।
(*ii*)	30 मार्च, 1999	पुन: 4 रिक्टर स्केल का भूकम्प आया भारतीय मौसम विभाग ने उन तीन दिनों में 29 झटके रिकार्ड किये थे।

भारत के भूकम्पीय क्षेत्र–भारत को पाँच क्षेत्रों में विभाजित किया गया है जहाँ सेसमिक गति हो सकती है। चमौली क्षेत्र में पाँच में से एक है जहाँ भूकम्प का जोर 8 रिक्टर स्केल या उससे अधिक हो सकता है। दिल्ली क्षेत्र चार (चतुर्थ स्थान) में आता है।

क्षेत्र प्रथम–हिमालय पर्वत के बाहरी भाग जिसमें दो बड़े भूकम्प कांगड़ा (1905), बिहार के साथ नेपाल की सीमा (1936) पर आये।

क्षेत्र द्वितीय–आन्तरिक रेखा जो नेपाल से गढ़ावाल होते हुए उत्तर पश्चिम में हिमालय प्रदेश में हिमालय की कम ज़्ची और अधिक ऊँची पहाड़ियों के मध्य। चमोली इस ही क्षेत्र में पड़ती है (उत्तरकाशी में बड़ा भूकम्प 1991 में आया था।) पिछले 120-125 वर्षों में चमोली ने आठ भूकम्प 6 या अधिक रिक्टर स्केल के देखे हैं।

श्री दत्तात्रे का मानना है–भारतीय प्लेट उत्तर/उत्तर-पूर्व को खिसक रही है, उसकी गति 5 सेन्टीमीटर प्रतिवर्ष है। इस गति के कारण तनाव पैदा होता है जो अधिक होने पर पहाड़ियों की सहन शक्ति को पार कर जाता है और भूकम्प आ जाता है।

उपरोक्त चर्चा में धर्म व धार्मिक स्थानों से संबंधित घटना को दर्शाना था। भूकम्प के नियमों के लिए पूर्व अध्याय में दिए गये सूत्र देखें।

घटनास्थल को इंगित करने में कूर्म चक्र का प्रयोग

पैरा 6.22 की सूर्य विधि में जो नक्षत्र पीड़ित है तथा उनसे प्रतिनिधित्व क्षेत्र पर विचार:

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्र	क्षेत्र	ग्रह	पीड़ित करने वाला ग्रह
स्वाति	नाशिक, द्वारिका	मंगल	शनि
धनिष्ठा	उत्तर-पश्चिम भारत, हिमालय	केतु	शनि व मंगल
श्रावण	उत्तर-पश्चिम	चंद्रमा	शनि, मंगल, केतु
उत्तरभाद्रा	उत्तरी भारत	बुध तथा गुरु	सूर्य
पूर्वभाद्रा	बर्फ से ढका क्षेत्र केदार मण्डल	सूर्य	–
अश्विनी	उत्तर पूर्वी भारत हरिद्वार का क्षेत्र	शनि तथा शुक्र	मंगल

6.20 प्रधानमंत्री की पाकिस्तान यात्रा तथा दिल्ली-लाहौर की बस का श्रीगणेश (16 मार्च, 1999)

दो देशों के मध्य सद्भावना की द्योतक रही उपरोक्त दोनों घटनाऐं।

सूर्यविधि का विश्लेषण (कुण्डली सं 15/पृष्ठ 262 पर) लग्न पीड़ित नहीं है, लग्नेश गुरु सप्तेश (अंतर्राष्ट्रीय संबंध समझौते/नीति) बुध तथा नवमेश (विदेश) सूर्य (राजा, सरकार) के साथ चतुर्थ में (वाहन, संसद-राज्यसभा, विपक्षी दल) दशमेश (राष्ट्र अध्यक्ष), इन तीनों पर कोई क्रूर दृष्टि नहीं। पंचम भाव (योजना, चिन्तन, विचार) में तृतीयेश (यातायात, सहयोग, आदान प्रदान, मार्ग) शनि तथा शुक्र (वाहन) षष्ठेश (शत्रु) अवस्थित हैं जिन्हें मंगल पंचमेश लाभ स्थान (यश) से देख रहा है। द्वादशेश होने से मंगल विदेशी नीति के अर्न्तगत व सेना की देखरेख में इस कार्य का होना दर्शाता है। अष्टम भाव में राहु कुछ बाधा दिखाता है। परन्तु लग्नेश की दृष्टि के कारण सरकार इसके लिए सावधान है।

इस घटना को सारे विश्व ने तथा सभी देशवासियों ने सराहा।

(अ) 24 मार्च, 1999 ब्रूसेल्स (बेल्जियम)

मकर राशि के क्षेत्र में आता है। गुरु 20 मार्च को 27 घण्टे 26 मिनट पर अथवा 21 मार्च को अस्त हुआ।

नाटो ने यूगोस्लाविया पर हवाई हमले किए, जैसे ही नाटो के वायुयान हवा में आए उनका धमाका कोसोवो की राजधानी प्रिस्ट्रीना में भी सुनाई दिया,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यूनाइटेड स्टेट्स के विशेष दूत रिचर्ड होलब्रूकस द्वारा युगोस्लाविया के राष्ट्रपति स्लोबदान मिलोसेविया को कोसोव में अलवनियन पर आक्रमण को बन्द करने के लिए बाध्य करने के अंतिम प्रयास में असफल रहने पर आक्रमण करने का आदेश दिया था।

मकर राशि ब्रूसेल्स की राशि केतु से, शनि से तथा मंगल से पीड़ित है। केतु (धर्म, जाति), मंगल (आक्रमण), शनि (वायु), हरषल, नेपच्यून से भी पीड़ित है। मंगल, शनि व राहु की परस्पर केन्द्र स्थिति ऐसी घटनाओं का इशारा करती हैं। तुला से दशम भाव तत्व राशि में जल/वायु तत्व ग्रह, राहु, अग्नि कारक मंगल जो मकर राशि (पृथ्वी तत्व) से सप्तम दृष्टि देकर पीड़ित कर रहा है का प्रभाव है।

(आ) 5-4-1999

नाटो ने यूगोस्लाबिया के हैड क्वार्टर को उड़ा दिया। वायु सेना तथा एंटी एयर क्राफ्ट रक्षा टुकड़ी बेलग्रेड में घुस गई और 20,0000 कोसोवा शरणार्थियों को हवाई जहाज में उठाया (3.5 लाख शरणार्थियों को कोसोवा से बाहर निकाल दिया गया था।)

25-3-1999

बुध पुनः मीन राशि से कुंभ राशि में 63 घंटे 52 मिनट पर में प्रवेश कर गया और 24 घंटे 19 मिनट पर उदय हो गया और स्थिति में परिवर्तन आ गया।

वायुयान दुर्घटना

26-3-1999 .

वायुसेना के दो वायुयान राजस्थान के गंगानगर तथा पंजाब में गिर कर टूट गए।

25 मार्च 1999 को बुध (वक्री) होकर कुंभ राशि में प्रवेश किया (16 घंटे 52 मिनट पर), चंद्रमा कर्क अष्टम में गोचर कर रहा था। मंगल 16 मार्च 1999 से वक्री लग्न को व चतुर्थ भाव को पीड़ित कर रहा था, तृतीयेश शनि (वायु) को पीड़ित कर रहा था। तृतीयेश शनि (वायु) का पीड़ित होना, शुक्र षष्ठेश (वायु तत्व राशि का स्वामी, वाहन का कारक), तुला वायु तत्व राशि, मिथुन वायुतत्व राशि, चतुर्थ व चतुर्थेश पीड़ित।

वायु दुर्घटना के योग–गुरु (आकाश), शनि वायु, तृतीय (यातायात) चतुर्थ वाहन, शुक्र (कारक), वायु तत्व राशि, यहाँ तृतीय भाव वायु तत्त्व राशि ही है, सभी पीड़ित है। चंद्रमा व सूर्य पीड़ित है। चंद्रमा व सूर्य पीड़ित, अष्टम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में राहु शनि व मंगल परस्पर केन्द्र में बुध (व) नवमी तिथि को कुंभ में प्रवेश किया यह सभी ऐसी दुर्घटना की संभावना दिखाते हैं।

अग्नि II परीक्षण के लिए छोड़ना (2000 कि.मी. दूरी तक जाने वाला)

11 अप्रैल, 1999 को 9-47 प्रातः को व्हीलर्स आइलैण्ड उड़ीसा के समुद्री तटा पर आई.आर.बी.एम. द्वारा छोड़ा गया। पाकिस्तान व यू.एस.ए ने अवश्य टिप्पणी की।

षष्ठभाव तथा एकादश भाव का स्वामी शुक्र पंचम भाव में शनि से युत व मंगल से दृष्ट इस प्रयोग के योग हैं। इस प्रयोग की सफलता भारत का सम्मान, सप्तमेश, दशमेश बुध व नवमेश सूर्य तथा लग्नेश का चतुर्थ भाव में योग, तथा दशम भाव पर दृष्टि। पंचमेश मंगल व लाभेश शुक्र का स्थान परिवर्तन पुनः शुभ फल की आशा दर्शाता है। 10 अप्रैल, 1999 को बुध सप्तमेश व दशमेश पुनः मीन राशि में आकर दशम भाव को देखता था। (भारत की कुंडली के लाभ स्थान में यह योग बन रहा था) शुक्र 7 अप्रैल से वृष में था। सूर्य (उड़ीसा) उच्चाभिलाषी, बुध तथा गुरु के साथ मीन (समुद्र का किनारा, टापू)।

6.21 नियमों का निर्धारण

किसी भी घटना/दुर्घटना के पता लगाने के लिए नियमों का अनुमान करना चाहिए। ऋषियों के समय में बस दुर्घटना, रेल दुर्घटना, वायुयान दुर्घटना, आतंकवाद, बम विस्फोट आदि नहीं थे, इसलिए इनके नियम भी शास्त्र मे उपलब्ध नहीं है। परन्तु शास्त्रीय योगों व सूत्रों का सही प्रयोग/आधुनिकीकरण किया जाए तो इनके होने का पूर्वकथन करना असंभव नहीं है।

(*i*) ग्रहों के योग, ग्रहों की तिथि

(*ii*) वार से योग

(*iii*) ग्रहों के किसी नक्षत्र व राशि प्रवेश के समय की तिथि व वार का भी योग इन सभी का प्रभाव, ऋतु आदि सभी प्रकार की घटनाओं को जन्म देता है।

महान ऋषियों द्वारा स्थापित सूत्र शास्त्रों में उपलब्ध्य है जिनमें से अधिकतर की चर्चा पिछले पृष्ठों में की जा चुकी है, उदाहरणों द्वारा उनकी सत्यता भी प्रदर्शित की जा सुकी है। हम उनका प्रयोग कर, उनका आधुनिकरण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर नवीन सूत्रों को स्थापित कर सकते हैं। लेखक के अपने अनुभव से किस प्रकार यह संभव है उसका उल्लेख/दुर्घटना/वायु दुर्घटना/भूकम्प आदि की घटनाओं का उदाहरण लेकर वर्णित किया जा रहा है।

(1) रेल दुर्घटना, अग्निकांड, सड़क तथा वायु दुर्घटना

(*i*) 8 जुलाई 1997 भटिण्डा (पंजाब) में रेल में बम फटने से 34 व्यक्ति मरे और 67 घायल हुए।

स्वतन्त्रता दिवस की कुंडली में शुक्र महादशा में राहु का अंतर चल रहा था (8 नवम्बर, 1996 से 8 नवम्बर 1999 तक) गोचर में शनि मीन राशि से वृष लग्न को पीड़ित कर रहा था, मंगल कन्या पंचम भाव से अष्टम भाव पर दृष्टि दे रहा था, चन्द्रमा तृतीय भाव कर्क में राहु चतुर्थ सिंह राशि में गोचर कर रहा था। महादशानाथ शुक्र तृतीय भाव में अंतर दशानाथ राहु लग्न में बैठा है। भारत की कुण्डली में लग्न पीड़ित (शनि से), अष्टम पीड़ित शनि मंगल से), चतुर्थ पीड़ित (राहु से)।

कुंडली 16

सूर्य विधि 14-15 जून, 1997, 26 घंटे, 25 मिनट, नई दिल्ली

ल. 0/9°-56′
सू. 2/00°-00′
चं. 5/18°-20′
मं. 5/4°-17′
बु. 1/17°-13′
बृ. 9/28°-03′
शु. 2/19°-45′
श. 11/24°-38′
रा. 5/0°-38′

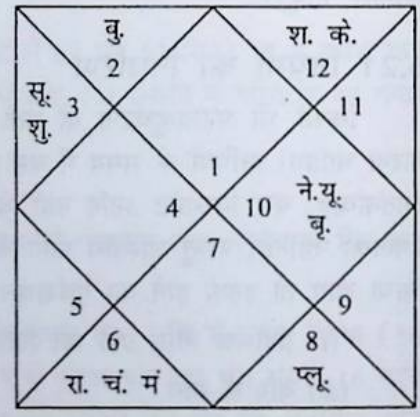

मास में ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन

बुध

21 जून, 1997 को 6 घ. 3 मिनट पर मिथुन में प्रवेश किया।

24 जून, 1997 को बुध आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश किया।

25 जून, 1997 को युति और 15 जून को 18 घ. 31 मिनट पर पश्चिम में अस्त तथा 5 जुलाई को 13 घ. 03 मि. पर पूर्व में उदय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र

23 जून, 1997 को कर्क राशि में 22 घ. 14 मि. पर प्रवेश।

राहु

19 जून सिंह राशि में 27 घ. 15 मिनट पर प्रवेश

उस दिन अष्टमी तिथि का क्षय था।

संबंधित भावों का पीड़ित होना—लग्नेश मंगल षष्ठ भाव में राहु व चतुर्थेश चंद्रमा के साथ और शनि से दृष्ट, सूर्य और शुक्र (बुध व शुक्र का स्थान परिवर्तन) दशमेश शनि तथा द्वादशेश गुरु का स्थान परिवर्तन। गोचर में बुध तथा शुक्र चतुर्थ भाव में (दुर्घटना के दिन) चंद्रमा चतुर्थ में थे।

साधारण नियम/योग—शनि, मंगल तथा राहु का एक दूसरे से केन्द्र में होना, वह भी छठे और बारहवें भावों में। चंद्रमा का अति पीड़ित होना, बुध का शनि से पीड़ित होना, दुर्घटना, जीवन हानि तथा सम्पत्ति के नाश के योग हैं।

शनि, मंगल तथा राहु अग्नि, विस्फोट, गोली-बारूद तथा आतंकवाद, जाति के झगड़े आदि दर्शाते हैं। सूर्यविधि का लग्न अग्नि तत्व राशि का है, चंद्रमा तथा मंगल (लग्नेश) पृथ्वी तत्त्व राशि में है और राहु के साथ हैं।

(ii) **27 जुलाई 1997** कर्नाटक एक्सप्रैस की दुर्घटना 5 व्यक्ति की मृत्यु, स्वतंत्रता दिवस की कुंडली में शुक्र/राहु/वृ/शु की दशा चल रही थी। उस मास (जून-जुलाई 1997) 22 जुलाई 17 घ. 1 मि. पर बुध सिंह राशि में प्रवेश किया, शुक्र ने 18 जुलाई को 15 घ. 51 मि. पर सिंह राशि में प्रवेश किया तथा 12 अगस्त को 15 घ. 31 मि. पर कन्या राशि में प्रवेश किया। मंगल ने 4 अगस्त को 8 घ. 3 मि. पर तुला राशि में प्रवेश किया।

कुंडली 17 सूर्य विधि

दिनांक 16 जुलाई 1997 को 13 घ 21 मि. पर दिल्ली की कुंडली

ल. 6/10°-23′
सू. 3/00°-00′
चं. 7/9°-56′
मं. 5/19°-23′
बु. 3/20°-22′
बृ. 9/26°-4′
शु. 3/27°-28′
श. 11/26°-18′
रा. 4/27°-40′

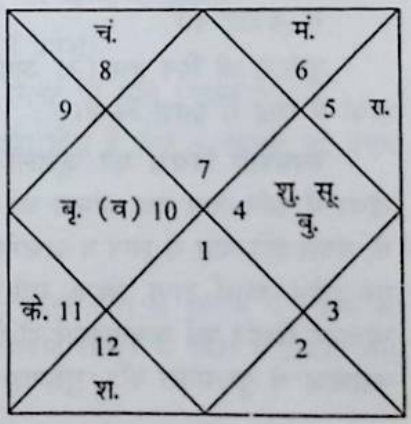

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुर्घटना के दिन चंद्रमा मेष में था। सूर्य, बुध तथा शुक्र **स्वतंत्रता दिवस की कुंडली में** तृतीय भाव में, राहु चतुर्थ में, मंगल पंचम भाव में शनि लग्न को, पंचम भाव को तथा अष्टम भाव को पीड़ित कर रहा था। अष्टम भाव पर मंगल तथा शनि की क्रूर दृष्टि थी।

सूर्य विधि की कुंडली–तृतीय भाव मंगल व शनि से पीड़ित है बुध 22 जुलाई को सिंह राशि में प्रवेश किया लेकिन **शुक्र** 18 जुलाई को सिंह में आ गया था तथा दोनों **राहु** से युत थे। शनि-मंगल समसप्तक थे, **मंगल व राहु** द्विर्द्वादश थे, शनि व राहु षडाष्टक यह सभी योग दुर्घटना दिखाते हैं।

***(iii)* 31 अगस्त 1997**, इलाहाबाद-नागपुर गाड़ी पटरी से उतर गई।

इस श्रावण मास में (21 जुलाई से 18 अगस्त) पांच रविवार थे तथा पांच मंगलवार भाद्रपद (19 से 16 सितम्बर तक) यह योग प्राकृतिक प्रकोप, दुर्घटना, सरकार का गिरना आदि का संकेत करता है।

कुंडली 18

सूर्य विधि 16 अगस्त, 1997, 21 घ. 45 मि., दिल्ली

ल. 11/28°-47′
सू. 4/00°-00′
चं. 9/5°-6′
मं. 6/7°-33′
बु. 4/22°-21′
बृ. 9/22°-12′
शु. 5/4°-59′
श. 11/26°-18′
रा. 4/26°-40′

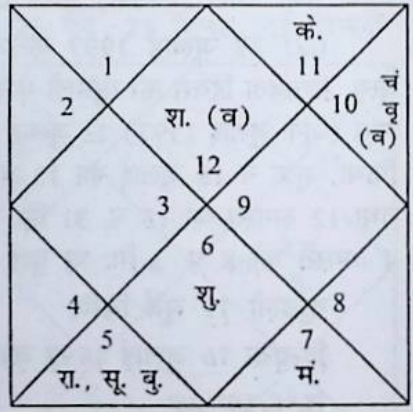

दुर्घटना के दिन बुध (31 अगस्त, 1997) को वक्री हुआ तथा चंद्रमा कर्क से सिंह में प्रवेश किया।

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली–शुक्र की महादशा राहु का अंतर था। गोचर में शनि लग्न तथा अष्टम को देख रहा था, राहु तथा सूर्य चतुर्थ भाव में, मंगल छठे भाव से लग्न व अष्टमेश गुरु को पीड़ित कर रहा था, गोचर का गुरु तृतीय, चतुर्थ, लग्न, चंद्रमा, सूर्य को देख रहा था तो कुछ बचाव हो गया। साधारण स्थिति पूर्व कथनानुसार ही है जैसे शनि/मंगल षडाष्टक में, राहु/शनि षडाष्टक में गुरु/मंगल केंद्र, गुरु/राहु षडाष्टक में।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य विधि में भी चंद्रमा तथा सूर्य, तृतीय भाव, चतुर्थ भाव कारक शुक्र सभी पीड़ित हैं।

(*iv*) 14 सितम्बर 1997, बिलासपुर (मध्यप्रदेश) में रेल दुर्घटना में 5 बोगी पुल से आधी शुष्क नदी में गिरने से 81 व्यक्ति मर गए। चंद्रमा कुंभ में (द्वादश भाव, वायु तत्त्व राशि में) प्रवेश किया। सभी वायु तत्त्व राशियाँ पीड़ित थी। पूर्व चर्चित स्थिति भी बनी है। ऊपर (*iii*) में चर्चित नियम देखें 6-7 सितम्बर को शुक्र तुला में मंगल से युति तथा 10 सितम्बर को बुध मार्गी हुआ।

(*v*) 23 सितम्बर 1997, शताब्दी के पटरी से उतरने से इलाहाबाद में 9 मज़दूर मारे गए। चंद्रमा वृष में प्रवेश किया।

कुंडली 19

सूर्य विधि 16-9-1997, 21 घ., 41 मि., नई दिल्ली की।

ल. 1/5°-28′
सू. 5/00°-00′
चं. 10/28°-25′
मं. 6/27°-45′
बु. 4/12°-8′
बृ. 9/18°-58′
शु. 6/11°-30′
श. 11/24°-47′
रा. 4/25°-55′

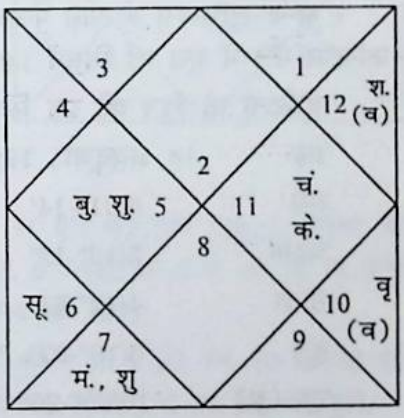

गोचर में परिवर्तन

बुध 28 सितम्बर 24 घंटे 13 मि. पर कन्या में प्रवेश।

मंगल 19 सितम्बर को वृश्चिक में प्रवेश।

शनि 10 अक्टूबर को 9 घ. 56 मिनट पर युति (कन्जंग्ट)

बुध 1 अक्टूबर को पश्चिम में अस्त होता है तथा 6 नवम्बर को उदय हुआ।

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली

लग्न शनि तथा मंगल से पीड़ित, चंद्रमा राशि से अष्टम में (कर्क से अष्टम) लग्न से दशम, घटना के दिनें चंद्रमा मिथुन में राशि में द्वादश और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वितीय भाव में बैठे मंगल के ऊपर गोचर कर रहा था। दशा शुक्र में राहु का अंतर था।

दुर्घटना के दिन 19-9-97 का गोचर

मंगल वृश्चिक में आया, स्वतंत्रता दिवस की कुंडली के लग्न को देखा, सूर्य विधि का भी वृष लग्न था। तृतीयेश चंद्रमा मंगल से पीड़ित।

पिछले उदाहरणों में चर्चित नियम/योग यहाँ भी लगते हैं, पुनरावृत्ति से कोई लाभ नहीं।

नोट: ऊपर चर्चा में **रेल दुर्घटनाएं** इतने पास-पास हुई क्योंकि दुर्घटना के योग बराबर बने रहे।

(*vi*) **18 अक्टूबर 1998**, हैदराबाद-मुम्बई एक्सप्रैस पोफलाज वाशिम्बी के बीच शोलापुर-डोण्ड सेक्सन पर 13 बोगी (डिब्बे) पटरी से उतरी।

(*vii*) **26 अक्टूबर 1998, प्रात: 3 बजे**

खन्ना-लुधियाना के पास पंजाब श्यालदाह एक्सप्रेस-पटरी से उतरी हुई फ्रन्टियर मेल में घुस गई जिसमें 140 व्यक्ति मरे।

दुर्घटना के दिन की ग्रह स्थिति

ग्रह	18 अक्टूबर, 1996	26 अक्टूबर, 1998
सूर्य	6/01°-14′	6/08°-26′
चंद्रमा	5/12°-12′	8/08°-24′
मंगल	4/12°-57′	4/12°-17′
बुध	6/16°-07′	6/26°-51′
गुरु (व)	10/25°-26′	10/24°-54′
शुक्र	5/28°-18′	6/07°-20′
शनि (व)	0/06°-40′	0/06°-05′
राहु	4/06°-14′	4/05°-12′

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली के लग्न में राहु जिस पर गोचर के शनि की दृष्टि, चतुर्थ भाव में मंगल व राहु, कन्या में शुक्र (अस्त) जो राशि से तृतीय में है गोचर कर रहे थे। पूर्व-चर्चित दुर्घटना के योगों को ध्यान में रखें तो स्पष्टीकरण हो जाएगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*viii*) 2 अगस्त 1999, 1-55 मध्यान्ह

गैसाल (पश्चिमी बंगाल) जलपाईगुडी से 70 कि.मी. ब्रह्मपुत्र मेल तथा गुवाहाटी जाने वाली अवध-आसाम एक्सप्रेस की टक्कर में 400 व्यक्ति मरे।

6.30.1 कार्गिल युद्ध

कुंडली 20 सूर्य विधि 16 जुलाई, 1999 25 घ. 31 मि. की

ल. 0/29°-53′
सू. 3/00°-00′
चं. 4/16°-0′
मं. 6/10°-31′
बु. (व) 3/15°5′
बृ. 0/18°-44′
शु. 4/8°-11′
श. 0/21°-44′
रा. 3/19°-6′

गोचर की स्थिति

16 जुलाई को 21 घ. 19 मि. पर बुध की युति तथा 3 अगस्त को पश्चिम में 25 घ. 46 मि. पर उदय हुआ, 6 अगस्त को 8 घ. 49 मि. पर मार्गी होकर सूर्य से अधिकतम दूरी 14 अगस्त को थी।

शुक्र वक्री हुआ और 30 जुलाई को 7 घ. 9 मि. पर, 10 अगस्त को 24 घ. 42 मि. पर अस्त हुआ, 20 अगस्त को 17 घ. 28 मि. पर युति।

आषाढ़ शुक्ल पंचमी शनिवार को पड़ने से प्राकृतिक प्रकोप से विनाश की संभावना। बुध का अस्त होना पुनः वही फल दिखाता है। आषाढ़ मास में पांच मंगलवार पड़े जिनका भी संकेत ऐसी दुर्घटनाओं के लिए है।

घटना के दिन चंद्रमा 11/8-48 था शुक्र (व) सिंह में था।

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली से विचार

शुक्र की महादशा में राहु का अंतर ही चल रहा था। जिसमें यह दुर्घटनाएं हो रही थी। प्रथम, द्वितीय, तृतीय, षष्ठ तथा नवम भावों का पीड़ित होना तथा मकर राशि (भारत की राशि) का पीड़ित होना अच्छा नहीं। कर्क राशि उससे चतुर्थ, दशम, सप्तम आदि भी पीड़ित है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामान्यः गुरु, शनि, मंगल परस्पर केन्द्र में इनसे राहु भी केन्द्र में, कर्क व मकर दोनों पीड़ित जो युद्ध, भूकम्प, दुर्घटनाएं सीमाओं पर टकराव/तनाव प्राकृतिक दुर्घटनाएं जनजीवन व सम्पत्ति का विनाश वायु दुर्घटनाएं विदेशों/अन्य देशों के कारण तनाव आदि की संभावनाऐं होती है।

नोटः कारगिल युद्ध की समस्या 27 मई, 1999 से जुलाई तक रही।

भारतीय वायु सेना ने घुसपैठियों पर बम डाले (जिसमें 160 लोगों की मृत्यु हुई) 28 मई को पाकिस्तान ने भारतीय मिग तथा पायलट को कब्जे में कर लिया। आई.ए.फ का एक हैलीकॉप्टर एम-आई 17 को स्टिंगर मिसाइल से मार गिराया जिसमें चार क्रियू सदस्य थे।

एल.ओ.सी. पर 25,000 जवान भेजे गये, 3 जून को बटालिक में भारी गोलीबारी हुई तथा सेना ने नौ चौकियों पर कब्जा किया। 6 जून को हवाई हमले किये गए सेना ने भारी हमला किया। रक्षामंत्री जसवन्त सिंह तथा पाकिस्तान के रीमान अजीज की बातचीत विफल रही।

17 जून, 1999–सेना ने चार चौकियाँ वापिस लीं, बंकर्स पर बम बरसाए। 23 जून को दस और पहाड़ियों पर कब्जा किया परन्तु भयानक लड़ाई चलती रही।

अन्ततः भारत की कारगिल युद्ध में विजय हुई और 26 जुलाई को विजय दिवस के रूप में मनाया गया।

नोट–शनि, मंगल, राहु तथा गुरु की स्थिति भचक्र में पूरे वर्ष लगातार एक सी रही तथा एक दूसरे से अशुभ स्थिति में रहे, जिसके फलस्वरूप संसार में दुर्घटनाएं/तनाव होते रहे, चाहे, (क) 11 सितम्बर को अमरिका का कांड होना, अफगानिस्तान पर हमला (ख) इराक पर हमला (ग) गुजरात का भूकम्प या देश में झगड़े आदि सभी ग्रहों के परस्पर अशुभ स्थिति का परिणाम है। ग्रहों की इस स्थिति के कारण विश्व में/देश में अनेकों दुर्घटनाऐं हुई परन्तु सबकी चर्चा करना असंभव है। एक ही प्रकार की कई-कई घटनाऐं लेकर पीछे चर्चा की जा चुकी है जिससे सूत्रों का स्वयं निर्माण हो गया है। **उनके एक ही स्थान पर एकत्रित करके नहीं दिया जा रहा है ध्येय है कि पाठक सभी विवरणों को पढें और स्वयं उनकी सूची बनाएं ताकि ग्रहों की स्थिति का प्रभाव जानने का अभ्यास हो जाए।** कुछ और रेल दुर्घटनाओं की चर्चा की जा रही है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ix*) 15 दिसम्बर 1999 नादवा स्टेशन पर पी.डब्लु.जी. (बिहार) ने रेलवे लाइन को उड़ा दिया।

कुंडली 21 सूर्य विधि 16-11-1999 21 घ. 28 मि. नई दिल्ली

ल. 3/0°-56′
सू. 7/00°-00′
चं. 10/3°-24′
मं. 8/28°-50′
बु. (व) 6/29°0′
बृ. (व) 0/3°-09′
शु. 5/14°-19′
श. (व) 0/19°-6′
रा. 3/13°-39′

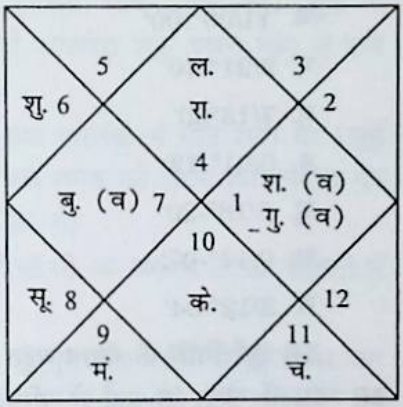

गोचर में ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन

बुध 20 नवम्बर को 28 घ. 30 मि. पर बुध उदय हुआ। 25 नवंबर को 9 घ. 37 मि. पर मार्गी हुआ और 3 दिसम्बर को इलोगेशन हुआ। 6 दिसम्बर को वृश्चिक में प्रवेश किया।

शुक्र–30 नवम्बर को 20 घ. 31 मि. पर तुला में प्रवेश किया। 6 दिसम्बर को चित्रा में स्वाति में प्रवेश किया।

मंगल–18 नवम्बर को 10 घ. 43 मि. पर मकर राशि में प्रवेश किया।

दुर्घटना के दिन का गोचर

चन्द्रमा सूर्य विधि के चंद्रमा पर से स्वतंत्रता दिवस की राशि से अष्टम तथा लग्न से दशम में गोचर कर रहा था।

मंगल मकर राशि से स्वतंत्रता दिवस की कुंडली का तृतीय भाव, द्वादश भाव, चतुर्थ भाव व दशमेश को पीड़ित कर रहा था एवं सूर्य विधि की राशि से द्वादश व लग्न से सप्तम में गोचर कर रहा था। बुध भारत की कुंडली से सप्तम, सूर्य विधि में लग्न से पंचम में सूर्य पर गोचर कर रहा था।

(*x*) 19 दिसम्बर 1999 बरेली में रेल ने एक ट्रॉली से रेलवे क्रॉसिंग के पास टक्कर लगा दी जिससे चार व्यक्ति मारे गए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुंडली 22 सूर्य विधि 16-12-1999 12 घ. 15 मि. दिल्ली की

ल. 10/26°-56'7
सू. 8/00°-00'
चं. 11/03°-00'
मं. 9/21°-40'
बु. 7/13°30'
बृ. 0/01°-12'
शु. 6/18°-20'
श. 0/17°-07'
रा. 3/12°-04'

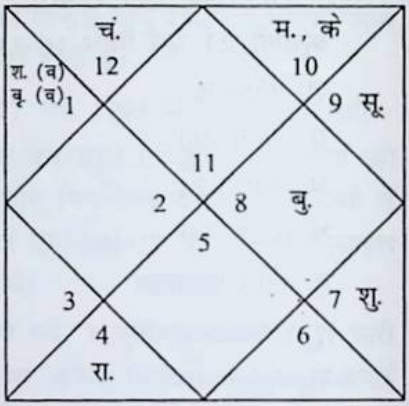

इस सूर्य विधि के दौरान बहुत घटनायें हुई इसलिए यह बहुत विशेष है। इस मास में गोचर के ग्रहों में परिवर्तन

चंद्रमा मेष में प्रवेश किया, सूर्यविधि के तृतीय भाव में।

27-12-1999	बुध	धनु में प्रवेश किया।
27-12-1999	मंगल	कुंभ में प्रवेश किया।
26-12-1999	शुक्र	वृश्चिक राशि में प्रवेश।
20-12-1999	गुरु	मार्गी हुआ
11-1-2000	सूर्य	उत्तर आषाढ़ा में प्रवेश किया।
12-1-2000	शनि	मार्गी हुआ।

2. हत्याऐं

(*i*) 15-12-999 को श्री लखीराम कावड़ी मन्त्री मध्यप्रदेश की नक्सलवादियों ने (पी.डब्लू. जी) ने हत्या कर दी। (यह घटना पिछले महीने वाली सूर्य विधि के समय में पड़ती हैं) चंद्रमा की कुंभ राशि में प्रवेश, दशम भाव का पीड़ित होना, गुरु तथा शनि दशम में तथा पीड़ित लग्न ने यह सब किया है।

(*ii*) 19-12-1999 को (क) 9.30 रात्रि श्रीलंका : राष्ट्रपति चंद्रिका कुमारतुंगा तथा दो वरिष्ठ मन्त्री तथा 90 व्यक्ति, टाउन हाल, के केन्द्रीय क्षेत्र में एक आत्मघाती बम के हमले में घायल हुए (अक्षांश 6-56 उ. रेखांश 79-55 पू.) उस समय कर्क लग्न (03/17-33) उदय हो रहा था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामान्यः शनि तथा मगल एक दूसरे के केन्द्र में होकर परस्पर दृष्टि दे रहे थे। राहु इन दोनों में था, गुरु भी इनसे केन्द्र में है। गुरु (मंत्री), सूर्य (राष्ट्राध्यक्ष), दशम भाव (राष्ट्राध्यक्ष) (दशम भाव विधि का) शुक्र है (श्रीलंका की) मीन लग्न की कुण्डली को अष्टमेश शुक्र दशम भाव में तथा दशमेश मंगल सब ही पीड़ित हैं।

विश्लेषणः दिल्ली का लग्न कुंभ तथा कोलंबो में मीन लग्न था (सूर्य विधि का) तथा कर्क लग्न (3/23-26) उस समय की घटना का। चंद्रमा मेष में था (0/20-12) सभी से दशमेश पीड़ित थे।

(*iii*) जापान की महिला का आइ.टी.डी.सी. के जनपथ होटल, दिल्ली में बलात्कार।

चंद्रमा मेष में तृतीय भाव (यात्री) में गुरु तथा शनि पर से गोचर कर रहा था तथा शुक्र (होटल, स्त्री) को देख रहा था। शुक्र की दोनों राशियाँ (वृष तथा तुला) पीड़ित हैं। सूर्य विधि का सप्तम तथा सप्तमेश सूर्य भारत की कुंडली का सप्तमेश मंगल व शुक्र भी पीड़ित थे द्वादश भावेश मंगल व द्वादश भाव भी पीड़ित थे।

(*iv*) पी.डब्लू.जी. ने बिहार के डालटन गंज रेलवे स्टेशन को उड़ा दिया।

तृतीय भाव, चतुर्थ भाव तथा शुक्र के पीड़ित होने के साथ-साथ दुर्घटना के अन्य योग भी विद्यमान थे।

3. भारत तथा चीन का सम्मान

(क) 18-12-1999 को कोची में त्रिशूल मिसाइल परीक्षा के लिए छोड़ा गया।

(ख) 22-12-1999 को नेहरू केन्द्र, मुम्बई के वरिष्ठ वैज्ञानिक भरत अदुर के अनुसार 133 वर्षों के बाद चंद्रमा इतना चमकदार था (पहले 21-12-1866 को ऐसा था)

(ग) आइ.एन.एस. द्रोणाचार्य से भारत के सम्मान को बढ़ाने वाला शीघ्र प्रभाव वाला, थोड़ी दूरी वाला, जमीन से वायु तथा पृथ्वी से पृथ्वी वाला मिसाइल छोड़ा गया।

विश्लेषणः स्वतंत्रता दिवस की कुण्डली पर शुक्र की महादशा में राहु का अंतर 8 नवम्बर, 1999 को समाप्त हो गया तथा शुक्र में गुरु का अंतर प्रारंभ हो गया था। गुरु गजकेसरी योग तथा विपरीत राजयोग बना रहा है, महादशानाथ से केन्द्र में अवस्थित है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोचर में सूर्य राशि से षष्ठ भाव में, गुरु (20 नवम्बर को मार्गी हो गया था) तथा शनि दशम भाव में, शुक्र चतुर्थ, बुध पंचम, मंगल सप्तम व राहु/चंद्र राशि में ही भ्रमण कर रहा था।

सूर्य विधि का विश्लेषण

लग्नेश शनि तृतीय भाव में गुरु द्वितीयेश व लाभेश के साथ बैठकर नवम भाव व द्वादश भाव व षष्ठ भाव को दृष्टि दे रहा है। मंगल (रक्षा) दशमेश होकर द्वादश में उच्च का, षष्ठ भाव, सप्तम भाव, तृतीय भाव में बैठे शनि गुरु को (शनि मंगल की परस्पर दृष्टि लग्नेश व दशमेश की दृष्टि संबंध हुआ), पंचमेश बुध दशम भाव में वक्री गुरु से दृष्ट।

निष्कर्ष: दोनों कुण्डलियों में जहाँ परेशानियाँ दिखाई देती हैं। वहाँ रक्षा विभाग की शक्ति प्रदर्शन व यश भी संभव है। राहु और गुरु दोनों दशानाथ षडाष्टक में है तो उथल-पुथल तथा अचानक कुछ अच्छा भी होना था।

(घ) 19-12-1999 मकाऊ 442 वर्ष उपरांत चीन के पास आया, पुर्तगाल ने रविवार को घण्टों पहले कविताओं व दावत के साथ **'जूऐ का स्वर्ग'** को विदाकर चीन को वापिस दिया (चीन की यह सबसे पहली तथा आखिरी कोलोनीयल आऊट पोस्ट थी।)

विश्लेषण–तृतीयेश (स्थानांतरिक, हस्तांतरिक, आदान-प्रदान ट्रेडिंग) द्वादश भाव (विदेश, छूटना, मोक्ष, व्यय होना) उच्च का और द्वादशेश शनि से दृष्ट, तृतीयेश व द्वादशेश का स्थान परिवर्तन, गुरु (वक्री) श्रीलंका में दुर्घटना के रक्षक बना तुला चीन की राशि है। तुला से तृतीयेश व षष्ठेश गुरुयोग कारक शनि के साथ, लग्न में लग्नेश शुक्र नवमेश बुध द्वितीय (धन स्थान में) चीन के लिए अति शुभ रहा क्योंकि मकाऊ जुए का स्वर्ग है पंचम भाव मिथुन, द्वितीय व पंचमेश का संबंध शुभ फल देता है।

कूर्मचक्र में इशान कोण (पूर्व-उत्तर) चीन का प्रतिनिधित्व करता है। गुरु अश्विन तथा शनि भरणी में। गुरु (इशान कोण के स्वामी, मेष से प्रथम व दशम भावेशों का स्थान परिवर्तन नवमेश व दशमेश) (गुरु व शनि) का लग्न में होना पंचमेश का नवम में होना सभी शुभता दर्शाते हैं।

4. वायुयान दुर्घटनाएं

24 दिसम्बर, 1999 शुक्रवार को 17 घंटे 22 मिनट पर इंडियन एयरलाइंस (आई.ए.) की काठमांडू से दिल्ली जाने वाली एयर बस 300 फ्लाइट नं डी.सी. 814 को अपहरण कर लिया गया। उसमें 189 यात्री जिनमें 150 भारतीय तथा 11 कर्मीदल के सदस्य थे। 8.30 प्रातः शनिवार को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काठमांडू से उड़कर लखनऊ उतरना था। उड़ान भरने के दो घंटे बाद 16.25 बजे यह घटना हुई। उसे लाहौर ले जाया गया। लाहौर रूकने के बाद 22.32 बजे पुन: उड़ान भरी और 25 दिसम्बर, 1999 रात्रि में 1.35 बजे आबूदबी में रूकी। उसके बाद अमृतसर और फिर 20-7 बजे उड़कर काधार में उतरी। रिपु कटयाल एकयात्री की हत्या कर उसका मृत शरीर दुबई में अधिकारियों को दे दिया गया। 31 दिसम्बर 2000 के अपहरणकर्ताओं ने तीन आतंकवादियों को छुड़वाकर 16-08 बजे यात्रियों तथा कर्मीदल के सदस्य को बदले में छोड़ दिया, जो इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर 20.45 बजे शुक्रवार को पहुंचे।

विश्लेषण–*वायुयान वृष लग्न में उड़ा जब चंद्रमा तथा राहु (मुसलमान) तृतीय भाव में मंगल से दृष्ट (मुहूर्त के नियमों के विरूद्ध जिसके अनुसार तृतीय भाव में क्रूर ग्रह नहीं होना चाहिए) सूर्य अष्टम में शनि (व) से दृष्ट इस प्रकार तृतीय भाव तथा अष्टम भाव अति पीड़ित थे। स्वतंत्रता दिवस की कुंडली का भी वृष लग्न है, इसलिए उसका भी तृतीय भाव पीड़ित था। गोचर का चंद्रमा जन्म राशि से गुजर रहा था। शुक्र ने 26 दिसम्बर 1999 वृश्चिक में, बुध 27 दिसम्बर को धनु में तथा मंगल ने 27 दिसम्बर को कुंभ में प्रवेश किया जिससे स्थिति में नरमी आती गई। शनि 12 जनवरी 2000 को मार्गी हुआ तथा सूर्य ने 14 जनवरी 2000 को मकर राशि में प्रवेश किया और उत्तरायण शुरु हुआ। इनके गोचर के बाद बातचीत सफलता की ओर चली। वायु तत्त्व राशि को लग्न, वायुराशि के नवांश में, तीनों वायु तत्त्व राशियाँ पीड़ित थी, शनि (वायु) गुरु (आकाश) तथा तृतीय भाव सभी पीड़ित थे मंगल की दृष्टि के कारण एक मृत्यु हुई।*

कुण्डली 22

सूर्य विधि 14 जनवरी, 2000, मकर संक्रांति 22 घंटे 59 मिनट पर नई दिल्ली की

ल. 5/26°-23′
सू. 9/00°-00′
चं. 0/02°-21′
मं. 10/14°-23′
बु. 8/29°12′
बृ. 0/02°-10′
शु. 7/23°-49′
श. 0/16°-26′
रा. 3/09°-52′

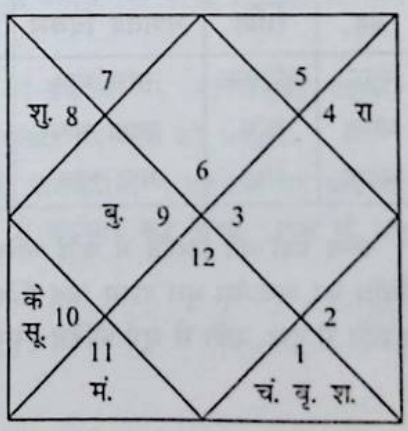

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

14 जनवरी, 2000, मकर संक्रान्ति को नई सूर्यविधि शुरु हो गई क्योंकि सूर्य धनु से मकर में आ गया। अपहरण के मामले की चर्चा आगे की जायेगी। पहले इस सूर्य विधि की अवधि में गोचर में ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन का विचार:

बुध–15 जनवरी, 2000 को 11 घंटे 11 मिनट पर मकर में प्रवेश

16 जनवरी, 2000 को सूर्य से युति

21 जनवरी को नक्षत्र बदला

30 जनवरी को बुध उदय हुआ

1 फरवरी को कुंभ में प्रवेश

5 फरवरी को शतभिषा में प्रवेश

शुक्र–19 फरवरी 2000 को 24 घंटे 59 मिनट पर धनु राशि व मूल नक्षत्र में प्रवेश।

13 फरवरी को 10 घंटे 39 मिनट पर मकर में प्रवेश।

मंगल: 22 जनवरी को पू. भाद्रा में प्रवेश

4 फरवरी को 5 घंटे 7 मिनट पर मीन राशि में प्रवेश।

8 फरवरी को उ. भाद्रा नक्षत्र में प्रवेश।

परिणाम–31 जनवरी 2000 को सभी बंधक व्यक्तियों को छोड़ दिया गया क्योंकि बुध का 30 जनवरी को उदय हुआ।

5. राष्ट्राध्यक्ष की मृत्यु और राजशोक

26 दिसम्बर, 1999 को भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा का निधन हुआ। इस दिन विभिन्न कुंडलियों में ग्रह-गोचर निम्नलिखित थे–

ग्रह	राशि	गणतंत्र दिवस	स्वतंत्रता दिवस	सूर्यविधि
शुक्र	वृश्चिक	नवम भाव	सप्तम भाव	दशम भाव
मंगल	कुंभ	द्वादश भाव	दशम भाव	लग्न
चंद्रमा	सिंह	षष्ठ भाव	चतुर्थ भाव	सप्तम भाव

अन्य ग्रहों की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ (देखें सूर्य विधि)। सूर्यविधि का अष्टमेश बुध दशम भाव में दशमेश मंगल द्वादश में केतु के साथ तथा शनि से दृष्ट, शनि से सूर्य पीड़ित (सूर्य सप्तम भाव अथवा दशम से दशम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाव का स्वामी भी है) राजशोक व किसी अध्यक्ष का निधन दर्शाता है। जैसे ही मंगल ने कुंभ में प्रवेश किया कुंभ लग्न व अष्टम भाव दोनों पीड़ित हो गए। तीनों ग्रहों का राशि परिवर्तन होने से भी प्रभाव हुआ।

6. वायुयान गिरना

(*i*) स्विस वायुयान लीबियन समुद्री तट पर गिरा।

कारण: 12 जनवरी को 10 बजकर 28 मिनट पर शनि मार्गी हुआ। अन्य योग सूर्य विधि में स्पष्ट संकेत 31 जनवरी 2000 को दे रहो हैं।

(*ii*) 30 जनवरी को कीनिया के वायुयान का आबिदजन हवाई अड्डे से उड़कर नाईजीरिया लागौस जाते समय गिराना जिसमें 169 व्यक्तियों के मरने की आशंका थी। 74 शव समुद्र के आइवरी तट से निकाले गये।

(*iii*) 6 जनवरी 2000 को सशस्त्र अपहरणकर्ता ने एक अफगान व्यापारी जैट वायुयान पर कब्जा कर लिया जो कजाखिस्तान अक्तयूबिन्सक के एक शहर से उड़ा तथा मॉस्को के शेरेमटयेवा हवाई अड्डे पर उतरा। इस यान में 168 व्यक्ति यात्रा कर रहे थे। उन्होंने हैरान प्रांत के भूतपूर्व राज्यपाल श्री इस्माइल खान जो 1997 में गिरफ्तार कर लिये गये थे, को छोड़ने की मांग की। काबुल से मजार-ए-शरीफ जाते समय जबरदस्ती तास्कंद की राजधानी उजबेकिस्तान में उतारा गया। चार घंटे बाद दस यात्रियों को (जिनमें पांच स्त्रिया व एक बच्चा था) छोड़ दिया गया।

7. हड़तालें

(*i*) यू.पी. विद्युत बोर्ड (14 जनवरी, 2000)

(*ii*) आंध्र प्रदेश के अवर चिकित्सकों (जूनियर डॉक्टरों)

(*iii*) अन्य सात राज्यों के विद्युत कर्मचारियों ने भी हड़ताल पर जाने की धमकी दी (17 जनवरी, 2000)

(*iv*) बंदरगाह के कर्मचारियों की हड़ताल पर (17 जनवरी, 2000)

(*v*) टेलीकॉम यूनियन की हड़ताल पर जाने की धमकी।

(*vi*) दिल्ली विद्युत विभाग के कर्मचारियों ने हड़ताल पर चल रहे यू.पी. राज्य विद्युत बोर्ड की सहानुभूति में कामबंद कर दिया। (शुक्र के धनु राशि मे प्रवेश होते ही)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

25 जनवरी, 2000 को हड़ताल वापिस ले ली गई और कर्मचारी अपने काम पर वापिस आ गए।

(*vii*) 2 फरवरी, 2000 को पूरे भारत में दो सौ पब्लिक सैक्टर अंडरटेकिंग के 15 लाख कर्मचारी हड़ताल पर गये। मंगल 4 फरवरी को मकर संक्रांति की सूर्य विधि के सप्तम (मीन राशि) में प्रवेश कर गया (मंगल प्रवेश से पहले ही फल देना प्रारंभ कर देता है) तथा बुध पहली फरवरी 2000 को ही कुंभ में (षष्ठ भाव में अष्टमेश मंगल से युति) प्रवेश कर गया।

व्याख्या–तृतीय भाव (ट्रेड यूनियन) तथा षष्ठ भाव (हड़ताल)।

(क) स्वतंत्रता दिवस की कुंडली में तृतीय भाव में राहु का गोचर सूर्य से दृष्ट तथा षष्ठ भाव पर गोचर के शनि की दृष्टि। लग्न गोचर के मंगल से पीड़ित।

(ख) गणतंत्र दिवस की कुंडली में तृतीय भाव तथा षष्ठ भाव भी मंगल से पीड़ित।

(ग) सूर्य विधि में षष्ठ भाव में तृतीयेश मंगल षष्ठ भाव व लग्न को धनेश शुक्र तृतीय भाव में, षष्ठेश शनि अष्टम से द्वितीय (धन) भाव तथा लग्नेश बुध को जो चतुर्थ भाव में बैठा है पीड़ित कर रहा है। बुध लग्नेश ने 1 फरवरी को षष्ठ भाव में प्रवेश किया और चंद्रमा ने वृश्चिक (तृतीय भाव से) धनु राशि में लग्नेश बुध से युति की। उसके कारण घटना हुई।

विंशोतरी दशा–शुक्र की महादशा में राहु का अंतर चल रहा था। शुक्र पर गोचर का राहु व लग्नस्थ राहु को गोचर का मंगल पीड़ित कर रहा था। शुक्र लग्नेश व षष्ठेश होकर तृतीय भाव में था तथा राहु सप्तम में दशम से दशम में बैठा था गोचर में महादशानाथ शुक्र धनु राशि में तथा अंतरदशा नाथ राहु कर्क राशि में अथवा दोनों षडाष्टक में होने के नाते उपरोक्त हड़तालें व दुर्घटनाएं देते रहे। टेलीकॉम, बिजली की सप्लाई तथा हवाई जहाज आदि का संबंध बुध व तृतीय भाव सूर्य, मंगल तथा राहु से है।

(*viii*) 24 जुलाई, 2001 (मंगलवार) को 2 करोड़ से अधिक *केन्द्रीय व राज्य कर्मचारी तथा अध्यापक हड़ताल* पर चले गए। देखना है कि क्या पैरा (*viii*) में चर्चित नियम यहां भी लागू होते हैं? 16 जुलाई, 2001 को 13 बजकर 57 मिनट पर सूर्य के कर्क प्रवेश (दक्षिणायन) स्थान दिल्ली की कुंडली नीचे दी जा रही है–

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुंडली 23

ल. 6/18°-08′
सू. 3/00°-00′
चं. 1/00°-33′
मं. 7/21°-17′ (व)
बु. 2/10°33′
बृ. 2/06°-57′
शु. 1/17°-51′
श. 1/16°-54′
रा. 2/12°-07′

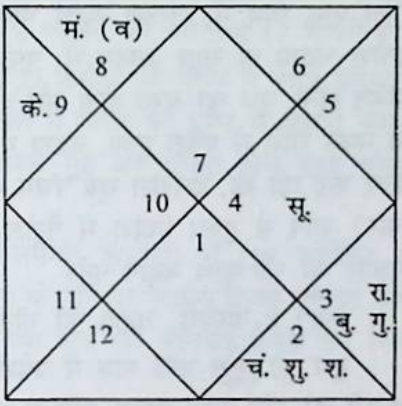

22 जुलाई को **बुध** ने पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश किया, 21 जुलाई को **शुक्र** ने मृगशिरा में प्रवेश किया था। 19 जुलाई को **मंगल** मार्गी हो चुका था, चंद्रमा कर्क में (दशम भाव सूर्य विधि का व तृतीय भाव स्वतंत्रता दिवस की कुंडली का जो शनि से पहले ही पीड़ित था) गोचर कर रहा था। सूर्य विधि में तृतीय भाव व तृतीयेश तथा षष्ठेश गुरु नवम भाव में राहु व मंगल से पीड़ित, भाग्येश बुध पीड़ित, लग्नेश शुक्र, चतुर्थेश व पंचमेश शनि व दशमेश चंद्रमा के साथ अष्टम भाव में मंगल से दृष्ट। शनि मंगल एक दूसरे से समसप्तम, मंगल व राहु तथा गुरु से षडाष्टक शनि का राहु व गुरु से द्विर्द्वादश योग आदि ऐसी संभावनाएं देते हैं। धनेश मंगल, पंचमेश (योजना) शनि तथा दशमेश चंद्रमा, गुरु (धन का कारक) षष्ठेश (नौकरी) तथा भाग्येश सब ही मिलकर धन, भविष्य की उन्नति व कार्यक्षेत्र से संबंध दिखाते हैं। गुरु की लग्न तथा पंचम पर दृष्टि अधिक समस्या नहीं दिखाती।

8. मूल्यों में वृद्धि

(क) 16 जनवरी, 2000 को पैट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल तथा खाना पकाने की गैस (70 वस्तुओं के) मूल्यों में वृद्धि सरकार द्वारा घोषित की गई। इन सभी का संबंध शक्ति, अग्नि, वाहन, मशीनरी आदि से है। ऊपर चर्चित भावों के साथ-साथ द्वितीय भाव (टैक्स) व द्वादश भाव (विदेश), शुक्र, चन्द्रमा, राहु, शनि व मंगल का संबंध बनता है। स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस की कुंडली के द्वितीय व एकादश भाव के पीड़ित होने से भी यह संकेत होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य विधि–(कुंडली संख्या 22) धनेश शुक्र तृतीय भाव में, तृतीयेश मंगल षष्ठ भाव में, लग्नेश चतुर्थ भाव, षष्ठेश शनि चतुर्थेश सप्तेश गुरु व लाभेश चंद्रमा के साथ अष्टम में, षष्ठेश व अष्टमेश का परिवर्तन। गुरु को पीड़ित होना, बुध का अस्त होना और केतु के साथ होना। 15 जनवरी को बुध का मकर राशि में प्रवेश हुआ, चंद्रमा मेष में गुरु, चंद्रमा व शनि के ऊपर का गोचर कर रहा था, द्वादशेश सूर्य पंचम में केतु व बुध के साथ बैठकर षष्ठेश (कर) शनि से दृष्ट। विदेश में पैट्रोल के मूल्य बढ़ने के दबाव में आकर सरकार को भी मूल्य बढ़ाने पड़े।

(ख) 8 फरवरी, 2000 को चीनी के आयात पर ड्यूटी बढ़ाई गई।

बुध का कुंभ षष्ठ भाव में प्रवेश (1 फरवरी का) तथा मंगल का 4 फरवरी को मीन राशि सप्तम भाव में प्रवेश।

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली–लग्न मंगल से पीड़ित, द्वितीय भाव मंगल के कुंभ में आने से पीड़ित, शनि भी द्वितीय भाव को पीड़ित कर रहा था, द्वादश में बैठा था। गुरु पीड़ित था (मंगल व शनि से) लाभ स्थान में मंगल विचरण कर रहा था।

9. बलात्कार, झगड़े, विस्फोट आदि

(क) 16 जनवरी, 2000 को 13 वर्षीय किशोरी के साथ बलात्कार किया गया तथा उसे झुग्गी में जला दिया गया। (ग्रीन पार्क, दिल्ली)

विश्लेषण–इस घटना का उत्तर केवल सूर्य विधि में ही मिल सकता है। सूर्य विधि (कुंडली संख्या 22) 14 जनवरी 2000 को देखें। पंचम भाव/बच्चों का पीड़ित, पंचमेश शनि नीच का अष्टम में गुरु, (कारक बच्चों का) व चंद्रमा (युवती) के साथ। पंचम से अष्टम भाव (द्वादश) पर मंगल की दृष्टि अष्टमेश सूर्य पंचम में पीड़ित। घटना के दिन बुध लग्नेश, शनि व केतु से पंचम भाव (मकर) में पीड़ित। लग्न मंगल की अष्टम दृष्टि से पीड़ित, सूर्य व चंद्रमा दोनों पीड़ित। शुक्र की दोनों राशियाँ पीड़ित। पंचम से सप्तम में राहु (दुष्चरित्र), सप्तमेष मेष (चतुर्थ भाव) में द्वादशेश व तृतीयेश गुरु के साथ। गोचर का चंद्रमा घटना के दिन वृष राशि में, मंगल से दृष्ट था, चंद्रमा की दृष्टि वृश्चिक राशि (मंगल की राशि) में अवस्थिति शुक्र पर थी। कालपुरुष की कुंडली में शुक्र अष्टम में।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) झगड़े

(*i*) 25 जनवरी, 2000 को दो जाति के लोग (शिया व सुन्नी) मुबारकपुर के गाँव में झगड़ पड़े जिससे 4 व्यक्ति मारे गये तथा 12 घायल हुए।

21 तारीख को बुध ने तथा 22 तारीख को मंगल ने नक्षत्र परिवर्तन किया। 25 जनवरी को चन्द्रमा सिंह राशि में मंगल की दृष्टि में आया। नवम, अष्टम, लग्न, चन्द्रमा तथा सूर्य व कारक गुरु का पीड़ित होना ऐसा संकेत करता है।

(*ii*) **27 जनवरी, 2000,** आजमगढ़ के गांव में एक कालिज में गणतंत्र दिवस के उत्सव पर वन्देमातरम के गाने पर जातीय झगड़े लूटमार और आगजनी हो गई। कर्फ्यू लगाया गया तथा सेना को बुलाकर तैनात कर दिया गया।

(***iii***) **2 फरवरी, 2000** सुश्री जयललिता (अन्ना डी एम के की नेता) को भ्रष्टाचार के मामले में कोर्ट द्वारा कैद करने के फैसले को लेकर 2000 कायकर्ताओं द्वारा तीन युवतियों को जलाया गया।

बुध ने 1 फरवरी 2000 को कुंभ में प्रवेश किया। बाकी योग सूर्यविधि में विद्यमान थे।

(*iv*) **12 फरवरी, 2000** मनीपुर में चुनाव के दिन 6, बिहार में 21 व्यक्ति मारे गए, बलिया में कर्फ्यू लगाया गया क्योंकि वहाँ भी काफी लोग घायल हुए।

(*v*) **5 जून, 2003 (गुरुवार)** 3 घंटे 30 मिनट पर शान्ति नगर, हैदराबाद में जातीय झगड़े हुए जिसमें पत्थर फेंकने की घटना हुई। एक होटल में छोटी घटना हुई जिसके कारण लूटमार व झगड़ा हुआ। अन्य घटना एक नोबल थियेटर के मालिक ने फटे पुराने नोट लेने से मना कर दिया, जिससे झगड़ा बढ़ा और 12 द्वि पहिये वाले वाहन तथा कुछ गाड़ियों को आग लगा दी गई।

नोट: यह 2003 की घटना है यहाँ इसकी चर्चा केवल सामान्य घटनाओं पर योग लागू कर उनका फल प्रभाव दिखाना था।

व्याख्या: शनि व मंगल का षडाष्टक होना, 4 जून, को जब मंगल ने कुंभ राशि में प्रवेश किया, तो नवपंचम स्थिति बन गई, राहु तथा सूर्य दोनों वृष में तथा शुक्र ने उसी दिन उनसे युति की, तथा शनि से द्विर्द्वादश तथा मंगल से केन्द्र स्थिति बनाई। गुरु शनि से द्विर्द्वादश व मंगल से षडाष्टक स्थिति बनाए हुए थे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. सीमा पर परेशानी

23, जनवरी, 2000 को जम्मू काश्मीर के अखनूर सैक्टर में भारतीय सेना ने प्रतिक्षेपक आक्रमण में पाक के सिपाही मार डाले। लगातार चल रही झड़पों में भी सेना ने पाक सिपाही मारे। पाक का दोषारोपण था के एल. ओ. सी. को पार किया गया। ड्रास मुशकोह घाटी, कारगिल आदि में 14 टुकड़ी तैनात कर दी गई ताकि किसी प्रकार के विद्रोह का उपचार किया जा सके।

28 जनवरी उरी सैक्टर में कैरन पर पाक बराबर बम वर्षा कर रहा था जिसमें 2 बी एस एफ के सिपाही घायल हुए। पूर्व में जो चर्चा सूर्यविधि को व भारतीय स्वतंत्रता दिवस की कुंडली को लेकर की गई है उससे ऐसी संभावना के योग स्पष्ट हो गए हैं। तृतीय भाव (सीमा), षष्ठ भाव शत्रु, मंगल सेना व गोलीबारी, राहु मलेचछ। **स्थापित नियम** कि शनि, मंगल, राहु तथा गुरु का एक दूसरे से केन्द्र, द्विर्द्वादश, षडाष्टक, तथा 3/11 होना ऐसा संकेत देता है। कर्क व मकर राशि का तथा मेष व तुला राशि का पीड़ित होनी ऐसी स्थिति की ओर इंगित करता है।

11. बस दुर्घटना

21 जनवरी, 2000 हिमाचल प्रदेश में चंबा से 45 किमी. भजाराउ हाईवे पर एक बस कलहेल नदी में गिर गई और 30 व्यक्ति मारे गए।

विश्लेषण–घटना के आसपास का गोचर (कुण्डली 22)

19 जनवरी 2000 को शुक्र वृश्चिक से धनु राशि (चतुर्थ भाव में) प्रवेश हुआ और बुध (लग्नेश व दशमेश) से युति की। 21 जनवरी को (घटना के दिन) बुध ने श्रावण नक्षत्र में प्रवेश किया। 21 तारीख को पूर्णिमा थी, चंद्रमा कर्क में गोचर कर रहा था।

सूर्यविधि (कुंडली नं. 22) में आगे तृतीय भाव, चतुर्थ भाव, शुक्र, पृथ्वी तत्त्व राशियाँ, जल तत्व राशि, अष्टम भाव (मृत्यु) लग्न व चंद्रमा आदि का पीड़ित होना।

तृतीयेश मंगल षष्ठ भाव में शुक्र (कारक) मंगल की राशि (तृतीय भाव) में चतुर्थ में लग्नेश बुध व चतुर्थेश गुरु अष्टम में चंद्रमा तथा षष्ठेश शनि से युति शनि वायु, गुरु आकाश व चंद्रमा जल तथा सभी अष्टम भाव में। बस के नदी में गिरने से व्यक्तियों की मृत्यु। सड़क से हवा में होकर नदी में गिरी। तृतीय भाव जल राशि जहाँ शुक्र (ज्येष्ठा नक्षत्र वायु) बैठा है। 21 तारीख को बुध श्रावण (वायु) नक्षत्र जिसका स्वामी चंद्रमा है, शुक्र धनु राशि (मूल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्र वायु) में केतु के नक्षत्र में (घटना के दिन) गोचर में चंद्रमा कर्क में भ्रमण कर रहा था और मकर राशि पृथ्वी तत्व में स्थित वायु तत्व राशि कुंभ व मिथुन तथा तुला तीनों पीड़ित थी। *यह सब वर्णित योग ऐसी घटनाओं को उस समय जन्म देते हैं जब प्राकृतिक प्रकोप के योग आकाश में बन रहे हों। पूर्व चर्चा में बताया गया (i) माघ मास में पाँच शनिवार (ii) मंगल-राहु षडाष्टक, (iii) शनि-राहु की केन्द्र स्थिति, (iv) शनि व गुरु दोनों की युति, (v) सूर्य व चंद्रमा का पीड़ित होना, (vi) पूर्णिमा व अमावस्या के आसपास आदि होने पर यदि सूर्यविधि में भी लग्न, अष्टम चंद्रमा व सूर्य पीड़ित हो तो जो राशि (स्थान, वस्तु) भाव (वस्तु घटना का प्रकार), गृह (स्थान, घटना का प्रकार) पीड़ित हो उनसे संबंधित घटना हो सकती है। दोनों का मिलकर प्रभाव होता है।*

12. झड़पें/धर्म को लेकर झगड़े/हत्याऐं आदि

ऐसी घटनाओं के लिए ज्योतिषीय योग

(*i*) प्रथम भाव (सामान्य स्थिति का ज्ञान जिसमें देश, प्रांत व स्थान की सुख शांति का संकेत)

(*ii*) चतुर्थ भाव (आंतरिक स्थिति, जनता का परस्पर व्यवहार, सम्पत्ति, घर, मकान, सुख-सुविधा आदि)

(*iii*) पंचम भाव (जनता, जनमानस की स्थिति, सरकार की नीति, विद्यार्थी, बच्चे, शिक्षा, योजनायें आदि)

(*iv*) अष्टम भाव (मृत्यु)

(*v*) चंद्रमा की स्थिति

(*vi*) गोचर में ग्रहों की परस्पर स्थिति परिवर्तन आदि।

सारांश: पिछले परिच्छेदों में 6.30 (1) से (10) तक जितनी घटनाओं की चर्चा की गई है वह दो सूर्यविधियों में (16-11-1999) तथा (14-1-2000) पड़ती है। उपरोक्त चर्चों से स्पष्ट होता है कि–

हमारी सरकार ज्योतिष शास्त्र से मार्गदर्शन लेकर पहले से ही उचित उपाय कर सकती है। शास्त्र द्वारा चेतावनी घटना के होने के कई दिन पूर्व प्राप्त हो सकती है। इसकी कोई सीमा नहीं, चाहे रोग विचार हो, मानव के जीवन में तथा राष्ट्र के जीवन में होने वाली हो घटना उसका पूर्वाभाष ज्योतिष शास्त्र द्वारा संभव है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

13. आँधी, तूफान व चक्रवात की घटनाऐं

(*i*) 24 सितम्बर 1997 आन्ध्र प्रदेश के समुद्रीतट पर एक बवण्डर में 8 व्यक्ति मारे गए।

(*ii*) 24 मार्च, 1998

(क) उड़ीसा, बंगाल तथा बांग्लादेश के तटीय क्षेत्र पर चक्रवात के आने से 100 व्यक्तियों की मृत्यु।

(ख) बालासोर जिले के समुद्री तट पर लक्षमानाथ क्षेत्र में एक भारी वर्षा के साथ (टॉरनाडो) चक्रवात आया।

(ग) उड़ीसा की सीमा पर मिदनापुर जिले (बंगाल) में से एक झंझावत चीरता हुआ निकला।

(घ) गोबरघाट, गोपा, बिरिसपुर, महादेवपुर तथा अस्तदाही गांव, जिला, बालासोर को 100 कि. मीटर प्रति घंटा की रफ्तार का आंधी-तूफान 15 घंटे 40 मिनट पर आया। सारे क्षेत्र को बुरी तरह प्रभावित किया। एक स्कूल के भवन को गिरा दिया।

(ङ) उड़ीसा में बालासोर को जलेश्वर से जोड़ने वाली ट्रंक रोड के, झंझावत से हुए, विनाश के कारण समस्या हो गई।

(*iii*) 29 मार्च, 1998—एक और भयानक तूफान मिदनापुर क्षेत्र में उत्तर-पश्चिमी 70 किमी. प्रति घंटे की गति से मिदनापुर (पश्चिमी-दक्षिणी बंगाल) के गांव ऐकरा, दनतौन, मोहनपुर, बेल्डे, खडगपुर नारायणगढ़ आदि गांवों में भयानक तूफान आया।

(*iv*) 30 जुलाई 2001

रंगीन वर्षा (टाइम्स आफ इंडिया 9 नवंबर, 2001) केरल के कुछ भागों में जुलाई, अगस्त 2001 में हुई जिसका कारण कोईलिचन फारमिंग अलगी था। अर्थ साइंस स्टडीज एंड ट्रॉपिकल वौटानिकल गार्डन एंड रिसर्च केन्द्र थीरूवनंतपुरम के वैज्ञानिक इस बात से आश्चर्यचकित रह गये कि इतनी अधिक मात्रा में यह पदार्थ बादलों में कैसे पहुंच गया।

विश्लेषण: पैरा (*i*) बवण्डर 24 सितम्बर, 1997 कुंडली संख्या 18 में शनि तथा मंगल षडाष्टक में, शनि तथा राहु षडाष्टक, मंगल तथा केतु षडाष्टक गुरु तथा राहु षडाष्टक परंतु गुरु तथा मंगल एक दूसरे से केन्द्र में थे। घटना के दिन मंगल वृश्चिक राशि में गोचर (19 ता से) कर रहा था। जल तत्त्व राशियां मीन तथा वृश्चिक, शनि व मंगल से पीड़ित। तुला लग्न (वायु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्व) व लग्नेश शुक्र मंगल से पीड़ित एवं कुंभ राशि में केतु व चंद्रमा मंगल (गोचर) से पीड़ित। मंगल ने मिथुन (वायु तत्त्व) राशि को भी पीड़ित किया। तुला का शुक्र तेज वायु के कारण तथा मंगल के साथ होने से विनाशक प्रभाव भी लाता है। अग्निकोण आन्ध्रप्रदेश दर्शाता है। मघा तथा फाल्गुनी नक्षत्र बुध (वायु) एवं राहु (विनाशक आंधी) से पीड़ित तथा उसपर शनि (व) की दृष्टि।

24 मार्च, 1998 का बवण्डर (कुंडली नं 24)

सूर्य का मंगल व शनि से पीड़ित होना। सूर्य उड़ीसा, बंगाल (वर्दवान) का प्रतिनिधित्व करता है। कूर्म चक्र की पूर्व दिशा भी इसका क्षेत्र को दर्शाती है। वायव्य कोण सागर के समीपवर्ती क्षेत्र को दर्शाती है। घटना के दिन चंद्रमा मकर राशि में था।

कुंडली 24

ल. 6/25°-30′

सू. 11/00°-00′

चं. 5/16°-37′

मं. 11/13°-56′ (व)

बु. 11/17°-03′

बृ. 10/15°-20′

शु. 9/14°-21′

श. 11/25°-53′

रा. 4/16°-37′

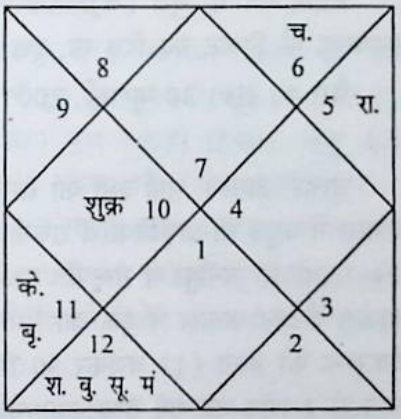

गोचर में ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन

शुक्र का 31 मार्च 1998 को 10 बजकर 30 मिनट पर कुंभ राशि में प्रवेश।

बुध का 27 मार्च 1998 को 25 बजकर 19 मिनट पर वक्री तथा 30 मार्च 1998 को 27 बजकर 25 मिनट पर पूर्व में अस्त हुआ।

मंगल 14 मार्च, 1998 को 7 बजे प्रातः पूर्व में अस्त हुआ तथा 4 अप्रैल 1998 को 25 बजकर 36 मिनट पर मेष राशि में प्रवेश।

शनि 30 मार्च 1998 को 15 बजकर 37 मिनट पर पूर्व में अस्त हुआ।

शनि, मंगल, सूर्य तथा बुध मीन (जलीय) राशि में थे। सूर्य तथा बुध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(वायु) मंगल तथा शनि (विनाशक), लग्न तथा नवांश लग्न दोनों वायु तत्व राशि के थे, सूर्य भी जल तत्व राशि व नवांश में था।

सप्तनाड़ी चक्र में सूर्य पू. भाद्रा (नीर), चंद्रमा हस्त (सौम्य) मंगल (उ. भाद्रा) सौम्य, बुध रेवती (दहन) तथा शनि भी रेवती (दहन), गुरु शतभिषा (जल), केतु शतभिषा (जल) तथा राहु पू. फाल्गुनी (जल) नाड़ियों में थे, जिसके फलस्वरूप भारी वर्षा तथा तूफान आया।

सूर्य का मीन में प्रवेश पूर्वी तथा दक्षिणी दिशा में दुर्भिक्ष कष्ट दिखाता है। सूर्य की शनि तथा बुध के साथ स्थिति उड़ीसा, बंगाल आदि को प्रभावित करती हैं। चार ग्रहों का एक राशि में एकत्रित होना, चंद्रमा तथा सूर्य का पीड़ित होना पूर्णिमा का दिन होना आदि इन घटना के लिए उत्तरदायी है।

पैरा 11 (iii) 29 मार्च 1998 मिदनापुर में आया तूफान

चंद्रमा मेष में, बुध (व) मीन में, अन्य योग पूर्व चर्चित जैसे थे तथा अमावस्या के निकट का दिन था, इस कारण ऐसी घटना घटी।

पैरा 11 (iv) 30 जुलाई, 2001 केरल राज्य में रंगीन वर्षा (कुंडली 23)

जुलाई, अगस्त, वर्षा ऋतु का समय होता है सूर्य विधि 16 जुलाई 2001 के मास में बहुत सी प्राकृतिक व राजनीतिक घटनायें हुई जैसे इम्फाल में झगड़े (24-7-2001) मनीपुर में राष्ट्रपति शासन (30-7-2001) आनन्द पुर साहिब आइडैल प्रौटैक्ट कनाल में ट्रक का गिरना (23-7-2001) फूलन देवी सदस्य लोकसभा की हत्या (13 बजकर 30 मिनट पर दिल्ली 25-7-2001) बादल फटने से 7 लोग बह गये तथा 400 भेड़ें मारी गई तथा कांगड़ा में पुनः बाढ़ आई। ब्रह्मपुत्र में पुनः बाढ़ आने से लोअर आसाम के बहुत से जिले पानी में डूब गए लगातार 4 दिन तक वर्षा इसका कारण बनी (31-7-2001), चम्बा जिले में लगातार वर्षा होने से भूस्खलन हुआ व बाढ़ आई (15-8-2001)।

इस मास में अतिवृष्टि, बादलों का फटना आदि ग्रहों के योग शनि मंगल की समसप्तम स्थिति (वृष व वृश्चिक राशि) चंद्रमाप शनि का तथा शुक्र की वृष में स्थिति, उस पर मंगल की दृष्टि। राहु की मिथुन (वायु तत्त्व) राशि का होकर मंगल से षडाष्टक व शनि से द्विर्द्वादश स्थिति तथा बुध व गुरु से युति एवं मंगल की दृष्टि। गुरु (आकाश तत्व) शुक्र तथा बुध (मेघ तथा वर्षा), कर्क, वृश्चिक (जल राशियाँ) पीड़ित। गोचर का चंद्रमा वृश्चिक में मंगल से ऊपर गुजर रहा था शनि तथा मंगल शुक्र चन्द्रमा की दृष्टि संबंध के कारण से यह सब हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली में शुक्र, शनि व चंद्रमा लग्न में मंगल सप्तम में थे। इसके साथ पूर्व चर्चित योगों का विचार करें तो स्थिति और भी स्पष्ट हो जाती है। मंगल लग्न लग्नेश, चंद्रमा, चतुर्थ व अष्टम भाव को प्रभावित कर रहा है, शनि, मंगल, राहु की स्थिति, कर्क, वृष तथा वृश्चिक का पीड़ित होना, यह सब योगों के साथ वर्षा ऋतु का होना, वर्षा के जल, बाढ़, भूस्खलन, आदि की घटना दर्शाता है। *लाल रंग की वर्षा का कारण मंगल का शनि, चंद्रमा, शुक्र, बुध, गुरु तथा राहु सबको पीड़ित करना,* साथ ही द्वितीय, पंचम, अष्टम, चतुर्थ सप्तम को पीड़ित करना साथ ही मंगल स्वक्षेत्री तथा वक्री व नवांश में उच्च का होना व रक्त का कारक होना अधिक प्रभावशाली रहा क्योंकि ऐसा पहली बार हुआ, वैज्ञानिक भी चकित हैं इसका ठीक-ठीक ज्योतिषीय कारण ज्ञात करना भी कठिन है।

6.22 कुछ ऐतिहासिक घटनाऐं

जून 2000: पटना (बिहार) में 9 सितम्बर 1987 को जन्मे मास्टर तथागत अवतार जिसके कुंडली में गुरु (व) मेष में, सूर्य सिंह में (4/23°) शुक्र (4/27°) तथा मंगल (4/17°-30′) बुध स्वग्रही (5/9°), केतु (5/8°–41′), कन्या, शनि वृश्चिक (21°/12) चंद्रमा मीन में (11/5°-40′), तथा राहु (11°/8°–41′) में थे। जन्म समय न मालूम होने के कारण लग्न नहीं निकला।

25 जून 2000 को यू.जी.एस.सी की परीक्षा नेट में बैठा। 9½ वर्ष की आयु में स्कूल की पढ़ाई पूरी की जिसमें ब्रिटेन के लार्ड केलविन का 10 वर्ष पुराना रिकार्ड टूटा।

तथागत का दो वर्ष से कम समय में गिनीस बुक में दूसरी बार नाम लिखा गया जब 11 वर्ष 2 मास की छोटी आयु में बी.एस.सी. (फिजिक्स) की परीक्षा पास की।

(*i*) अन्य विशेष कार्य: पाइ (pi) की 7 अंकों तक विशुद्ध मान प्रदान किया (जिसका रिकार्ड आज तक कायम है।)

(*ii*) टयूलिट्रौन की खोज, जो तथागत के अनुसार सूक्ष्मतम परमाणविक कण हैं।

(*iii*) इलैक्ट्रेग्रैविटी यूनिफिकेशन एण्ड एनर्जी लौस फेनोमेन नाम पुस्तक का लेखक होना।

कार्यक्षेत्र में रूकावटें

उसे दसवीं कक्षा की परीक्षा में बैठने के लिए भी सी.बी.एस.ई. के विरुद्ध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोर्ट में जाना पड़ा। यू.पी.एस.सी से नेट के लिए 19 वर्ष की सीमा से कम आयु होने के कारण बहुत परेशानियाँ उठानी पड़ी। उसके बार-बार प्रार्थना करने पर उसका एन.पी.एल के वैज्ञानिकों ने जनवरी 2000 में इंटरव्यू लिया और उसकी योग्यता के कारण उसको अनुमति देनी पड़ी।

आकांक्षा मानव की वैज्ञानिक तथा राजनैतिक समस्याऐं जिनके कारण जनता का शोषण होता है उसको रोकने के लिए विज्ञान के लाभ तथा नई से नई तकनीकी द्वारा उन्हें अवगत करना।

विश्लेषण–गुरु तथा शनि स्वतंत्रता दिवस की कुंडली के लग्न में (राशि से एकादश भाव में) जहाँ से नवम व दशम व पंचम भाव को प्रभावित कर रहे हैं। महादशा शुक्र (लग्नेश व षष्ठेश होकर तृतीय में बैठकर नवम भाव पर दृष्टि दे रहा है और नवमेश दशमेश शनि के साथ बैठा है।) उसमें अंतर गुरु (अष्टमेश व लाभेश) शोध, रुकावटें, अचानक, लाभ, शिक्षा, ज्ञान आदि की प्राप्ति का पंचम भाव (प्रतिभा, विद्या बच्चों आदि) पर मंगल (साहस, पराक्रम) की दृष्टि, मंगल गोचर का कुंडली के मंगल पर गोचर कर रहा था तथा नवम भाव को भी प्रभावित कर रहा था। गोचर में राहु-केतु, कर्क-मकर तृतीय व नवम भावों को प्रभावित कर रहे थे।

सूर्यविधि में नवम, दशम तथा पंचम भावों के स्वामी सप्तम भाव में षष्ठेश व एकादशेश (शुक्र) के साथ बैठे हैं। लग्नेश गुरु षष्ठ भाव में तृतीयेश (सृजनात्मक) व द्वितीयेश (धन, वाणी, प्रतिभा) शनि के साथ बैठा है।

5 जुलाई 2000 आकाश टैस्ट फायर्ड

देश में बना बहुमुखी लक्ष्य वाला सतह से वायु में मार करने वाला आकाश प्रक्षेपणास्त्र को चांदीपुर (उड़ीसा) परीक्षण क्षेत्र में सफलतापूर्वक छोड़ा गया। यह 55 किलोग्राम तक के वजन के अभिसामरिक तथा परमाणु शस्त्र ले जा सकता है। शुक्र 5 तारीख को उदय हुआ तथा सूर्य ने पु. वसु नक्षत्र में प्रवेश किया यह भी एक शोध परिणाम है जिससे भारत को यश व मान प्राप्त हुआ इसलिए पूर्व घटना के लिए चर्चित योग ही उसका कारण है।

6.23 ज्योतिषियों के सामने चुनौती

(i) जुलाई 2003

खगोल शास्त्रियों ने एक बड़े ग्रह की तरह की वस्तु की फोटो खींचीं जिसका नाम ब्राउन ड्वार्फ है। यह सूर्य के समान एक तारे की समीप से परिक्रमा कर रहा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हवाई विश्वविद्यालय के खगोल शास्त्री माइकेल लियू का कथन है ब्राउन डवार्फ अपने पितृ तारे के चारों ओर परिक्रमा करता है उन दोनों का अंतर सूर्य और यूरेनस की बीच की दूरी से भी कम है। (2.7 बिलियन किमी) परंतु उस वस्तु को देखना कठिन है क्योंकि उसे सैंट्रल स्टार की चमक बहुत तेज है।

(ii) 5 जुलाई 2003

एक अन्य सौर ग्रह एच.उडी 70642 तारे के चारों और घूमता दिखाई दिया। खगोल शास्त्रियों का कहना है यह बृहस्पति की भांति है। आशा है कि यह ग्रह पृथ्वी से मिलता जुलता होगा।

खगोलशास्त्रियों के द्वारा प्राप्त सफलता का कोई ज्योतिषीय विश्लेषण भी होगा इसका उत्तर ढूंढ़ना है।

6.24 हिरोशिमो नागासाकी पर 6-8-1945 को बम वर्षा समय अभाव से लग्न नहीं निकाला गया मेष को लग्न मानकर ग्रह स्थिति का अध्ययन करते हैं क्योंकि जापान की राशि मेष है।

कुंडली 25

ल. 0/00°-00′
सू. 3/20°-34′
चं. 3/2°-16′
मं. 1/16°-29′
बु. 4/11°-43′
बृ. 5/03°-18′
शु. 2/09°-15′
श. 2/25°-03′
रा. 2/15°-49′

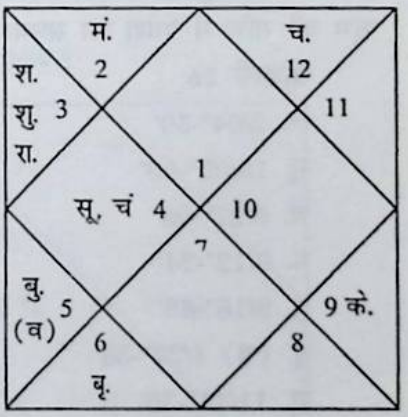

प्रभावित क्षेत्र: यू.एस.ए मिथुन, न्यूयार्क, कर्क, वाशिंगटन डी सी की वृश्चिक राशियां हैं।

(*i*) शनि तथा राहु की युति
(*ii*) शनि तथा राहु दोनों मंगल से द्विर्द्वादश
(*iii*) चंद्र अमावस्या के पास चतुर्दशी का
(*iv*) शनि व राहु दोनों गुरु से केंद्र में स्थित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*v*) जापान की राशि मेष से, द्वितीय में मंगल, तृतीयेश व षष्ठेश बुध पंचम में शनि से दृष्ट।

तृतीय भाव तथा भावेश पीड़ित, चतुर्थेश चंद्रमा निर्बल। तृतीय (सीमा), चतुर्थ (आंतरिक स्थिति, भूमि मकानादि) सभी पीड़ित होने से भय बना। यू. एस.ए की राशि मिथुन का स्वामी बुध सिंह राशि में मंगल से दृष्ट (मंगल मिथुन से षष्ठेश, वृश्चिक से भी षष्ठेश) शनि (वायु तत्व) मिथुन में वायु तत्व राशि से बुध पर दृष्टि दे रहा था। सबसे अधिक धनु राशि (शनि मंगल व केतु से) पीड़ित है। मिथुन में शनि, राहु तथा शुक्र का होना यू.एस.ए के मदांध होने का, वहां से तृतीय मे लग्नेश बुध, षष्ठेश मंगल तथा शनि से दृष्ट, उसको पराक्रम दिखाने का साहस व क्रूर कर्म करने का इरादा, षष्ठ भाव पर षष्ठेश मंगल (फौज व बुध) की दृष्टि उसे बल प्रदान कर रही है।

6.25 धार्मिक झगड़ा

2 मार्च 2004 मंगलवार को मुहर्रम के दिन ईराक में 140 व्यक्ति मारे गए। 225 घायाल हुए जब सियाओं के जलूस पर आतंकवादियों ने रॉकेट से हमला किया। सूर्य विधि पर 13 फरवरी 2004 को 12 घंटे 41 मिनट पर सूर्य कुंभ की राशि में प्रवेश का समय।

कुंडली 26

ल. 2/04°-50′
सू. 10/00°-00′
चं. 6/27°-09′
मं. 0/12°-24′
बु. 9/15°-38′
वृ. (व) 4/22°-36′
शु. 11/11°-35′
श. (व) 2/12°-53′
रा. 0/8°-21′

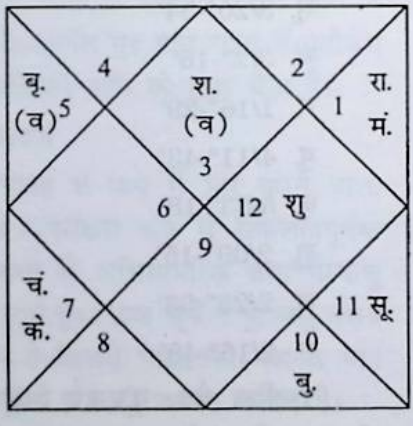

सुनहरी मकबरे के पास मुहर्रम के दसवें दिन जो अशूर्यो/यौम ए अशूर कहलाता है जहाँ हजरत इमाम हुसैन दफन हैं पांच विस्फोटों ने करबला को हिला दिया। अमेरिका का कहना है कि आतंकवादियों की योजना ऐसा करके शिया-सुन्नियों के बीच झगड़ा करना था ताकि 30 जून को ईराक को सत्ता देने की योजना विघ्न पड़े।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(शिया आबादी 60 प्रतिशत तथा सुन्नी 32 प्रतिशत, सद्दाम सुन्नी है) शिया अमेरिका की राजनीति के विरुद्ध थे, उनके सत्ता में आने की संभावना थी।

ज्योतिषीय विश्लेषण : करबला का लग्न मेष था।

(ख) मंगल तथा राहु का एक राशि में होना शनि से 3/11 की स्थिति, मेष से शनि दशमेश तथा एकादशेश तृतीय भाव में बैठकर गुरु (धर्म का कारक) को, पंचम भाव तथा पंचमेश सूर्य को, नवम भाव, नवमेश गुरु को, चतुर्थ स्थान पर मंगल की दृष्टि चतुर्थेश चंद्रमा केतु के साथ मंगल से दृष्ट, अष्टमेश मंगल राहु से पीड़ित व अष्टम भाव पर शनि की दृष्टि, मंगल की दृष्टि। (यहाँ मंगल स्वयं राशिपति हो परंतु उसकी दृष्टि अनुभव में क्रूर प्रभाव देगी) घटना के दिन शुक्र मेष में (लग्न में) पीड़ित, चंद्रमा मिथुन में शनि पर, तृतीयेश भाव बुध कुंभ एकादश में सूर्य के साथ। तृतीय भाव (भाई) नवम तथा पंचम (धर्म आराधना) अष्टम भाव का पीड़ित होना चंद्रमा व सूर्य का पीड़ित होना आदि पूर्व चर्चित योग यहाँ लागू होते हैं।

6.26. रेल दुर्घटना

कुंडली नं 27 (सूर्य विधि 14 जून, 2004)

ल. 9/3°-32'
सू. 2/00°-00'
चं. 0/25°-20'
मं. 3/00°-18'
बु. 1/24°-48'
बृ. 4/17°-24'
शु. 1/20°-12'
श. 2/19°-58'
रा. 0/16°-41'

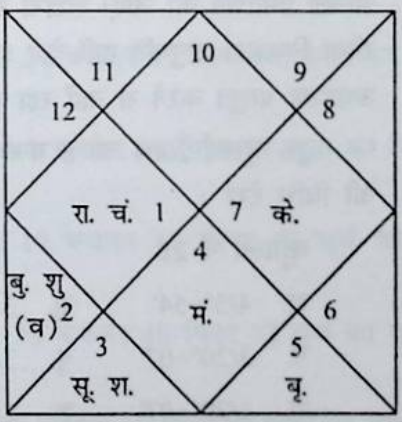

महाराष्ट्र रायगढ़ जिला में 16 जून, 2004 को मंगलौर कुरला, मत्स्यगंधा एक्सप्रैस ट्रेन पटरी से उतर जाने से 14 व्यक्तियों की मृत्यु तथा 62 व्यक्ति घायल हुए। 22 जून 2003 के बाद यह दूसरी घटना थी जो इस मार्ग पर घटी। उस समय कारवार-मुम्बई हॉलीडे स्पेशल सिन्धु दुर्ग जिले में सुरंग के बाहिर पटरी से उतरी और 50- यात्री मारे गए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीर तथा केरननदी स्टेशनों के मध्य एक शिलाखंड ढलान से लुढकता हुआ पुल पर रेलवे लाइन पर गिरा। जैसे ही यह गिरा उसके कुछ सैकण्ड बाद मत्स्यगंधा एक्सप्रैस का इंजन आकर उससे टकरा गया जिससे 2 डिब्बे पुल से झूल गए तथा इंजन मैदान पर गिरा।

विश्लेषण : पृथ्वी तत्त्व राशि का लग्न, लग्नेश वायु तत्त्व राशि में नवांश लग्न वायु तत्त्व राशि, लग्नेश जलीय नवांश (मीन) में तथा अष्टमेश वायु तत्त्व राशि एवं नवांश में है। लग्न मंगल से पीड़ित, चतुर्थ भाव राहु से पीड़ित (राहु ऊँचाई से गिरना), चतुर्थेश जल राशि में नीच का वर्गोत्तम, चतुर्थेश व सप्तमेश का स्थान परिवर्तन, चंद्रमा, कृष्णपक्ष का राहु से पीड़ित, सूर्य शनि से पीड़ित, लग्नेश व अष्टमेश षष्ठ भाव में, तृतीय भाव एवं भावेश पर शनि की दृष्टि, शुक्र (व) षष्ठेश बुध के साथ और अशुभ कर्तरी में।

लेखक के पास पिछले बीस वर्षों से अधिक का विवरण है, जिनका ज्योतिषीय विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सकता है और सूत्रों की सार्थकता दर्शाई जा सकती है परंतु एक पुस्तक में इन सबका प्रस्तुतीकरण संभव नहीं है। यहाँ केवल चुनी हुई घटनाओं को लेकर यह प्रयत्न रहा है कि एक ही प्रकार की कई घटनाएँ दी जायें और ऋषियों द्वारा प्रतिपादित सूत्रों को लगाकर उनकी सत्यता प्रमाणित की जाए। लेखनी रुकने को तैयार नहीं, पुस्तक के पृष्ठों की सीमा विवशता अनुमति नहीं देती इस दुविधा में होने पर भी नीचे दिया गया उदाहरण प्रस्तुत करने से नहीं रहा जा रहा है :

16 जुलाई 2004 को 8 बजकर 26 मिनट पर हुए कर्क के सूर्य प्रवेश की विधि देखें :

कुंडली नं 28

ल. 4/5°-54'	सू. 3/00°-00'	चं. 2/15°-06'
मं. 3/20°-07'	बु. 3/24°-33'	बृ. 4/21°-51'
शु. 1/20°-07'	श. 2/24°-01'	रा. 0/14°-16'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि चक्र

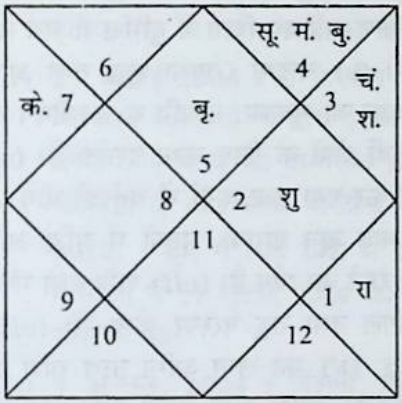

नवांश

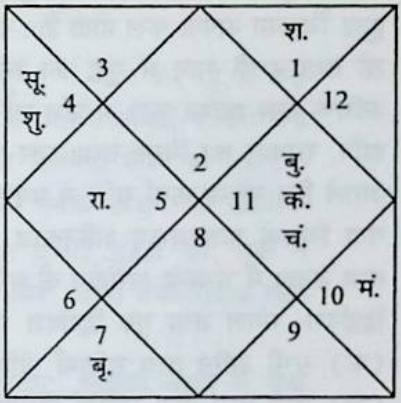

गोचर में ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन

(*i*) 20-7-2004 को 11 बजकर 29 मिनट पर बुध का सिंह में प्रवेश।

(*ii*) 21-7-2004 को 21 बजकर 40 मिनट पर शुक्र का मृगशिरा नक्षत्र में प्रवेश।

(*iii*) 22-7-2004 को 17 बजकर 23 मिनट पर मंगल पश्चिम में अस्त।

(*iv*) 31-7-2004 को 24 बजकर 59 मिनट पर मंगल का सिंह राशि में प्रवेश।

(*v*) 31-7-2004 को 7 बजकर 44 मिनट पर **शुक्र** का मिथुन राशि में प्रवेश।

(*vi*) 2-8-2004 को 19 बजकर 10 मिनट पर **सूर्य** का आश्लेषा नक्षत्र में प्रवेश।

(*vii*) 3-8-2004 को 28 बजकर 48 मिनट पर **बुध** का पू. फाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश।

(*viii*) 8-8-2004 को 8 बजकर 40 मिनट पर **शुक्र** का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश।

(*ix*) 10-8-2004 को 6 बजकर 2 मिनट पर **बुध** वक्री हुआ।

विश्लेषण : (*i*) लग्न पर शनि की दृष्टि **(*ii*)** अष्टम भाव अष्टमेश गुरु पर शनि की दृष्टि, **(*iii*)** सूर्य व चंद्रमा पीड़ित, **(*iv*)** सूर्य का कर्क में प्रवेश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्दशी (अमावस्या के निकट) शुक्रवार को हुआ, उसी दिन दक्षिणायन प्रारंभ हुआ जिसका अपना फल होता है : दक्षिण-पश्चिम दिशा में दुर्भिक्ष व भय बना रहे तथा उत्तरी भाग में युद्ध का भय। (*v*) चन्द्रमा (आधा शुद्ध तथा आधा अधिक मास श्रावण का) में पांच शनिवार जो भूकम्प, सम्पत्ति व जनजीवन की हानि, सरकार का गिरना तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों के लिए कष्ट दर्शाता है। (*vi*) अगले दिन चंद्रमा कर्क राशि में प्रवेश कर गया तथा कर्क में चर्तुग्रही योग बन गया जिसके फलस्वरूप अग्निकांड, बाढ़ खून खराबा, मूल्यों में वृद्धि आदि तथा जनता में समस्या असंतोष के बने रहने का योग है। (*vii*) शनि तथा मंगल द्विर्द्वादश, मंगल तथा गुरु द्विर्दादश मंगल तथा राहु परस्पर केन्द्र में। (*viii*) (क) सभी अग्नि तत्त्व राशियाँ पीड़ित, D/1 का लग्न अग्नि तत्त्व राशि का (ख) सभी वायु तत्त्व राशियाँ पीड़ित (ग) नवांश लग्न पृथ्वी तत्त्व राशि का द्वादशेश व नवमेश का स्थान परिवर्तन (लग्नेश जल तत्त्व राशि में)। (*ix*) मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धनु, मकर, कुंभ तथा मीन राशियाँ पीड़ित हैं। (*x*) नवम राहु से पीड़ित, नवमेश मंगल सूर्य के साथ जलीय राशि में तथा कारक गुरु भी पीड़ित।

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली का विश्लेषण

शुक्र/शनि की दशा चल रही है। जन्म राशि से सूर्य व मंगल गोचर कर रहे हैं (अच्छा नहीं) गुरु का गोचर द्वितीय भाव से (ठीक नहीं) चंद्रमा व शनि की स्थिति द्वादश में ठीक नहीं, लग्न से चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय भाव सभी पीड़ित हैं। ऐसी ही स्थिति अष्टम, नवम व दशम भावों की है।

मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला धनु, मकर, कुंभ तथा मीन 12 में से 9 राशियाँ पीड़ित हैं। सभी पीड़ित होने का अर्थ हुआ कि विश्व में अधिकतर भागों में तथा भारत में समस्यायें ही रहेंगी। कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित **घटनाओं की समीक्षा :**

(*i*) **16 जुलाई 2004 :** मद्रास के छोटे कस्बे मुम्बकोनम के एक स्कूल में आग लगी (उस समय भी वहीं लग्न था जो सूर्य विधि का है) 100 बच्चे मर गए। अरब सागर के तट के पास का स्थान था, तेज हवा के चलने से अग्नि ने घास के छप्पर को लपेट लिया।

गुरु, बच्चों, शिक्षा स्थल आदि का कारक कर्कराशि (जल राशि) काल पुरुष का चतुर्थ भाव है। सिंह राशि स्वतंत्रता दिवस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की कुंडली का चतुर्थ भाव में गुरु बैठा था, मंगल तथा सूर्य तृतीय भाव से नवम भाव को देख रहे थे।

(*ii*) **21 जुलाई 2004 :** दो भारतीय कुवैत में काम कर रहे थे उन्हें भी अन्य व्यक्तियों के साथ ईराक के आतंकवादियों ने बंदी बना लिया और भारत का अमेरिका की सहायता करने के खिलाफ चेतावनी दी और सभी भारतीयों को ईराक छोड़ने को कहा।

कारण : बुध ने सिंह राशि में 20 जुलाई 2004 को, शुक्र ने मृगशिरा में 21 जुलाई 2004 को प्रवेश किया तथा चंद्रमा सिंह राशि में था।

(*iii*) **1 अगस्त, 2004 :** दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात आदि में एक मास की प्रतीक्षा के उपरान्त वर्षा आई। अधिक मात्रा में जल बरसने से इतना विनाश हुआ कि सामान्य जनजीवन बिखर गया, गाड़ियों का चलना रोक दिया गया, रेल व सड़क यातायात ठप्प हो गया। बाढग्रस्त क्षेत्रों में सेना ने आकर सहायता की। सतलुज-यमुना लिंक नहर के टूटने से घाघर, टगारी नदी में बाढ़ आ गई। देहरादून में एक भवन के गिरने से पांच मजदूर मारे गये।

(*iv*) **8 अगस्त, 2004 :** हिमाचल प्रदेश में बादल फटने से 20 मजदूर फँस गये तेज बाढ़ आई और कुलु जिले में भूस्खलन हो गया, जगराँव नाले का पानी साधारण स्तर से 6 मीटर तक चला गया।

(*v*) **5 अगस्त, 2004 :** महाराष्ट्र, गुजरात तथा केरल में वर्षा के कारण 62 व्यक्ति मारे गए। दक्षिणी गुजरात में दो दिन तक तेज वर्षा से 46 जानें गई जिसमें 26 मृत्यु अकेले भरूच जिले में हुई जहाँ से 1300 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया।

(*vi*) **7 अगस्त, 2004 :** *हिम नदी के पिघलने से एक चिंताजनक स्थिति पैदा हुई जिससे सरकार को अंदेशा हुआ कि केदारनाथ का मंदिर ही नक्शे पर से न मिट जाए।*

मौसम विभाग के मंत्री कपिल सिब्बल का ब्यान : शायद पहली बार भारतीय मौसम विभाग ने स्वीकार किया कि ऋतु संबंधी भविष्यवाणी करने में पूर्ण रूपेण समर्थ नहीं है। विभाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के अधिकारियों का कहना है कि भारतीय मौसम विभाग को 500 सैटेलाइट आधारित ऑटोमैटिक गेज स्टेशन चाहिए। दिल्ली में तीन हैं जबकि 10 मानव संचालित स्टेशन चाहिए। ऊपरी वायु परिक्षण यंत्र 50 के स्थान पर 37 उपलब्ध है।

नोट : ज्योतिष द्वारा अनेकों सही भविष्यवाणियाँ मौसम के संबंध में की जा चुकी हैं। आई. कास के उप-प्रधान श्री के.एन. राव जब दिल्ली नगरनिगम में कार्यरत थे (1980-81) उनकी भविष्यवाणियाँ समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई जो सही रही। साथ ही मौसम विभाग की भविष्यवाणियाँ अधिकतर गलत रही। फिर भी सरकार ने ज्योतिष शास्त्र का सहारा नहीं लिया। एक भी ज्योतिष केन्द्र सरकार द्वारा स्थापित नहीं किया गया। नाहीं किसी ज्योतिष संस्था को मान्यता दी।

(*vii*) **9 अगस्त, 2004 :** चीन में भूकंप से 3 व्यक्तियों की मृत्यु 150 घायल। 5.6 रिकटर स्केल के भूकंप ने 15 बज कर 56 मिनट पर (भा. स्टे. टा) पर लुडियन काउंटी (जो दक्षिण पश्चिम चीन के यून्नान प्रांत में पड़ता है) में केंद्र था (अक्षांश 27-02 उ. रेखांश 103.6 पू.) इसी क्षेत्र में पहले दो बार 15 नवम्बर तथा 26 नवम्बर 2003 को भी भूकम्प आया था।

चंद्रमा वृष में बुध (व) 10 अगस्त प्रातः तथा शुक्र आर्द्रा में 8 अगस्त 2004 को प्रवेश हुए।

(*viii*) **10 अगस्त, 2004 :** इस्ताम्बूल में एक बम के फटने से दो व्यक्ति मारे गए ग्यारह घायल हुए। अबु हाफ अल मस्त्री ब्रिगेड ने यह आक्रमण किया (अक्षांश 30°-2' रेखांश 31°-15' तथा) यू.ए.आर।

❑❑❑

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ठ

1. संवत्सर की मंत्रिपरिषद्

I. वर्ष का राजा

नवग्रहों के राजा बनने के फल व उनका वाहन

सूर्य–पश्चिम के भागों मे युद्ध का भय, जमाखोरों को लाभ, वर्षा की कमी, अनाज की उपज में कमी, वृक्षों पर कम फल, गाय भैसों के दूध में कमी, जनता रोग से दुखी।

वाहन–घोड़ा।

चंद्रमा–सभी ओर सुभिक्ष, प्रसन्नता, अच्छी खेती, पर्याप्त वर्षा, अनाज सस्ता, चावल की उपज बहुत अच्छी, जनता समस्याओं से मुक्त, प्रसन्नता एवं शक्ति प्राप्त। फल तथा सब्जी का बाहुल्य।

नोट–सम्वत् 2071 (2014-15) में चंद्रमा राजा था।

वाहन–हिरण।

मंगल–जन जीवन व संपत्ति का नाश, अग्नि कांड, चोरी आदि से जनता में शान्ति भंग, सत्ता दलों में झगड़ा, युद्ध भय, रोग से जनता संतप्त व अलगाव की भावना उभरे। अधिकतर भागों में वर्षा की कमी।

वाहन–बैल।

बुध–पर्याप्त वर्षा, उत्सवों आदि का आयोजन, दान देने की प्रवृत्ति की वृद्धि, परस्पर सद्भावना से समाज की उन्नति व समृद्धि।

वाहन–सिंह।

गुरु–गाय-भैंसों से प्राप्त दुग्ध मात्रा में वृद्धि, ब्राह्मण अपने कर्मकाण्ड में रत, जनता सुखी समृद्धि व अपने कार्य में खुश रहे।

वाहन–चातक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र–पशुओं के चारे की बहुतायत, अधिक वर्षा के कारण नदियों में बाढ़, फलों के उत्पादन में वृद्धि, गाय-भैंसों की संख्या में वृद्धि, सत्तारूढ़ राजाओं में सद्भावना।

वाहन–दादुर

शनि–वर्षा की कमी व रोग के कारण जनता दुखी नेताओं में शत्रुता के कारण राजनीति अस्थिरता बढ़े, राज विग्रह, चोरी की वारदातें, डकैती आदि बढ़े, अनाज की कमी के (कारण ओले से हानि), काले रंग के वस्त्रों में तेजी। भूखी जनता का पलायन, *सरकार नये-नये कर लगाये। रोग विवाद, अकाल, भय, चोर, जोर भरा होय। भूपति शनि मंद फल ब्रह्मादिक होये।।* (घाघ)

वाहन–भैंसा।

राजा के आधीन क्षेत्र–काश्मीर, अफगानिस्तान तथा बडाड प्रदेश।

II. वर्ष का मंत्री

नव ग्रहों के मंत्री बनने का फल व वाहन।

सूर्य–राजा, चोर आदि का भय, जनता में रोग के कारण कष्ट, खाद्य सामग्री व धन की मात्रा में वृद्धि। रसदार वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट, परन्तु कुछ स्थानों में फल व सब्जी की कमी। राजनीतिक उथल-पुथल।

चंद्रमा–अतिवृष्टि फसलों का बहुत अधिक उत्पादन, जनता में सुभिक्ष तथा उन्नति।

नोट–सम्वत् 2071(2014-15) में चंद्रमा वर्ष का मंत्री था।

मंगल–डाकू, चोर, धोखेबाज, जुर्म करने वालों की गतिविधि बढ़े। विभिन्न प्रकार की रोगोत्पत्ति, दूध की कमी, कलह, अशांति आदि से ब्राह्मणों का चरित्र हनन।

बुध–पुरुष व स्त्रियों में कामोत्तेजना व विलासिता, धन में वृद्धि, मुद्रा प्रसार, व्यापार में वृद्धि, पर्याप्त वर्षा, परंतु जौ, मसूर, चना तथा अनाज के मूल्यों में वृद्धि।

गुरु–सभी प्रकार की फसलें अच्छी हों, पर्याप्त वर्षा हो, सभी ओर प्रसन्नता की लहर रहे, सत्तारुढ नेता जनता के हित के कार्य करे और उनका ध्यान रखें।

शुक्र–चूहे व टिड्डी दल खडी फसलों को हानि पहुँचाये, पानी की भी कमी रहे और फसलों का नाश हो तथा अनाज के मूल्यों में वृद्धि हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि–सरकार द्वारा कठोर व अप्रिय निर्णय लिए जाने से जनता दुखी। वर्षा की कमी के कारण कुछ क्षेत्रों में अकाल, गरीबी व दुर्भिक्ष के कारण शोकातुर वातावरण रहे।

मन्त्री के अधीन क्षेत्र–आंध्र प्रदेश, भालिक, उज्जैन तथा मालवा आदि।

नोट–आंध्रा का विभाजन इसी के समय में हुआ।

III. सस्येश-ग्रहों के सस्येव बनने के फल

सूर्य–ग्रीष्म की फसल में मूल्य वृद्धि, चोरी की घटनाओं में वृद्धि, नेताओं में विरोध, पर्याप्त वर्षा तथा जंगल की वृद्धि।

चन्द्र–जनता में संतोष, पृथ्वी पर पर्याप्त जल, दूध की मात्रा, सत्ताधारी, ब्राह्मण व देव पूजा में रत रहे तथा अनाज व धन की वृद्धि हो।

मंगल–हाथी, घोड़ों, ऊँटों, गायादि में रोग, वर्षा की कमी व जौ, गेहूँ व चावलादि का उत्पादन कम। भूसेदार अनाज महँगा। जनता में रक्त संबंधी रोग फैले तथा सरकार के साथ टकराव हो।

बुध–पर्याप्त वर्षा, शांति तथा समृद्धि, कोई परेशानी नहीं। ब्राह्मण वेदपाठ व शुभ गतिविधियों में रत।

नोट–सम्वत् 2071 (2014-2015) में बुध सस्येश था।

गुरु–जनता में प्रेम सद्भावना की लहर, पर्याप्त वर्षा, पर्याप्त चारा तथा सभी ओर उन्नति हो।

शुक्र–पर्याप्त वर्षा, गेहूँ, जौ, चावल, गन्ना आदि के व्यापार में लाभ। पृथ्वी सुन्दर फूलों व फलों से सुसज्जित रहे।

शनि–राजाओं व नेताओं का व्यवहार असहनीय हो, शासक व प्रजा में विरोध। जनता में रोग का फैलना व वाद-विवाद के उत्पन्न होने से अशांति। फसलों का नष्ट होना आदि का भय। शनि प्राकृतिक प्रकोपों से कम उत्पादन।

IV. धान्येश-ग्रहों के धान्येश बनने के फल

सूर्य–शरद की फसलें जैसे मूंग, मोंठ, बाजरा आदि का नष्ट होना, राजनीतिज्ञों में मतभेद व टकराव। सभी खाद्यान्न महँगे, जनता रोग से दुखी। युद्ध भय।

चन्द्रमा–जन्म दर में वृद्धि, गेहूँ, चना, सरसों, तेल के बीजों के उत्पादन में वृद्धि, गाय-भैंसों से अधिक मात्रा में दूध उत्पादन। अच्छी वर्षा उत्तम फसल दे। जनता सुखी व समृद्धिशील।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल–बाजरा, मूंग तथा अन्य अनाज के दाम ऊँचे, अग्निकांड व चारों के कारण जनता को कष्ट।

नोट–सम्वत् 2071 (2014-15) में मंगल धान्येश था।

बुध–सिंध तथा लाट प्रदेश में अनाज की कमी, अन्य क्षेत्रें में अधिक अनाज उपलब्ध।

गुरु–गेहूँ, जौं तथा चावल आदि की अच्छी फसल, मूल्यों पर नियंत्रण, जनता के बीच धार्मिक व शुभ उत्सव, कृषि के माध्यम से उन्नति। सरकार का भी इस ओर अधिक ध्यान।

शुक्र–शरद ऋतु की फसल पकने से पूर्व नष्ट हो, पशुओं का चारा सस्ता तथा दूध का उत्पादन कम।

शनि–सरकारी खजाने में कमी, युद्ध व युद्ध जैसी स्थिति के कारण तनाव, भय, अनाज की कमी रोग फैले कहीं अति/कहीं अल्प वृष्टि के कारण किसान दुखी।

धान्येश के आधीन क्षेत्र–गुजरात, नर्मदा नदी के पास का क्षेत्र तथा मध्य प्रदेश।

V. मेघेश-ग्रहों के मेघेश बनने के फल

सूर्य–जौ, चना, अनाज की फसलों में वृद्धि जनता प्रगतिशील व सुखी।

चन्द्रमा–गाय, बकरी, भैंसों आदि के दूध की मात्रा में वृद्धि, चने की अच्छी फसल, फल व फूल अधिक हों। सब ओर प्रसन्नता रहे।

नोट–सम्वत् 2071 (2014-2015) में सूर्य मेघेश था।

मंगल–जौ, चना, अनाज का अधिक उत्पादन, जनता में सुभिक्ष तथा समृद्धि। दूध की मात्रा बढ़े, दुधारू पशुओं के मूल्यों में वृद्धि। धन, अनाज व खाद्य पदार्थों का उत्पादन अधिक हो, जनता का जीवन सुखी, कुछ स्थानों में वर्षा की कमी और कुछ स्थानों में अति वृष्टि। प्राकृतिक प्रकोपों से जनता दुखी। शास्त्रों की अवहेलना।

बुध–पर्याप्त वर्षा, जौ, गेहूँ की फसल अच्छी, सभी ओर प्रसन्नता व प्रगति। ब्राह्मण नित्य पूजादि में रत।

गुरु–पर्याप्त वर्षा के कारण जनता में सुभिक्ष, सत्तादल बुद्धि से कार्य करें। अनाज तथा धन की मात्रा में वृद्धि।

शुक्र–पृथ्वी के प्रत्येक भाग में पर्याप्त वर्षा, अनाज का बाहुल्य, राजनेता जनता की सुख-सुविधा में विशेष ध्यान देंगे। ब्राह्मण व विद्वानों का सम्मान है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि–भारी वर्षा, असामयिक वर्षा, कहीं कम कहीं अधिक वर्षा के कारण विनाश, शासक परेशान, जनता समस्याग्रस्त दुखी तथा रोगग्रस्त।

मेघेश के अधीन क्षेत्र–मगध तथा बंगाल।

VI. रसेश-ग्रहों के रसेश बनने के फल

सूर्य–वर्षा की कमी, घी, तेल, कपड़े आदि की उपलब्धि से कमी, धनाढय व्यक्तियों का जीवन सुखी।

चन्द्रमा–युवतियों का सामीप्य तथा संसर्ग प्राप्त हो। अच्छी वर्षा हो। गुड़, चीनी, अनाज तथा धन की मात्रा में वृद्धि।

मंगल–रसदार वस्तुओं व दुग्ध के मूल्यों में भारी वृद्धि। राजनेताओं के लिए अशुभ। कुछ क्षेत्रों में वर्षा की कमी।

बुध–अनाज का उत्पादन अधिक, धन में वृद्धि, शासक प्रसन्न हों तथा जनता की सुख-सुविधा की ओर ध्यान दें। अच्छी वर्षा होगी। देश की सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़।

गुरु–सर्वविधि सम्पन्नता, चारा व घास का उत्पादन भी अच्छा। तालाबों में कमल खिलेंगे, ब्राह्मण का आदर होगा। सरकार तथा जनता में मनोहर संबंध।

शुक्र–धार्मिक गतिविधियाँ बढ़ेंगी, जनता यज्ञादि करे, सुभिक्ष शांति का वातावरण हो, शासक वर्ग दुष्कर्मों से दूर।

नोट–सम्वत् 2071 (2014-2015) में शुक्र रसेश था।

शनि–गुड़, चीनी आदि के मूल्यों में वृद्धि, अल्प वर्षा तथा हाथी, घोड़ों व अन्य पशुओं में रोग फैले, राजा के प्रकोप व मूल्यों में वृद्धि के कारण जनता में रोष। पशुओं, गौ, ऊँट, हाथी तथा घोड़े आदि का नाश।

रसीन के अधीन क्षेत्र–कोनकन, गोआ।

VII. नीरसेश-ग्रहों के नीरसेश बनने के फल

सूर्य–धातुओं (विशेषतया तांबा) व मोती, मानक आदि के मूल्यों में वृद्धि।

चन्द्रमा–मोती, सफेद वस्तुएँ, चांदी आदि के मूल्यों में वृद्धि।

मंगल–मूंगा, लाल रंग के कपड़े व वस्तु, लाल चंदन, तांबा आदि के मूल्यों में लगातार वृद्धि। शुष्क वस्तुओं जैसे लकड़ी व औषधि आदि का उत्पादन कम। मशीनरी व उसके कलपुर्जों के उत्पादन में बाधा।

बुध–फोटो, कपड़ा, शंख तथा चंदन के मूल्यों में वृद्धि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नोट–सम्वत् 2011 (2014-15) में बुध नीरसेश था।

गुरु–हल्दी पीली वस्तुएँ, स्वर्ण, पीतल तथा पीले वस्त्र सस्ते होंगे। जनता के बीच सद्भावना, खनिज पदार्थ भी सस्ते।

शुक्र–कपूर, चंदन, स्वर्ण, मोती तथा कपड़े के दाम ऊँचे होंगे। गरीब में रोष।

शनि–लोहा, कच्चा लोहा, मशीनरी, काली वस्तुएँ तथा कपड़ों के मूल्यों में वृद्धि।

नीरसेश के अधीन क्षेत्र–मालवा तथा बिहार।

VIII. फलेश-ग्रहों के फलेश बनने के फल

सूर्य–सभी प्रकार के फल, फूल तथा वृक्षों द्वारा पृथ्वी की शोभा वृद्धि पर्याप्त वर्षा।

चन्द्रमा–विद्वान व्यक्ति प्रसन्न रहे, शासक कानून को मानें तथा सहानुभूति रखें परंतु चालाक होंगे।

मंगल–फल व फूलों की कमी, रोग भय, शासकों व जनता में मतभेद व तनाव, युद्ध सा वातावरण, खाद्यान्न का उत्पादन कम। प्राकृतिक प्रकोप से जनता दुखी।

बुध–सभी प्रकार के फलों का अधिक उत्पादन, पर्याप्त वर्षा तथा चारा, घास, भूसा, कमल का फूल आदि। जनता में सुभिक्ष।

गुरु–धन में वृद्धि, सभी प्रकार की समृद्धि, फल तथा फूल की बहुतायत, शुभ आयोजन तथा विद्वत जन मंगल कार्यों में रत।

शुक्र–नर्म व नाजुक पत्तियाँ, फूल, पौधों आदि का उत्पादन अधिक। शासक आरामदायक जीवन बिताएँ, ब्राह्मण मंत्रोचारण, वेदपाठ आदि धार्मिक कामों में लगे।

शनि–वर्षा की कमी और जड़ी बूटियों, घास, फलों सब्जियों, फलों का उत्पादन कम। बाजार भाव में उतार-चढ़ा व बर्फ पड़ना, शीत लहर, अनिश्चित व अनियमित वर्षा आदि से फसल का नष्ट होना। चोरों का भय, कीड़ों आदि के कारण भी खेती की हानि।

नोट–सम्वत् 2071 (2014-15) में शनि फलेश था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

IX. धनेश-ग्रहों के धनेश बनने के फल

सूर्य–व्यापारी वर्ग को लाभ, विशेषतया जो पशुओं का व्यापार करते हैं।

चन्द्रमा–रसीले पदार्थ (गुडादि) का व्यापार लाभप्रद। कपड़े, चावल, संगंधित वस्तुएँ, तेलादि, घी का व्यापार की उन्नति और लाभप्रद। शासक वर्ग सुखी व संतुष्ट।

मंगल–वस्तुओं के मूल्यों में उतार-चढ़ाव रहे। जौं, गेहूँ, चावलादि जड़ी-बूटी व भूसे वाले अनाज की फसल नष्ट हो। यदि अनाज तथा अन्य वस्तुओं का भंडार कर लिया जाए और मार्गशीर्ष माह में बेचा जाए, दुगना लाभ होगा। शासक जनता के लिए समस्या बनेंगे।

बुध–कई प्रकार की वस्तुओं का संकलन करके लाभ होगा। जनता अपने कार्यों में रत रहेगी, विशेषतया कृषक।

नोट–सम्वत् 2071 (2014-15) में बुध धनेश था।

गुरु–व्यापारी वर्ग सुखी रहेगा। फलों तथा फूलों का उत्पादन पर्याप्त तथा जनता में सुभिक्षता रहेगी।

शुक्र–धनी व गरीब लोगों के बीच प्रेम व सद्भावना। गरीबों की आय में वृद्धि तथा व्यापार में बाजार की स्थिति मजबूत। शासक वर्ग कर्त्तव्य पालन करें तथा राष्ट्र की उन्नति होने की संभावना।

शनि–गरीबी बढ़े, शासक वर्ग में रोग फैले, व्यापारियों के धन में कमी, किसान भी चिंतित रहे। विद्वान व धार्मिक लोगों को दुष्ट लोग कष्ट देंगे।

X. दुर्गेश-ग्रहों के दुर्गेश बनने के फल

सूर्य–प्रतिरोध, झगड़े आदि से जनता दुखी, टिड्डी दल का झुंड व चूहे आदि से फसल का नाश। जनता सही से काम नहीं कर पायेगी और सही दिशा में सोच नहीं पाए एवं मानसिक अशांति बनी रहेगी।

नोट–सम्वत् 2071 (2014-15) में सूर्य दुर्गेश था।

चन्द्रमा–गन्ने, दूध, घी आदि का पर्याप्त उत्पादन, जनता स्वस्थ रहे परंतु युद्ध का भय बना रहेगा।

मंगल–अफवाहें, व्यापारियों के लिए लाभप्रद, परंतु जनता को कई प्रकार के कष्ट।

बुध–जनता को कभी प्रसन्नता व कभी कष्ट परंतु न कोई चोरी और यात्रा में सभी सुरक्षित रहें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरु–शासक कानून के दायरे में रहेंगे और जनता के प्रति सहानुभूति रखेंगे। सभी ओर उन्नति व शांति। विद्वतजनों को स्व रक्षा के लिए शस्त्र धारण करने पड़े।

शुक्र–जनता को आराम व खुशी मिले, सब तरफ शुभ उत्सव मनाए जावें। व्यापारी वर्ग का विशेष लाभ, जनता में सद्भावना व संगठन बने। शासक शांतिपूर्ण स्थिति में प्रसन्न रहें।

शनि–युद्ध के कारण जनता का पलायन। शत्रु देश कोई और समस्या उत्पन्न करे। टिड्डी दल व चूहे फसलों को नष्ट करें।

दुर्गेश के अधीन क्षेत्र–सम्पूर्ण देश।

2. संवत्सर

2.1. संवत्सर साठ हैं जिन्हें तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है–

(क) ब्रह्म विशंतिका (1 से 20 तक)

(ख) विष्णु विशंतिका (21 से 40 तक)

(ग) रूद्र विशंतिका (41 से 60 तक)

सृष्टि के प्रारंभ में विजय (क्रमांक 27) नामक संवत्सर था। शक संवत का आरंभ 'प्रभव' संवत्सर के साथ हुआ। साधारणतः गुरु का एक राशि में गोचर एक संवत्सर का काल है। प्रभवादि संत्वसर के प्रारंभ में गुरु कुंभ राशि में था, इसलिए संवत्सर को 12 से भाग दें तो शेष 1, 2 आदि को कुंभ से गिनने पर गुरु की राशि प्राप्त होगी। उदाहरण के लिए विलम्बी संवत् की संख्या 32 को 12 से भाग देने पर 8 शेष बचे कुंभ से गिने तो आठवीं राशि कन्या है जहाँ नव संवत्सर को गुरु गोचर कर रहा होगा।

शुद्ध संवत्सर–जिसमें गुरु पूरे वर्ष एक ही राशि में रहे।

अधिक संवत्सर–जिसमें गुरु दूसरी राशि में गोचर न करे।

क्षय (लुप्त) संवत्सर–जब गुरु उसे ही संवत्सर में दो राशियों में गोचर करे।

जैसा कि इस संवत्सर 2072 में होगा जब प्रारंभ में गुरु कर्क में है और जुलाई में सिंह राशि में आ जाएगा।

विक्रमी संवत्सर में से 135 न्यून करे (ह्रास) तो शक सम्वत आ जाता है जैसे संवत 2062-135 = 1927 (2071 – 135 = 1936) जो शक सम्वत् होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

II. संवत्सरों के नाम, उनका प्रभाव उनके देवता

तालिका I संवत्सर विवरण

युग स्वामी	नाम संवत्सर	स्वामी	युग स्वामी	नाम संवत्सर	स्वामी
अ विष्णु	1. प्रभव	ब्रह्मा	ए पितर	31. हेम्लम्ब	राहु
	2. विभव	विष्णु		32. विलम्ब	सूर्य
	3. शुल्क	शिव		33. विकारी	चंद्रमा
	4. प्रमोद	सूर्य		34. शार्वरी	मंगल
	5. प्रजापति	चंद्रमा		35. प्लव	बुध
आ बृहस्पति	6. अंगिरा	मंगल	ऐ विश्वदेव	36. शुभकृत	गुरु
	7. श्रीमुख	बुध		37. शोभन	शुक्र
	8. भाव	गुरु		38. क्रोधी	शनि
	9. युवा	शुक्र		39. विश्वास	राहु
	10. धाता	शनि		40. पराभव	केतु
इ इंद्र	11. ईश्वर	राहु	ओ चंद्रमा	41. प्लवंग	ब्रह्मा
	12. बहुधान्य	केतु		42. कीलक	विष्णु
	13. प्रमार्थी	सूर्य		43. सौम्य	शिव
	14. विक्रम	चंद्रमा		44. साधारण	सूर्य
	15. वृष	मंगल		45. विरोध	चंद्रमा
ई शनि	16. चित्रभानु	बुध	औ अग्नि	46. परिधावी	मंगल
	17. सुमानु	गुरु		47. प्रमादी	बुध
	18. तारण	शुक्र		48. आनन्द	बृहस्पति
	19. पार्थिव	शनि		49. राक्षस	शुक्र
	20. व्यय	राहु		50. नल	शनि
उ ब्रह्मा	21. सर्वजित	ब्रह्मा	अं अश्विनी	51. दिंगल	राहु
	22. सर्वधारी	विष्णु	कुमार	52. कालयुक्त	केतु
	23. विरोधी	शिवा		53. सिद्धार्थी	सूर्य
	24. विकृति	सूर्य		54. रौद्र	चंद्रमा
	25. स्वर	चंद्रमा		55. दुर्मति	मंगल
ऊ शिव	26. दिन	मंगल	अः सूर्य	56. दुन्दुभि	बुध
	27. विजय	बुध		57. रुधिरादगरी	बृहस्पति
	28. जय	गुरु		58. रक्ताक्षी	शुक्र
	29. मन्मथ	शुक्र		59. क्रोधन	शनि
	30. दुर्मुख	शनि		60. क्षय	राहु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तालिका–II संवत्सर व उनके स्वामी

स्वामी	नाम संवत्सर	स्वामी	नाम संवत्सर	स्वामी	नाम संवत्सर
ब्रह्मा	1 प्रभव	मंगल	6 अंगिरा	शुक्र	9 युवा
	21 सर्वजित		15 वृष		18 तारण
	41 प्लवंग		26 नंदन		29 मन्मथ
विष्णु	2 विभव		34 शार्वरी		37 शोभन
	22 सर्वधारी		46 परिधावी		49 राक्षस
	42 कीलक		55 दुर्मती		58 रक्ताक्षी
शिव	3 शुल्क	बुध	07 श्रीमुख		
	23 विरोधी		16 चित्रभानु	शनि	10 धाता
	43 सौम्य		27 विजय		19 पार्थिव
सूर्य	4 प्रमोद		35 प्लव		30 दुर्मुख
	13 प्रमार्थी		47 प्रमादी		38 क्रोधी
	24 विकृति		56 दुन्दुभि		50 नल
	32 विलम्ब				59 क्रोधन
	44 साधारण	गुरु	8 भाव	राहु	11 इश्वर
	53 सिद्धार्थी		17 सुभानु		20 व्यय
चंद्रमा	5 प्रजापति		28 जय		31 हेमलम्ब
	14 विक्रम		36 शुभकृत		39 विश्वावसु
	25 स्वर		48 आनन्द		51 पिंगल
	33 विकारी		57 रुधिरादगारी		60 क्षय
	45 विरोध			केतु	12 बहुधन्य
	54 रौद्र				40 पराभव
					52 कालयुक्त

युग स्वामी विष्णु

1. प्रभव — सभी ओर समृद्धि, जनता स्वस्थ तथा धनी, शासन शांतिपूर्ण रहे और प्रजा के हित के कार्य करें।

स्वामी ब्रह्मा — कार्तिक से वैशाख तथा भाद्रपद साधारण मास रहें, अश्विन में रोग तथा ज्येष्ठ से श्रावण व चैत्र तथा वैशाख में अनाज महंगा हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2.	विभव	ऋतुएँ सामान्य रहेंगी, जनता सुखी और सद्भावना से रहे। शासक जनता के सुख सुविधा का और कानून व्यवस्था के प्रति सजग।
	स्वामी विष्णु	पहाड़ी क्षेत्रों में प्राकृतिक प्रकोप से कष्ट। रसीले पदार्थों के मूल्य में वृद्धि। चैत्र से ज्येष्ठ में अधिक महँगाई। आषाढ से सावन में पर्याप्त वर्षा। कार्तिक से फाल्गुन मासों में अनाज सस्ता।
3.	शुक्ल	राजनीतिक दलों में टकराव। जनता समृद्धिशाली और परस्पर सद्भावना व प्रेम।
	स्वामी शिव	आषाढ से भादों तक अधिक वर्षा का योग, अश्विन में रोग उत्पत्ति, कार्तिक से माघ तक मूल्य ऊँचे रहे तथा फाल्गुन में समस्याएँ व कष्ट।
4.	प्रमोद	शासक व प्रजा में अच्छे संबंध रहें।
	स्वामी सूर्य	वर्षा की कमी, राजनैतिक परिवर्तन, व्यापारी वर्ग का सरकार से टकराव। अल्प, अपर्याप्त व असामयिक वर्षा के कारण महंगाई तथा रोगात्पत्ति।
5.	प्रजापति	पर्याप्त वर्षा हो, बाजार का रूख नीचे की ओर रहे, जनता सुखी, शांत व अपने कार्य को करें।
	स्वामी चंद्रमा	संपूर्ण वर्ष लाभदायक व शांतिपूर्ण रहे। कुछ स्थानों पर वर्षा की कमी रहे, परंतु जनता में सुभिक्ष रहे। पौष से फाल्गुन माह के मध्य कुछ प्राकृतिक आपदायें घटित हो।
	युग स्वामी	**बृहस्पति**
6.	अंगिरा	युद्ध के भय से विश्व शांति भंग। अनाज की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध हो। शासक आपस में झगड़ें।
	स्वामी मंगल	आषाढ मास में भारी वर्षा, ज्येष्ठ मास में तूफान, सावन-भादों, अश्विन मासों में रोग फैले, पौष से फाल्गुन तक मूल्य स्थिर रहे।
7.	श्रीमुख	अच्छी फसल के होने से पृथ्वी अन्न से परिपूर्ण। व्यापारी वर्ग लाभान्वित होगा, ब्राह्मण अपने कर्मकांड में व्यस्त रहेंगे। सरकार शांतिपूर्ण एवं बिना अवरोध के कार्य करेगी। जनता स्वस्थ व सुखी रहेगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	स्वामी बुध	व्यापारी वर्ग लाभार्जन करेगा, साधारण जनता समृद्धिशील होगी तथा वर्षा पर्याप्त होगी।
8.	भाव	मध्यम वर्ग, मध्यम फसल, किसानों को उनके कृषि उत्पादन के सही मूल्य प्राप्त हों, राज्यों व देशों के मध्य, टकराव रहे, युद्ध का भय रहे, परंतु जनता को सुख शांति प्राप्त हों। दूध की मात्रा अच्छी हो, अनाज के मूल्यों में वृद्धि। आषाढ़ सावन में वर्षा की कमी, भाद्रपद में पर्याप्त वर्षा, अश्विन मास में रोग का फैलाव, कार्तिक में शुभ फल तथा मार्गशीर्ष में सामान्य फल रहें।
	स्वामी गुरु	गाय-भैंसों से अधिक दुग्ध प्राप्त हो। अनाज के भाव चैत्र में सामान्य, वैशाख में ऊँचे हों। आषाढ से भादों मास तक सामान्य वर्षा हो।
9.	युवा	दूध की मात्रा में वृद्धि, जनता विलासिता का जीवन व्यतीत करें एवं स्त्रियों का अधिक प्रभाव।
	स्वामी शुक्र	चैत्र तथा वैशाख में प्राकृतिक प्रकोपों से महान कष्ट भूकम्प व रोग के फैलने से ज्येष्ठ मास में जनता परेशान, आषाढ़ में भारी वर्षा तथा सावन में वायु के कारण तथा भादो में बाढ़ आदि से कष्ट। मूल्यों में वृद्धि रहे।
10.	धाता	शासकों की गीत नीतियों के कारण विश्व में युद्ध की स्थिति बने। अधिक वर्षा, अच्छी फसल होगी परंतु मूल्यों में वृद्धि।
	स्वामी शनि	चैत्र तथा वैशाख में भाव बहुत ऊँचे रहेंगे। ज्येष्ठ में साधारण मूल्य, आषाढ में वर्षा की कमी, तेल व घी के मूल्य ऊँचे। कार्तिक में अनाज के मूल्यों में गिरावट परंतु रसीले पदार्थों व धातु के भाव ऊँचे।
	युग स्वामी	**इन्द्र**
11.	ईश्वर	विश्व में सभी प्राणी सुख व शांति से एवं प्रसन्न रहें, अनाज बहुत अधिक मात्रा में हो, धन वृद्धि, फल, फूलादि सभी प्रकार की फसलें अच्छी हों सर्वेभवन्तु सुखिनः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	स्वामी राहु	उत्तरी भाग में अकाल, पूर्व में बाढ़, पश्चिम में युद्ध, चैत्र-वैशाख मासों में मूल्य ऊँचे रहें। वर्षा ऋतु के प्रथम दो मासों में वर्षा की कमी परंतु अंतिम समय में वर्षा बहुत अधिक हो। कार्तिक में अकाल, सूखा व आवश्यक वस्तुओं का मूल्य अधिक रहे। दंगों में भारी मौत।
12.	बहुधान्य	लोग नीच कर्मरत रहें और असाधारण गतिविधियाँ करें। बहुत अधिक वर्षा होगी और पृथ्वी पर भरपूर अनाज व उत्तम किस्म की फसल।
	स्वामी केतु	चैत्र वैशाख तथा ज्येष्ठ के मासों में अनाज के मूल्य ऊँचे। आषाढ से भाद्रपद के मासों में पर्याप्त वर्षा हो तथा अनाज के मूल्य कम रहें। कार्तिक से फाल्गुन के मध्य स्थिति सामान्य रहे।
13.	प्रमार्थी	सामान्य वर्षा।
	स्वामी सूर्य	चैत्र से वैशाख तक भावों में तेजी, आषाढ तथा सावन में कम वर्षा, भाद्रपद पंचमी को वर्षा हो तो वर्ष के भाव में तेजी रहेगी।
14.	विक्रम	राजा बहादुर हो। पर्याप्त वर्षा हो तथा जनता प्रसन्न व प्रगतिशील रहे।
	स्वामी चंद्रमा	भूकम्प तथा अन्य प्राकृतिक आपदा वैशाख मास के अंत में घटे और जन-जीवन व सम्पत्ति विनाश हो। ज्येष्ठ व आषाढ में सूखा पड़े भावों में तेजी का रूख रहे और प्रजा को वहाँ से पलायन करना पड़े।
15.	वृष	राजा, घमंड में चूर होकर लड़ने को तैयार, नशीले भैंसे सा प्रतीत होगा। ब्राह्मण व विद्वतजन सदैव शास्त्र अध्ययन व धार्मिक गतिविधियों में व्यस्त रहेंगे।
	स्वामी मंगल	दंगों, शासकों में परस्पर भेद, युद्ध की सी सिति आदि हो और सरकार बदले। आषाढ, पौष, माघ तथा फाल्गुन मासों में अनाज के मूल्य ऊँचे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	युग स्वामी	अग्नि
16.	चित्रभानु	नेताओं के परस्पर टकराव व विरोध के कारण सरकारी कामकाज में बाधा तथा युद्ध जैसी स्थिति होगी।
	स्वामी बुध	प्रारंभ में वर्षा की कमी परंतु बाद में पर्याप्त वर्षा, जनता/प्रजा, सुखी, घी व अनाज के मूल्यों में गिरावट।
17.	सुभानु	शासकों के मध्य मतभेद, टकराव व शत्रुता आदि चिन्ताजनक हो और प्रजा में भय का वातावरण बने, आतंकवाद बढ़े, शस्त्र व बारूद का प्रयोग बढ़े तथा खण्ड वृष्टि के कारण भी विनाश हो।
	स्वामी गुरु	वैशाख तथा ज्येष्ठ मासों में रोग फैले, चैत्र तथा आषाढ में भाव ऊँचे जाएँ परन्तु सावन से सामान्य हो जायें। भाद्रपद मास में अति वृष्टि हो। युद्ध जैसी स्थिति बनी रहे। प्रजा व शासकों में मतभेद के कारण बेचैनी बढ़े।
18.	तारण	रोग, भूकम्प, वायु दुर्घटना आदि असामयिक तथा खण्ड वृष्टि से खड़ी फसलों का नष्ट होना आदि से प्रजा दुखी। युद्ध प्रिय देशों के कारण विश्व में भय और चिन्ता बनी रहे।
	स्वामी शुक्र	ज्येष्ठ में तेज आंधी, आषाढ़ में वर्षा, सावन में साधारण वर्षा, अश्विन से कार्तिक के मध्य अनाज के मूल्यों में वृद्धि, प्राकृतिक आपदाओं से जनता दुखी। शासकों में टकराव के कारण युद्ध जैसी स्थिति बने।
19.	पार्थिव	शासक प्रसन्न रहेंगे। फल व फूलों का बहुत उत्पादन होगा। पर्याप्त वर्षा होगी।
	स्वामी शनि	दंगों का भय, नेताओं के बीच टकराव, कार्तिक तथा मार्गशीर्ष में रोग, भाद्रपद मास में आंधी तथा कार्तिक में अनाज के भाव ऊँचे। मार्गशीर्ष तथा पौष में भी भावों का रूख ऊँचा रहे। आषाढ सावन में वर्षा कहीं कहीं हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

20.	व्यय	जनता अधिक व्यय करे, शासक तनाव व कष्ट में रहें, सीमा पर झगड़ों की संभावना हो, इसलिए सेना का सशक्त होना आवश्यक है।
	स्वामी राहु	कुछ स्थानों पर कम, कुछ पर अधिक वर्षा हो, जनता में असंतोष व तनाव की स्थिति तथा महंगाई के कारण दुख। वैशाख ज्येष्ठ में ऊँचे मूल्य, सावन में अकाल, मध्य भागों में टकराव, अश्विन मास में रोग फैले तथा पौष माघ मास में मूल्यों में वृद्धि।
	युग का स्वामी ब्रह्मा	
21.	सर्वजित	संसार के बहुत से देशों की सरकारों के सामने समस्या, उनके मध्य टकराव, धार्मिक गतिविधियों तथा जनता में प्रसन्नता बढ़े। सामयिक वर्षा के कारण फसलें अच्छी मात्रा में उपलब्ध हों।
	स्वामी ब्रह्मा	चैत्र से वैशाख तक मूल्य गिरें। मन्दी का रूख, सावन में अधिक वर्षा (अति वृष्टि) परंतु आषाढ में कम वर्षा, भाद्रपद के अंतिम पांच दिन अधिक वर्षा का योग। आश्विन मास में मूल्यों में गिरावट परंतु रोगोत्पत्ति हो। पौष माघ तथा फाल्गुन मासों में सामान्य वर्षा तथा फलों की उत्पत्ति।
22.	सर्वधारी	शासक जनता की ओर अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे। अच्छी वर्षा होने से चारा व घास की मात्रा पर्याप्त होगी। फलों व सब्जी की फसल बाढ़ के कारण नष्ट होगी। जनता अनेकों रोगों से दुखी।
	स्वामी विष्णु	प्रथम तिमाही में सामान्य फल, ज्येष्ठ में कुछ प्राकृतिक आपदाओं हो, सरकार प्रशासन ठीक प्रकार बनाए रखे, अनाज सस्ता होगा तथा जनता विलासितापूर्ण जीवन जिये। तथा शास्त्रों का आदर करें। आषाढ में सावन से अधिक वर्षा, भाद्रपद में मूल्यों में वृद्धि, आश्विन मास में रोग फैले। शासकों में झगड़े हो।
23.	विरोधी	शासकों में विरोध तथा टकराव रहे। देश में अच्छी वर्षा हो, फलों, सब्जी आदि का बहुत उत्पादन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	सिंचाई का सिलसिला बहुत उन्नत हो, बच्चे चेचकादि से पीड़ित रहे। चोरी, डकैती आदि तथा गैर कानूनी गतिविधियाँ बढ़े। दूध की मात्रा कम हो।
स्वामी शिव	पहले तीन मास तक मूल्यों में वृद्धि। आषाढ सावन में पर्याप्त वर्षा परंतु भाद्रपद में अतिवृष्टि के कारण बाढ़ आए। मार्गशीर्ष से फाल्गुन तक राजस्थान व गुजरात में मूल्यों का रूख ऊँचा।
24. विकृति	पापकर्मों में वृद्धि, सिर, आंख, छाती आदि के रोगों का फैलना। चोरी व डकैती की वारदातों में वृद्धि। प्राकृतिक आपदाओं, भूकम्प, ज्वारभाटा, विस्फोटादि की घटनाओं से जनजीवन तथा सम्पत्ति का विनाश, रोग फैले तथा जनता की शांति भंग। वर्षा की कमी से कई स्थानों पर परेशानियाँ बढ़ेगी।
स्वामी सूर्य	सामयिक वर्षा, शासकों में टकराव, राजस्थान में अकाल। चैत्र से आषाढ तक मूल्यों में वृद्धि, सावन-भादो में अकाल, शासकों का परिवर्तन, अश्विन में प्राकृतिक आपदाएँ तथा कार्तिक में रोग फैले।
25. खर	वर्षा की कमी से फसल व अनाज का उत्पादन प्रभावित हो, जनता में रोष तथा किसी शासक की मृत्यु।
स्वामी चंद्रमा	चैत्र से आषाढ के मासों में अति वृष्टि, अनाज के मूल्यों में गिरावट तथा जनता सभी प्रकार का सुख भोगेगी। कार्तिक से फाल्गुन तक मूल्य सामान्य रहें।
युग स्वामी	**शिव**
26. नंदन	सब्जियों का अच्छी वर्षा होने से अधिक उत्पादन होगा। सम्पूर्ण देश में शांति बनी रहेगी, जनता स्वस्थ एवं संतुष्ट रहेगी। अनाज, चना, गुड़, चीनी आदि के मूल्य स्थिर रहेंगे। शासकों में टकराव, सरकारी धन की हानि तथा धातु के मूल्यों में वृद्धि।
स्वामी मंगल	चैत्र तथा वैशाख में अनाज महंगा होगा। ज्येष्ठ मास में वायु की रफ्तार तेज रहे, बाजार भाव ऊँचे रहे। आषाढ तथा भाद्रपद मास में वर्षा अधिक होगी परंतु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

		सावन में वर्षा की कमी। मार्गशीर्ष से फाल्गुन मास में अनाज के मूल्यों का रूख ऊँचा रहे।
27.	विजय	शासक प्रसिद्ध हो, जनता सुखी तथा समृद्धिशाली। पर्याप्त वर्षा व चारा तथा सभी ओर उन्नति हो।
	स्वामी बुध	शासकों में मतभेद बढ़ें, अनाज के मूल्य बढ़ें, युद्ध के कारण देश को परेशानियों का सामना करना पड़े, कुछ भागों में वर्षा की कमी तथा पशुधन की हानि। चैत्र तथा भाद्रपद में अधिक वर्षा, वैशाख तथा ज्येष्ठ में मूल्यों में वृद्धि, आषाढ तथा सावन में कम वर्षा तथा बाकी महीनों में मूल्य समान रहें।
28.	जय	राष्ट्र विजय तथा शुभ उत्सवों के कारण ऊँची व सम्मानित स्थिति में रहे। दल के मुखिया तथा सेनाध्यक्ष को अपनी सेना पर भरोसा रहे और निश्चित विजय प्राप्ति की आशा रहे।
	स्वामी गुरु	कुछ स्थानों में राजनीति में गड़बड़। कार्तिक से फाल्गुन में धातु महँगे, अनाज के भाव सामान्य जबकि अन्य वस्तु के मूल्य ऊँचे। आषाढ में अधिक वर्षा, स्वर्ण व अन्य धातु के मूल्य सम रहें। सावन मास में अधिक वर्षा तथा भाद्रपद में वर्षा की कमी। चैत्र में भाव ऊँचे तथा वैशाख में नीचे।
29.	मन्मथ	नीच व्यक्तियों, चोर व लालची लोगों की संख्या बढ़े। चावल, गन्ना, जौ, गेहूँ आदि की पर्याप्त उत्पत्ति।
	स्वामी शुक्र	शासकों में मतभेद व टकराव, पूर्वी क्षेत्र के लोगों को कष्ट, चैत्र में वर्षा व प्राकृतिक आपदाओं तथा भूकम्प का भय। वैशाख मास में मूल्य गिरे, परंतु ज्येष्ठ व आषाढ में मूल्यों में वृद्धि। भादो से सावन में वर्षा कम। अश्विन मास में रोग फैले और अनाज के भाव ऊँचे। पौष तथा माघ में सरकार व जनता में शांति। फाल्गुन मास में धातु के भाव गिरे परंतु कपड़ा महंगा रहे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

30. दुर्मुख	मध्यम वर्षा, प्राकृतिक आपदाएं, चोरी आदि से जनता दुखी शोक ग्रस्त। सशस्त्र सेना को चुस्त रहना है। क्योंकि सीमा पर व पड़ोसी राष्ट्रों के साथ युद्ध का अंदेशा बना रहे।
स्वामी शनि	कम वर्षा, रोग तथा चिन्ताओं से प्रजा दुखी। उत्तर में सूखा तथा पूर्व में अच्छी फसल। चैत्र से ज्येष्ठ मास तथा बाजार भाव ऊँचे। सावन में तेज हवाएँ चलें परंतु अनाज सस्ता बिके। भादो में मूसलाधार वर्षा। कार्तिक से माघ के मध्य में सूखा।
युग स्वामी	**पितर**
31. हेमलम्ब	जनता में रोग फैले, बड़ा आंतक रहे तथा परेशानियाँ रहें। भूकम्प आये, लोगों में भ्रम फैले, सरकार का गिरना, शत्रु का घुसना, व्यापारी वर्ग को परेशानी, चैत्र तथा वैशाख में अनाज सस्ता, ज्येष्ठ-आषाढ-सावन- मास में भाव ऊँचे। भाद्रपद में घने बादल छाये तथा लौंग, मिर्चादि के भावों में तेजी, अनाज सस्ता तथा पशुओं को कष्ट रहे।
स्वामी राहू	वर्षा की कमी, रोग का फैलना, दो राष्ट्रों के मध्य युद्ध भय, मार्गशीर्ष से फाल्गुन मासों में पशु हानि, परंतु जनता स्वस्थ रहे। चैत्र तथा वैशाख में कष्ट बढ़े, अनाज के मूल्य सस्ते परंतु ज्येष्ठ से सावन तक मूल्य ऊँचे हों।
32. विलम्ब	शासकों में मतभेद, शत्रुता टकराव आदि रहे। प्रजा सुखी एवं शांतिपूर्ण रहे। हो सकता है कि कोई रोग फैले तथा कुछ ज्यादतियाँ हों।
स्वामी सूर्य	चैत्र वैशाख में मूल्यों में गिरावट, ज्येष्ठ-आषाढ़ में वर्षा कम परंतु सावन मास में अधिक वर्षा। भाद्रपद में 21 दिन तक अधिक वर्षा होवे। पश्चिमी क्षेत्र में परेशानियाँ। उपद्रव, आश्विन मास में प्रतिदिन प्रयोग की वस्तुऐं महँगी हों।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

33.	विकारी	प्रजा रोग, बाढ, सूखे आदि से दुखी रहे। अनाज, जौ तथा फलादि का उत्पादन कम रहे। शरद ऋतु की फसलें तथा फलों का उत्पादन बहुत हो।
	स्वामी चंद्रमा	अनाज व उपभोग की वस्तुएं महंगी रहे। विद्वानों का सम्मान हो। चैत्र, वैशाख तथा सावन में वस्तुएं महंगी परंतु कार्तिक मार्गशीर्ष महीनों में सस्ती। पौष तथा माघ मासों में रांग फैले। फाल्गुन में अनाज के भाव ऊँचे।
34.	शार्वरी	शासकों में मतभेद। अच्छी फसल तथा साधारण वर्षा के होने से प्रजा सुखी।
	स्वामी मंगल	अधिक वर्षा के कारण जन जीवन व संपत्ति विनाश तथा कुछ स्थानों में सूखें कारण भी ऐसा ही हो। चैत्र से ज्येष्ठ मध्यम बाजार भाव, आषाढ़ तथा सावन के महीनों में हानि हो। आश्विन मास में पश्चिम में सूखा पड़े तथा पूर्व में अच्छी फसल हो। कार्तिक तथा मार्गशीर्ष मासों में अनाज का बाजार ऊँचा रहे। पौष तथा फाल्गुन मास में मूल्य साधारण।
35.	प्लव	अधिक वर्षा के कारण रोग फैले और जनता कष्ट में रहे।
	स्वामी बुध	चैत्र में अच्छी वर्षा के कारण बाजार भाव सम रहें परंतु ज्येष्ठ मास में बाजार गिरे। वैशाख में उपद्रव, मारगीट, आषाढ़ में तेज गति की वायु बहे। रोग तथा उपद्रव का भय रहे। सावन तथा भाद्रपद मासों में अधिक वर्षा के कारण भादो में बाढ़ आए। कार्तिक से फाल्गुन मासों में अनाज सस्ता।
	युग स्वामी	विश्वदेव।
36.	शुभकृत	दुष्ट व्यक्तियों, आतंकवादियों तथा युद्धादि के भय से प्रजा दुखी।
	स्वामी गुरु	वर्ष में पर्याप्त वर्षा हो। सरकार तथा प्रजा सुख व शांति का अनुभव करे। उत्तर में अग्निकांड। चैत्र से आषाढ़ तक मूल्य में गिरावट। आषाढ में वर्षा की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कमी रहे। सावन तथा भाद्रपद मास में अधिक वर्षा तथा तेल के मूल्यों में गिरावट। आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष तथा माघ में अनाज सस्ता बिके।

37. शोभन — खाद्य सामग्री की बहुतायत रहे, अच्छी वर्षा के कारण प्रजा सुखी व आनंदित रहे। रोग से त्रस्त तथा कुछ मृत्यु हो।

स्वामी शुक्र — शासक तथा प्रजा सुखी। सरकार का शासन अच्छा रहे। आषाढ़ में सावन से कम वर्षा तथा भाद्रपद मास में हानि हो। प्राकृतिक आपदाऐं तथा दंगे हों।

38. क्रोधी — जनता को क्रोध का भाज्य बनना पड़े। रोग के फैलाव व स्वार्थादि के कारण जनता दुखी। वर्षा की कमी तथा फसलों के उत्पादन में कमी।

स्वामी शनि — शासकों में टकराव, व्यापार में अस्थिरता व हानि से कष्ट। चैत्र तथा वैशाख में बाढ़ से कष्ट। ज्येष्ठ में महामारी तथा मूल्यों में वृद्धि हो! सावन में सूखा तथा अन्य मासों में मध्यम स्थिति रहे।

39. विश्वावसु — अस्थिर शासन, अपर्याप्त वर्षा व फसल। जनता रोग व कर के बोझ से दुखी।

स्वामी राहु — चैत्र मास में शासकों में टकराव। इस संवत्सर में कम वर्षा तथा अधिक अनाज का उत्पादन हो। वैशाख तथा ज्येष्ठ में दंगा फिसाद। आषाढ़ में कम वर्षा तथा सावन व भाद्रपद में सूखा। अश्विन में पशुओं के मूल्य ऊँचे तथा स्वर्ण सस्ता। कार्तिक से फाल्गुन तक मूल्य समान व सम रहे।

40. पराभव — शासकों का रूख युद्ध करने की ओर रहे। विभिन्न प्रकार के रोग फैले। अपर्याप्त वर्षा व अन्न की उपलब्धि हो।

स्वामी केतु — चैत्र में वर्षा कम, वैशाख में अन्न के भाव बढ़े और आकाश में मेघ गर्जन से तथा बिजली चमके तथा भयावनी वायु चले। ज्येष्ठ मास में वायु तथा आंधी से हानि हो। आषाढ़ में वर्षा कम तथा सावन में अधिक वर्षा। भाद्रपद में सूखा पड़े।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अश्विन मास में रसीले पदार्थ व अनाज के भावों में तेजी परंतु धातु के भाव गिरें। कार्तिक से फाल्गुन तक अनाज का आवक सामान्य।

युग स्वामी चंद्र

उदाहरण

यह सम्वतसर 2071 (2014-15 ई.) का था।

प्लवंङ्गाब्दे मध्य वृष्टि रोग चौरा कुला धरा।
अन्योन्यसमरे भूपाः शत्रुसिहितम् भयः।।

श्री शिव विंशति का प्रथम संवत्सर है। वर्षा का परिमाण मध्यम रहे। पृथ्वी पर रोग और चोरों से व्याकुलता, शासकों में युद्ध, शत्रु की भूमिका का हरण।

41. प्लवग शासक युद्ध में लगे रहेंगे तथा सीमाओं पर झगड़े हों, प्रजा चोरी रोगादि से त्रस्त रहे।

स्वामी ब्रह्मा चैत्र तथा वैशाख में बाजार भाव ऊँचे। ज्येष्ठ मास शासकों के लिए अशुभ, आषाढ़ में वर्षा की कमी तथा प्राकृतिक आपदाऐं, भूकम्पादि की घटनाऐं हों। सावन तथा भाद्रपद मास में वर्षा अधिक हो। पौष से फाल्गुन मास तक मूल्यों में गिरावट रहे।

घटित फाल्गुन–चैत्र कृष्ण पक्ष में यदा कदा दो-तीन बार भारी वर्षा, कहीं ओलावृष्टि, पहाड़ों पर हिमपात हुआ।

उदाहरण

यह सम्वत्सर 2072 (2015-16 ई) वाला होगा।

कीलकाब्दं त्तीतिमिभतिः प्रजाक्षोभनृपाहवौ।
तथापि वृंते लोकः समधान्यार्ध वृष्टिभिः।।

42. कीलक पर्याप्त वर्षा तथा अनाज के भाव मंदे। जनता समृद्धिशाली हो। शासकों को युद्ध भय रहे।

स्वामी विष्णु मध्यम वर्षा, चैत्र में मूल्य ऊँचे, वैशाख व ज्येष्ठ में रोग का फैलना। व्यापारी अनाज का भंडार भरेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

		कार्तिक से पौष मासों में अनाज सस्ता, परंतु माघ में मूल्य बढ़ें। बाकी मासों में प्रजा सुखी व शांति से रहे।
43.	सौम्य	साधारण वर्षा, शासकों के मतभेद में कमी तथा अनाज का उत्पादन कम।
	स्वामी शिव	चैत्र में मूल्यों में वृद्धि, वैशाख में तेज गति से वायु बहे। ज्येष्ठ में तनाव, आषाढ़ में कम वर्षा। रसीले पदार्थ तथा धातु सस्ते। कार्तिक से माघ मासों में मध्यम स्थिति रहे परंतु फाल्गुन में तेज गति की वायु तथा अनाज सस्ता रहे।
44.	साधारण	प्रजा शांत व सुखी व निडर रहे। वर्षा की कमी रहे।
	स्वामी सूर्य	चैत्र मास में अनाज सस्ता। वैशाख तथा ज्येष्ठ में प्राकृतिक प्रकोप का भय जैसे भूकम्प तथा अनाज के भाव चढ़ें। आषाढ़ मास में तेज गति की वायु बहे और वर्षा न हो। सावन मास में अधिक वर्षा तथा अनाज सस्ता। भादों में वर्षा की कमी, अश्विन में उत्पादन कम। कार्तिक तथा मार्गशीर्ष मासों में मूल्य स्थिर रहें।
45.	विरोध	शासकों व प्रजा में मतभेद रहे। वर्षा की कमी रहे और फसल नष्ट हो।
	स्वामी-चंद्रमा	शासकों में मतभेद बढ़े। चैत्र, वैशाख तथा ज्येष्ठ मास में भाव सम रहें। आषाढ़ में वर्षा की कमी, परंतु सावन मास में अधिक वर्षा के कारण अनाज सस्ता हो। भाद्रपद में अच्छी वर्षा, अनाज के भाव मध्यम परंतु सभी धातुएं महंगी हों। मार्गशीर्ष में परेशानियां बढ़ें, कपड़ा महंगा हो तथा फाल्गुन मास में देश में टकराव व अशांति हो।
	युग स्वामी	**अग्नि**
46.	परिधावी	युद्ध का वातावरण रहे, रोग फैले तथा मध्यम फसलें हों। प्रजा समस्याग्रस्त रहे और दुखी रहे।
	स्वामी-मंगल	चैत्र से आषाढ़ तक अनाज के भाव मध्यम रहे। पशुओं में रोग फैले, सावन में वर्षा की कमी तथा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

		भाद्रपद में अनाज के भाव ऊँचे परंतु धातु के भाव सस्ते। सभी रसीले पदार्थ तथा अनाज बाकी महीनों में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहें।
47.	प्रमादी	जनता रोग से दुखी रहें। शासक सहानुभूति करे व कोमल हृदय वाले हों।
	स्वामी-बुध	चैत्र में अनाज के भाव सम, वैशाख तथा ज्येष्ठ में अनाज का संग्रह हो, आषाढ़ में वर्षा कम तथा सावन मे द्वितीय पखवाडे में वर्षा हो परतु भाद्रपद में अधिक वर्षा हो और अनाज के मूल्य कम रहे। जनता आराम से तथा सुखी रहे।
48.	आनन्द	पर्याप्त वर्षा तथा अनाज की बहुतायत। शासकों तथा प्रजा में सदभावना व मैत्रीपूर्ण व्यवहार रहे।
	स्वामी-बृहस्पति	वर्ष में पर्याप्त वर्षा हो। चैत्र तथा वैशाख में अनाज सस्ता रहे। ज्येष्ठ तथा आषाढ़ में सामान्य वर्षा, सावन में अधिक वर्षा, भाद्रपद में कम वर्षा। कार्तिक में भय व्याप्त रहे, मार्गशीर्ष में जनता दुखी रहे। अन्य मासों में साधारण वर्षा तथा मूल्यों में गिरावट।
49.	राक्षस	लोग अपने कार्यों में व्यस्त रहे परंतु वह निर्मम तथा कठोर होंगे। अनाज के भाव मध्यम/सम रहे। अन्य फसलों के भाव भी मध्यम ही रहेंगे।
	स्वामी शुक्र	चैत्र से ज्येष्ठ तक तेल के मूल्यों में वृद्धि। ज्येष्ठ मास में गुड, चीनी तथा अन्य वस्तुओं के भाव ऊँचे। सावन में वर्षा की कमी रहे और अनाज महंगा हो। भाद्रपद में अधिक वर्षा तथा अनाज सस्ता हो। आश्विन में मूल्य सम रहें। कार्तिक में रोग फैले। मार्गशीर्ष से फाल्गुन के मध्य अनाज के भाव नीचे रहें।
50.	नल	मध्यम वर्षा, फसल तथा अनाज उपलब्ध हो। शासक अप्रसन्न रहें। जनता को चोरों व दुष्ट व्यक्तियों की शरारतों का भय तथा आतंकवादियों का भय।
	स्वामी शनि	चैत्र में रोग फैलना और तेज वायु का प्रकोप। वैशाख अनाज का संग्रह हो। ज्येष्ठ में सरकार व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	जनता का टकराना। कार्तिक मास में विक्रय अधिक हो। मार्गशीर्ष से माघ तक बाजार में मूल्य स्थिर रहें। उत्तर दिशा में अकाल की स्थिति बने।
युग स्वामी	**अश्विनी कुमार**
51. पिंगल	मध्यम वर्षा तथा कम फसल हो। सेना की शक्ति के प्रयोग से शासक शत्रु देश की भूमि पर कब्जा करें।
स्वामी राहु	चैत्र मास में धातु के भाव नीचे रहें, अनाज के भाव ऊँचे तथा जनता कष्ट में रहे। ज्येष्ठ-आषाढ़ में अनाज के मूल्यों में गिरावट। आषाढ़-सावन में वर्षा कम। मार्गशीर्ष से फाल्गुन के मध्य बाजार भावों में तेजी रहे।
52. कालयुक्त	अच्छी फसल, प्रजा सुखी परंतु कुछ नये रोगों के कारण जनता को कष्ट।
स्वामी केतु	वर्षा की कमी रहे। चैत्र से आघाढ़ के मध्य अनाज का संग्रह हो और अधिक लाभ प्राप्त हो। आषाढ़ में वर्षा कम तथा सावन मास मे अधिक, बाजार में अनाज के भाव सम रहें। आश्विन में अनाज महंगे रहे। अन्य मासों में पशुओं को कष्ट। फल का उत्पादन आवश्यकता से बहुत अधिक हों।
53. सिद्धार्थी	जनता के ज्ञान में वृद्धि तथा वह धार्मिक शास्त्रों व गतिविधियों में अधिक रूचि लेंगे। सभी प्रांतों में वर्षा तथा फसलें अधिक व पर्याप्त होंगी। जनता अपने-अपने तरीके से उत्सवादि मनाने में लगे रहेंगे।
स्वामी सूर्य	अनाज सस्ता होगा। चैत्र तथा वैशाख में जनता दुखी। ज्येष्ठ तथा आषाढ़ में वायु तेज चलेंगी। सावन मास में तीन दिन तक भारी वर्षा होगी। भाद्रपद में साधारण वर्षा होगी। कार्तिक में भरी-पूरी फसल होगी तथा अनाज के भाव गिरेंगे। मार्गशीर्ष से फाल्गुण तक देश में अशांति रहे।
54. रौद्र	मध्य दर्जे की वर्षा और फसल होगी। शासकों को तनाव, शत्रुता व टकराव सहने पड़ेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	स्वामी चंद्रमा	विश्व में तनाव की स्थिति रहेगी। चैत्र से ज्येष्ठ तक मूल्यों में वृद्धि। आषाढ़ तथा सावन में वर्षा की कमी। भाद्रपद मास में वर्षा अच्छी जिसके फलस्वरूप अनाज के भावों में गिरावट आए। बाकी महीनों में अनाज महंगा परंतु पशुओं के मूल्य सस्ते रहेंगे। जनता सुख व सुविधा मे जीवन व्यतीत करे।
55.	दुर्मति	शासक गलत विचारों एवं उलझन में रहें। परस्पर टकराव आदि से युद्ध जैसी स्थिति बने परंतु जनता फिर भी सुख-सुविधा से रहे।
	स्वामी-मंगल	चैत्र तथा वैशाख में अनाज के भाव गिरेंगे परंतु ज्येष्ठ मास में मध्य स्थिति रहे। आषाढ़-सावन मास में वर्षा कम हो परंतु भाद्रपद में अधिक वर्षा। अश्विन में रसीले पदार्थों के मूल्य सस्ते परंतु अनाज का भाव सम रहे। वर्ष के बाकी मासों में धातुओं के मूल्यों में गिरावट रहें।
	युग स्वामी	सूर्य
56.	दुन्दुभि	अच्छी खेती व अच्छा उत्पादन। शासक प्रजा के सुख सुविधा का ध्यान रखेगी। पूर्व दिशा में कुछ कष्ट रहे। अच्छी वर्षा तथा सस्ता अनाज उपलब्ध हो।
	स्वामी-बुध	चैत्र से ज्येष्ठ में अनाज सस्ता रहे। आषाढ़ में वर्षा कम, सावन में 11 दिन तक अधिक वर्षा, भाद्रपद में सामान्य वर्षा, अश्विन में अनाज सस्ता परंतु रोग फैलने की संभावना।
57.	रूधिरोदगारी	शासक युद्धकरके देश का धन व जनजीवन को नष्ट कर देंगे। प्रजा भय, रोग आदि से त्रस्त रहेगी।
	स्वामी बृहस्पति	शासकों में मतभेद रहे। अनाज का आयात करना पड़े। चैत्र से ज्येष्ठ मास तक सभी वस्तुऐं, अनाज तथा धातुऐं सस्ती हों। उत्तर में सूख पड़े जबकि दक्षिण में सुभिक्ष रहे। आषाढ़ मास में खण्ड वृष्टि। वर्ष के अन्य मासों में अनाज सस्ता रहे परन्तु जनता रोगग्रस्त रहे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

58. रक्ताक्षी	वर्षा तथा फसल दोनों अच्छी रहें। शासक एक दूसरे को क्रोध से देखेंगे और युद्ध जैसा वातावरण बनेगा।
स्वामी शुक्र	चैत्र से ज्येष्ठ तक अनाज के मूल्य सम रहे। आषाढ़ में बहुत वर्षा हो। सावन तथा भाद्रपद में कम वर्षा हो। भादों में रोग फैले। वर्ष के बाकी समय में अनाज महंगा रहे।
59. क्रोधन	शासकों में शत्रुता बढ़े। वर्षा मध्यम रहे। पूर्व में अति वृष्टि। दंगा-फिसाद बढ़े।
स्वामी शनि	चैत्र तथा वैशाख में कुछ वर्षा होगी और अनाज के भाव सस्ते होंगे। ज्येष्ठ मास में रोग फैलें। आषाढ में कम वर्षा, भाद्रपद में अच्छी वर्षा हो, अनाज सस्ता होगा। आश्विन मास रोग से भरपूर रहे। पौष में व्यापारी वर्ग को हानि।
60. क्षय	रूई की फसल, सुगंधित वस्तु, तेल, चीनी तथा अनाज नष्ट हों। जनता दुखी रहे।
स्वामी राहु	चैत्र तथा वैशाख में दंगे फसाद हों। ज्येष्ठ में बच्चों में रोग तथा आषाढ में वर्षा कम हो। भाद्रपद मास में कोई वर्षा न हो। शासकों का व्यवहार प्रशंसनीय नहीं होगा।

III. रोहिणी वास

इसकी गणना के लिए सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के समय, 28 नक्षत्रों (अभिजित को मिलाकर) में से चंद्रमा जिस नक्षत्र में उस दिन गोचर कर रहा हो, वह समुद्र में होता है। उस नक्षत्र से गणना शुरू करके 2 × 4 = 8 **तट** के लिए 1 × 4 = 4 **पर्वत** के लिए, 2 × 4 = 8 नक्षत्र **संधि** के लिए माने जाते हैं। जिस स्थान पर रोहिणी नक्षत्र पड़ता है। वही रोहिणी का वास होता है। सम्वत 2062 में चैत्र शुक्ला पंचमी (बुधवार) के दिन (13 अप्रैल 2005) को सूर्यदेव 24 घंटे 9 मिनट पर मेष राशि में प्रवेश करेंगे। उस समय चंद्रमा वृष राशि व मृगशिरा नक्षत्र में रहेगा। जिसकी संख्या 5 है इसलिए 5-6 (मृगशिरा-आर्द्रा) समुद्र में होगा। पुनर्वसु (7) तट में पुष्या (8) संधि में, अश्लेषा (9), पर्वत (10) मघा संधि में इसी क्रम में आगे बढ़ेगे। इस वर्ष रोहिणी वास तट पर होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

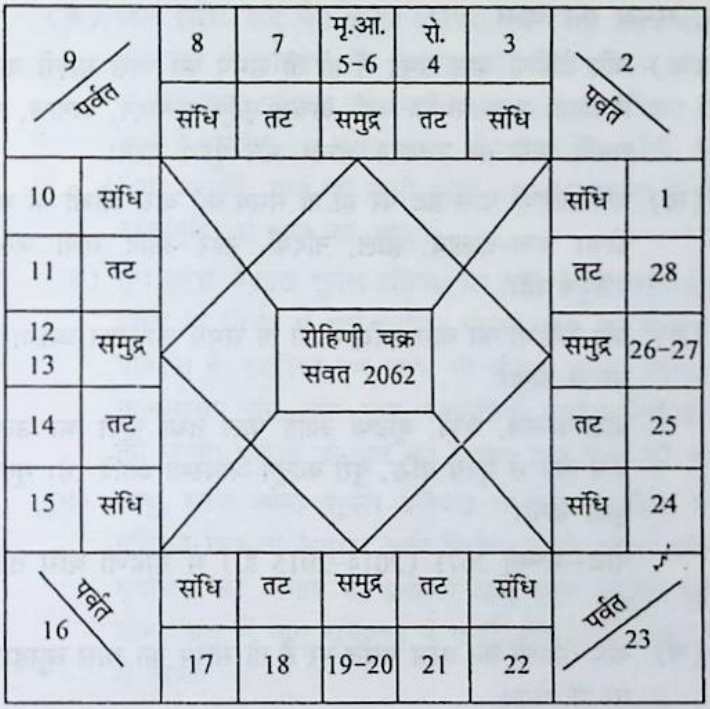

नोटः मृगशिरा (5) समुद्र में आया तो 5-6 समुद्र में दिखाए।

IV. रोहिणी वास से फल

समुद्र में समुन्द्रे तु महावृष्टि-भारी वर्षा, समुद्र से प्राप्त वस्तुओं का भारी मात्रा में उत्पादन, राजस्थान जैसे सूखे क्षेत्रों में भी वर्षा होगी। अनेकों स्थानों पर बाढ़ आ सकती है।

तट पर तटे वृष्टि सुशोभनः-जल में होने वाली खेती की फसल अच्छी होगी, कम वर्षा होने वाले क्षेत्रों में भी अच्छी वर्षा होगी। किसान खुश रहेंगे।

संधि में खण्ड वृष्टि, सामान्य फसल चारे व घास का अच्छा उत्पादन परंतु भूसा कम होगा।

पर्वत पर वर्षा की कमी, चारे की कमी तथा अनाज की भी कमी पशु तथा जनता को कष्ट हो।

सम्वत् 2072 में सूर्य देव ने 13 घंटे 43 मिनट पर 14 अप्रैल 2015 को मेष राशि में प्रवेश करना है। उस समय धनिष्ठा नक्षत्र (संख्या 24) में चंद्रमा होगा। रोहिणी वास समुद्र में होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2.3.3. समय का वास

(क) यदि रोहिणी वास समुद्र में हो तो समय का वास **माली** के घर में होगा। फल-पर्याप्त वर्षा, अच्छा कृषि उत्पादन, अनाज, फल, सब्जी आदि का उत्पादन अच्छा और मूल्य सस्ते।

(ख) यदि रोहिणी वास **तट पर** हो तो समय का वास **धोबी** के घर में होगा। फल-तालाब, झील, नदियाँ, नहर आदि सभी जल से परिपूर्ण रहें।

(ग) यदि रोहिणी का वास **संधि में** हो तो समय का वास **व्यापारी** के घर में होगा।

फल-अनाज, जड़ी, बूटियां आदि फल तथा फूल का उत्पादन कम होने से मूल्य वृद्धि, बुरी कानून व्यवस्था आदि रहे। मूल्य में वृद्धि होगी।

नोट—सम्वत् 2071 (2014-2015 ई.) में रोहिणी वास तट पर था।

(घ) यदि रोहिणी का **वास पर्वत** पर है तो समय का वास **कुम्हार** के घर में होगा।

फल-शासकों के लिए कठिन समय, राजनीतिक उथल-पुथल तथा वर्षा की अति कमी।

V. वाहन

महिष-राजनेता की मृत्यु।

हिरण-कहीं अल्प व कहीं अति वृष्टि हो।

गीदड़-वर्षा की कमी। रोग फैलने का भय।

वृषभ-प्राकृतिक आपदायें, भूकम्प आदि से विनाश। दुष्ट प्रवृति के लोग, जनता को कष्ट दें व राजनीति में प्रवेश कर जायें तो सरकार की स्थिरता को भंग करें।

VI. चर्तुस्तंभ

प्रत्येक संवत के चार स्तंभ होते हैं। पूरा संसार ही चार तत्वों, जल, अनाज तथा जड़ी-बूटियों (वायु, जल, अग्नि व पृथ्वी) पर निर्भर करता है। इनका अपना महत्त्व है इनके माध्यम से वर्ष में शुभाशुभ फलों (घटनाओं) का ज्ञान प्राप्त होता है। इन्हीं पर देश व मानव का जीवन निर्भर करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(क) **जल स्तंभ**-यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र हो। तो उस का मान ही बतायेगा कि कितना फल मिलेगा। इस संवत् 2072 में चैत्र शुक्त प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र 12.22% प्रतिशत है जो कि कम है इसलिए इस संवत् 2072 में खण्ड वृष्टि होगी, सिंवाई के लिए आपूर्ति, वर्षा की कमी रहेगी अथवा सामान्य से कम रहे। अल्पवृष्टि से जल का अभाव।

(ख) **तृन स्तंभ**-वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को यदि भरणी नक्षत्र हो तो वर्षा आदि के विषय में पता लगेगा। भरणी नक्षत्र का सम्पर्क 28.67 प्रतिशत है, इसलिए तृण स्तंभ भी केवल 28.67 रहेगा। जिसके फलस्वरूप बांस, घास, पुष्प, वनस्पतियाँ, जड़ी-बूटियों के उत्पादन की कमी। पशुओं के चारे का अभाव तथा दुग्ध की कमी।

(ग) **वायु स्तंभ**-ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा के दिन मृगशिरा नक्षत्र के प्रतिशत मान के अनुसार फल मिलेंगे। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा का अभाव है, इसलिए वायु स्तंभ निर्मित नहीं होगा। ग्रीष्म ऋतु में वायु संचालन में कमी, तेज गर्मी, वायु व प्रदूषण से कष्ट।

(घ) **अन्न स्तंभ**-यदि आषाढ शुक्ल प्रतिपदा को पुर्नवसु नक्षत्र हो तो उसके प्रतिशत मान से निर्णय होगा। यह नक्षत्र संवत् 2072 में 31.49 प्रतिशत है इसलिए क्षीण है। खाद्यान्नों, अनाज, दालों की फसलें अच्छी न होने से अभाव रहेगा अतः अतिवृष्टि। अनावृष्टि के कारण अन्न की कमी जन साधारण के लिए कष्ट का समय होगा।

VII. चतुर्मेघ

(क) **पुष्कर**-पुष्करे बहुलम; तोयम भारी वर्षा के कारण बाढ़ आदि से विनाश हो।

(ख) **द्रोण**-द्रोण वृष्टि सर्वदा; अतिवृष्टि अनाज का अच्छा उत्पादन पृथ्वी पर धन रहे। कुछ स्थान बाढ़ से प्रभावित हो।

(ग) **अवर्तक**-जौ, चावल, गेहूँ, चना, रूई तथा तेल के बीज वर्षा की कमी के कारण नष्ट हो। कुछ स्थानों पर तेज हवा, फसलों को नष्ट करे। अधिकतर लोग धर्म कार्यों में व्यस्त रहें। पूर्व से हवा कम चलेगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(घ) **संवर्तक**–चरित्र हनन वाली गतिविधियों का ज़ोर, धार्मिक कार्यों में बाधा। आंधी, तूफान, चक्रवात आदि प्राकृतिक कारणों से विनाश।

नवमेघ

(*i*) **संवर्तक**–आंधी, चक्रवात आदि से सम्पत्ति व जनजीवन की हानि।

(*ii*) **तम**–अधिक रोगों का फलाव, कम वर्षा, अनाज की हानि तथा प्रजा बेचैन।

(*iii*) **वरुण**–अतिवृष्टि के कारण बाढ़ तथा जनजीवन में संपत्ति का विनाश।

(*iv*) **पुष्कर**–सामान्य वर्षा।

(*v*) **समकर्ता**–तेज, वायु के कारण खड़ी फसल नष्ट। अधिकतर पूर्वा। (पूर्वी हवा) चले।

(*vi*) **अवर्तक**–जौ, चावल, गेहूँ, चना, रूई, तेल के बीज आदि की खेती नष्ट हो। घी, तेल, तिल आदि के भाव बढ़ें तथा वर्षा पर्याप्त होगी। धनी लोग व्यापार में लगे रहेंगे।

उपरोक्त जानकारी सभी पंचांगों में प्राप्त होती है। वर्षा ऋतु के विषय में भविष्यवाणी करने में इनसे सहायता प्राप्त होती है। वर्षा ऋतु के अध्याय में दी गई जानकारी के आधार पर ही सफल भविष्यवाणी की जा सकती है परंतु संवत्सर के विषय में उपरोक्त जानकारी भी भविष्य कथन में उपयोगी होती है। इनको भी विचारार्थ रखना चाहिए। युगों (कलि आदि) संवत्सर के नाम आदि, मंत्री तथा ग्रहों के स्वभाव तथा उनकी स्थिति व गोचर सभी का प्रभाव समझने के बाद निर्णय लेना चाहिए। शास्त्रीय पुस्तकों में ऋषियों ने बहुत से सूत्रादि दिए हैं उन सभी का यहाँ वर्णन संभव नहीं है। इस शुष्क विषय को रोचक बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। अध्यापन के अनुभव से तो यही धारणा बनती है कि विद्यार्थी इस विषय में रूचि नहीं लेते। संहिता खण्ड को समझे बिना जातक के विषय में फलित करना भी अधूरा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

VIII. गुरु व शनि के द्वादश राशियों में गोचर का वर्षा व बाजार भावों पर प्रभाव

(अ) गुरु का गोचर- *यदा सुरिगुरुर्मेषे सुखं सर्वजनेषु च।*
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सुखिनी मेदनी भवेत।।

मेष अच्छी वर्षा सभी ओर सुभिक्ष होगा, जनता स्वस्थ व प्रसन्न रहेगी। सभी वस्तुएँ व अनाज सस्ता। बाजार भावों में उतार-चढ़ाव हो सकता है।

वृष वर्षा कम महंगाई व रोग का फैलने आदि से जनता दुखी।
जीव वृषे सुभिक्षं स्यात गौरसस्या मंर्धता।
स्वल्प वृष्टि प्रजा पीड़ा, सस्यानाम बहुल भवेत।।

मिथुन शासक वर्ग/सरकार परेशान, जनता में भय, वर्षा की कमी, पश्चिम तथा उत्तरी भाग में अकाल। कपड़े व सूत के बाजार में मंदी, सोने-चांदी के भाव ऊँचे। नारियल, सुपारी, अलसी, सरसों, मूंगफली, लोहा, तांबा, घी, तेल, सफेद कपड़ा, चंदन तथा मजीठे का बाजार ऊंचा।

कर्क सामान्य वर्षा, कुछ भागों में अकाल देश के सामने समस्या, राज्यों में अशांति। सूत, रूई, अनाज, गुड़, घी, चीनी आदि के भावों में तेजी। अनाज के संग्रह करता लाभ उठायेंगे। दक्षिणी भाग में अधिक वर्षा के कारण बाढ़ तथा आंधी आए। बाजार भावों में उतार चढ़ाव।
कर्क राशि गतो जीवो यदा वक्री भवेत्तदा।
दुभिक्षं जायतेघोरं राजानोयुद्धतत्तराः
देश में छत्रभङ्ग (शासन परिवर्तन हो तथा अनेक स्थानों में आन्दोलन एवं उपद्रव हों अनाजादि के भाव ऊँचे। सात महीनों में विशेष तेजी (सन् 2014-15) में रहा, चुनाव से कांग्रेस की जगह बी.जे.पी. आ गई, दिल्ली में आप पार्टी आ गई।

सिंह *यदा सिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं तत्र जायते।*
मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहुसस्या च मेदिनी।।
शुभ, अनाज का अधिक उत्पादन, तेल आदि सभी वस्तुएँ मंदी, परंतु घी, गेहूँ, महंगे, लोहे, स्वर्ण, चांदी, रूई का बाजार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नीचा। जनता सुखी, म्लेच्छ देशों में गड़बड़ अर्थात् युद्ध का भय।

सिंहे जीवे देव ब्राह्मण पूजास्यात्नराणां मान्यतासताम् रोगा विवादश्चान्यो डन्यं चतुष्पादाविमहर्घता।।

14 जुलाई 2015 को गुरु सिंह राशि में प्रवेश करेगा, धर्मस्थलों, विद्वानों एवं ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, सत्याचरण करने वाले व्यक्तियों को मान मिलेगा। राजनीतिक पार्टियों में टकराव भयानक रोग होंगे, चौपाये (यानि मीटर गाड़ी भी), उड़द, तिल, तेल, पैट्रोल, चावल, सोना चाँदी, पीतल आदि के भाव तेज होंगे।

कन्या *कन्या राशि गते जीवे मेघ वृष्टिस्तोथोत्तमा।*
सुभिक्षं सर्वधान्यानारोग्यं लभते जनः।।

शुभ स्थिति, रूई का बाजार नीचा, चांदी, अनाज के मूल्यों में गिरावट, परंतु गुड़, चीनी, गेहूँ, चावल, मूंग, उड़द, चना, तिल, तेल, सरसों आदि में बहुत तेजी। फसल अच्छी, वर्षा अच्छी, जनता सुखी परंतु पशुओं में रोग फैले

तुला *तुला राशीगते जीवे ज्वरव्याधि विनिर्दिशेत्।*
सर्वसुभिक्षंज्ञातव्यं क्वचित्वणामि, महर्धता।।

रोगोत्पत्ति हो, बुखारादि से जनता दुखी। रूई, मजीठ, स्वर्ण, सुपारी, नारियल आदि के मूल्यों में तेजी। अलसी सरसों की, तेल, लोहा आदि के भाव मंदे। सुभिक्ष हो तथा खाद्यान्न अच्छी मात्रा में उपलब्ध हों।

वृश्चिक *वृश्चिके च गुरुयातो दुर्भिक्षं तत्र जायते।*
स्वल्प वृष्टिर्भेत्तत्र भूरर्युत विल्विषैः।।

दुर्भिक्ष, अकाल, वर्षा की कमी, सरकार व चोरों से जनता भयभीत। स्वर्ण, चांदी, रूई, तांबा, कांसा, घी, तेल, सरसों, सुपारी आदि के भावों में तेजी का रूख रहे।

धनु *धनगते चगुरौ हिमहर्धता, कस-कपास-शणान्त स्वर्ण के।*
धृत, गुड, तिल, तेल, समर्धकम् भवति-मा-व-तिलादि।।

वर्षा ऋतु में खाद्यान्न महंगे परंतु तेल, गुड़, घी आदि सस्ते। रूई, जूटादि के भाव चढ़ें क्योंकि वर्षा कम होगी। स्वर्ण व अन्य धातुओं के मूल्य बहुत नीचे गिरें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मकर *मकरे च यदा जीवो जलेभ्दो मेघ उच्यते क्षीणाः।*
चमुष्पदा देवि मृगानन्दः प्रजायते।।

पशुधन व जनजीवन की हानि, शासकों में टकराव, युद्ध, भय, खण्डवृष्टि, भयानक अकाल, जनता पाप कर्म रत रहे तथा शोरगुल मचाये। लगातार वर्षा होने से तीन महीने तक मूल्यों में वृद्धि इसलिए अनाज का भंडार करना लाभदायक है।

कुंभ *कुंभगतौ यदि गुरः कुरुते अल्पवृष्टिम्।*
वृष्टि करोति बहुलामपि पूर्व भांगे।।
धन्यं-महर्धं मुदितेऽपि गुरौ समन्तात्।
अस्तं-गते वृष्टि भवं समर्धम्।।

पश्चिमी भाग में वर्षा की कमी, पूर्वी क्षेत्रों में वर्षा पर्याप्त। गुरु का अस्त होना वर्षा अधिक तथा सुभिक्ष एवं मूल्यों में गिरावट लायेगा।

मीन *यदा सुरगुरुर्मीने दुर्भिक्षं तत्र रौखम्।*
सागराः सर्वद्योपि विनश्यंति चतुष्पदा।।

दक्षिण पूर्वी क्षेत्रों में अकाल की संभावनायें, वर्षा की कमी, पशुओं का नाश। गेहूँ, गुड़, चीनी, उड़द, मोठ, गन्ना, सुपारी, हाथी दांत आदि के भावों में तेजी।

(आ) शनि का गोचर द्वादश राशियों में

मेष *मेषस्थे भानु पुत्रे त्रिभुवन विदिते याति।*
धान्यं विनाशं नूणं तैलं गवं गेह।।
यमुर दलितं विग्रहस्तीव्र एव। पाताले नागलोके दिशि विदिशिगता।।
मीतभीता नरेन्द्राः। ससर्वेलोका विलीनाः शुभफलविहिता याचमाना व्रजन्ति।।

तैलंगाना, बंगाल तथा बंगलादेश में झगड़े व संघर्ष रहेगा। अफ्रीका, अमेरिका, एशिया, अरब देश आदि में सरकार का बदलना। राष्ट्रीय नेता इधर-उधर दौड़-धूप करेंगे। विश्व के उत्तरीय भाग में अकाल सरकार का गिरना तथा कुछ राष्ट्रों का विनाश है।

नोट : कारगिल युद्ध (1999) पीछे की चर्चा को देखें तो अनेकों घटनाएं मिलेगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृष *वृषे मौरिर्यदायाती विनश्यतिं चतुष्पदः।*
सप्तधान्य महर्धं न नृपाणां विग्रहो भवेत।।

भयंकर रोग फैलने से पशुधन की हानि। नित्य उपभोग की वस्तु बहुत महंगी और जनता परेशान रहे। भयंकर युद्ध हो जिसमें एक बहुत बड़ी संख्या में लोग मरें।

नोट : गुजरात का भूकंप व दंगे आदि हुए (2001) भूकम्प पर अध्याय 2 में अनेकों उदाहरण मिलेंगे।

मिथुन *मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षिं तत्र रौखम।*
पश्चिमे दारुणम् युद्ध नृपणां च महद्भयं।।

प्राकृतिक प्रकोप कई बार हो तथा पाश्चात्य देशों में अशांति।

नोट : पिछले पृष्ठों में ऐसी कई घटनाओं की चर्चा है। अमेरिका से टावर का हमला। अफगानिस्तान व इराक पर हमला।

कर्क *यदा कर्क स्थितः सौरिर्मध्यदेशे भवेच्छुभम्।*
नागपुर विनस्येत अन्य दुर्भिक्षमुच्यते।।

मध्य भाग में शुभ परंतु नागपुर की हानि तथा अन्य स्थानों पर अशुभ घटनायें होंवे और दुर्भिक्ष होगा।

सिंह दुर्भिक्ष, फसलों को हानि, युद्ध, झगड़े आदि होंगे। अनाजादि के सामान्य भाव रहें। स्टाक मार्किट में उतार चढ़ाव। तांबा, पीतल, लोहा, मशीनरी, अलसी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, चीनी, उड़द, मूंग तथा ऊन के मूल्यों में वृद्धि हो।

कन्या *यदा भास्करतनयः कन्याः राशि प्रविश्यति।*
जलशेषं भवेद्वायुर्मध्य देशे नृपक्षयम्।।

वर्षा की कमी के कारण अकाल पड़े। तेज वायु से पानी शुष्क हो जाए। जनता परेशान रहे। झगड़े, लड़ाई आदि का भय, देश का मध्य भाग में झगड़े, शासक परशोन रहे, मित्रों में शत्रुता हो। स्वर्ण, चांदी, मोती तथा अन्य मूल्यवान पत्थर (नगीने) के मूल्यों में गिरावट, परंतु रूई, गुड़, चीनी, नमक तथा अच्छी किस्म की वस्तुएं महंगी हों। यदि अनाज का संग्रह किया जाए तो नौ महीने बाद लाभ होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुला अनाज का भाव ऊँचा, शहर तथा गांव के लोग शोकाकुल तथा परेशान रहें। भूकंप आए, विद्वतजनों को कष्ट हो, वर्षा कम हो, जनता को शांति न मिले और न ही उन्नति कर पाए। संग्रह करने वालों को अधिक लाभ हो।

नोट : 31-10-1984 को तुला के शनि में श्रीमती इंदिरा गांधी की निर्मम हत्या हुई और देश में झगड़े हुए। सिक्ख भाईयों की हत्यायें हुई।

वृश्चिक *यदा वृश्चिकगः सौरिर्मेदिनी दुःख संयुता।*
वर्ष मात्र मयो चौर्ध्वमिन्द्रप्रस्थो विनश्यति।।

पृथ्वी पर कष्ट व शोक व्याप्त रहेगा। इन्द्रप्रस्थ के विनाश का भय। अनुराधा व ज्येष्ठा में गोचर के समय सम्मुख वेध ज्येष्ठा के सामने पुष्य तथा दाया वेध स्वाति को होगा। गुजरात, मध्यप्रदेश, केरल, तमिलनाडु, उड़ीसा, बंगाल, पंजाब तथा आसाम आदि पीड़ित होंगे।

धनु राजा को भय, भूकंप गुजरात में बरबादी, मध्य प्रदेश में झगड़े, अग्निकांड, राजनीतिक उथल-पुथल मारवाड़ में भी परेशानी वर्षा कम, राजा की मृत्यु, युद्ध जैसी स्थिति, जनता में शत्रुता आदि।

मकर *मकरे च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र दारुणाम्।*
कानार्वश्च विनश्यन्ति हन्यदेशे शुभं भवेत।।

स्वर्ण, चांदी, तांबा, रूई, सूत तथा सभी प्रकार का अनाज बहुत महंगा हो। रोग से जनता दुखी तथा शोकाकुल। नेता क्रोधित रहें, झगड़े, चोर भय, कानून व्यवस्था बिगड़े और जनता दुखी हो। आधा समय सुभिक्षं तथा आधा दुभिक्षं व अकाल रहे।

कुंभ *कुभं राशिगतः सौर्खिर्ष मात्रं तदद्धकम्।*
कालिन्या उपकंठे च तत्र धान्य महर्धता।।

प्रथम वर्ष में मूल्य बहुत ऊँचे रहेंगे, अन्त के 1 वर्ष 6 मास के समय में बाजार नीचा रहेगा। कुछ क्षेत्रों में भारी वर्षा, कुछ में कम वर्षा जिसके फलस्वरूप अकाल हो। रूई, चांदी के मूल्य में गिरावट पहले कुछ तेजी के बाद परंतु अनाज महंगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मीन *अर्क पुत्रो यदा मीने दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्।*
सागरः सर्वनद्यश्च विनश्यन्ति चतुष्पदराः।।

जनता में असंतोष, भयानक अकाल, कुछ प्रांतों में वर्षा की कमी आदि के कारण जनता का धैर्य टूटे, प्रदर्शन हो, कानून व्यवस्था भंग हो, हड़तालें आदि हों देश में शांति भंग हों।

नोट : गुरु, शनि, राहु आदि का राशि में गोचर करने का प्रभाव होने वाली घटनाओं की संभावना दर्शाता है। इनका गोचर अगर नक्षत्रों में विचार किया जाए तो स्थिति अधिक स्पष्ट होगी।

IX. राष्ट्रपति शासन

प्रांतों में राष्ट्रपति शासन लगने में भी क्या ग्रहों का हाथ है?

(अ) इस विषय पर प्रकाश डालने के लिए कुछ उदाहरण लेते हैं:

विश्लेषण

1. उत्तरप्रदेश 6 दिसम्बर, 1999 समय रात्रि 12 बजे स्थान लखनऊ

ल.	4/21°-14'	सू.	7/20°-07'	चं.	0/02°-0'
मं.	3/03°-31'	बु.	7/00°-00'	बृ	5/16°-39'
शु.	9/02°-44'	श.	9/20°-08'	रा.	7/27°-48'

कुण्डली नं. 1

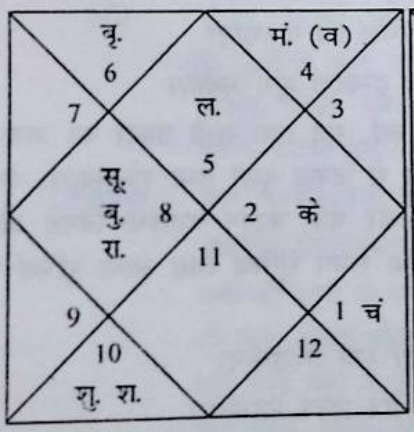

नवाँश

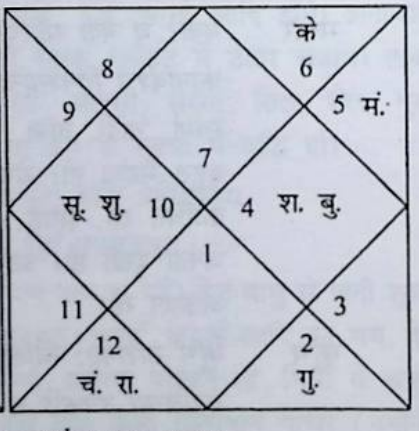

दिल्ली का लग्न = 4/18°-14° नवांश लग्न कन्या

सूर्य विधि 15-11-1992, 26 घंटे 36 मिनट पर स्थान–लखनऊ

वृ/बु./रा.

2-1-78 11/59 Dec

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुण्डली नं. 2

ल. 8°-20′
सू. 00°-00′
चं. 08°-58′
मं. 02°-44′
बु. 13°-00′ (व)
बृ. 13°-25′
शु. 09°-03′
श. 18°-51′
रा. 28°-04′

(*i*) महत्त्वपूर्ण तथ्य:

(क) बाबरी मस्जिद का गिरना।

(ख) यू.पी. सरकार का भंग होना।

(ग) राष्ट्रपति शासन

(घ) 15-6-1992 चंद्र ग्रहण तथा 30-6-1992 सूर्य ग्रहण।

सूर्यविधि के मास में ग्रहों के गोचर में परिवर्तन

(*i*) पाँच मंगलवार मार्गशीर्ष मास में

(*ii*) 9 दिसम्बर 1992 को पूर्णिमा। 6 ता. को द्वादशी।

(*iii*) वक्री बुध ने तुला में 28 नवम्बर को प्रवेश किया। 2 दिसम्बर को मार्गी हुआ। 6 दिसम्बर को पुन: वृश्चिक में आया,

(*iv*) शुक्र ने 3/4 दिसम्बर 1992 को मकर में प्रवेश किया।

(*v*) मंगल 28 नवम्बर 1992 को वक्री हुआ तथा 6 दिसम्बर को वापिस पुनर्वसु में प्रवेश किया।

(*vi*) सूर्य बुध तथा शुक्र के मध्य में रहा।

विश्लेषण:

अ. स्वतन्त्रता दिवस की कुण्डली

(क) तृतीय भाव (कर्क) में गोचर मंगल (वक्री), मकर से गोचर के शनि की दृष्टि, उस भाव में बैठे सभी ग्रह पीड़ित, षष्ठ भाव में (तुला) गुरु (कारक) पर गोचर के मंगल की दृष्टि शुक्र में सूर्य का अंतर चल रहा था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) नवम भाव (मकर) में शनि का गोचर, उस पर गोचर के मंगल की दृष्टि।

आ. गणतंत्र दिवस की कुण्डली

(क) पंचम भाव में गोचर का मंगल तथा शनि की दृष्टि।

(ख) नवम भाव में सूर्य, बुध तथा राहु का गोचर।

(ग) तृतीय भाव में केतु। उस समय मंगल (नवमेश) की महादशा में चंद्रमा (पंचमेश) का अंतर।

इ. सूर्य विधि

(क) लग्नेश बुध (वक्री) तृतीयभाव में सूर्य तथा राहु के साथ।

(ख) पंचम भाव में शनि तथा मंगल से पीड़ित।

(ग) चतुर्थ भाव में शुक्र नेपच्यून व यूरेनस उस पर मंगल की दृष्टि उससे अष्टम में चंद्रमा तथा (व) मंगल।

(घ) नवम में केतु कारक गुरु मंगल से पीड़ित।

(*iv*) उत्तर प्रदेश के लिए धनु राशि, गुरु, पूर्वी यू.पी. (आद्रा, पु. वसु तथा पुष्य नक्षत्र) तथा पश्चिमी यू.पी. कृत्तिका, रोहिणी तथा मृगशिरा (नक्षत्र) जो अयोध्या को भी दर्शाते हैं।

केतु-मृगशिरा में, मंगल पुष्य में, धनु राशि पर मंगल (व) की दृष्टि। धनु राशि (यू.पी) से चतुर्थ भाव पर शनि की दृष्टि। दशमेश बुध वृश्चिक (द्वादश भाव) में राहु व सूर्य के साथ सरकार का कारक सूर्य पीड़ित। इसलिए सरकार का भंग होना, धर्म स्थान को लेकर झगड़ा होना स्पष्ट है।

(*v*) सामान्य नियम

(*i*) पांच मंगलवार एक मास में,

(*ii*) शनि मंगल का समसप्तम होना,

(*iii*) 6 दिसम्बर, 1992 को बुध का राशि परिवर्तन तथा मंगल का नक्षत्र परिवर्तन (पुष्य से पुनर्वसु में, पुनर्वसु अयोध्या का नक्षत्र है।)

10 जनवरी 1980 में इंदिरा कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव जीता और 14 जनवरी को सरकार ने शपथ ली। 18 जनवरी, 1980 को आसाम में झगड़ों के कारण सेना बुलाई गई। 21 जनवरी 1980 को केरल में असैम्बली के चुनाव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुए। 17-2-1980 को तामिलनाडु, महाराष्ट्र, यू.पी, बिहार, उडीसा, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब तथा गुजरात प्रांतों में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया।

17-2-1980 को रात्रि 12 बजे की दिल्ली की कुंडली नं. 3

ल. 20°-40′
सू. 3°-40′
चं. 09°-18′
मं. 15°-29′ (व)
बु. 21°-22′
बृ. 12°-45′ (व)
शु. 14°-27′
श. 01°-59′ (व)
रा. 05°-36′

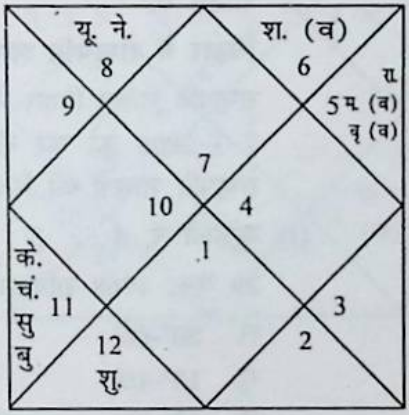

भारत के चारों दिशाओं के राज्य प्रभावित हुए इसका अर्थ है लगभग पूरा भारत प्रभावित है। सभी राज्यों के लिए:

(*i*) तामिलनाडु-सूर्य, नैऋत्य कोण, स्वाति विशाखा तथा अनुराधा नक्षत्र मेष राशि।

(*ii*) महाराष्ट्र-सिंह राशि दक्षिण उ.फा., हस्त तथा चित्रा नक्षत्र।

(*iii*) यू.पी. पूर्वी-(आर्द्रा, पुनर्वसु तथा पुष्य नक्षत्र) पश्चिमी (कृत्तिका, रोहिणी तथा मृगशिरा नक्षत्र, धनुराशि, गुरु)

(*iv*) बिहार, उड़ीसा-पूर्व (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य नक्षत्र), सूर्य।

(*v*) मध्यप्रदेश-दक्षिण (उ.फा. हस्त तथा चित्रा नक्षत्र)

(*vi*) राजस्थान-शनि नाभि, कृत्तिका, रोहिणी तथा मृगशिरा नक्षत्र।

(*vii*) पंजाब-मकर राशि।

(*viii*) गुजरात-वृष राशि (दक्षिण; उ.फा., हस्त तथा चित्रा नक्षत्र)

कारण:

(*i*) पांच शनिवार फाल्गुन मास में।

(*ii*) 16 जनवरी को सूर्य ग्रहण, कुंभ राशि में।

(*iii*) शनि व मंगल गुरु तथा राहु द्विर्द्वादश।

(*iv*) मंगल, गुरु तथा राहु की युति सिंह राशि में,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*v*) मिथुन राशि (गणतंत्र दिवस की कुंडली का चतुर्थ भाव) पीड़ित।

(*vi*) स्वतंत्रता दिवस की कुंडली का चतुर्थ भाव राहु-मंगल से पीड़ित। दशम भाव कुंभ राशि में ग्रह पड़ा था और गोचर में पीड़ित था।

बिहार में राष्ट्रपति शासन

राष्ट्रपति शासन बिहार में 8-3-2005 से लगा जिसकी घोषणा 7-3-2005 को कर दी गई। बिहार में पहले सात बार लगे राष्ट्रपति शासनों की स्थिति को भी विचार में लेते हैं:

(*i*) **कुंडली नं. 4**

29 जून, 1968 शनिवार

ल. 20°-05′
सू. 13°-40′
चं. 15°-57′
मं. 11°-39′
बु. 29°-55′ (व)
बृ. 8°-35′
शु. 15°-58′
श. 00°-49′
रा. 21°-27′

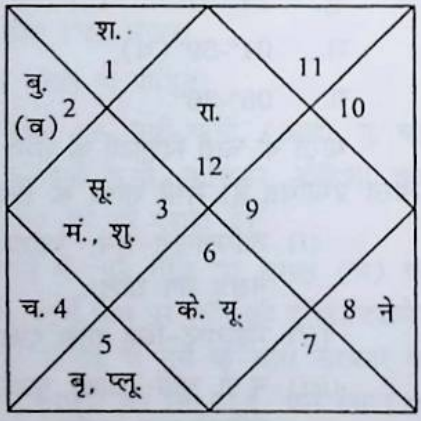

(*ii*) **कुंडली नं. 5**

4 जुलाई, 1969 शुक्रवार

ल. 26°-23′
सू. 18°-14′
चं. 13°-09′
मं. 8°-28′ (व)
बु. 29°-06′
बृ. 5°-06′
शु. 3°-14′
श. 13°-27′
रा. 0°-26′

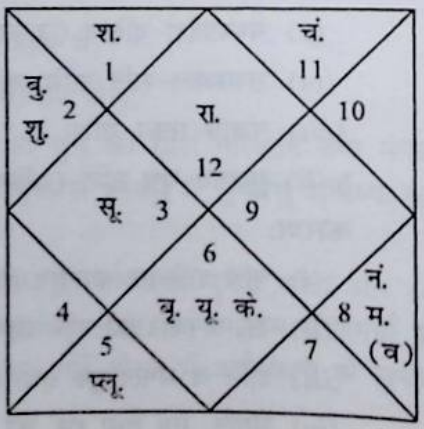

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iii*) **कुंडली नं. 6**

9 जनवरी, 1972 रविवार

ल. 24°-45′
सू. 24°-06′
चं. 26°-28′
मं. 14°-57′
बु. 2°-35′
बृ. 0°-35′
शु. 26°-53′
श. 6°-36′
रा. 11°-55′

(*iv*) **कुंडली नं. 7**

30 अप्रैल, 1977 शनिवार

ल. 4°-33′
सू. 15°-48′
चं. 24°-20′
मं. 8°-05′
बु. 17°-53′
बृ. 11°-43′
शु. 14°-49′
श. 16°-42′
रा. 00°-42′

(*v*) **कुंडली नं. 8**

17 फरवरी, 1980 रविवार

ल. 28°-34′	सू. 3°-40′	चं. 9°-18′
मं. 15°-29′ (व)	बु. 21°-22′	बृ. 12°-45′ (व)
शु. 14°-27′	श. 1°-59′ (व)	रा. 5°-36′

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

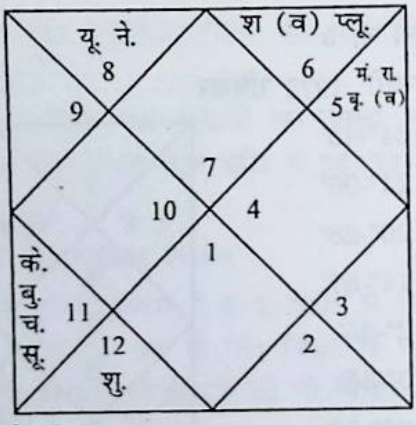

(*vi*) कुंडली नं. 9

28 मार्च, 1995, मंगलवार

ल. 2°-16′
सू. 12°-50′
चं. 2°-58′
मं. 19°-25′
बु. 26°-41′
बृ. 21°-33′
शु. 5°-28′
श. 23°-42′
रा. 12°-8′

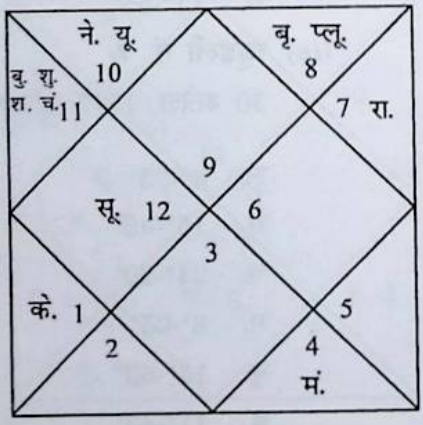

(*vii*) कुंडली नं. 10

12 फरवरी, 1999, शुक्रवार

ल. 24°-23′
सू. 28°-43′
चं. 4°-46′
मं. 12°-7′
बु. 4°-45′
बृ. 5°-50′
शु. 23°-46′
श. 4°-34′
रा. 28°-14′

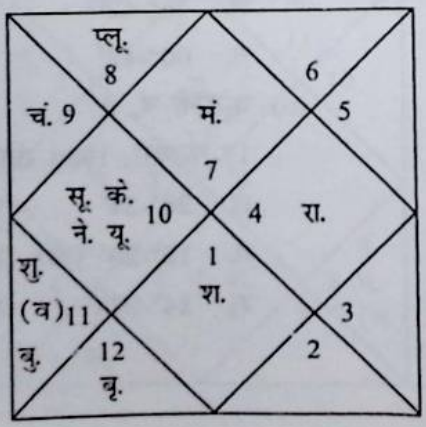

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*viii*) **कुंडली नं. 11**

8 मार्च, 2005, मंगलवार

ल. 14°-20′
सू. 23°-29′
चं. 17°-32′
मं. 26°-44′
बु. 10°-21′ (व)
बृ. 23°-12′
शु. 17°-29′
श. 26°-38′ (व)
रा. 29°-22′

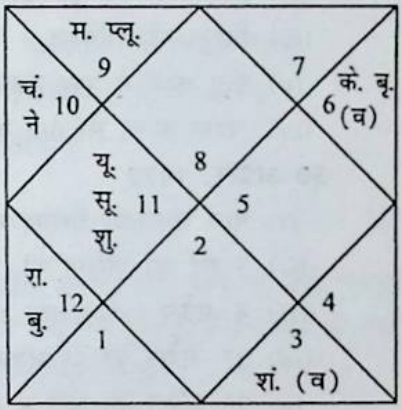

नोट: सभी में समय पहले दिन रात्रि 12 बजे का लिया गया है। स्थान पटना बिहार की राजधानी को लिया गया है।

राष्ट्रपति शासन के कारणों पर चर्चा

गोचर परिवर्तन

29 जून, 1968

(*i*) बुध-28 को बुध मिथुन में था, 29 तारीख को वृष में वापस आया। 29 ता. को उदय हुआ तथा 30 तारीख को मार्गी हुआ (लेकिन रहा मृगशिरा में)।

(*ii*) आद्रा नक्षत्र में मंगल, सूर्य तथा शुक्र तीनों ग्रह थे।

(*iii*) 26 जून को अमावस्या थी।

(*iv*) पाँच मंगलवार थे।

4 जुलाई 1969

(*i*) आषाढ़ लौंद का महीना,

(*ii*) पांच रविवार (एक मास में पांच शनिवार)

(*iii*) 18 मार्च को सूर्यग्रहण था।

(*iv*) सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में पीड़ित

(*v*) चंद्रमा कुंभ में।

9 जनवरी, 1972

(*i*) पांच शनिवार व रविवार मार्गशीर्ष मास में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*ii*) 31 दिसम्बर, 1971 को पूर्णिमा, उस दिन कृष्ण पक्ष की दशमी,

(*iii*) 6 जनवरी को गुरु धनु राशि में आया।

(*iv*) मिथुन राशि पीड़ित,

(*v*) केतु कर्क में पुष्य नक्षत्र में

(*vi*) चंद्रमा कन्या में। 6/7 जनवरी को बुध धनुराशि में आया।

30 अप्रैल, 1977

(*i*) पांच मंगलवार वैशाख मास में थे।

(*ii*) 3 मई को पूर्णिमा थी, उस दिन द्वादशी थी।

(*iii*) 4 अप्रैल (चंद्र) तथा 18 अप्रैल को (सूर्य) ग्रहण था।

(*iv*) 27 अप्रैल को 15 बजकर 21 मिनट पर शुक्र मार्गी हुआ।

(*v*) 28 अप्रैल को शनि ने आश्लेषा में प्रवेश किया।

(*vi*) 30 अप्रैल को बुध की सूर्य से युति उसी दिन (सूर्य 0/16 तथा बुध 0/17) उसी दिन यूरेनस की सूर्य से समसप्तक स्थिति थी।

(*vii*) मिथुन राशि व सूर्य दोनों पीड़ित।

(*viii*) शनि कर्क में पुष्य नक्षत्र में।

17 फरवरी, 1980

(*i*) चंद्रमा 5:30 बजे कुंभ में (10/1-45)

(*ii*) 16 फरवरी को अमावस्या,

(*iii*) तीन ग्रह शनि, मंगल तथा गुरु वक्री,

(*iv*) फाल्गुन मास में पांच शनिवार।

(*v*) मिथुन राशि पीड़ित (शनि से) (*vi*) सूर्य पीड़ित, (*vii*) चंद्रमा कुंभ में।

28 मार्च, 1995

(*i*) पांच शनिवार चैत्र मास में

(*ii*) बुध अस्त हुआ 27 मार्च को 4 बजकर 18 मिनट पर तथा कुंभ से मीन में गया।

(*iii*) शुक्र ने 28 मार्च को शतभिषा में प्रवेश किया।

(*iv*) शनि 28 मार्च को उदय हुआ (कुंभ राशि में)

(*v*) मंगल का कर्क में पुष्य नक्षत्र में गोचर

(*vi*) चंद्रमा कुंभ राशि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12 फरवरी, 1999

(*i*) पांच शनिवार फाल्गुन मास में,

(*ii*) 11 तारीख को रात्रि को चंद्रमा धनु में प्रवेश किया।

(*iii*) बुध ने 12 तारीख को शतभिषा में प्रवेश किया।

(*iv*) राहु कर्क में आश्लेषा नक्षत्र में

(*v*) सूर्य पीड़ित।

8 मार्च, 2005

यहां भी 1980 फरवरी की भांति चुनाव जीते जाने के बाद राष्ट्रपति शासन हुआ। कुछ दिन पूर्व गोआ में भी राष्ट्रपति शासन लगाया गया था। पहले उपरोक्त चर्चा में प्राप्त नियमों को ही लगाना चाहिए।

(*i*) उस दिन चंद्रमा ने कुंभ में प्रवेश किया।

(*ii*) दो ग्रह शनि व गुरु वक्री थे।

(*iii*) मिथुन राशि पीड़ित,

(*iv*) शनि मिथुन में पुर्नवसु नक्षत्र में था

(*v*) सूर्य पीड़ित,

(*vi*) मंगल ने 7 मार्च को उत्तर आषाढ़ नक्षत्र में प्रवेश किया।
गुरु (व) वापिस हस्त नक्षत्र में 6/7 तारीख को गया।
शुक्र 9 मार्च को उ. भाद्रा में प्रवेश किया।
मंगल व शनि के अंश 8 ता. को समान थे।

(*vii*) अमावस्या 10 तारीख की थी सो घटना अमावस्या के करीब चतुर्दशी को हुई।

(*viii*) दो ग्रह शनि व गुरु वक्री थे।

विश्लेषण–चुनाव होना, मुख्यमंत्री का चयन होना, मंत्रिमंडल बनना आदि संविधान के ही कार्यों में आता है। संविधान गणतंत्र दिवस की कुंडली से देखा जाना है जिसका अध्यक्ष राष्ट्रपति है। प्रांतों की सरकारें स्वतंत्र होते हुए भी मंत्रिपरिषद, जिसका मुखिया प्रधानमंत्री है वह भी इस ही कुंडली से देखा जाना चाहिए।

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली भी भारत वर्ष में होने वाली सभी घटनाओं का उत्तरदायित्व संभाले हुए हैं। इसलिए उससे भी अध्ययन आवश्यक हैं। पीछे अध्यायों में दिए गए सूत्रों को दर्शाया गया कि ग्रहों की गोचरीय स्थिति इन होने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाली घटनाओं का पूर्वाभाष करवा देती है। सूर्य विधि का प्रयोग भी हर मास की गतिविधि जानने के लिए करना सहायक होना है। इसकी अनुबद्ध में हम दोनों कुण्डलियों के ऊपर चर्चा कर चुके हैं। राष्ट्रपति शासन लागू होने की कुंडलियों से स्पष्ट होने वाले सूत्रों पर ध्यान दें।

गणतंत्र दिवस की कुंडली

	पीछे दिए गए आठ चार्टों के आधार पर								
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	पीड़ित भाव
प्रथम भाव मीन	रा.	रा.	मं.	मं.	श.,मं.	सू.		रा. मं	7/8
चतुर्थ भाव मिथुन	सू. मं. श.	सू. श. मं.	सू. श. मं.	मं.	श.		श.	श. मं.	7/8
सप्तम भाव कन्या	के. मं.	के. यू.	मं. यू	मं. श. प्लू.	श. प्लू	सू		के.	7/8
एकादश भाव मकर	श. मं.	श. म.(व)	रा. श.	श.		ने. यू. मं.	म. यू. श. सू.	ने.	6/8

स्वतंत्रता दिवस की कुंडली

	कुण्डली								
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	पीड़ित भाव
प्रथम वृष		मं	श.		श.	प्लू.	प्लू मं		4/8
चतुर्थ सिंह		प्लू.			मं. रा	श.		श.	3/8
सप्तम भाव वृश्चिक	ने.	मं.	ने. श.	ने.	ने.यू. श. मं	प्लू	प्लू	श (व)	4/4
एकादश भाव मीन	रा.	रा.	मं.	मं.	श. मं.	सू.		रा. श. मं	7/8
गुरु का गोचर	सिंह	कन्या	धनु	वृष	सिंह (व)	वृश्चिक	मीन	कन्या	

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घटना के दिन की कुंडलियों की स्थितियाँ ऊपर चर्चा कर चुके हैं। स्पष्ट हो जाता है कि सबसे ज्यादा प्रभाव संविधान व सूर्य विधियाँ तथा सामान्य नियमों का फल आता है। स्वतंत्रता दिवस की कुंडली में भी क्रूर ग्रहों का प्रभाव है परंतु गणतंत्र दिवस की कुंडली जितना नहीं। **प्रथम भाव संविधान** मीन राशि जिसका स्वामी गुरु कुंडली में नीच का एकादश भाव में है। गुरु गोचर का प्रत्येक घटना में चंद्रमा (मेष) या लग्न (मीन) या लग्नेश गुरू को दृष्टि दे रहा था और लग्न से षष्ठ सिंह, दशम (धनु) (चंद्रमा से नवम) तथा तृतीय भाव (वृष) से नवम (मकर) तथा एकादश (मीन) को, तथा नवम भाव में गोचर कर रहा था।

चतुर्थ भाव-कैबिनेट, प्रांतीय राजसभा/लोकसभा। मिथुन राशि अधिकतर पीड़ित पाई गई। (88%)

सप्तम भाव-झगड़े, नीतियाँ आदि अन्य राज्यों का संविधान के नियमों का पालन करने का योगदान। इसे हम राज्यों का भी प्रतिनिधि मान सकते हैं। यह भी 88% पीड़ित पाया गया।

एकादश भाव-राष्ट्रपति का अध्यादेश। वह भी क्रूर ग्रहों के प्रभाव में है। गणतंत्र दिवस की कुंडली, गुरु लग्नेश तथा दशमेश की भूमिका सबसे अहम प्रतीत होती है, क्योंकि लग्न से नवम व दशम, चंद्रमा से दशम को गुरु घटना के दिन प्रभावित कर रहा था। शनि तथा मंगल, राहु तथा गुरु तथा शनि व गुरु परस्पर 6/9, 3/11, 2/12 अथवा केन्द्र में पाये गए।

राज्य की स्वतंत्रता समाप्त होकर केंद्र का राज्य हो जाना, इन योगों से स्पष्ट हो रहा है।

नोटः थोड़ा ज्ञानवर्धन व दिशा की खोज के लिए चर्चा की गई है, भविष्य में इस पर और प्रकाश डालने की चेष्टा होगी।

विद्वानों से भी प्रार्थना है कि मेरा मार्गदर्शन करने की कृपा करें। मैं उसका आभारी रहूँगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुबद्ध

घाघ कहै सुन भड्डीर

संकलन फ्यूचर समाचार से प्रकाशित
डा. हरिशचंद्र अग्रवाल ग्वालियर के लेखों से

(*i*) चैत बदी पांचै दिना मेघ झुकैं आकाष।
सभी वस्तु सस्ती बिकै फल जानो दो मास।।
चैत्र कृष्ण पंचमी को आकाश में बादल हों, तो दो मास तक सभी वस्तुएं मंदी रहती हैं।

(*ii*) चैत बदी सातैं दिना, जो नभ बादल छाय।
लाल वस्तुएं जान लो आगे मन्दी जाय।।
चैत्र कृष्ण सप्तमी को यदि आकाश में बादल होते हैं तो आगे सभी प्रकार के लाल पदार्थों में मंदी रहेगी।

(*iii*) वैसाख सुदी प्रथमै दिवस, बादर बिज्जु करेइ।
दामा बिना बिसाहिजै, पूरा साख भरेइ।।
वैसाख शुक्ल प्रतिपदा के दिन आकाश में बिजली चमकती है, तो यह समझना चाहिए कि वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होगी और अनाज का उत्पादन अधिक होने से आगे अनाज सस्ता बिकेगा।

(*iv*) चैत बदी जो पंचमी, दक्षिण पूर्व वाय।
वर्षा होवै कछुक, भादव तेज बिकाय।।
चैत्र कृष्ण पंचमी को यदि दक्षिण पूर्व की हवा चले और कुछ वर्षा हो तो भाद्रपद मास में तेजी रहती है।

(*v*) शुक्ल पंचमी वैशाख दिन अंबर बादल जोय।
गरजे बरसे कड़कड़े तब समझो सब कोय।
तृणा का संग्रह कीजिये बेचो भादो मास।
अधिक लाभ हो जायेगा अकरा कड़वा घास।।
वैसाख शुक्ल पंचमी के दिन बादल हों और गरजे, बरसें, कड़कड़ाहट करें, तो समझ लो कि आगामी भादों मास में तृण के भाव तेज रहेंगे। अतः संग्रह करना लाभप्रद रहेगा। भादों मास में सभी तरह की घास में लाभ होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*vi*) **जेठ आगला परबो ईखू।**
कौन आसरा है यों पेखू।।
चंद्र शुक्र सुरगुरु के बारा।
होय तो अन्न भरी संसारा।।

ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा के दिन सोमवार होने से कृषि की स्थिति अच्छी रहेगी एवं अनाज का उत्पादन अच्छा रहेगा।

(*vii*) **बुधवार को जब कभी हो सूर्य संक्रांत।**
रस पदार्थ गुड़ खांड अरु तिलहन तेज नितांत।।

बुधवार को सूर्य का प्रवेश मिथुन राशि में हो इसके प्रभाव से रस पदार्थ, गुड़, खांड, सरसों, अलसी, तिल एवं अन्य तेल पदार्थों में तेजी रहेगी।

(*viii*) **मिथुन रवि महंगे बिकै, मूल अरु कंद कपास।।**
तिलहन सारे धान्य में, तेजी का आभास।।

मिथुन संक्रांति से आगे एक माह तक आलू, अरवी, अदरक, सोंठ, मूंगफली, प्याज, हल्दी आदि भूमिगत पदार्थों के भावों में तेजी रहेगी। रूई, कपास, सरसों, तिल, अलसी एवं अन्य तिलहर पदार्थों में तेजी आएगी।

(*ix*) **सावन बदी एकादशी, जेति रोहिणी होइ।**
तेती समुझो उपजै, चिंता करो न कोइ।।

श्रावण, कृष्ण एकादशी के दिन रोहिणी नक्षत्र जितने घटी पल का होता हैं, उतनी ही मात्रा में अनाज पैदा होगा। इससे चिंता की कोई बात नहीं।

(*x*) **चित्रा स्वाति बिसाखहू सावन नहीं बरसत।**
हालो अननै संग्रहो, दूनो मोल करंत।।

श्रावण मास में चित्रा, स्वाति एवं विशाखा नक्षत्रों में वर्षा नहीं होती है, तो अन्न का संग्रह कर लेना चाहिए, क्योंकि आगे अनाज के भावों में तेजी आएगी।

(*xi*) **बुधवार को जब कभी हो सूर्य संक्रांत।**
रस पदार्थ गुड खांड अरु तिलहन तेल नितांत।।

बुधवार के दिन सूर्य के सिंह राशि में प्रवेश करने पर रस पदार्थ गुड, खांड और सरसों, अलसी, तिल में तेजी आयेगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xii*) **क्रूर वार तेजी करै मावस पूनम दोय।**

श्रावण पूर्णिमा एवं भादो अमावस्या दोनों दिन मंगलवार होने से बाजार तेजी कारक चलेगा।

(*xiii*) **सावन भादौ खेत निरावै।**
तब गृहस्थ बहुतै सुख पावै॥

जो किसान सावन-भादो के महीनों में अपने खेत को निराता है, अर्थात निराई कर लेता है, वह बहुत सुख पाता है एवं उसकी फसल बहुत अच्छी होती है।

(*xiv*) **भादों की सुदि पंचमी, स्वाती संयोगी होय।**
दोनों शुभ जोगे मिले, मंगल बरती होय॥

भाद्रपद शुक्ल पंचमी को स्वाती नक्षत्र का योग बहुत शुभ माना गया है। इस योग में जल समुदाय मंगल मिलाप करता है, अर्थात मंगल के व्रत का आनंद उठाएगा और आगे फसल अच्छी होने का संकेत मिलता है।

(*xv*) **तीज बदी आसोज में, मंगल या शनिवर।**
अग्नि कांड भयभीत जग, महंगा चलै बाजार॥

अश्विन कृष्ण तृतीया को मंगलवार या शनिवार होने से अग्नि कांड का भय रहता है एवं बाजार में तेजी आती है।

(*xvi*) **पांच बृहस्पति पांच भृगु घर-घर मंगलचार।**

यदि किसी मास में पांच गुरुवार एवं पांच शुक्रवार हो तो शुभ योग है। अतः घर-घर में प्रसन्नता एवं मंगल उत्सव मनेंगे, अर्थात वर्षा एवं फसल, व्यापार की स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

(*xvii*) **भादव शुक्ल पूर्णिमा, बादल बिजली गाज।**
बादल में चंदा उदय, बेजो शीघ्र अनाज॥

भाद्रपद मास की पूर्णिमा के दिन बादल गरजते हैं और बिजली चमकती है, अथवा चंद्रमा बादलों में से निकलता दिखाई देता है तो आगे अनाज के भावों में मंदी रहेगी।

(*xviii*) **शनिवारी संक्राति हो तिलहन तेज अनाज।**
होय युद्ध भय रोग से जग में अमित अकाज॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य का प्रवेश शनिवार के दिन होने से अनाज एवं तिलहन के भावों में तेजी आयेगी। प्रजा जन से रोग, उपद्रव एवं युद्ध भय व्याप्त होगा।

(*xix*) **सावन भादव, चैत्र या कातिक मंगसिर मास।**
फागुन है संक्रांतियां वर्षे करे बिनास॥

सावन, भादों, चैत्र, कार्तिक, मंगशिर तथा फाल्गुन मास की संक्रांति को यदि पानी बरसता है तो यह अशुभ फल प्रदान करेगा।

(*xx*) **कन्यायां रविः नारियल तिलहन आदि मंजिष्ठ।**
लाल द्रव्य घी तेज सब, महंगे बिकें विशिष्ट॥

सूर्य के कन्या राशि में प्रवेश करने पर नारियल, सरसों, अलसी आदि तिलहन, मजिष्ठ आदि लाल रंग के पदार्थ, तेल, घी आदि में विशेष तेजी आती है।

(*xxi*) **एक राशि पर होय जब बुध शुक्र सूर।**
वर्षा को कमती करें तेजी हो भरपूर।

बुध शुक्र एवं सूर्य एक राशि में विचरण करेंगे। अतः वर्षा कम होने लगेगी एवं बाजार में तेजी आएगी।

(*xxii*) **सूर्य देव भृगुनाथ का एक राशि पर साथ।**
पकड़ा देती है फसल मंहगाई को हाथ॥

सूर्य एवं शुक्र एक राशि में हो जाये। ऐसी स्थिति में खाद्यान्न महंगे होंगे एवं बाजार में महंगाई बढ़ेगी।

(*xxiii*) **अश्विनी शुक्ला चतुर्थी यदि आवै रविवार।**
घी बेचो अन्न संग्रहो, आगे का लाभ विचार॥

अश्विन शुक्ल चतुर्थी रविवार होने से घी बेचकर अनाज खरीद लेना चाहिए क्योंकि आगे अनाज के भाव बढ़ेंगे।

(*xxiv*) **बादल वर्षा बिजली विजया दसमी देख।**
मूंग उर्द तिल तेल में, तेजी रहे विशेष॥

विजया दशमी के दिन पानी बरसता है तो उड़द, मूंग, मोठ तिल तेल आदि का बाजार तेज चलेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xxv*) **मास नखत पूनम नहीं तेज बिकै तब अन्न।**
नखत तथा पूनम बढ़ै, रस कस कन संपन्न।

अश्विन पूर्णिमा के दिन अश्विनी नक्षत्र न होने से आगे अन्न के भावों में तेजी आयेगी।

(*xxvi*) **दिवाली को बोये दिवालिया।।**

दिपावली के दिन जो किसान बुआई करेगा वह दिवालिया हो जाएगा।

(*xxvii*) **कार्तिक मावस के दिना, स्वाति नखत विचार।**
गिरे कही भूकंप से पर्वत या मीनार।।

अमावस्या के दिन स्वाति नक्षत्र रहेगा। इस भाग में भूकंप आने का आगे देश-विदेश में खतरा रहेगा।

(*xxviii*) **कार्तिक मास रात हल जोतौ।**
पग पसारे घर मत सूतौ।।

कार्तिक के महीने में रात में किसान को हल चलाना चाहिए न कि घर पर टांग पसार कर सोना चाहिए। इससे आगे अच्छी फसल की आशा रहेगी।

(*xxix*) **कार्तिक बोवै अगहन भरै।**
ताको हाकिम फिर का करै।।

जो किसान कार्तिक में रबी की फसल ठीक समय से बोता है और अगहन में सिंचाई करता है, तो उसका अफसर क्या कर सकता हैं? अर्थात वह मालगुजारी (भूमि कर) आसानी से दे देगा क्योंकि फसल अच्छी होती है।

(*xxx*) **आगे की खेती आगे आगे।**
पीछे की खेती बड़े भागे।।

जो किसान पहले बोआई करता है, उसकी फसल पहले तैयार हो जाती है और जो पीछे बोता है, अर्थात देर से बोआई करता है तो फसल बड़े भाग्य से ही होती है।

(*xxxi*) **अगाई, बोआई, सवाई लवाई।।**

आगे की बोआई सवाया लाभ देती है, अर्थात समय पर जो जितना आगे बोता है, वह उतना ही सवाया अन्न काटता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xxxii*) **आकार कोदो नीम जवा गाडर गेहूँ बेर चना।**

जिस वर्ष मदार खूब फूले-फले, तो उस वर्ष कोदो की फसल अच्छी होगी और नीम फूले-फले, तो जौं अच्छा होगा। जब गाडर नाम की घास बहुत हो तो, गेहूँ अच्छा होगा और बेर की बहुतायत हो तो चने की फसल उत्तम होती हैं।

(*xxxiii*) **वायु चलेगी उत्तरा, माड प्रियेंगे कुत्तरा।।**

मास में यदि उत्तर दिशा की हवा चलती है तो धान की फसल इतनी अधिक होगी कि कुत्ता भी मांड पीएगा।

(*xxxiv*) **वायु चलेगी पुरवा, पियो मांड का कुरवा।**

मास में पूर्व की वायु चलती है तो मांड का पुरवा खूब पीने को मिलेगा, अर्थात धान की फसल अच्छी होगी।

(*xxxv*) **तेरह कार्तिक तीन अषाढ़।**

जो चूका सो गया बजार।।

जो किसान कार्तिक के तेरह दिनों में और आषाढ़ के तीन दिनों में चूक जाता है उसे फिर बाजार से ही अन्न खरीदना पड़ता है।

(*xxxvi*) **खेती तो थोरी करै, मिहनत करे सवाय।**

राम कहें वाहि मनुष्य को, टोटा कबौं न आय।।

जिस किसान पर खेती हेतु खेत भले ही कम हों, लेकिन यदि वह खेती में मेहनत सवाई करता है तो श्रीरामजी की कृपा से उस मनुष्य को घाटा कभी नहीं होता।

(*xxxvii*) **गुरुवरी संक्रांतियां जब जग में आव।**

सुज प्रजा धन धान्य युत सभी वस्तु समभाव।।

गुरुवार को संक्रांति होने से प्रजा में सुख शांति रहेगी और सभी वस्तुओं के भाव समान रहेंगे।

(*xxxviii*) **सूरज बादल में उगै मावस मंगसिर मास।**

अन्न उपज कमती रहै महंगा चारा घास।।

अगहन अमावस्या को सूर्य बादलों में उदय हो तो वर्षा तथा अन्न की उपज कम होती है। उपज कम होने से अनाज, घास और चारा तेज बिकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xxxix*) **मार्ग महीना माहि जो, ज्येष्ठा तपै न मूर।।**
तो इति बोलैं भड्डरी, निपटै सातों तूर।।

ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र में दिन में गर्मी न हो तो भड्डरी के मत से सातों अन्न की अच्छी पैदावार होगी।

(*xL*) **अगहन बरसे हून, पूस बरसे दून।**
माघ बरसे सवाई, फागुन बरसे मूर गंवाई।।

यदि अगहन मास में वर्षा हो तो फसल अच्छी होती है। पौष में दूनी, माघ में सवाई और फाल्गुन में वर्षा होती है तो बीज की कीमत भी नहीं मिलती है।

(*xLi*) **सावन सांवा अगहन जवा।**
जितना बोवै उतना लवा।

सावन (जुलाई-अगस्त) के महीने में सांवा तथा अगहन के महीने में जौ जितने बोये जाते हैं उतनी ही मात्रा में उपज मिलती है, अर्थात बहुत कम पैदावार होती है।

(*xLii*) **मार्गशीर्ष के मास में, पांच होय रविवार।**
पांच शनैश्चर वा हो, तेजी होय अपार।।

अगहन (नवम्बर-दिसम्बर) की महीने में पांच रविवार या पांच शनिवार होने से अच्छी तेजी के आसार होते हैं।

(*xLiii*) **मंगसिर पहिले पाख में कोई तिथि घट जाय।**
झगड़ा और फिसाद नित लोगों में अधिकाय।।

अगहन (नवम्बर-दिसम्बर) महीने के प्रथम पक्ष तिथि घट जाने से लोगों मे आपसी झगड़े और फसाद होने के योग हैं।

(*xLiv*) **कातिक मंगसिर पूर्णिमा मेघ घटा आकास।**
गल्ला घी संग्रह करो लाभ पांचवे मास।।

कार्तिक और अगहन की पूनम को बादल हों तो अनाज और घी का संग्रह कर लेना चाहिए, जो आगे पांचवें मास में लाभ देगा।

(*xLv*) **क्रूरवार तेजी करै, मावस पूनम दोय।**

पूर्णिमा तथा अमावस्या यदि दोनों दिन क्रूरवार हो तो बाजार में तेजी आएगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xLvi*) **चित्रा स्वाति बिसाखहू, सावन नहीं बरसंत।**
हालो अन्नै संग्रहो, दूनो मोल करंत॥

श्रावण मास से चित्रा, स्वाति एवं विशाखा नक्षत्रों में वर्षा नहीं होती है तो अन्न का संग्रह कर लेना चाहिए, क्योंकि आगे अनाज के भावों में तेजी आएगी।

(*xLvii*) **सूर संक्रमण सूर दिन राजाओं के रार।**
धान्य तथा रस तेज हो दुखी रहै संसार॥

रविवार को सूर्य की संक्रांति होने से राजनीतिज्ञों में तकरार बढ़ेगी। अनाज तथा रस पदार्थ गुड़, शक्कर तिलहन आदि में तेजी से जनता परेशान होगी।

(*xLviii*) **सोमवती मावस पड़ें कभी जू अश्विन मास।**
अन्न खांड गुड़ तेल में मंदी का आभास॥

सोमवती अमावस्या अश्विन में होने से अनाज, गुड़ खांड तेल, तिलहन आदि में मंदी का रूख रहेगा।

(*xLix*) **भादव शुक्ल पूर्णिमा, बादल बिजली गाज।**
बादल में चंदा उदय, बेचों शीघ्र अनाज॥

भाद्रपद मास की पूर्णिमा के दिन बादल गरजते हैं और बिजली चमकती है, अथवा चंद्रमा बादलों में से निकलता दिखाई देता है, तो आगे अनाज के भावों में मंदी रहेगी।

(*L*) **किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाय।**
गाहक मांगे मूंग घी विक्रता नट जाय॥

अधिक अश्विन मास शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि के क्षय हो जाने से मूंग उड़द और घी के भावों में तेजी आएगी।

(*Li*) **नवमी मंगलवार जो शुक्ल अश्विन मास।**
मूंग मोठ चौला उरद संग्रह करो कपास॥

अधिक मास अश्विन शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि मंगलवार के दिन होने से मूंग, मोंठ, उड़द, चौला आदि दालें एवं कपास का संग्रह करना चाहिए। इनसे आगे लाभ मिलेगा।

(*Lii*) **दो अश्विन दो भादों व दो आषाढ़ के माह।**
सोना चाँदी बेच कर नाज वे साहो साह॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि दो अश्विन दो भादों या दो आषाढ़ मास हों तो भड्डरी के मत से सोना, चांदी बेचकर अनाज का संग्रह करना चाहिए, तो आगे अच्छा लाभ देगा।

इस सम्वत् 2072 (2015-16 ई.) में दो आषाढ़ मास हैं (3 जून से 31 जुलाई तक)

(*Liii*) **साठी होई साठे दिन।**
जब पानी पावे आठे दिन॥

साठी (एक प्रकार का मोटा धान) को यदि आठवें दिन भी पानी मिलता रहे तो वह साठवें दिन तैयार हो जाता है।

(*Liv*) **कन्यायां रवि नारियल तिलहन आदि।**
लाल द्रव्य घी तेल सब महंगे, बिके विशिष्ट॥

सूर्य के कन्या राशि में प्रवेश करने पर नारियल, सरसों, अलसी आदि तिलहन, मजिष्ठ, लाल रंग के पदार्थ, तेल, घी आदि में विशेष तेजी।

(*Lv*) **शनि वक्री आसोज में बुध राशि अन्यत्र।**
शुक्र अस्त हो अन्न की उपज बढ़ै सर्वत्र॥

बुध राशि बदल रहा हो एवं शनि वक्री हो और शुक्र अस्त तो अन्न की पैदावार अच्छी होगी।

वर्षा

(*i*) **जेठ उज्यारे पक्ष में, आद्रादिक दश रिक्ष।**
सजल होई निरजल कह्यो, निरजल सजल प्रत्यक्ष॥

आर्द्रा नक्षत्र से स्वाति तक के दस नक्षत्रों में यदि वर्षा होती है, तो वर्षा ऋतु में इन दस नक्षत्रों में वर्षा नहीं होती और यदि ज्येष्ठ मास में इन नक्षत्रों में वर्षा नहीं होती है तो वर्षा ऋतु में इन्हीं नक्षत्रों में अच्छा पानी बरसेगा।

(*ii*) **चैत मास दसमीं खड़ा, जो कहुं कोरा जाइ।**
चौमासे भर बादरा, भली भांति बरसाई॥

चैत्र मास दशमी के दिन इस वर्ष 2015 में 29 मार्च चैत्र शुल्क दशमी होगी पाठक उस दिन देखकर वर्षा ऋतु का अनुमान लगा सकता है। यदि आकाश स्वच्छ दिखाई देता है तो वर्षा ऋतु में अच्छा पानी बरसेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*iii*) **चैत का पछिवां भादों जला।**
भादों पछिवां माघ का पला॥

चैत्र मास में पश्चिमी हवा चलती है तो भादों के महीने में अच्छी वर्षा होगी और यदि भादो के महीने में पश्चिम दिशा की हवा चलती है तो माघ के महीने में पाला पड़ेगा।

(*iv*) **चैत मास जो बीज बिजोवै।**
भरि बैसाखहि टेसू धोवै॥

यदि चैत्र मास में बिजली चमकती है तो बैसाख के महीने में इतना पानी बरसेगा कि टेसू के फूल का रंग धुल जाएगा।

(*v*) **शुक्ल पक्ष वैशाख की तिथ दसमी दिन देख।**
बादल हो पावस विषै जल नहीं पड़े विषेष॥

वैसाख शुक्ल दसमी के दिन यदि बादल होते हैं और पानी बरसता है तो आगे वर्षा ऋतु में कम वर्षा होगी।

(*vi*) **श्रवण धनिष्ठा जेठ बदि, मेघ रहैं आकास।**
न वर्षे वर्षा अधिक, वर्ष वर्षा नास॥

श्रवण तथा धनिष्ठा नक्षत्रों में आकाश में मेघ छाये रहें और यदि वर्षा न हो, तो वर्षा ऋतु में उत्तम वर्षा होगी तथा यदि वर्षा हो जाती है तो आगे कम वर्षा होगी।

(*vii*) **जेठ अंत तिथि रात में, रहैं मेघ जो छाय।**
कहै घाघ तेहि साल में, जल दे भूमि बहाय॥

ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा की रात में यदि बादल छाये रहें, तो आगे वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा के आसार रहेंगे।

(*viii*) **आषाढ़ मास आठे अंधियारी, जो निकले चंदा जल धारी।**
चंदा निकले बादल फोर, साढ़े तीन बरखा का जोर॥

आषाढ कृष्ण अष्टमी को चंद्रमा बादल से छिप कर निकले तो यह जानना चाहिए कि आगे साढ़े तीन माह तक अच्छी वर्षा होगी।

(*ix*) **जेठ मास जो तपै निरासा।**
ते जानो वर्षा की आसा॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्येष्ठ मास में यदि भयंकर गर्मी पड़ती है और प्राणी को गर्मी के कारण जीवन से निराशा होने लगे तो यह समझना चाहिए कि आगे वर्षा ऋतु में बहुत अच्छी वर्षा होगी।

(*x*) **आद्रा तो बरसे नहीं मृगसिर पौन न जोय।**
तो जानै यो भड्डरी बरसा बूंद न होय॥

मृगशिरा नक्षत्र में वायु न चले और आद्रा नक्षत्र में वर्षा न हो तो भड्डरी का कहना है कि ऐसी स्थिति में आगे वर्षा अच्छी नहीं होगी और यदि आर्द्रा नक्षत्र में पानी बरसता है तो आगे उत्तम वर्षा होगी।

(*xi*) **सुदी आषाढ़ की पंचमी गरज घमघमों होय।**
तो यों जानो भड्डरी मधुर मेघा जोय॥

आषाढ शुक्ल पंचमी को बादल खूब गरजे तो वर्षा ऋतु में बहुत अच्छी वर्षा होती है।

(*xii*) **सुदी आषाढ़ नौमी दिना, बादर झीनो चंद।**
जाने भड्डरी भूमि पर मानो होइ आनंद॥

आषाढ़ शुक्ल नवमी के दिन चंद्रमा पर हल्की बादल छाये रहें तो भड्डरी के मत से पानी अच्छा बरसता है और जनमानस उत्साह से रहता है।

(*xiii*) **आषाढ़ी पुनो दिना, बादर घेरे चंद।**
जो भड्डर जोसी कहै सकल नरा आनंद॥
आषाढ़ी पूनो दिना गाज बीज बसंत।
नासै लक्षन कालका, आनंद मानें संत॥

आषाढ़ी चंद्रमा बादलों में छिप जाता है और बादल गरजते हैं तथा बिजली चमकती है तो भड्डरी ज्योतिषी के मत से आगे अच्छी वर्षा होगी और सभी जन आनंद से रहेंगे:

(*xiv*) **सावन पहली पंचमी गरभें उदवें भानः**
वरषा होगी अति घनी ऊंचो जानौ धान॥

श्रावण मास की पहली पंचमी को बादलों के गर्भ में सूर्योदय हो तो यह जानना चाहिए कि वर्षा घनी होगी और धान की पैदावार अच्छी होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xv*) **सावन पहली चौथ में जो मेघा बरसाय।**
तो भाखै यो भड्डरी, फसल सवाई जाय॥

श्रावण कृष्ण चतुर्थी को यदि पानी बरसता है तो भड्डरी के मत से फसल की पैदावार सवाई होगी।

(*xvi*) **सावन पहिली पंचमी जो धड़कावै मेघ।**
चार मास वरषे सही, यों भावे सहदेव॥

श्रावण कृष्ण पंचमी के दिन यदि पानी बरसता है तो आगे चार मास तक वर्षा अच्छी रहेगी।

(*xvii*) **कर्क के मंगल होयें भवानी।**
दैव भूली बरसेंगे पानी॥

भगवान शिवजी पार्वती से कहते हैं कि कर्क के मंगल होने पर पृथ्वी पर पानी खूब बरसेगा।

(*xviii*) **सावन मास बहै पुरवाई, बरघा बेचि बिसाहो गाई।**
सावन के मुख पच्छिमा, यह है समय कि लच्छिमा॥

यदि सावन के महीने में पूर्व की हवा चलती है तो बैल बेच कर गाय खरीद लेनी चाहिए क्योंकि आगे वर्षा कम होगी और यदि पश्चिमी हवा चलती है तो अच्छी वर्षा होगी।

(*xix*) **सावन शुक्ला सप्तमी उगत न दीखे भान।**
तब जलगि देव बरीसि है जब लगि देव उठान॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी (दिनांक इस वर्ष दो आषाढ़ होने से यह 6 अगस्त 2015 को होगी) को सूर्य निकलता नहीं है तो यह समझना चाहिए कि देव उठानी एकादशी तक धीरे-धीरे वर्षा होती रहेगी।

(*xx*) **श्रावण कृष्ण एकादशी बादर ऊगै सूर।**
तौ यों भावै भड्डरी घर-घर बाजै तूर॥

श्रावण कृष्ण एकादशी का यदि सूर्योदय के समय बादल घिरे हों तो घर-घर आनंद की बांसुरी बजती है अर्थात अच्छा पानी बरसता है।

(*xxi*) **सावन ऊखम भदौं जाड़।**
बरसा मारे ठाड कछांड़॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि सावन के महीने में गर्मी और भादों के महीने में सर्दी पड़े तो समझो कि वर्षा शीघ्र होगी क्योंकि मानो बादल कमर कस कर बरसने को तैयार हैं।

(*xxii*) **आर्द्रा भरनी रोहिनी, मघा उत्तरा तीन।**
दिन मंगल आंधी चलै तब लौ बरखा छीन॥

भरणी तथा मघा नक्षत्र मंगलवार के दिन हो इन दोनों दिनों में या एक में आंधी चलती है तो आगे वर्षा कम होगी।

(*xxiii*) **कल से पानी गरम है चिड़िया न्हावै घूर।**
अंडा लै चींटी चढ़ै, तो बरखा भरपूर॥

कल से पानी गर्म हो रहा है अर्थात गरमी पड़ रही है और चिड़िया धूल में लोट रही है तथा चीटियां अंड़े ले कर ऊपर चढ़ रही हैं तो ऐसे योग में अच्छी वर्षा होगी।

(*xxiv*) **शुक्रवार की बादली रही शनीचर छाय।**
तो यौ भाषै भड्डरी बिन वरषे नहिं जाय॥

यदि शुक्रवार के बादल शनिवार तक छाये रहें, तो भड्डरी का कहना है ऐसे बादल बिना वर्षा के नहीं जाते अर्थात पानी अच्छा बरसाता है।

(*xxv*) **सांझै धनुष बिहानै पानी।**
कहै घाघ सुन पंड़ित ज्ञानी॥

घाघ कवि कहते हैं कि हे ज्ञानी पंड़ितों सुनो। यदि संध्या के समय इंद्रधनुष दिखलाई देता है तो दूसरे दिन सुबह पानी बरसता है।

(*xxvi*) **अश्विन में संध्या समय जो बादल घन जोय।**
जो तुम अब जान लो निश्चय बरसा होय॥

अश्विन मास में सायंकाल को घने बादल हो, तो निश्चित ही वर्षा होती है।

(*xxvii*) **पड़वा वसु दशु क्वार की बादल बिजली जोय।**
तो उस ही दिन जान लो निश्चय बरसा होय॥

अश्विन, कृष्ण प्रतिपदा, अष्टमी एवं दशमी को आकाश में बादल या बिजली दिखलाई दे तो निश्चित ही उसी दिन पानी बरसेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*xxvii*) **कार्तिक बार सुमेघ दरसे। सो मेघा आषाढ़हिं बरसे॥**

कार्तिक मास में यदि मेघ बरसता है, तो अगले वर्ष आषाढ़ के माह में अच्छी वर्षा होगी।

(*xxix*) **कार्तिक सुदी एकादशी, बादल बिजुली होय।**
तो आषाढ़ में भड्डरी बरखा चोखी होय॥

कार्तिक सुदी एकादशी के दिन बादल होते हैं और बिजली चमकती है तो भड्डरी कवि का कहना है कि आषाढ़ के महीने में अच्छी वर्षा होगी।

(*xxx*) **मार्ग वदी आठें घन दरसै।**
सो मघा भरि सावन बरसै।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष अष्टमी के दिन पानी बरसता है तो मघा नक्षत्र के समान सावन के महीने में अच्छी वर्षा होगी।

(*xxxi*) **मार्ग वदी आठें घटा, बिज्जु समेतो जोइ।**
तो सावन बरसे भले, साखि सवाई होइ॥

अगहन कृष्ण अष्टमी को बादलों में बिजली चमके या बिजली युक्त बादल हों तो यह जानना चाहिए कि श्रावण मास में अच्छी वर्षा होगी और अनाज सवाया होगा।

(*xxxii*) **अगहन द्वादश मेघ अखाड़।**
अषाढ़ बरसै अछना धार॥

अगहन कृष्ण द्वादशी को यदि पानी बरसता है तो आषाढ़ के महीने में घोर वर्षा होगी।

(*xxxiii*) **उलटा बादर जो चढै विधवा खड़ी नहाय।**
घाघ कहै सुन भड्डरी वह बरसे वह जाय॥

यदि आकाश में बादल हवा के उल्टें रूख पर चढ़ रहे हो तथा विधवा स्त्री खड़ी होकर नहाती हो तो ऐसे बादल अवश्य बरसते हैं तथा ऐसी स्त्री अवश्य ही घर से भाग ज़ाती है।

(*xxxiv*) **सातै पांचै तृतीया, दसमी एकादसि में जीव।**
एहि तिथिन पर जोतह तो प्रसन्न हो सीव।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी एकादशी तिथि में जीव का वास रहता है। अतः उक्त तिथियों में खेत जोतने से शिवजी प्रसन्न होते हैं।

(*xxxv*) **बयार चले ईसाना। ऊंची खेती करो किसाना।**

यदि ईशान कोण की हवा चलती है तो खूब खेती करनी चाहिए क्योंकि वर्षा अच्छी होती है।

अकाल

(*i*) **चैत बदी एकादशी, चाले दखिणी पौन।**
बादल बिजली गाज हो तो आकाल का सौन।।

चैत्र कृष्ण एकादशी के दिन यदि दक्षिण दिशा की वायु चलती है तो गर्ज के साथ बिजली चमकती है तो इस शकुन को दुर्भिक्ष समझना चाहिए।

(*ii*) **चैत मास को दसमी खड़ी बादल बिजली होय।**
तो जानो चित मांहि यह, गर्भ गला सब जोय।।

चैत्र कृष्ण दशमीं को जल बरसे और बिजली चमकें, तो यह जानना चाहिए कि वर्षा का गर्भ गल गया है और वर्षा ऋतु में कम वर्षा होगी।

(*iii*) **चैत मास उजियारी पाख, आठे दिवस बरसा राख।**
नव बरसे जित बिजली होय, तो दिसि काल हलाहल होय।।

चैत्र शुक्ल अष्टमी के दिन आकाश धूल से आच्छादित दिखाई दे तो नवें दिन पानी बरसेगा परंतु जिधर बिजली चमके उधर दुर्भिक्ष पड़ता है।

(*iv*) **एक बूंद जो चैत में परै।**
सहस्त्र बूंद सावन में हरै।।

यदि चैत्र मास में एक भी बूंद पानी की पड़ती है तो हजार बूंद की हानि श्रावण मास में होती है।

चैत्र कृष्ण नवमी (रविवार) 16 मार्च 2015 सम्वत् 2071 को बहुत तेज वर्षा सारी रात हुई, इसलिए आने वाले श्रावण मास में वर्षा कम या नहीं होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*v*) **अषै तीज रोहिणी नहिं होई।**
पौष अमावस मूल न जोई॥
महिमाहीं खल बलहिं प्रकाषै।
कहत भड्डरी शाल विनाषै।

अक्षय तृतीया के दिन रोहिणी नक्षत्र न होने से भड्डरी के मत से यह वर्ष सन् 2016 वर्षा हेतु कमजोर रहेगा और बनी बनायी साख बिगड़ेगी तथा धरती पर लड़ाई, झगड़े एवं आतंकवाद में वृद्धि होगी।

(*vi*) **जेठ उज्यारी तीज दिन, आद्रा रिष बरसंत।**
जोसी भाखै भड्डरी दुर्भिक्ष अवशि करंत॥

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तृतीया को आद्रौ नक्षत्र में वर्षा होती है तो भड्डरी के मतानुसार यह दुर्भिक्ष के योग बनाएगी।

(*vii*) **विशाखा चित्तरा, जेठ सू कोरो जाय।**
पिछला गर्भ गल्यो कहें, बनी साख मिट जाय॥

यदि जेठ के महीने में चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्रों में वर्षा नहीं होती है तो पिछला गर्भ गला समझना चाहिए और आगे वर्षा की साख मिटेगी अर्थात कम जल बरसेगा।

(*viii*) **कृष्ण अषाढ़ी प्रतिपदा, जो अंबर गरजत।**
क्षत्री क्षत्री जूझिया, निश्चै काल पड़त॥

आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा के दिन यदि बादल गरजते हैं, तो क्षत्रियों के मध्य युद्ध होता है और पृथ्वी पर अकाल की स्थिति बनेगी।

(*ix*) **पांच मंद व दिवाकर होवे भले न चीन।**
काल हला हल देखिये दुनिया तेरह तीन॥

आषाढ़ मास में पांच शनिवार एवं रविवार होने से सभी प्रकार के खाद्यान्न महंगे होंगे तथा जनता मंहगाई से त्रस्त होगी। कहीं-कहीं सूखे की स्थिति उत्पन्न होगी।

इस वर्ष 2015 में ऐसा नहीं है।

(*x*) **सावन मास बहै पुरवाई।**
बरघा बेचि बिसाहो गाई॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सावन के मुख पच्छिमा।
यह है कि समय कि लच्छिमा॥

यदि सावन के महीने में पूर्व की हवा चलती है तो बैल बेच कर गाय खरीद लेनी चाहिए, क्योंकि आगे वर्षा कम होगी और यदि पश्चिम की हवा चलती है तो अच्छी वर्षा होगी।

(*xi*) **सावन बहे पुरवैया भादो पछिवां जोर।**
हरौ बरदवा बेचि कैं, कंत चलो कैमोर॥

श्रावण मास में पुरवैया तथा भादों में पछैया हवा चलती है तो हे कंत (प्रियतम) ऐसी स्थिति में जवान बैलों के बेच कर किसी अन्य स्थान में चलिए क्योंकि शगुन वर्षा में कमी दिखाता है।

(*xii*) **भादों बदी एकादशी, जो ना छिटकै मेघ।**
चार मास बरसै नहीं, कहैं भड्डरी देख॥

भाद्रपद कृष्ण पक्ष एकादशी को यदि बादल छिटकें नहीं, तो आगे चार मास तक वर्षा के आसार कम रहते हैं, ऐसा भड्डरी का कहना है।

(*xiii*) **जै दिन भादौ बहै पछार।**
तै दिन पूस में पड़े तुषार॥

जितने दिन भादो के महीने में पश्चिमी हवा चलती है उतने ही दिन पौष मास में पाला पड़ता है।

(*xiv*) **पूरब कै बादर पश्चिम जाय,**
पतरी पकावै मोटी खाय।
पछुवां बादर पूरब को जाय,
मोटी पकावैं पतरी खाय॥

पूर्व की ओर से बादल पश्चिम में जाएं तो समझो वर्षा होने वाली है। अत पतली रोटियां पकाते हो तो मोटी रोटी पका कर खाएं क्योंकि अच्छी वर्षा होगी और यदि बादल पश्चिम दिशा से पूर्व की ओर जाये तो इससे उलटा होगा।

❑❑❑

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुलग्न

ग्रहणों का पृथ्वी पर प्रभाव भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है। जिसके कारण प्राकृतिक प्रकोप से दुर्घटनाऐं जैसे पहाड़ों का सिसकना बाढ़, तूफान आदि से विनाशक स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ग्रहण बड़े परिवर्तनों के प्रधान कारणों में से एक है। अयोध्या 6 दिसम्बर 1992 को बाबरी मस्जिद को गिरा दिया गया था। देश भर में सभी सोचते देखते रह गए। एक पक्ष का कहना है कि यहाँ पहले राम मन्दिर था; बाबर ने उसके ऊपर ही मस्जिद बनवा दी थी। उसका इतना आतंक था कि जनता कुछ न कह सा कर सकी।

इस घटना के कारणों को ज्योतिषीय दृष्टिकोण से देखे। ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाओं के लिए ग्रहणों का मुख्य कारण व प्रभाव होता है। 1992 वर्ष को देखा तो एक वर्ष में पाँच ग्रहण जिसमें तीन सूर्य ग्रहण और दो चंद्र ग्रहण पड़े। विवरण नीचे दे रहे हैं–

तारीख	I	II 15 जून 1982	III 30 जून 1992	IV 10 दिसम्बर	V 24 दिसम्बर
ग्रहण का प्रारंभ	1-34	8-57	15-21	4-37	3-51
पूर्ण ग्रहण	2-45	10-27	17-53	5-22	6-01
ग्रहण समाप्ती	7-36	11-57	20-00	6-59	8-11
कुल समय	6 घण्टे	3 घण्टे	4-39	3-30	4-20
भारत में नहीं दिखाई दिया		नहीं दिखा	नहीं दिखा	दिखा	नहीं
मैग्नीच्यूड	0.918 सूर्यग्रहण	0.689 चंद्रग्रहण	1.060 सूर्यग्रहण	1.60 चंद्रगहण	4-20 0-843 सूर्यग्रहण

IV तथा V नवम्बर एक ही मास में 19 दिन के अंतर पर है। II तथा III भी एक ही मास में 15 दिन के अंतर पर है। एक वर्ष में पाँच ग्रहण होना और ऊपरसे एक ही पक्ष में (पूर्णिमा तथा अमावस्या) ऐसी स्थिति में व्यापक कुप्रभाव होता है। अधिक मास में पहले सूर्य ग्रहण और बाद में चन्द्र ग्रहण होना भी संभव है। ऐसी स्थिति में व्यापक कुप्रभाव होता है। अधिक मास में दो ग्रहण होने पर बड़ा उपद्रव व विनाश होता है। वृद्ध गर्ग ऋषि का कथन है–तेरहवें मास में दो ग्रहण होने पर अनेक राजाओं के मुकट जमीन पर लौ गिरते हैं (सत्ता परिवर्तन होना) उपरोक्त ग्रहणों की कुण्डली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(i)5-4-1992, 1-34 घण्टे

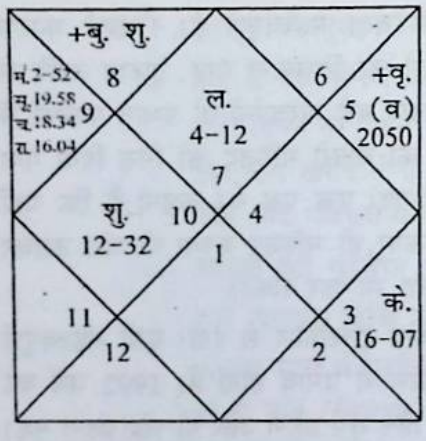

(ii)15-6-1992, 8-57 घण्टे 16-45

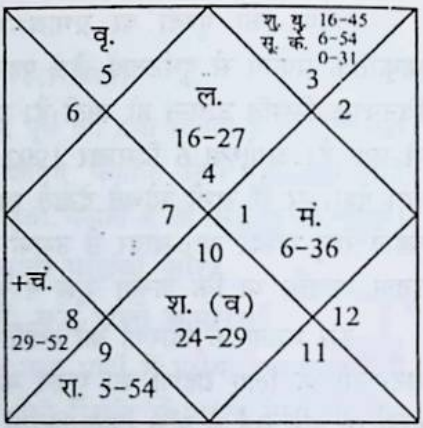

(iii)30-6-1992, 15-21 घण्टे

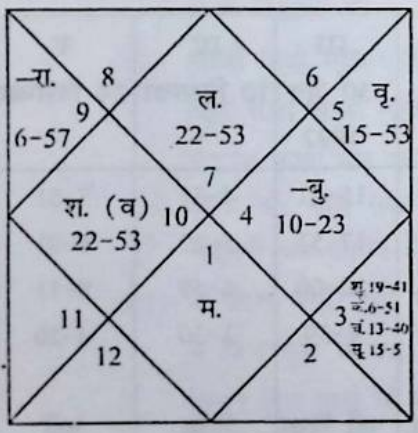

(iv)10-12-1992, 4-57

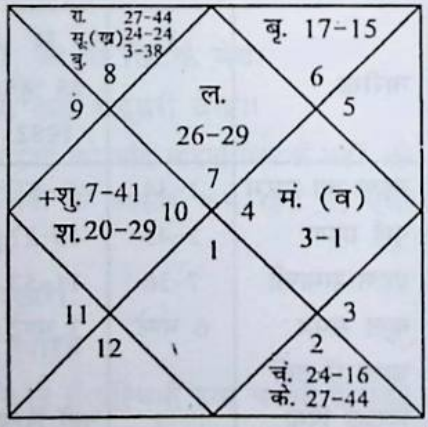

(v)29 दिसम्बर 1994, 3-51 घण्टे

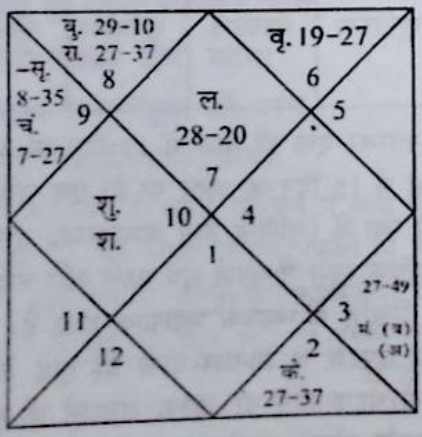

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

I. सूर्य ग्रहण – मर्मज्ञ स्थान धनु तथा मिथुन, मर्मज्ञ स्थान धनु

II. चंद्र ग्रहण – मर्मज्ञ स्थान वृश्चिक/वृष–क

III. सूर्य ग्रहण – मर्मज्ञ स्थान मिथुन एवं धनु–अ

IV. चंद्र ग्रहण – मर्मज्ञ स्थान वृष/वृश्चिक–क

V. सूर्य ग्रहण – मर्मज्ञ स्थान धनु/मिथुन–अ

नोट–पाँच ग्रहणों की कुण्डली में चार की लग्न तुला है केवल एक कर्क लग्न की है।

सूर्य विधि

सूर्य ने 15 नवम्बर 1992 को 26 घ. 35 मि. पर वृश्चिक राशि में प्रवेश किया। निम्नलिखित कुण्डली बनी

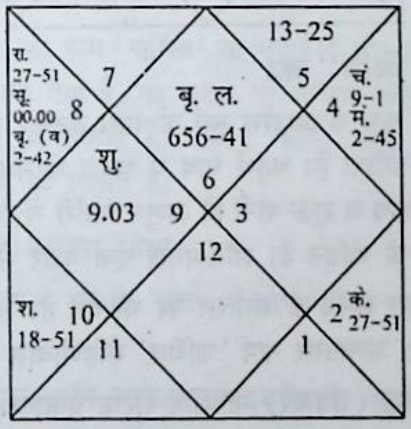

गोचर में परिवर्तन

बुध 27/28 नवम्बर को वृश्चिक से तुला में चला गया। दिसम्बर को मार्गी हुआ तथा 6 दिसम्बर को पुनः वृश्चिक में आ गया। बुध लग्नेश व दशमेश होकर यह कर रहा है।

मंगल 20 नवम्बर को नक्षत्र परिवर्तन, 28 नवम्बर को वक्री हो गया। 7 दिसम्बर को पुष्य से वापिस पुर्नवसु में चला गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6 दिसम्बर 1992 की ग्रह स्थिति

भारत की कुण्डली के लग्न में

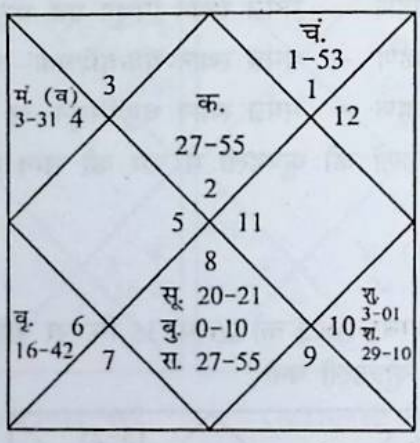

विश्लेषण "सुर्य विधि" का

लग्नेश तृतीय भाव में द्वादशेश सूर्य के साथ बैठकर नवम भाव को देख रहा है। जो केतु से पीड़ित है। चतुर्थ भाव व धनेश व नवमेश शुक्र चतुर्थ में बैठा है, जहाँ चतुर्थ भाव व शुक्र दोनों ही अशुभ कर्तरी में है। पंचम व एकादश भाव मंगल व शनि से पीड़ित है। शनि/मंगल एक दूसरे से सम सप्तम है।

थोड़ा ध्यान उस समय के संवत्सर पर भी देते हैं। सम्वत् 2049 शाकः 1914 ई. सन् 1992, सम्वतसर नाम 'पार्थिव' रोहिणीवास 'सुमुद्र'।

6 दिसम्बर 1992 (रविवार) मार्गशीर्ष शुल्क एकादशी, रेवती नक्षत्र था। योग 'व्यतिपात' करण 'वरियान' मास में षष्ठी तिथि क्षय, पाँच बुधवार तथा पाँच गुरुवार थे।

भैरव भवानी संवाद

भैरव – भैरव पूछे भाव से जगजननी पे आये।
उनंचास की साल का हाल कहो समझाये।।

भवानी – सुन भैरव भोपाल जी संवत का फल खास।
अन धन जन सम होयसी मुक्ता होसी घास।।
राज शनि मंत्री शशि करे परस्पर द्वेष।
रोग युद्ध फैले घणा करें अनेकों भेष।।
मेघमाल वर्षा करे शुल्क पक्ष आषाढ़।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाद्रव खैच दिखावसी पवन लगावे आड़।।
संवत् होसी सांतरो दरखत बेला लूम।
कोई दिशा के मायेन टीडी करसी घूमे।।
धान्याधिप कुज धान्य में करसी गोल मटोल।
करणहार इश्वर घनी उन्हे भजो दिल खोल''

'पार्थिव' नाम संवत् का फल

सह चतुर्थ युग जिसके अन्दर चित्रभानु, सुभानु, तारण, पार्थिव व व्यय यह पाँच आते हैं, इस युग का स्वामी (अधिप) अग्नि है। पहले वर्ष में शुभ, दूसरे में मध्यम, तीसरे में मारक चौथे वर्ष में उत्पादन अच्छा, पांचवें में जनता को सुख वैभव प्राप्त होता है।

इस सम्वतसर का नाम 'पार्थिव' जो चतुर्थ है और उसका फल उत्पादन के लिए अच्छा बताया गया है, यह घटना भी अधिक जनसंख्यावाला, हिन्दुओं के लिए हर्ष वाली हो सकती है। अधिप 'अग्नि' होने से कुछ कष्टदायक स्थिति देश के लिए हो सकती है।

पार्थिव संवत का अपना फल

अनाज की उपज अच्छी, सावन में खण्डवृष्टि, शसकों में विग्रह, रोग आदि का भय।

बहुसस्यानि जायन्ते खण्डवृष्टिश्च श्रावणे।
नृपाणां विग्रहो रोगः पार्थिवे वत्सेर तथा।।

भारत की स्वतंत्रता दिवस की कुंडली देखें

D/1

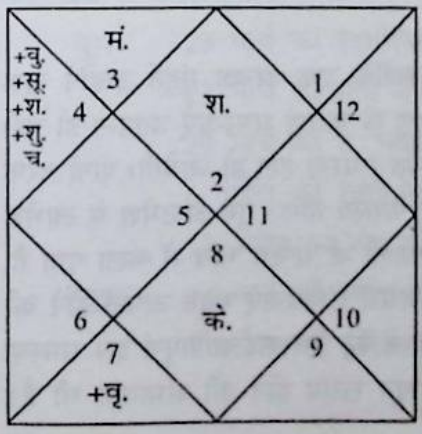

भाव कुण्डली

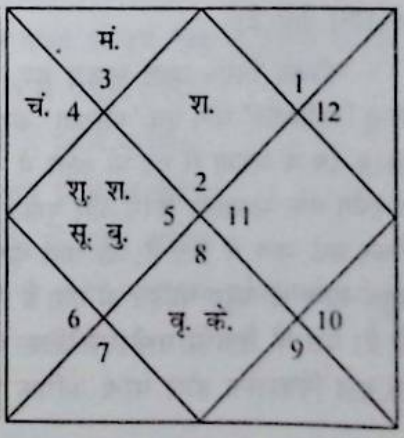

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6 दिसम्बर, 1992 को शुक्र/शुक्र/केतु/राहु/केतु की दशा प्रातः 5-14 तक थी बाद में सूक्ष्म शुक्र का ही आ गया था। उस दिन सूर्य देव सप्तम भाव में बुध व राहु के साथ गोचर कर रहे थे। कर्क 'भारत की राशि' में मंगल (व) गोचर कर रहा था, मकर भारत की कुण्डली का नवम भाव (वराहमिहिर के अनुसार भारत की राशि में) शुक्र तथा शनि गोचर कर रहे थे जिन्हें मंगल व गुरु दोनों दृष्टि दे रहे थे। चंद्रमा द्वादश भाव में तथा द्वादशेश मंगल तृतीय भाव में (दोनों एक दूसरे के घर में) गोचर कर रहे थे। भारत की कुण्डली का लग्न, तृतीय भाव, सप्तम भाव व नवम भाव पीड़ित थे। अधिकतर ग्रहों का संबंध नवम भाव से बना था।

महदशानाथ शुक्र लग्नेश व षष्ठेश है (तृतीय में बैठकर नवम को देख रहा है, भाव कुण्डली में चतुर्थ में है), केतु सप्तम भाव में मारक बना है और भाव कुण्डली में अष्टमेश व लाभेश तथा धर्म का कारक गुरु सप्तम भाव में दूसरे आध्यात्मिक ग्रह 'धर्म की पताका' केतु के साथ बैठा है। राहु लग्न में बैठा है (गोचर से सप्तम भाव मारक स्थान से गोचर कर रहा है।)

ग्रहणों से वृष/वृश्चिक का राहु/केतु से पीड़ित होना एक भूकम्प के होने की संभावना दिखाता है। मिथुन व धनु भी मर्मज्ञ स्थान शनि व मंगल से पीड़ित है। जिस-जिस राशि में ग्रहण पड़े यदि वहाँ मंगल/शनि में से कोई गोचर करे और दूसरा उसको दृष्टि दे तो भूकम्प जैसी स्थिति बनती है। यहाँ तो मंगल (वक्री) धनु को पीड़ित कर रहा है। तुला लग्न में तीन ग्रहण पड़े, तुला पर शनि व मंगल दोनों की दृष्टि एक ग्रहण कर्क लग्न का है, जहाँ मंगल गोचर कर रहा है और शनि मकर से दृष्टि दे रहा है।

यह घटना होने का अंदेशा ग्रह दे रहे थे परन्तु सरकार ने ध्यान नहीं दिया। धर्म स्थान नवम भाव (मकर राशि) पीड़ित थी। दशा नाथ ही लग्नेश है जो नवम से गोचर कर रहे हैं और परम मित्र (कुण्डली के नवमेश) शनि के साथ बैठा है।

मस्जिद गिराने वाले सफल हुए क्योंकि एक अच्छा मूहूर्त उन्होंने चुना परन्तु 'व्यतिपात' योग एवं 'परियात' करण के कारण समस्याऐं उतपन्न हो गई। 2018-19 में चंद्रमा में गुरु के अंतर में यह समस्या हल हो जायेगी। दोनों तरफ के लोग एक समझौता करेंगे और पुखता फैसला होगा। गुरु अष्टमेश व लाभेश होकर छठे भाव में बैठा है, जो भाव कुण्डली के सप्तम भाव में चला गया है, चतुर्थ भाव भी बहुत पीड़ित हो गया है जिससे संभावनाऐं बहुत उत्पात होने की भी है। देश के हित में सभी राजनैतिक दलों को मिलकर शांतिपूर्ण इस समस्या का हल निकालना होगा वरना अधिक खून खराब होने की संभावना भी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्यविधि

समय 5-19 प्रातः 15-3-2015

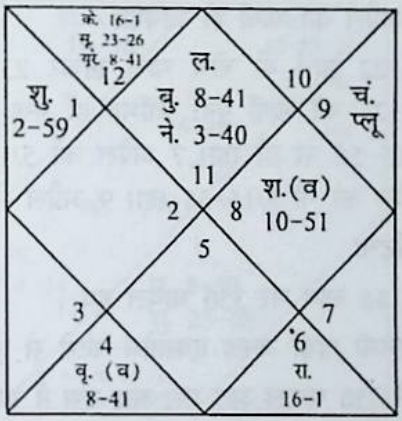

लग्नेश शनि व दशम भावस्था है जिसे वृहस्पति धनेश व लाभेश होकर देख रहा है। दशमेश मंगल धन स्थान में सप्तमेश सूर्य के साथ बैठा है। षष्ठेश व लाभेश का भी स्थान परिवर्तन है, जो करों वृद्धि दिखाता है। इस मास में सरकार को आर्थिक नीतियों के कारण चेतावनियों का सामना करना पड़ेगा। मीन राशि, मिथुन राशि पर मंगल की दृष्टि होने से, कन्या राशि राहु व मंगल की दृष्टि से, तुला राशि मंगल की दृष्टि होने से, वृश्चिक राशि शनि से, धनु राशि व चंद्रमा वक्री शनि से, सूर्य मंगल के साथ होने से पीड़ित हैं। मेष राशि शुक्र वक्री शनि से, मकर राशि एवं कर्क राशि व गुरु वक्री शनि से पीड़ित हैं। ज़रा उस समय के आसपास गोचर के बदलाव को देखते हैं।

मंगल 12 फरवरी को मीन में प्रवेश कर गया, 16/17 फरवरी को उ. भाद्रा में प्रवेश किया। 6 मार्च को रेवती नक्षत्र में प्रवेश किया। 23 मार्च को मेष राशि में प्रवेश किया।

बुध 23 मार्च को शतभिंषा नक्षत्र से पूर्व भाद्रा में प्रवेश करेगा।
23 मार्च को मीन राशि में प्रवेश करेगा।
29 मार्च को उ. भाद्रा में प्रवेश करेगा।
6 अप्रैल को रेवती नक्षत्र में प्रवेश करेगा।
13 अप्रैल को मेष राशि में प्रवेश करेगा।

शुक्र 24 मार्च को अश्विनी से भरणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा।
3 अप्रैल को कृत्तिका नक्षत्र में प्रवेश करेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7 अप्रैल को वृष राशि में प्रवेश करेगा।

15 अप्रैल को रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा।

गुरु 8 अप्रैल को मार्गी हो जायेगा।

राहु 21-22 मार्च के बीच मार्गी होकर 23 के स्तंभित होकर 25-25 को मार्गी पुनः.स्तंभित हो गया तथा 6 अप्रैल तक 5/15-56 पर ही रहा। 7 अप्रैल को 5/15-55 हुआ और 8 अप्रैल को भी 5/15-55 रहा। 9 अप्रैल से वक्री होकर चला।

घटनाऐं I रेल दुर्घटना

20-3-2015 36 लोग मरे 350 घायल हुए

देहरादून-वाराणसी गाड़ी जनता एक्सप्रेस पटरी से उतरी

II 142 मरे 350 घायल आइ एस आइ एस ने साना राजधानी 'यमन' की/दो मस्जिदों में बम्ब फेंके गये। अनजाने युद्ध विमानों ने 'अदन' के दक्षणीय शहर पर हमला किया दूसरे दिन एंटी एयरक्राफ्ट गन से उन विमानों पर पलटवार किया'।

III दो बालक एक कार चला रहे थे, उनके द्वारा एक लड़की दशवीं कक्षा की कुचल दी गई।

IV 6 मरे जब आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर में पुलिस स्टेशन पर हमला किया। सैनिकों की वेशभूषा में राजबाग, कथुआ जिले के पुलिस स्टेशन में घुसे। सी आर पी फ के जवान, एक जनता का आदमी गोली से मारे गए। 11 लोग घायल हुए।

13-2-2015 बैंगलोर, कर्नाटका में अरनाकुलम में 'इन्टरसिटी पटरी से उतर गई जिसमें 12 लोग मरे, 30 घायल हुए।

3 मार्च 2015 मंगलवार को कश्मीर में वर्षा शुरु हुई जो दो दिन तक चली जिसके कारण झेलम नदी में पानी की सतह ऊँची रह गई, परन्तु दक्षिण कश्मीर में बाढ़ की सतह 21 फीट से कम रह कर 11.70 फीट रही, राम मुंशी बाग में 19 फीट की बाढ़ की सतह से नीचे 15.35 फीट तक रही। 17 लोग मारे गए। सरकारी संस्थाओं व सेना ने सुरक्षा की सभी तैयारियाँ कर ली थीं। वर्षा के कारण चाडोरा क्षेत्र में 15 लोग मारे गए। एक व्यक्ति पृथ्वी के खिसकने से दब गया, क्योंकि मकान पृथ्वी में धँस गया था। घटना के दिन की कुण्डली नीचे दे रहे हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

31 मार्च 2015 समय 22 घण्टे स्थान श्रीनगर।

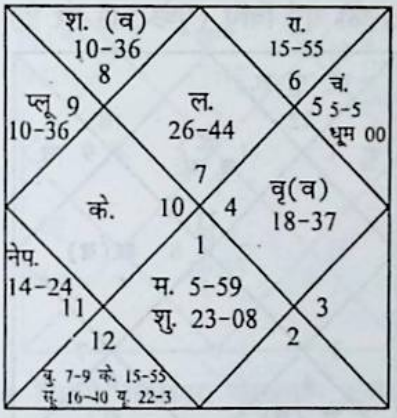

ग्रह स्थिति	नक्षत्र	नक्षत्र संख्या	नाड़ि	स्वामी
सूर्य	रेवती	28	दहन	मंगल
चंद्रमा	मघा	10	अमृत	चंद्रमा
मंगल	अश्विनी	01	पवन	सूर्य
बुध	उ. भाद्रा	27	सौम्य	गुरु
गुरु	आश्लेषा	09	अमृत	चंद्रमा
शुक्र	भरणी	02	प्रचण्ड	शनि
शनि	अनुराधा	17	प्रचण्ड	शनि
राहू	हस्त	13	सौम्य	गुरु
केतु	उ. भाद्रा	27	सौम्य	गुरु
लग्न	विशाखा	16	प्रचण्ड	शनि

दहन (1) पवन (1) प्रचण्ड (3) अमृता (2) सौम्य (3) सप्तनाड़ि चक्र में शुष्क नाड़ीयों में 5 ग्रह है, वर्षा वाली अमृता में दो तथा सौम्य नाड़ि में तीन ग्रह है। इसलिए अतिवृष्टि परन्तु नुकसान कम। जल तत्त्व राशियाँ सभी पीड़ित है। लग्न व लग्नेश पीड़ित हैं, चंद्रमा तथा सूर्य भी पीड़ित है। लग्नेश शुक्र भी पीड़ित है। चंद्रमा से बारहवें घर में गुरु का गोचर भी ठीक नहीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बृहस्पति–कश्मीर

15 मार्च 2015 की सूर्य विधि (पृष्ठ 343 पर है)

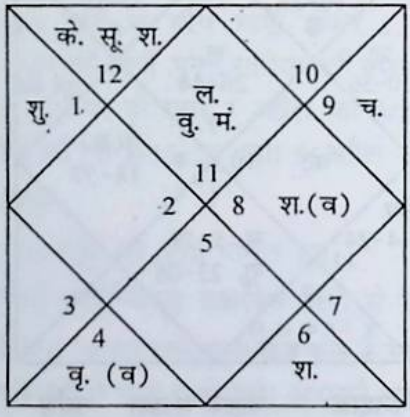

चंद्रमा सिंह राशि में आ गया (अमृत नाड़ि में), बुध कुंभ से मीन राशि में आ गया (रेवती नक्षत्र में); 13 अप्रैल को मेष में आ जायेगा। सूर्य तथा केतु से युति, मंगल मीन से मेष में आ गया और शुक्र को पीड़ित कर दिया, लग्न व लग्नेश दोनों पीड़ित हैं। मीन राशि, बुध का पीड़ित होना यह घटना होने की संभावना दिखाता है।

25-1-2014 दिल्ली–डिबरुगढ़ राजधानी पटरी से उतर गई छपड़ा, बिहार के पास 4 मरे, 5 घायल।

2-4-2015 (बृहस्पतिवार) **केन्या** के गरीस्सा शहर में **'केन्या विश्वविद्यालय'** पर इस्लामिस्ट संघटन ''अलशदाबाब' ने हमला बोला जिसमें 70 लोग मारे गये और सैंकड़ों लोग घायल हो गये, पुलिस तथा सिपाहियों ले **'गरीसा'** कालेड़ा को चारों तरफ से घेर लिया (जो स्थान सोगाली सीमा से 200 कि. मी. पर है। आपस में काफी गोला बारी हुई, उन्होंने वहाँ पर बहुत सारे क्रिस्चयन समुदाय के लोगों को बंधक बना लिया है और मुस्लिम समुदाय के लोगों को छोड़ दिया।

नोट–2.23 पृष्ठ 63 पर देखें जहाँ 17/9/2013 को **'केन्या'** के नैरोबी पर आक्रमण हुआ था। उसकी पूरी व्याख्या विस्तारपूर्वक की गई है। नीचे पुनः 2 अप्रैल 2015 को हुए आक्रमण के दिन की कुण्डली दी जा रही है। वही योग यहाँ पर भी लागू हो रहे हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

26-5-2014 दिल्ली, गोरखपुर, गोरखधाम, ऐक्स्प्रेस एक मालगाड़ी में जा घुसी, बस्ती, यू. पी. में 17 मरे, 60 घायल हो गए।

4-5-2014 19 लोग मर गए, 89 घायल हुए। जब दिन जंक्शन सावन्तवादी सवारी गाड़ी पटरी से उतर गई। 19 लोग मरे और 89 घायल हुए।

23/24 अक्टूर 2014 को 13-11 पर सूर्य ग्रहण एड़ा कार्तिक अमावस्या

23 ता. को प्रातः 5-30 बजे दिन का गोचर

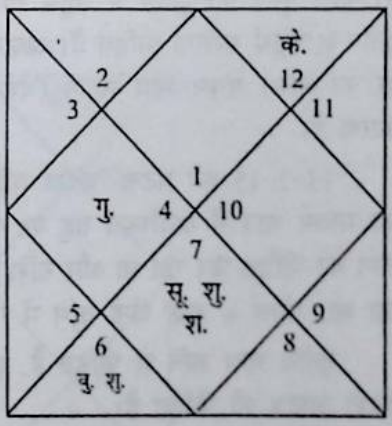

प्रारंभ 25-07

मध्य 27-14

समाप्त 29-21-40

कुल समय 4 घण्टे-14 मिनट

2014-15 में 5 ग्रहण पड़े थे।

इस ग्रहण से प्रभावित राशियाँ–कन्या, तुला, मीन, धनु, मीन, मिथुन।

भारत में दृश्य नहीं, साइबेरिया, उ. अमेरिका, कैनेडा, मैक्सिको सुदूर पूर्व रूस में दिखाई देगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. 20-3-2015 को सूर्य ग्रहण

प्रारंभ	13-11
परम ग्रास	15-16
खगास समाप्त	15-51
ग्रहण समाप्त	17-20
कुल समय	4-09

प्रातः 5-30 का गोचर अमावस्या

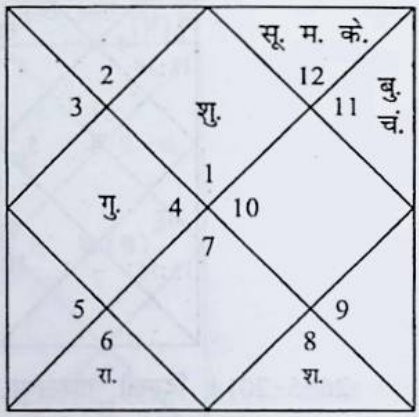

प्रभावित राशियाँ मीन, कन्या, मिथुन, धनु, इनसे प्रतिनिधित्व क्षेत्रों में प्राकृतिक प्रकोप आदि हो सकते हैं। यह ग्रहण ग्रीनलैण्ड, आइसलैण्ड, यूरोप, उ. अफ्रीका तथा उत्तर पश्चिमी एशिया में दिखाई देगा।

इसका प्रभाव तुरंत उस ही दिन हुआ देखें पीछे रेल दुर्घटना I, II, III, IV पिछले पृष्ठ पर।

सूर्यविधि में भी मीन, मिथुन, कन्या, तुला मंगल से, वृश्चिक, मकर, वृष, सिंह राशियाँ पीड़ित हैं। पृथ्वी तत्व राशियाँ वृष, कन्या व मकर पीड़ित हैं। काल पुरुष की तृतीय व चतुर्थ राशियाँ तथा सूर्यविधि की मेष तथा वृष तृतीय व चतुर्थ राशियाँ पीड़ित हैं। अष्टम भाव भी बुरी तरह पीड़ित है। (मृत्यु दर का भाव) पंचम भाव संतान (देश की जनता) का भाव पीड़ित इसका कारण है।

13-2-15 की घटना–चंद्रमा वृश्चिक में स्वतंत्रता दिवस की कुण्डली का सप्तम भाव में अवस्थित राहु पर गोचर कर रहा था। कुंभ से मंगल वृष लग्न को पीड़ित कर रहा था और राशि कर्क (चंद्रमा से) अष्टम में गोचर कर रहा था। मंगल + शुक्र दोनों कुंभ में गोचर कर रहे थे।

तृतीय भाव शनि से पीड़ित है, शुक्र पीड़ित है, पंचम भाव पीड़ित है। द्वादश अष्टम भी पीड़ित है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

25-1-2014

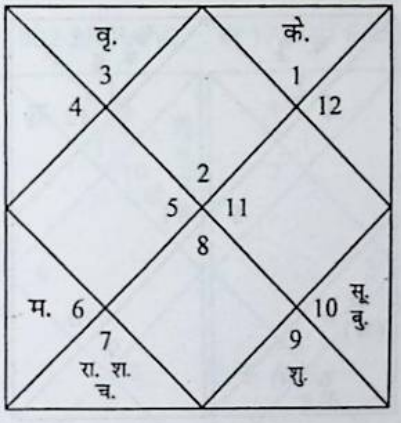

28 मई–अमावस्या प्रात: 5-30 का गोचर

पांच ग्रहणों का प्रभाव भी है। तृतीय भाव, शुक्र (कारक), अष्टम भाव (मृत्युदर) भी पीड़ित है। मंगल व शनि द्विर्द्वादश राहु व शनि केन्द्र में लग्न पीड़ित।

चंद्रमा मेष में केतू के उपर गोचर कर रहा था और गोचर के मंगल से तथा शनि से पीड़ित था। पक्ष बलहीन था।

20 मई अमावस्या प्रात: 5.30 का गोचर

26-5-2014

पंचम व अष्टम भाव पीड़ित तृतीय भाव कर्क पीड़ित। वहाँ कुण्डली में बैठे सभी ग्रह शनि की दृष्टि से पीड़ित हैं। शनि व मंगल द्विर्द्वादश राहु तथा शनि एक साथ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4-5-2014

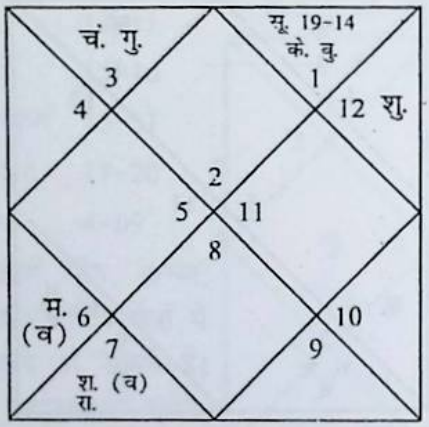

आत 23 मार्च को मैं यह लिख रहा हूँ जबकि इस सूर्यविधि का समय 14/15 अप्रैल तक का है। राहु की अजब चाल 25 मार्च से 31 अप्रैल तक तथा आज से मंगल भी मेष में प्रवेश करेगा और शनि से तथा राहु से षडास्टक हो जायेगा। 6 से 8 अप्रैल के मध्य कोई विशेष घटना वर्तमान समय में सूर्य/शुक्र/गुरु (सभी परस्पर शत्रु) की दशा चल रही है। इस समय में रेल, सड़क, जल दुर्घटनाऐं व नारियों पर आघात सीमाओं पर सैनिक गतिविधियाँ होने की संभावनाऐं बन रही हैं। सरकार को सावधानी करनी होगी। किसी प्रांत की सरकार गिर जाए यह भी हो सकता है।

General Elections in India

I (Constituted on 17-4-1952)

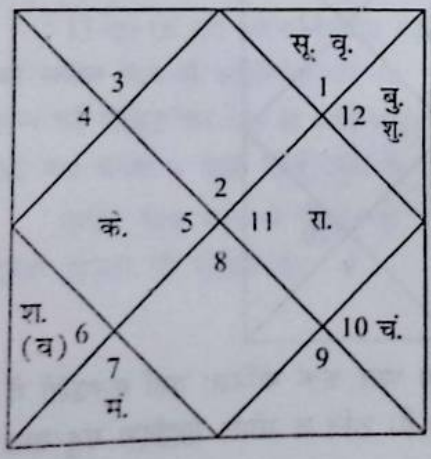

II 14-2- to 14/3

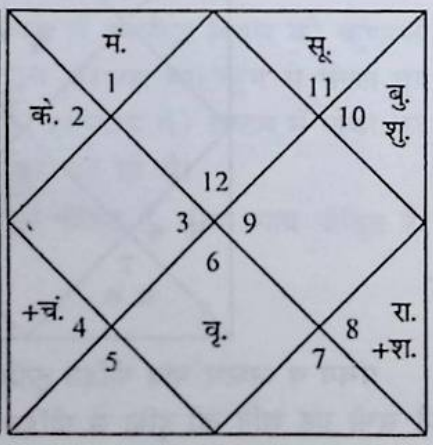

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SA/ME/SA

III 19 to 25 Feb 1962 SA/RA/VE

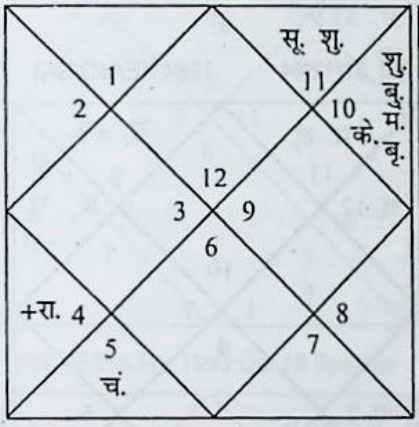

SA/Sun/SA

IV 17 to 21 Feb 1967 ME/ME/RA

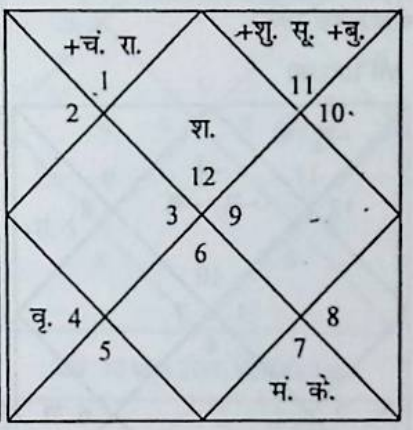

V March 1971/(27 States) NE/VE/SA

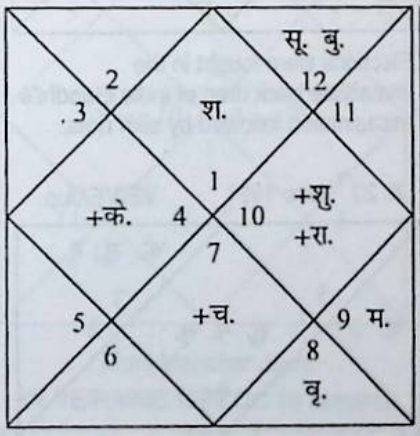

VI 24/3 to 22/8/1979 1977 ME/RA/VE

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Note: Ruling party divided to the electorates to seek new mandate a year ahead, hence the elections 1980

Janta Party 292.2
Congress 151.3
CPM 21.4

VII 18/1/80

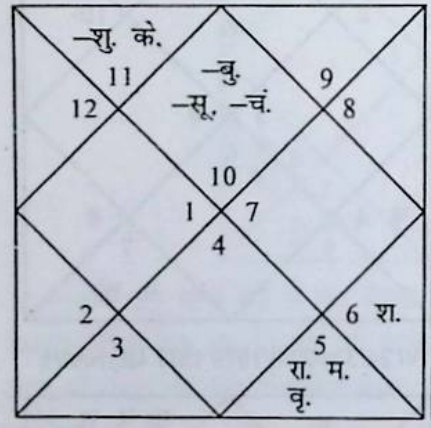

Janta/Alliance came into parliament in power after the elections to the VI Lok Sabha (Speaker Balram Jakher)

VII 31/12/84 1984 KE/MO/SAT

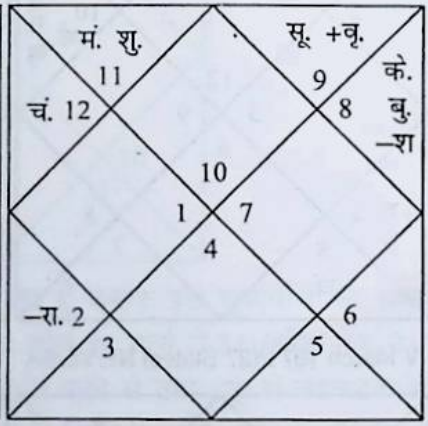

Elections were fought in the immediate back drop of india Gandhi's assasination followed by sikh riots.

IX May 1989 KE/ME/RA

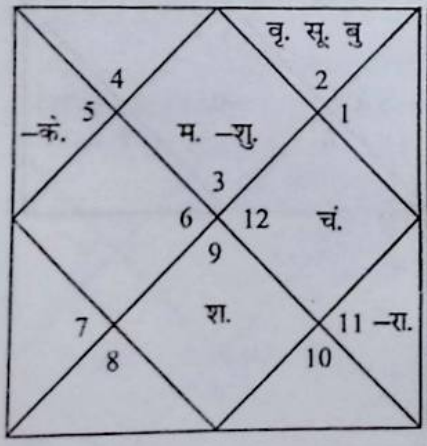

X 20th June 1991 VE/VE/Jup.

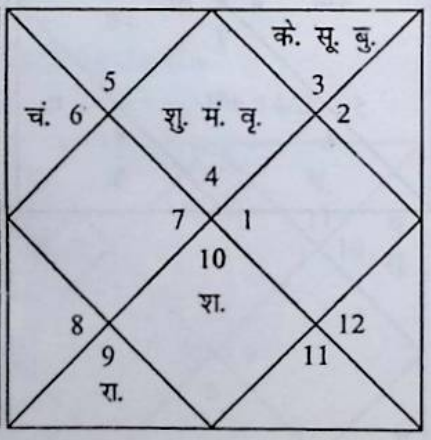

Born is SA/SA/ME/KE VE

Republic 26-1-1949

SA/SA/RA/ME/VE

Gandhi Assasination

30-1-1949

SA/SA/RA/ME/MA

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

XI April 1996 VE/MA/ME

XII 10 March 1998 VE/RA/ME

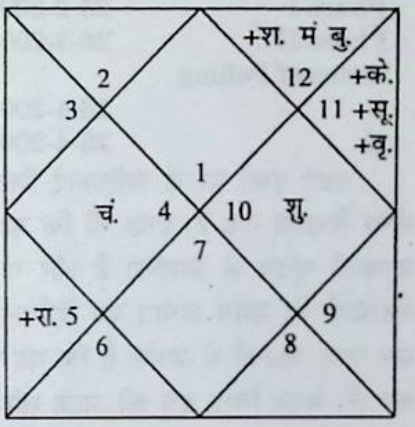

XIII VE/RA/ME 1999 Oct 10 Speaker

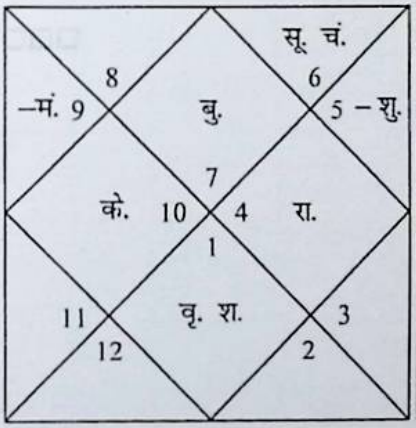

XIV 18 May 2005 VE/SA/Jup.

Murli Manohar Joshi

XV VE/RA/ME 1999 Oct 10 Speaker

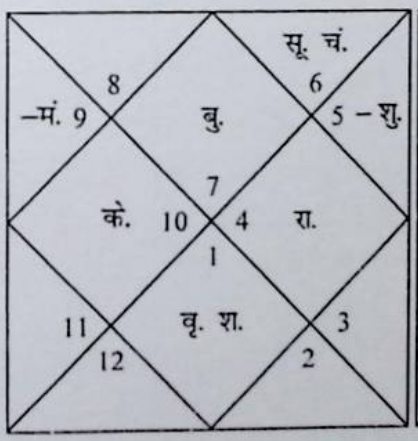

XVI 7th April 2014 SU/ME/SA

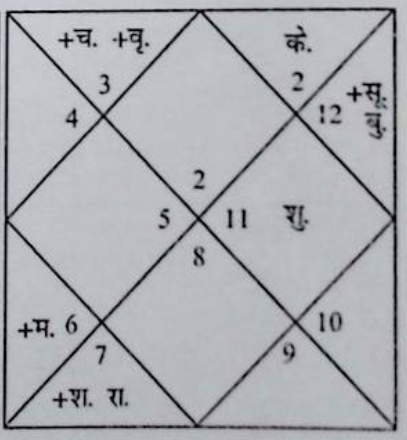

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Date of Notification	19-2-2008	VE/ME/SA/SA/RA
Phase I	23-2-2009	VE/KE/Jup/SA/Mo
Phase II	28-3-2009	VE/KE/Jup/ME/RA
Dates of Polling		
I	16-4-2009	VE/KE/Jup/VE/KE
II	23-4-2009	VE/KE/Jup/Moon/Sun

आगे पृष्ठों पर दो तालिकाऐं जिनमें पीछे हुए 16 चुनावों के समय का गोचर दिखाया गया है। इच्छा थी कि यह देखें कि दोनों कुण्डलियों में कौन सी कुण्डली चुनाव से प्रभावित है और गोचर में कौन-कौन से ग्रह इसके लिए उत्तरदायी हैं। समय अभाव एवं शिथिल स्वास्थ्य के कारण मैं यह अभी नहीं कर पाया, पाठकों से प्रार्थना है कि वह इसका लाभ उठाऐं और आगे का कार्य कर लें। समय मिला प्रभु की आज्ञा रही तो मैं अगले संस्करण से पहले इसको कर लूँगा।

❑❑❑

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तालिका : स्वतंत्रता दिवस की कुण्डली में चुनावों के दिन का गोचर

राशि → चुनाव विवरण ↓	2 लग्न प्रथम	3 द्वितीय भाव	4 तृतीय भाव	5 चतुर्थ भाव	6 पंचम भाव
कुण्डली →	रा.	मं.	बु. सू. श. चं. शु. प्लू.	—	—
I चुनाव 1952	—	—	—	के.	श(व)
II 14/2/1957	के.	—	चं.	—	वृ.
III 19/2/1962	—	—	रा.	चं.	—
IV 17/2/1967	—	—	वृ.	—	—
V 3/1971	—	—	के.	—	—
VI 24/3/1977	वृ.	—	श.	—	—
VII 18/1/1980	—	—	—	रा. मं.	श.
VIII 31/12/1984	रा.	—	—	—	—
IX 5/1989	वृ. सू. बु.	मं. शु.	—	के.	—
X 20/6/1991	—	के. सू. बू.	शु. वृ. मं.	—	चं.
XI 4/1996	चं. शु.	—	—	—	रा.
XII 10/3/1998	—	—	चं.	रा.	—
XIII 10/10/1999	—	—	रा.	शु.	सू. चं.
XIV 18/5/2005	सू. शु.	श.	—	चं.	वृ. के.
XV 19/2/2009	—	—	के.	श.	—
XVI 7/4/2014	—	चं. वृ.	—	—	मं.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7 षष्ठ भाव	8 सप्तम भाव	9 अष्टम भाव	10 नवम भाव	11 दशम भाव	12 एकादश भाव	1 द्वादश भाव	दशादि
+ वृ.	के.	—	—	—	—	—	
मं.	—	—	चं.	रा.	बु. शु.	सू. वृ.	श./बु./श.
—	रा. श.	—	बु. शु.	सू.	—	मं.	श./सू./के.
—	—	—	श. के. बु. मं. वृ.	सू. शु.	—	—	श./रा./शु.
मं. के.	—	—	—	शू. सू. बु.	शु.	चं. रा.	बु./वृ./रा.
चं.	वृ.	मं.	शु. रा.	—	सू. बु.	श.	बु./शु./रा.
रा.	—	—	—	मं.	सू. बु. शु.	चं. के.	बु./रा./शु.
—	—	—	बु. सू. चं.	शु. के.	—	—	बु./श./बु.
—	के. बु. श.	सू. वृ.	—	मं. शु.	चं.	—	के./चं./श.
—	—	श.	—	रा.	चं.	—	के./बु./रा.
—	—	रा.	श.	—	—	—	शु./शु./बु.
—	—	वृ.	—	—	के. मं. श.	सू. बु.	शु./मं./बु.
—	—	—	शु.	के. सू. वृ.	श. मं. बु.	—	शु./रा./बु.
बु.	—	मं.	के.	—	—	वृ. श.	शु./रा./शु.
—	—	—	—	मं.	रा.	बु.	शु./रा./वृ.
—	—	चं.	वृ. मं. शु. रा.	सू.	शु.	—	शु./के./रा.
श. रा.	—	—	—	शु.	सू. बु.	के.	सू./बु./शु.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तालिका : गणतंत्र दिवस की कुण्डली चुनावों के दिन का गोचर

राशि चुनाव	12 लग्न प्रथम	1 द्वितीय भाव	2 तृतीय भाव	3 चतुर्थ भाव	4 पंचम भाव	5 षष्ठ भाव
कुण्डली	–	रा.	–	–	–	श.
I चुनाव 1952	बु. शु.	सू. वृ.	—	—	—	के.
II 14/2/1957	—	मं.	के.	—	चं.	—
III 19/2/1962	—	—	—	—	रा.	चं.
IV 17/2/1967	शु.	चं. रा.	—	—	वृ.	—
V 3/1971	सू. बु.	श.	—	—	के.	—
VI 24/3/1977	सू. बु. शु.	चं. के.	वृ.	—	श.	—
VII 18/1/1980	—	—	—	—	—	रा. मं. वृ.
VIII 31/12/1984	चं.	—	रा.	—	—	—
IX 5/1989	चं.	—	वृ. सू. बु.	मं. शु.	—	के.
X 20/6/1991	—	—	—	के. सू. बु.	शु. मं. वृ.	—
XI 4/1996	के. मं. श.	सू. बु.	चं. शु.	—	—	—
XII 10/3/1998	रा. मं. बु.	—	—	—	च.	रा.
XIII 10/10/1999	—	वृ. श.	—	—	रा.	शु.
XIV 18/5/2005	रा.	बु.	सू. शु.	श.	—	चं.
XV 19/2/2009	शु.	—	—	—	के.	रा.
XVI 7/4/2014	सू. बु.	के.	—	च. वृ.	—	—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6 सप्तम भाव	7 अष्टम भाव	8 नवम भाव	9 दशम भाव	10 एकादश भाव	11 द्वादश भाव	दशादि
मं. के.	–	–	बु.	शु. सू. बृ.	–	
श.(व)	मं.	—	—	चं.	रा.	शु./श./रा.
वृ.	—	रा. श.	—	बु. शु.	सू.	शु./मं./के.
—	—	—	—	श. बु. मं. वृ. के.	सू. शु.	शु./वृ./शु.
—	मं. के.	—	—	—	शु. सू. बु.	शु./बु./शु.
—	च.	वृ.	म.	शु. रा.	—	सू./चं./शु.
—	रा.	—	—	—	मं.	चं./चं./के./बु.
श.	—	—	—	बु. शु. चं.	शु. के.	चं./वृ./के./वृ.
–	—	के. बु. श.	सू. वृ.	—	मं. शु.	चं./शु./रा/वृ.
—	—	—	श.	—	रा.	मं./श./शु.
च.	—	—	रा.	श.	—	मं./शु./शु./मं.
रा.	—	—	वृ.	—	—	रा./वृ./वृ./श.
—	—	—	—	शु.	के. सू. वृ.	रा./वृ./मं./रा.
सू. चं.	बु.	—	मं.	के.	—	रा./श./शु./मं.
के. वृ.	—	—	—	—	मं.	रा./शु./शु./श.
—	—	—	चं.	वृ. मं. बु. रा.	सू.	रा./चं./मं./शु.
मं.	श. रा.	—	—	—	शु.	वृ./श./बु./रा./बु.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय-सूची

मर्मज्ञ स्थान, 4
भोगांश, 2
पृथ्वी उच्च पर, 3
पृथ्वी नीच पर, 3
पूर्ण ग्रहण, 5
राहु-केतु, 1
सूर्य ग्रहण, 2, 3, 5, 6
दक्षिणी पात, 4
क्रान्वित्त, 3
चंद्र ग्रहण, 2
चन्द्रमा का पथ, 2
अंशछादन, 5
अमावस्या, 2
आरोही पात, 1
आच्छादन, 2
अवरोही पात, 1
अनक्रमिक ग्रहण, 5
ग्रहण के प्रभाव, 4
ग्रस्तास्त, 3
ग्रस्तोदित, 3
बादलों के फटजाने, 46
बड़े भूकम्पों की सूची, 44
बुद्ध की प्रतिमा पर बम वर्षा, 41
बुध + शुक्र दोनों वायु तत्व राशि, 48
बुध का मिथुन में प्रवेश, 48
काल स्वरूप भूकम्प, 39
मर्मज्ञ स्थान, 43
दिग्गज, 9
दिल्ली के भूकम्पों का इतिहास, 45
विनाश के कारण, 47
विनाशक शक्तियाँ, 13
भूकम्प, 40
भूकम्प के ज्योतिषीय योग, 41
पृथ्वी के खिसकने, 46
पीड़ित राशियां, 43
पीड़ित ग्रहों द्वारा निर्धारित क्षेत्र, 48
पुरातन मत, 9
प्राकृतिक विनाश, 46
श्रीलंका में तूफान, 39
शनिवार की संक्राति, 35
शुक्र का आर्द्रा प्रवेश, 48
सुनामी प्राकृतिक प्रकोप, 42
दुर्भाग्यपूर्ण घटना, 46
चंद्रमा तथा सूर्य दोनों मंगल से पीड़ित, 25
तूफान दक्षिणी तमिलनाडु, 39
नक्षत्रों के तत्त्व, 16
नबी मौहम्मद के जन्म स्थान, 41
ग्रहों के योगों का प्रभाव, 48
धूप वाला मौसम, 107

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीजारोपण, 93
बाढ़ादि, 107
बादल, 98
कम वर्षा, 97ए 98
महान व्यक्ति का निधन, 106
मौसम नम, 107
मेघों का गर्भाधान, 92
हिमपात, 94
भयानक हवा, 107
पवन बहे, 97
पुरवा लावे पुरवाई, 93
प्रसूति, 93, 94
प्रचण्ड, 94
प्रश्न शास्त्र, 109
शनि तथा मंगल की युति, 107
शीत लहर, 107
शुष्क नाड़ियों, 94
शुष्क/जलीय राशियाँ, 97
शुक्र व बुध का अस्त, 104
सप्तनाड़ी चक्र, 102
साधारण वर्षा, 105
सौम्य नाड़ी, 93
सूर्योच्च, 107
सूर्य की युति अन्य ग्रहों के साथ, 100
सूर्य की शक्ति का विस्फोट, 102
सूर्य की अन्य ग्रहों से युति का प्रभाव, 100
सूर्य पर धब्बों, 102
सूर्य संक्रांति, 98
सूर्य व चन्द्रमा के नक्षत्र, 97
उलकापात, 96
छत्र भंग, 106
छड़ीनुमा-राजा, 102
वायु परीक्षरण, 94
वर्षा में रूकावट, 106
वर्षा होगी, 97, 98
वर्षा ऋतु का काल, 97
वर्षा नहीं होगी, 98
वक्री ग्रह वर्षा में रूकावट, 106
चंद्रमा तथा शुक्र जलीय वर्गों, 104
तापमान में परिवर्तन, 107
तूफान, 102
तूफानी वर्षा, 107
ज्वारभाटा, 102
नक्षत्रों के लिंग, 96
अकाल, 107
अति वृष्टि, 93
अति गर्मी, 107
अतिवृष्टि, 96, 103
अनावृष्टि, 106
अनावृष्टि, 95, 96, 97, 106
गर्भाधान, 93, 94
गर्भ की जाँच, 94
गर्भ का ठहरना, 96
धृत आदि में तेजी, 163
धातु, 119, 155
धान्य महंगे, 144
धान्य में तेजी, 164
धान्य भाव मंदे, 168
धान्य सस्ते होंगे, 143
धान्य नाशक, 162
धान्यों में मंदी, 165
धान्यों में तेजी, 167
धान्यनाश, 173

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धूलिद्वार, 168
रूख ऊँचा, 151
रूई, 156
रूई में मंदी, 165
रूई में पहले तेजी फिर मंदी, 164
युद्धाधि, 114
झगड़ों का भय, 141
घड़ियाँ, 153
घी, 153
खाद्य पदार्थ, 153
वृष्टि की संभावना, 165
हिंसा, 169
बाजार ऊँचा, 144
बाजार का रुख, 126, 169
बाजार में गिरावट, 145
बाजार भाव, 120
बाजार भाव बहुत ऊँचे, 146
बुध, 160
बुध. शनि, 160
बुध का पश्चिम में उदय, 140
बुध का पश्चिम में अस्त, 140
बुध के राशियों तथा नक्षत्रों में भ्रमण, 136
बुध पूर्व में अस्त, 140
बुध-शुक्र, 160
बुध, गुरु तथा मंगल, 133
कम्पनियों के शेयर्स, 158
कपास, 152
कपूर आदि सस्ते, 173
काँच, 152
कार्तिक पूर्णिमा, 128
कार्तिक अमावस्या, 129
काफी, 153
कोयला, 153
कागज, 153
काली मिर्च, 153
क्लॉथ मिल्स, 153
मंदी, 162, 164
मंदी कारक, 166
मंदीकारक, 166
मंगल, 116
मंगल + बुध, 159
मंगल + हर्शल, 159
मंगल + प्लूटो, 160
मंगल + राहु, 159
मंगल + शनि, 159
मंगल + शुक्र, 159
मंगल + नेपच्यून, 159
मंगल + गुरु, 159
मंगल तथा बुध सूर्य, 133
महायुद्ध, 162
महामारी, 162
माघ पूर्णिमा, 128
मशीनरी, 156
धान्यनाश, 163
मास के अंदर तेजी, 162
मोती, 156
मोटर, 153
मछली, 156
मेघद्वार, 168
मन्दी, 162
मन्दी का रुख, 138
मनुष्यगण, 169
मूंगफली, 156

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल, 119
मूल्यों में मंदी, 140
मूल्यों में गिरावट, 139, 143, 146
मूल्यों में भारी, 151
मूल्यों में वृद्धि, 145, 148, 150
मूल्यों में तेजी, 140, 142, 147
मूल्यों में अचानक गिरावट, 142, 144
बिजली का, 155
बिनौले में तेजी, 165
किराना, 153
किराने की वस्तु में तेजी, 164
मिट्टी का तेल, 155
फिल्म उद्योग, 155
स्थिति भी डांवाडोल, 171
विद्वतजन को पीड़ा, 162
विशेष घटा, 173
विग्रह उपद्रव, 141
तिथि, 120
तिथि का योग, 129
तिल का तेल, 156
तिलहन, 155
गिलट, 153
हरयाली अमावस्या, 129
हल्दी, 156
भारी गिरावट, 146
भाद्र पूर्णिमा, 128
भाव पहले गिरेंगे, 140
भाव ऊँचे, 143, 146, 147, 167
भाव ऊँचे रहें, 139
भाव बढेंगे, 144
भाव मंदे, 150, 167
भाव में मंदी, 139
भाव में भारी गिरावट, 145
भाव में तेजी, 138, 151
भाव मन्दे, 141
भाव गिरें, 173
भाव तेज, 150
भावों में मन्दी, 151
भावों में विशेष तेजी, 143
भावों में गिरावट, 138, 141, 144, 151
भावों में उतार चढ़ाव, 152
भावों में तेजी, 142, 143, 144, 146, 148, 151, 152, 162
भावों में तेजी।, 150
भूकंप की संभावना, 164
भूकम्प, 144, 163
भूकम्प योग, 114
भूगर्भ की वस्तुओं में तेजी, 158
पर्याप्त वर्षा, 142
पृथ्वी जल से पूर्ण, 147
पक्ष में शुक्रोदयास्त का प्रभाव, 169
पीतल आदि में तेजी, 164
पशुओं की क्षति, 162
पशुओं में महामारी, 164
पशुओं में रोग, 142
पाट आदि में तेजी, 166
फाल्गुन पूर्णिमा, 129
फसल बहुत अच्छी, 145
फसलें नष्ट, 143
ऋतु परिवर्तन, 120
पैट्रोलियम, 155
प्राकृतिक दुर्घटना, 114
प्राकृतिक दुर्घटनाएँ, 120
राक्षसगण, 169

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राहू सूर्य, 132
रोग से दुखी, 144
रोग वृद्धि, 162
राज विद्रोह, 163
राज विग्रह, 163, 165
राजद्वार, 168
राजविग्रह, 162, 169
राजा को पीड़ा, 164
राजनीतिक क्लेश, 144
राजनीतिक उथलपुथल, 162
राजनीतिक गतिविधियाँ, 120
शनि + हर्शल, 161
शनि + प्लूटो, 161
शनि + राहु, 161
शनि + नेपच्यून, 161
शनि का उदय/अस्त, 171
शनि तथा मंगल सूर्य, 133
शहद, 156
शांतिकारक, 169
शाक भाजी में मंदी, 164
शोक भय, 167
शुक्र + हर्शल, 161
शुक्र + प्लूटो, 161
शुक्र + राहु, 161
शुक्र + शनि, 161
शुक्र + नेपच्यून, 161
शुक्र का राशियों और नक्षत्रों में भ्रमण, 140
शुक्र के विभिन्न राशियों में वक्री-मार्गी, 170
शुक्र के विभिन्न नक्षत्रों में उदय, 167
शुक्रोदयास्त, 168
शतभिषा में शुक्रोदय, 169
शेयर, 156
शेयर ऊँचे, 159
संक्रांति, 114
संगमरमर, 156
सीमेन्ट, 156
सीप, 156
सभी धान्य सस्ते, 142
सभी में तेजी, 167
सीसा, 156
सप्ताह का वार, 126
सप्ताह के वार, 116
सप्तनाड़ी, 116
सर्पभय, 163
सरकार को पीड़ा, 162
सरसों, 156
सांसारिक घटनाएं, 126
सामान, 155
सामान्य वृष्टि, 162
सोना, 156
स्वर्णद्वार, 168
सुभिक्ष, 141, 147, 163, 166
सुभिक्ष कारक, 164, 165
सुभिक्षं, 138
सुगंधित पदार्थ, 156
सूर्य, 116
सूर्य का द्वादश राशि, 126
सूर्य का द्वादश राशियों में संक्रमण, 119
सूर्य का संक्रमण, 126
सूर्य के शनि व बुध के साथ, 134
सूर्य के वृष, 134

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य से शुक्र आगे, 134
सूर्य से आगे बुध, 132
सूर्य से आगे मंगल, 132
सूर्य क्रूर ग्रहों के मध्य, 134
सूर्य, बुध तथा केतु, 134
सूर्य, बुध तथा शुक्र, 133
सूर्य, शनि तथा मंगल, 133
सूर्य, शानि तथा बुध, 133
उत्पादन में कमी, 171
उत्पादन अधिक, 166
उतार का रुख, 139
उतार चढ़ाव, 140, 173
उतार चढ़ाव रहे, 139
कृषि की क्षति, 171
कृषि संबंधी यंत्र, 153
कृषि उत्पादन, 116
दाम बढ़े, 146
दाम बहुत बढेंगे, 131
दामों में उतार चढ़ाव, 171
दुर्घटना की संभावना, 140
दुर्भिक्ष, 162, 163
देश में युद्ध, 162
देवगण, 169
व्यापार में तेजी, 166
व्यापारी वर्ग में घबराहट, 164
वृष्टि, 163
वृष्टि कारक, 164
वायरलेस, 156
वायुयान, 156
वार, 120
वर्षा बहुत अच्छी, 141, 143
वर्षा की कमी, 141, 144, 148
वर्षा का अभाव, 166, 167
वर्षा कारक, 168
वर्षा में कमी, 143
वर्षा ऋतु, 114
वर्षा अधिक, 163
वर्षाकारक, 168
वस्त्र में मंदी, 165
वस्तु में तेजी, 166
वस्तुओं में मंदी, 164
वस्तुओं में तेजी, 163, 164
वस्तुओं एवं ग्रहों का संबंध, 152
वक्री बुध का उदय, 140
वैशाख संक्रांति, 120
चंद्रमा, 116
चंद्रमा + बुध, 159
चंद्रमा + मंगल, 159
चमड़ा, 154
चमड़े में तेजी, 165
चीनी, 154
चीनादि में भूकम्प, 173
चाय, 154
चाँदी, 154
चांदी में घटा बढ़ी, 162
चांदी में घटा-बढ़ी, 164
चांदी में तेजी, 173
चांदी सस्ती, 147
चावल, 154
चैत्र पूर्णिमा, 128
चना, 154
चना आदि में तेजी, 162
तम्बाकू, 155
तांबा, 155

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेज, 164
तेजी, 159, 162, 163, 167
तेजी बनी, 146
तेजी का रुख, 139, 147, 166, 168
तेजी का रूख, 145, 151, 167
तेजी कारक, 164, 166
तेजी के बाद मंदी, 173
तेजी होकर मंदी, 162
तेजी आई, 146
तेजी/मंदी दोनों का रूख, 171
तेजीकारक, 166
तेल, 155
तूफान, 163
ऐरण्डी के भाव बढें, 147
ज्येष्ठ संक्रांति, 121
जीव, 119
जायदाद पृथ्वी, 155
जौ, 155
जड़ी बूटियाँ, 155
ज्वार, 155
ज्वारभाटा, 163
जनहानि, 162, 164
जनता को भय, 162
जनता में महामारी, 171
जनता में भय, 163
जनता निरोगी, 145
जनता भयभीत, 165
जनता पीड़ित, 166
जनता सुखी, 164
जनता दुखी, 163
जूते, 155
जल-विप्लव, 173
नक्षत्र, 120
नमक, 155
नव ग्रह तथा पदार्थ, 157
अकस्मात तेजी, 158
अमावस्या का बाजार भाव, 129
अश्विन पूर्णिमा, 128
अति वृष्टि, 145, 164, 165, 166
अतिवृष्टि, 142, 163
अरण्ड, 152
आकाशीय लक्षण तथा बाजार का रुख, 130
आभूषण, 154
अशांति, 163
औषधि, 152
अवकहड़ाचक्र, 119
अच्छी वर्षा, 142
अच्छी वर्षा हो, 138
अनावृष्टि, 131, 162, 163, 164, 166, 168
अनाज महंगा, 130, 163
अनाज में तेजी, 171
अन्न, 152
अन्न नाश, 162
अन्न-धान्य की हानि, 165
अन्नादि में तेजी, 162
अल्प वर्षा, 138
अल्पवृष्टि, 164
अलसी में तेजी, 163, 165, 166
अलसी, ऊन, 152
गणों का प्रभाव, 169
गुरु + हर्शल, 161
गुरु + प्लूटो, 161

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरु + राहु, 161
गुरु + शनि, 160
गुरु + शुक्र, 160
गुरु सूर्य से आगे, 132
गुड़, 153
गेहूँ, 153
ग्रह स्थिति का प्रभाव, 121
ग्रह और उससे प्रतिनिधित्व वस्तुएं, 116
ग्रहों के परस्पर संबंध, 158
ग्रहों के प्रभाव के रूख, 135
एल्यूमिनियम, 152
लाभ होने की संभावना, 131
लोहा, 156
रुपये के मूल्य में गिरावट, 182
धर्म को लेकर झगड़े, 259
धनिष्ठा, 229
धार्मिक, 181, 184
धार्मिक गतिविधियाँ, 235
यमल शास्त्र, 227
युद्ध में विजय, 246
झड़पें, 259
झुग्गी में जला, 256
झगड़े, 257
घटना के ज्योतिषीय योग, 208
घटनास्थल का ज्ञान, 186
घटनाओं की कुण्डलि, 221
घटनाओं की समीक्षा, 270
'कन्या' नाम राशि, 176
क्षेत्र/राज्य, 227
द्वादश भाव व उनके कार्यक्षेत्र, 177
इंदिरा गांधी की हत्या, 218
इराक पर हमला, 246
इनसैट आइ. बी., 217
ईशान, 229
बम विस्फोट, 181, 182
बम फटा, 214
बहादुरशास्त्री की मृत्यु, 217
बाढ, 208
बालारिष्ट, 216
बस का अपहरण, 217
बस कलहेल नदी में गिर गई, 258
बस दुर्घटना, 258
बवण्डर, 260, 261
बलात्कार, 256
ब्लू स्टार आपरेशन, 217
ब्राउन ड्वार्फ, 264
कार्यक्षेत्र में रूकावटें, 263
कार्गिल युद्ध, 245
कारगिल युद्ध, 246
कालपुरुष, 185
एक्सप्रेस की टक्कर, 245
कुंडली का विश्लेषण, 234
कैबिनेट में परिवर्तन, 232
केदार नाथ मन्दिर में पूजा, 190
कर्नाटक एक्सप्रैस की दुर्घटना, 241
कष्टप्रद रहा चुनाव, 230
कूर्म चक्र, 225
कूर्म चक्र का प्रयोग, 236
मघा, 227
मृगशिरा, 227
मंगल, 242
मंगल का गोचर, 230
मकाऊ, 250

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महात्मा गांधी का निधन, 216
एमरजैन्सी, 217
मुख्यमंत्री सरदार बेअन्त सिंह, 225
मुस्लिम राष्ट्रों में अशांति, 233
मुहूर्त की कुण्डली, 190
मूल्यों में वृद्धि, 255
त्रिशूल मिसाइल, 249
द्विर्द्वादश, 242
स्त्रियों पर जुल्म, 213
सिक्खों की हत्याऐं, 218
दिल्ली सरकार बदली, 230
दिल्ली-लाहौर की बस, 237
विद्यमान योगों का विचार, 215
विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु, 232
विशाखा, 228
विस्फोट, 185
विद्रोह, 217
विक्रमी संवत्सर, 174
विक्रमी सम्वत्सर, 180
विनाशक, 262
विनाशक आंधी, 261
विश्लेषण, 256, 264, 269
तिथि क्षय, 231
तिथि के महत्त्व, 231
जिले पानी में डूब, 262
नियमों की पुष्टि, 214
नियमों का निर्धारण, 239
गिरजाघरों में आक्रमण, 214
गिरजाघरों पर कारबमों, 214
गिनीस बुक, 263
हस्त, 228
हस्तांतरिक, 250
हड़ताल, 182, 185, 224
हड़तालें, 253
हवाई हमले, 237
हत्याऐं, 219
हैड क्वार्टर, 238
हैदराबाद पर कब्जा, 217
भयानक दुर्घटना, 209
भयानक आग, 211
भविष्यवाणी के लिए कुछ विशेष आधार, 180
भरणी, 229
भारी वर्षा, 260
भारत की राशियाँ, 180
भारत के भूकम्पीय क्षेत्र, 236
भारत तथा चीन का सम्मान, 249
भोपाल में गैस, 218
भूकंप, 272
भूकम्प, 182, 185, 236
भूकम्पादि, 207
भूस्खलन, 271
पंडित नेहरू की मृत्यु, 216
पश्चिम, 228
पाकिस्तान पर विजय, 217
पशुहानि, 203
पुनर्वसु, 227
पूर्वभाद्रा, 229
प्रथम स्पेसमैन, 217
प्राकृतिक प्रकोप, 232, 242, 259
प्राकृतिक दुर्घटनाएं, 246
रंगीन वर्षा, 260
रक्तपात, 208
श्रीलंका में दुर्घटना, 250

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि मकर, 176
श्रावण, 229
रोहिणी, 227
राजप्रमुख की हत्या, 222
राजशोक, 253
राजनीतिक घटनाएं, 230
राजनेता की मृत्यु, 222
राष्ट्रपति शासन, 218, 262
राष्ट्राध्यक्ष की मृत्यु, 252
रैंट कंट्रोल एक्ट, 224
रेल दुर्घटना, 219, 221, 240, 267
रेल दुर्घटनाएं, 244
रेल दुर्घटनाऐं, 212
रेलवे क्रॉसिंग के पास टक्कर, 247
शनि, 242
शनि व राहु षडाष्टक, 242
शनि तथा मंगल की युति, 230
शनि तथा मंगल की परस्पर स्थिति, 230
शनि-मंगल समसप्तक, 242
शहर, 227
षडाष्टक स्थिति, 231
शुक्र अतिचारी, 233
शतभिषा, 229
शताब्दी के पटरी से उतरने, 243
शनैश्चरी अमावस्या, 208
संघटा चक्र, 221
संहिता शास्त्र, 177
समीपस्थ स्थिति, 231
समसप्तम स्थिति, 231
सीमा पर परेशानी, 258
सीमाओं पर टकराव, 246
सरकार का गिरन, 242
सरकार में परिवर्तन, 219
सरकार शपथ ग्रहण, 224
सरदारनी जागीर कौर, 235
साइक्लॉन, 217
सारांश, 259
सड़क दुर्घटनाऐं, 183
स्वतंत्र भारत की कुण्डली, 176
स्वतंत्रता दिवस, 254, 258, 263
स्वतंत्रता दिवस की कुंडली, 223
242, 245, 270
स्वतन्त्रता दिवस की कुंडली, 240
सर्वतोभद्रचक्र, 225
सत्य साई बाबा, 235
सेना ने खदेड़ा, 217
सत्ता परिवर्तन, 222
सूर्य के कर्क प्रवेश, 254
सूर्य विधि, 180, 213, 218, 223, 224, 234, 240, 243, 248, 250, 251, 254, 256
सूर्य प्रवेश, 268
सूर्यविधि, 241, 258
उत्तर फाल्गुनी, 228
उत्तरभाद्रा, 229
दक्षिण, 228
दक्षिणायन, 207
कृत्तिका, 227
दहेज के कारण मृत्यु/हत्या, 184
दुर्घटना, 182, 203, 205, 241, 242
दुर्घटनाओं के ज्योतिषीय योग, 208
दुर्भिक्ष, 207
दुष्प्रभाव, 207
वायव्य, 229

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायु दुर्घटना, 233, 240
वायु दुर्घटना के योग, 238
वायु दुर्घटनाएं, 246
वायुयान गिरना, 253
वायुयान दुर्घटना, 238
वायुयान दुर्घटनाएं, 250
वार से योग, 239
वक्री ग्रह, 233
वन्देमातरम के गाने पर जातीय झगड़े, 257
चौकियों पर कब्जा, 246
चक्रवात की घटनाऐं, 260
तथागत अवतार, 263
तूफान, 260
ज्योतिषियों के सामने चुनौती, 264
ज्योतिषीय योग, 222
ज्योतिषीय कारण, 224
ज्योतिषीय विश्लेषण, 210, 215, 267
ज्येष्ठा, 228
जनधन हानि, 208
जगत कुंडली, 180
जगत लग्न, 176
नक्षत्र-आश्लेषा, 227
नाभि, 227
नव संवत्सर, 174
नवांश/नक्षत्र आदि का परिवर्तन, 220
नैऋत्य कोण, 228
ट्रक का गिरना, 262
अकाल तख्त की मरम्मत, 218
अमावस्या, 208
अश्विनी, 229
अतिवृष्टि, 262
अतिचारी, 233
अग्नि काण्ड, 184
अग्नि कांड, 206
अग्नि II परीक्षण, 239
अग्निकांड, 210, 232
अग्निकांड 2, 209
अपहरण, 252
अफगानिस्तान पर हमला, 246
आँधी, 260
आइ.एन.एस. द्रोणाचार्य, 249
आकाश टैस्ट फायर्ड, 264
आर्द्रा, 227
आतंकवाद, 184, 185, 208, 241
आतंकवादी, 208
आतंकवादी गतिविधि, 233
आत्मघाती बम के हमले, 248
आत्मदाह, 184, 186
आग, 212, 213
अन्वेषण/व्याख्या, 205
गणतंत्र दिवस, 180, 254
गणतंत्र दिवस की कुण्डलियाँ, 214
गणतंत्र दिवस की कुंडली, 218
गोचर में ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन, 269
गुरु अतिचारी, 233
गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, 235
गुजरात का भूकम्प, 246
ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन, 240
ग्रहों की तिथि, 239
ग्रहों का गोचर, 203
ग्रहों के योग, 239
लाल रंग की वर्षा, 263

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लूटमार, 257
युग स्वामी, 282
घाघ कहै सुन भड्डीर, 320
बाजार भावों पर प्रभाव, 303
एकादश भाव, 318
कैबिनेट, 319
कन्या, 318
मंत्रिमंडल बनना, 317
मकर, 318
मीन, 318
मुख्यमंत्री का चयन होना, 317
बिहार में राष्ट्रपति शासन, 312
मिथुन, 318
भालिक, 275
पुष्कर, 301, 302
प्रथम वृष, 318
प्रांतीय राजसभा, 319
राष्ट्रपति का अध्यादेश, 319
राष्ट्रपति शासन, 308
राष्ट्रपति शासन के कारणों पर चर्चा, 315
शुद्ध संवत्सर, 280
संवत्सरों के नाम, 281
संवर्तक, 302
समकर्ता, 302
सप्तम भाव, 318
स्वतंत्रता दिवस, 317
स्वतन्त्रता दिवस की कुण्डली, 309
सूर्य विधि, 310
सूर्यविधि के मास, 309
द्रोण, 301
वरुण, 302
वायु स्तंभ, 301
चुनाव होना, 317
चतुर्मेघ, 301
चतुर्थ सिंह, 318
तृन स्तंभ, 301
तम, 302
जल स्तंभ, 301
नवमेघ, 302
अधिक संवत्सर, 280
अवर्तक, 301, 302
अन्न स्तंभ, 301
गणतंत्र दिवस, 317
गणतंत्र दिवस की कुण्डली, 310
गोचर परिवर्तन, 315
गुरु का गोचर, 303, 318
लोकसभा, 319

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7 षष्ठ भाव	8 सप्तम भाव	9 अष्टम भाव	10 नवम भाव	11 दशम भाव	12 एकादश भाव	1 द्वादश भाव	दशादि
+ वृ.	के.	—	—	—	—	—	
मं.	—	—	चं.	रा.	बु. शु.	सू. वृ.	श./बु./श.
—	रा. श.	—	बु. शु.	सू.	—	मं.	श./सू./के.
—	—	—	श. के. बु. मं. वृ.	सू. शु.	—	—	श./रा./शु.
मं. के.	—	—	—	शू. सू. बु.	शु.	चं. रा.	बु./वृ./रा.
चं.	वृ.	मं.	शु. रा.	—	सू. बु.	श.	बु./शु./रा.
रा.	—	—	—	मं.	सू. बु. शु.	चं. के.	बु./रा./शु.
—	—	—	बु. सू. चं.	शु. के.	—	—	बु./श./बु.
—	के. बु. श.	सू. वृ.	—	मं. शु.	चं.	—	के./चं./श.
—	—	श.	—	रा.	चं.	—	के./बु./रा.
—	—	रा.	श.	—	—	—	शु./शु./बु.
—	—	वृ.	—	—	के. मं. श.	सू. बु.	शु./मं./बु.
—	—	—	शु.	के. सू. वृ.	श. मं. बु.	—	शु./रा./बु.
बु.	—	मं.	के.	—	—	वृ. श.	शु./रा./शु.
—	—	—	—	मं.	रा.	बु.	शु./श./वृ.
—	—	चं.	वृ. मं. शु. रा.	सू.	शु.	—	शु./के./रा.
श. रा.	—	—	—	शु.	सू. बु.	के.	सू./बु./शु.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तालिका : गणतंत्र दिवस की कुण्डली चुनावों के दिन का गोचर

राशि चुनाव	12 लग्न प्रथम	1 द्वितीय भाव	2 तृतीय भाव	3 चतुर्थ भाव	4 पंचम भाव	5 षष्ठ भाव
कुण्डली	–	रा.	–	–	–	श.
I चुनाव 1952	बु. शु.	सू. वृ.	—	—	—	के.
II 14/2/1957	—	मं.	के.	—	चं.	—
III 19/2/1962	—	—	—	—	रा.	चं.
IV 17/2/1967	शु.	चं. रा.	—	—	वृ.	—
V 3/1971	सू. बु.	श.	—	—	के.	—
VI 24/3/1977	सू. बु. शु.	चं. के.	वृ.	—	श.	—
VII 18/1/1980	—	—	—	—	—	रा. मं. वृ.
VIII 31/12/1984	चं.	—	रा.	—	—	—
IX 5/1989	चं.	—	वृ. सू. बु.	मं. शु.	—	के.
X 20/6/1991	—	—	—	के. सू. बु.	शु. मं. वृ.	—
XI 4/1996	के. मं. श.	सू. बु.	चं. शु.	—	—	—
XII 10/3/1998	रा. मं. बु.	—	—	—	च.	रा.
XIII 10/10/1999	—	वृ. श.	—	—	रा.	शु.
XIV 18/5/2005	रा.	बु.	सू. शु.	श.	—	चं.
XV 19/2/2009	शु.	—	—	—	के.	रा.
XVI 7/4/2014	सू. बु.	के.	—	च. वृ.	—	—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6 सप्तम भाव	7 अष्टम भाव	8 नवम भाव	9 दशम भाव	10 एकादश भाव	11 द्वादश भाव	दशादि
मं. के.	—	—	बु.	शु. सू. बृ.	—	
श.(व)	मं.	—	—	चं.	रा.	शु./श./रा.
वृ.	—	रा. श.	—	बु. शु.	सू.	शु./मं./के.
—	—	—	—	श. बु. मं. वृ. के.	सू. शु.	शु./वृ./शु.
—	मं. के.	—	—	—	शु. सू. बु.	शु./बु./शु.
—	च.	वृ.	म.	शु. रा.	—	सू./चं./शु.
—	रा.	—	—	—	मं.	चं./चं./के./बु.
श.	—	—	—	बु. शु. चं.	शु. के.	चं./वृ./के./वृ.
—	—	के. बु. श.	सू. वृ.	—	मं. शु.	चं./शु./रा/वृ.
—	—	—	श.	—	रा.	मं./श./शु.
च.	—	—	रा.	श.	—	मं./शु./शु./मं.
रा.	—	—	वृ.	—	—	रा./वृ./वृ./श.
—	—	—	—	शु.	के. सू. वृ.	रा./वृ./मं./रा.
सू. चं.	बु.	—	मं.	के.	—	रा./श./शु./मं.
के. वृ.	—	—	—	—	मं.	रा./शु./शु./श.
—	—	—	चं.	वृ. मं. बु. रा.	सू.	रा./चं./मं./शु.
मं.	श. रा.	—	—	—	शु.	वृ./रा./बु./रा./बु.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय-सूची

मर्मज्ञ स्थान, 4
भोगांश, 2
पृथ्वी उच्च पर, 3
पृथ्वी नीच पर, 3
पूर्ण ग्रहण, 5
राहु-केतु, 1
सूर्य ग्रहण, 2, 3, 5, 6
दक्षिणी पात, 4
क्रान्वित्त, 3
चंद्र ग्रहण, 2
चन्द्रमा का पथ, 2
अंशछादन, 5
अमावस्या, 2
आरोही पात, 1
आच्छादन, 2
अवरोही पात, 1
अनक्रमिक ग्रहण, 5
ग्रहण के प्रभाव, 4
ग्रस्तास्त, 3
ग्रस्तोदित, 3
बादलों के फटजाने, 46
बड़े भूकम्पों की सूची, 44
बुद्ध की प्रतिमा पर बम वर्षा, 41
बुध + शुक्र दोनों वायु तत्व राशि, 48
बुध का मिथुन में प्रवेश, 48
काल स्वरूप भूकम्प, 39
मर्मज्ञ स्थान, 43
दिग्गज, 9
दिल्ली के भूकम्पों का इतिहास, 45
विनाश के कारण, 47
विनाशक शक्तियाँ, 13
भूकम्प, 40
भूकम्प के ज्योतिषीय योग, 41
पृथ्वी के खिसकने, 46
पीड़ित राशियां, 43
पीड़ित ग्रहों द्वारा निर्धारित क्षेत्र, 48
पुरातन मत, 9
प्राकृतिक विनाश, 46
श्रीलंका में तूफान, 39
शनिवार की संक्राति, 35
शुक्र का आर्द्रा प्रवेश, 48
सुनामी प्राकृतिक प्रकोप, 42
दुर्भाग्यपूर्ण घटना, 46
चंद्रमा तथा सूर्य दोनों मंगल से पीड़ित, 25
तूफान दक्षिणी तमिलनाडु, 39
नक्षत्रों के तत्त्व, 16
नबी मौहम्मद के जन्म स्थान, 41
ग्रहों के योगों का प्रभाव, 48
धूप वाला मौसम, 107

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीजारोपण, 93
बाढ़ादि, 107
बादल, 98
कम वर्षा, 97ए 98
महान व्यक्ति का निधन, 106
मौसम नम, 107
मेघों का गर्भाधान, 92
हिमपात, 94
भयानक हवा, 107
पवन बहे, 97
पुरवा लावे पुरवाई, 93
प्रसूति, 93, 94
प्रचण्ड, 94
प्रश्न शास्त्र, 109
शनि तथा मंगल की युति, 107
शीत लहर, 107
शुष्क नाड़ियों, 94
शुष्क/जलीय राशियाँ, 97
शुक्र व बुध का अस्त, 104
सप्तनाड़ी चक्र, 102
साधारण वर्षा, 105
सौम्य नाड़ी, 93
सूर्योच्च, 107
सूर्य की युति अन्य ग्रहों के साथ, 100
सूर्य की शक्ति का विस्फोट, 102
सूर्य की अन्य ग्रहों से युति का प्रभाव, 100
सूर्य पर धब्बों, 102
सूर्य संक्रांति, 98
सूर्य व चन्द्रमा के नक्षत्र, 97
उलकापात, 96
छत्र भंग, 106
छड़ीनुमा-राजा, 102
वायु परीक्षरण, 94
वर्षा में रूकावट, 106
वर्षा होगी, 97, 98
वर्षा ऋतु का काल, 97
वर्षा नहीं होगी, 98
वक्री ग्रह वर्षा में रूकावट, 106
चंद्रमा तथा शुक्र जलीय वर्गों, 104
तापमान में परिवर्तन, 107
तूफान, 102
तूफानी वर्षा, 107
ज्वारभाटा, 102
नक्षत्रों के लिंग, 96
अकाल, 107
अति वृष्टि, 93
अति गर्मी, 107
अतिवृष्टि, 96, 103
अनावृष्ि, 106
अनावृष्टि, 95, 96, 97, 106
गर्भाधान, 93, 94
गर्भ की जाँच, 94
गर्भ का ठहरना, 96
धृत आदि में तेजी, 163
धातु, 119, 155
धान्य महंगे, 144
धान्य में तेजी, 164
धान्य भाव मंदे, 168
धान्य सस्ते होंगे, 143
धान्य नाशक, 162
धान्यों में मंदी, 165
धान्यों में तेजी, 167
धान्यनाश, 173

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धूलिद्वार, 168
रूख ऊँचा, 151
रूई, 156
रूई में मंदी, 165
रूई में पहले तेजी फिर मंदी, 164
युद्धाधि, 114
झगड़ों का भय, 141
घड़ियाँ, 153
घी, 153
खाद्य पदार्थ, 153
वृष्टि की संभावना, 165
हिंसा, 169
बाजार ऊँचा, 144
बाजार का रुख, 126, 169
बाजार में गिरावट, 145
बाजार भाव, 120
बाजार भाव बहुत ऊँचे, 146
बुध, 160
बुध. शनि, 160
बुध का पश्चिम में उदय, 140
बुध का पश्चिम में अस्त, 140
बुध के राशियों तथा नक्षत्रों में भ्रमण, 136
बुध पूर्व में अस्त, 140
बुध-शुक्र, 160
बुध, गुरु तथा मंगल, 133
कम्पनियों के शेयर्स, 158
कपास, 152
कपूर आदि सस्ते, 173
काँच, 152
कार्तिक पूर्णिमा, 128
कार्तिक अमावस्या, 129
काफी, 153
कोयला, 153
कागज, 153
काली मिर्च, 153
क्लॉथ मिल्स, 153
मंदी, 162, 164
मंदी कारक, 166
मंदीकारक, 166
मंगल, 116
मंगल + बुध, 159
मंगल + हर्शल, 159
मंगल + प्लूटो, 160
मंगल + राहु, 159
मंगल + शनि, 159
मंगल + शुक्र, 159
मंगल + नेपच्यून, 159
मंगल + गुरु, 159
मंगल तथा बुध सूर्य, 133
महायुद्ध, 162
महामारी, 162
माघ पूर्णिमा, 128
मशीनरी, 156
धान्यनाश, 163
मास के अंदर तेजी, 162
मोती, 156
मोटर, 153
मछली, 156
मेघद्वार, 168
मन्दी, 162
मन्दी का रुख, 138
मनुष्यगण, 169
मूंगफली, 156

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल, 119
मूल्यों में मंदी, 140
मूल्यों में गिरावट, 139, 143, 146
मूल्यों में भारी, 151
मूल्यों में वृद्धि, 145, 148, 150
मूल्यों में तेजी, 140, 142, 147
मूल्यों में अचानक गिरावट, 142, 144
बिजली का, 155
बिनौले में तेजी, 165
किराना, 153
किराने की वस्तु में तेजी, 164
मिट्टी का तेल, 155
फिल्म उद्योग, 155
स्थिति भी डांवाडोल, 171
विद्वतजन को पीड़ा, 162
विशेष घटा, 173
विग्रह उपद्रव, 141
तिथि, 120
तिथि का योग, 129
तिल का तेल, 156
तिलहन, 155
गिलट, 153
हरयाली अमावस्या, 129
हल्दी, 156
भारी गिरावट, 146
भाद्र पूर्णिमा, 128
भाव पहले गिरेंगे, 140
भाव ऊँचे, 143, 146, 147, 167
भाव ऊँचे रहें, 139
भाव बढेंगे, 144
भाव मंदे, 150, 167
भाव में मंदी, 139
भाव में भारी गिरावट, 145
भाव में तेजी, 138, 151
भाव मन्दे, 141
भाव गिरें, 173
भाव तेज, 150
भावों में मन्दी, 151
भावों में विशेष तेजी, 143
भावों में गिरावट, 138, 141, 144, 151
भावों में उतार चढ़ाव, 152
भावों में तेजी, 142, 143, 144, 146, 148, 151, 152, 162
भावों में तेजी।, 150
भूकंप की संभावना, 164
भूकम्प, 144, 163
भूकम्प योग, 114
भूगर्भ की वस्तुओं में तेजी, 158
पर्याप्त वर्षा, 142
पृथ्वी जल से पूर्ण, 147
पक्ष में शुक्रोदयास्त का प्रभाव, 169
पीतल आदि में तेजी, 164
पशुओं की क्षति, 162
पशुओं में महामारी, 164
पशुओं में रोग, 142
पाट आदि में तेजी, 166
फाल्गुन पूर्णिमा, 129
फसल बहुत अच्छी, 145
फसलें नष्ट, 143
ऋतु परिवर्तन, 120
पैट्रोलियम, 155
प्राकृतिक दुर्घटना, 114
प्राकृतिक दुर्घटनाएँ, 120
राक्षसगण, 169

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राहू सूर्य, 132
रोग से दुखी, 144
रोग वृद्धि, 162
राज विद्रोह, 163
राज विग्रह, 163, 165
राजद्वार, 168
राजविग्रह, 162, 169
राजा को पीड़ा, 164
राजनीतिक क्लेश, 144
राजनीतिक उथलपुथल, 162
राजनीतिक गतिविधियाँ, 120
शनि + हर्शल, 161
शनि + प्लूटो, 161
शनि + राहु, 161
शनि + नेपच्यून, 161
शनि का उदय/अस्त, 171
शनि तथा मंगल सूर्य, 133
शहद, 156
शांतिकारक, 169
शाक भाजी में मंदी, 164
शोक भय, 167
शुक्र + हर्शल, 161
शुक्र + प्लूटो, 161
शुक्र + राहु, 161
शुक्र + शनि, 161
शुक्र + नेपच्यून, 161
शुक्र का राशियों और नक्षत्रों में भ्रमण, 140
शुक्र के विभिन्न राशियों में वक्री-मार्गी, 170
शुक्र के विभिन्न नक्षत्रों में उदय, 167
शुक्रोदयास्त, 168
शतभिषा में शुक्रोदय, 169
शेयर, 156
शेयर ऊँचे, 159
संक्रांति, 114
संगमरमर, 156
सीमेन्ट, 156
सीप, 156
सभी धान्य सस्ते, 142
सभी में तेजी, 167
सीसा, 156
सप्ताह का वार, 126
सप्ताह के वार, 116
सप्तनाड़ी, 116
सर्पभय, 163
सरकार को पीड़ा, 162
सरसों, 156
सांसारिक घटनाएं, 126
सामान, 155
सामान्य वृष्टि, 162
सोना, 156
स्वर्णद्वार, 168
सुभिक्ष, 141, 147, 163, 166
सुभिक्ष कारक, 164, 165
सुभिक्षं, 138
सुगंधित पदार्थ, 156
सूर्य, 116
सूर्य का द्वादश राशि, 126
सूर्य का द्वादश राशियों में संक्रमण, 119
सूर्य का संक्रमण, 126
सूर्य के शनि व बुध के साथ, 134
सूर्य के वृष, 134

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य से शुक्र आगे, 134
सूर्य से आगे बुध, 132
सूर्य से आगे मंगल, 132
सूर्य क्रूर ग्रहों के मध्य, 134
सूर्य, बुध तथा केतु, 134
सूर्य, बुध तथा शुक्र, 133
सूर्य, शनि तथा मंगल, 133
सूर्य, शानि तथा बुध, 133
उत्पादन में कमी, 171
उत्पादन अधिक, 166
उतार का रुख, 139
उतार चढ़ाव, 140, 173
उतार चढ़ाव रहे, 139
कृषि की क्षति, 171
कृषि संबंधी यंत्र, 153
कृषि उत्पादन, 116
दाम बढ़े, 146
दाम बहुत बढ़ेंगे, 131
दामों में उतार चढ़ाव, 171
दुर्घटना की संभावना, 140
दुर्भिक्ष, 162, 163
देश में युद्ध, 162
देवगण, 169
व्यापार में तेजी, 166
व्यापारी वर्ग में घबराहट, 164
वृष्टि, 163
वृष्टि कारक, 164
वायरलेस, 156
वायुयान, 156
वार, 120
वर्षा बहुत अच्छी, 141, 143
वर्षा की कमी, 141, 144, 148
वर्षा का अभाव, 166, 167
वर्षा कारक, 168
वर्षा में कमी, 143
वर्षा ऋतु, 114
वर्षा अधिक, 163
वर्षाकारक, 168
वस्त्र में मंदी, 165
वस्तु में तेजी, 166
वस्तुओं में मंदी, 164
वस्तुओं में तेजी, 163, 164
वस्तुओं एवं ग्रहों का संबंध, 152
वक्री बुध का उदय, 140
वैशाख संक्रांति, 120
चंद्रमा, 116
चंद्रमा + बुध, 159
चंद्रमा + मंगल, 159
चमड़ा, 154
चमड़े में तेजी, 165
चीनी, 154
चीनादि में भूकम्प, 173
चाय, 154
चाँदी, 154
चांदी में घटा बढ़ी, 162
चांदी में घटा-बढ़ी, 164
चांदी में तेजी, 173
चांदी सस्ती, 147
चावल, 154
चैत्र पूर्णिमा, 128
चना, 154
चना आदि में तेजी, 162
तम्बाकू, 155
तांबा, 155

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेज, 164
तेजी, 159, 162, 163, 167
तेजी बनी, 146
तेजी का रुख, 139, 147, 166, 168
तेजी का रूख, 145, 151, 167
तेजी कारक, 164, 166
तेजी के बाद मंदी, 173
तेजी होकर मंदी, 162
तेजी आई, 146
तेजी/मंदी दोनों का रूख, 171
तेजीकारक, 166
तेल, 155
तूफान, 163
ऐरण्डी के भाव बढें, 147
ज्येष्ठ संक्रांति, 121
जीव, 119
जायदाद पृथ्वी, 155
जौ, 155
जड़ी बूटियाँ, 155
ज्वार, 155
ज्वारभाटा, 163
जनहानि, 162, 164
जनता को भय, 162
जनता में महामारी, 171
जनता में भय, 163
जनता निरोगी, 145
जनता भयभीत, 165
जनता पीड़ित, 166
जनता सुखी, 164
जनता दुखी, 163
जूते, 155
जल-विप्लव, 173
नक्षत्र, 120
नमक, 155
नव ग्रह तथा पदार्थ, 157
अकस्मात तेजी, 158
अमावस्या का बाजार भाव, 129
अश्विन पूर्णिमा, 128
अति वृष्टि, 145, 164, 165, 166
अतिवृष्टि, 142, 163
अरण्ड, 152
आकाशीय लक्षण तथा बाजार का रुख, 130
आभूषण, 154
अशांति, 163
औषधि, 152
अवकहड़ाचक्र, 119
अच्छी वर्षा, 142
अच्छी वर्षा हो, 138
अनावृष्टि, 131, 162, 163, 164, 166, 168
अनाज महंगा, 130, 163
अनाज में तेजी, 171
अन्न, 152
अन्न नाश, 162
अन्न-धान्य की हानि, 165
अन्नादि में तेजी, 162
अल्प वर्षा, 138
अल्पवृष्टि, 164
अलसी में तेजी, 163, 165, 166
अलसी, ऊन, 152
गर्णो का प्रभाव, 169
गुरु + हर्शल, 161
गुरु + प्लूटो, 161

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरु + राहु, 161
गुरु + शनि, 160
गुरु + शुक्र, 160
गुरु सूर्य से आगे, 132
गुड़, 153
गेहूँ, 153
ग्रह स्थिति का प्रभाव, 121
ग्रह और उससे प्रतिनिधित्व वस्तुएं, 116
ग्रहों के परस्पर संबंध, 158
ग्रहों के प्रभाव के रूख, 135
एल्यूमिनियम, 152
लाभ होने की संभावना, 131
लोहा, 156
रुपये के मूल्य में गिरावट, 182
धर्म को लेकर झगड़े, 259
धनिष्ठा, 229
धार्मिक, 181, 184
धार्मिक गतिविधियाँ, 235
यमल शास्त्र, 227
युद्ध में विजय, 246
झड़पें, 259
झुग्गी में जला, 256
झगड़े, 257
घटना के ज्योतिषीय योग, 208
घटनास्थल का ज्ञान, 186
घटनाओं की कुण्डलि, 221
घटनाओं की समीक्षा, 270
'कन्या' नाम राशि, 176
क्षेत्र/राज्य, 227
द्वादश भाव व उनके कार्यक्षेत्र, 177
इंदिरा गांधी की हत्या, 218
इराक पर हमला, 246
इनसैट आइ. बी., 217
ईशान, 229
बम विस्फोट, 181, 182
बम फटा, 214
बहादुरशास्त्री की मृत्यु, 217
बाढ, 208
बालारिष्ट, 216
बस का अपहरण, 217
बस कलहेल नदी में गिर गई, 258
बस दुर्घटना, 258
बवण्डर, 260, 261
बलात्कार, 256
ब्लू स्टार आपरेशन, 217
ब्राउन ड्वार्फ, 264
कार्यक्षेत्र में रूकावटें, 263
कार्गिल युद्ध, 245
कारगिल युद्ध, 246
कालपुरुष, 185
एक्सप्रेस की टक्कर, 245
कुंडली का विश्लेषण, 234
कैबिनेट में परिवर्तन, 232
केदार नाथ मन्दिर में पूजा, 190
कर्नाटक एक्सप्रैस की दुर्घटना, 241
कष्टप्रद रहा चुनाव, 230
कूर्म चक्र, 225
कूर्म चक्र का प्रयोग, 236
मघा, 227
मृगशिरा, 227
मंगल, 242
मंगल का गोचर, 230
मक्काऊ, 250

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महात्मा गांधी का निधन, 216
एमरजैन्सी, 217
मुख्यमंत्री सरदार बेअन्त सिंह, 225
मुस्लिम राष्ट्रों में अशांति, 233
मुहूर्त की कुण्डली, 190
मूल्यों में वृद्धि, 255
त्रिशूल मिसाइल, 249
द्विर्द्वादश, 242
स्त्रियों पर जुल्म, 213
सिक्खों की हत्याऐं, 218
दिल्ली सरकार बदली, 230
दिल्ली-लाहौर की बस, 237
विद्यमान योगों का विचार, 215
विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु, 232
विशाखा, 228
विस्फोट, 185
विद्रोह, 217
विक्रमी संवत्सर, 174
विक्रमी सम्वत्सर, 180
विनाशक, 262
विनाशक आंधी, 261
विश्लेषण, 256, 264, 269
तिथि क्षय, 231
तिथि के महत्त्व, 231
जिले पानी में डूब, 262
नियमों की पुष्टि, 214
नियमों का निर्धारण, 239
गिरजाघरों में आक्रमण, 214
गिरजाघरों पर कारबमों, 214
गिनीस बुक, 263
हस्त, 228
हस्तांतरिक, 250
हड़ताल, 182, 185, 224
हड़तालें, 253
हवाई हमले, 237
हत्याऐं, 219
हैड क्वार्टर, 238
हैदराबाद पर कब्जा, 217
भयानक दुर्घटना, 209
भयानक आग, 211
भविष्यवाणी के लिए कुछ विशेष आधार, 180
भरणी, 229
भारी वर्षा, 260
भारत की राशियाँ, 180
भारत के भूकम्पीय क्षेत्र, 236
भारत तथा चीन का सम्मान, 249
भोपाल में गैस, 218
भूकंप, 272
भूकम्प, 182, 185, 236
भूकम्पादि, 207
भूस्खलन, 271
पंडित नेहरू की मृत्यु, 216
पश्चिम, 228
पाकिस्तान पर विजय, 217
पशुहानि, 203
पुनर्वसु, 227
पूर्वभाद्रा, 229
प्रथम स्पेसमैन, 217
प्राकृतिक प्रकोप, 232, 242, 259
प्राकृतिक दुर्घटनाएं, 246
रंगीन वर्षा, 260
रक्तपात, 208
श्रीलंका में दुर्घटना, 250

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि मकर, 176
श्रावण, 229
रोहिणी, 227
राजप्रमुख की हत्या, 222
राजशोक, 253
राजनीतिक घटनाएं, 230
राजनेता की मृत्यु, 222
राष्ट्रपति शासन, 218, 262
राष्ट्राध्यक्ष की मृत्यु, 252
रैंट कंट्रोल एक्ट, 224
रेल दुर्घटना, 219, 221, 240, 267
रेल दुर्घटनाएं, 244
रेल दुर्घटनाऐं, 212
रेलवे क्रॉसिंग के पास टक्कर, 247
शनि, 242
शनि व राहु षडाष्टक, 242
शनि तथा मंगल की युति, 230
शनि तथा मंगल की परस्पर स्थिति, 230
शनि-मंगल समसप्तक, 242
शहर, 227
षडाष्टक स्थिति, 231
शुक्र अतिचारी, 233
शतभिषा, 229
शताब्दी के पटरी से उतरने, 243
शनैश्चरी अमावस्या, 208
संघटा चक्र, 221
संहिता शास्त्र, 177
समीपस्थ स्थिति, 231
समसप्तम स्थिति, 231
सीमा पर परेशानी, 258
सीमाओं पर टकराव, 246
सरकार का गिरन, 242
सरकार में परिवर्तन, 219
सरकार शपथ ग्रहण, 224
सरदारनी जागीर कौर, 235
साइक्लॉन, 217
सारांश, 259
सड़क दुर्घटनाऐं, 183
स्वतंत्र भारत की कुण्डली, 176
स्वतंत्रता दिवस, 254, 258, 263
स्वतंत्रता दिवस की कुंडली, 223
242, 245, 270
स्वतन्त्रता दिवस की कुंडली, 240
सर्वतोभद्रचक्र, 225
सत्य साई बाबा, 235
सेना ने खदेड़ा, 217
सत्ता परिवर्तन, 222
सूर्य के कर्क प्रवेश, 254
सूर्य विधि, 180, 213, 218, 223, 224, 234, 240, 243, 248, 250, 251, 254, 256
सूर्य प्रवेश, 268
सूर्यविधि, 241, 258
उत्तर फाल्गुनी, 228
उत्तरभाद्रा, 229
दक्षिण, 228
दक्षिणायन, 207
कृत्तिका, 227
दहेज के कारण मृत्यु/हत्या, 184
दुर्घटना, 182, 203, 205, 241, 242
दुर्घटनाओं के ज्योतिषीय योग, 208
दुर्भिक्ष, 207
दुष्प्रभाव, 207
वायव्य, 229

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायु दुर्घटना, 233, 240
वायु दुर्घटना के योग, 238
वायु दुर्घटनाएं, 246
वायुयान गिरना, 253
वायुयान दुर्घटना, 238
वायुयान दुर्घटनाएं, 250
वार से योग, 239
वक्री ग्रह, 233
वन्देमातरम के गाने पर जातीय झगड़े, 257
चौकियों पर कब्जा, 246
चक्रवात की घटनाऐं, 260
तथागत अवतार, 263
तूफान, 260
ज्योतिषियों के सामने चुनौती, 264
ज्योतिषीय योग, 222
ज्योतिषीय कारण, 224
ज्योतिषीय विश्लेषण, 210, 215, 267
ज्येष्ठा, 228
जनधन हानि, 208
जगत कुंडली, 180
जगत लग्न, 176
नक्षत्र-आश्लेषा, 227
नाभि, 227
नव संवत्सर, 174
नवांश/नक्षत्र आदि का परिवर्तन, 220
नैऋत्य कोण, 228
ट्रक का गिरना, 262
अकाल तख्त की मरम्मत, 218
अमावस्या, 208
अश्विनी, 229
अतिवृष्टि, 262
अतिचारी, 233
अग्नि काण्ड, 184
अग्नि कांड, 206
अग्नि II परीक्षण, 239
अग्निकांड, 210, 232
अग्निकांड 2, 209
अपहरण, 252
अफगानिस्तान पर हमला, 246
आँधी, 260
आइ.एन.एस. द्रोणाचार्य, 249
आकाश टैस्ट फायर्ड, 264
आर्द्रा, 227
आतंकवाद, 184, 185, 208, 241
आतंकवादी, 208
आतंकवादी गतिविधि, 233
आत्मघाती बम के हमले, 248
आत्मदाह, 184, 186
आग, 212, 213
अन्वेषण/व्याख्या, 205
गणतंत्र दिवस, 180, 254
गणतंत्र दिवस की कुण्डलियाँ, 214
गणतंत्र दिवस की कुंडली, 218
गोचर में ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन, 269
गुरु अतिचारी, 233
गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, 235
गुजरात का भूकम्प, 246
ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन, 240
ग्रहों की तिथि, 239
ग्रहों का गोचर, 203
ग्रहों के योग, 239
लाल रंग की वर्षा, 263

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लूटमार, 257
युग स्वामी, 282
घाघ कहै सुन भड्डीर, 320
बाजार भावों पर प्रभाव, 303
एकादश भाव, 318
कैबिनेट, 319
कन्या, 318
मंत्रिमंडल बनना, 317
मकर, 318
मीन, 318
मुख्यमंत्री का चयन होना, 317
बिहार में राष्ट्रपति शासन, 312
मिथुन, 318
भालिक, 275
पुष्कर, 301, 302
प्रथम वृष, 318
प्रांतीय राजसभा, 319
राष्ट्रपति का अध्यादेश, 319
राष्ट्रपति शासन, 308
राष्ट्रपति शासन के कारणों पर चर्चा, 315
शुद्ध संवत्सर, 280
संवत्सरों के नाम, 281
संवर्तक, 302
समकर्ता, 302
सप्तम भाव, 318
स्वतंत्रता दिवस, 317
स्वतन्त्रता दिवस की कुण्डली, 309
सूर्य विधि, 310
सूर्यविधि के मास, 309
द्रोण, 301
वरुण, 302
वायु स्तंभ, 301
चुनाव होना, 317
चतुर्मेघ, 301
चतुर्थ सिंह, 318
तृन स्तंभ, 301
तम, 302
जल स्तंभ, 301
नवमेघ, 302
अधिक संवत्सर, 280
अवर्तक, 301, 302
अन्न स्तंभ, 301
गणतंत्र दिवस, 317
गणतंत्र दिवस की कुण्डली, 310
गोचर परिवर्तन, 315
गुरु का गोचर, 303, 318
लोकसभा, 319

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

R.V.S. Book Distributors

G-4/30, Gali No-3, G Block, Paanchva Pusta, Sonia Vihar, Delhi-110094
Mobile : 9953918219

Distributors of the Books Published by Bharatiya Prachya Evam Sanatan Vigyan Sansthan & K.V.R. Publishers. All Astrological Books also Available.

English	Price	Author	Hindi	Price
Mathematical Astrology	250.00	Y.K. Bansal वाई. के. बंसल	गणित ज्योतिष I	250.00
Astronomy Relevant to astrology	200.00	V.P. Jain वी. पी. जैन	खगोल शास्त्र	150.00
General Astrology	200.00	S.N. Kapoor & Others एस. एन कपूर व अन्य	सामान्य ज्योतिष	200.00
Predictive Astrology	360.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	फलित ज्योतिष	360.00
Nine Planets and Twelve Bhavas	280.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	द्वादशभाव एवं नवग्रह	280.00
Delineation and Dynamic Configuration of horoscope	300.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	जन्मपत्री का चित्रण एवं गतिशील संरूपण	200.00
Textbook on Shadbala and Bhava Bala	80.00	V.P. Jain वी. पी. जैन	ग्रह बल एवं भाव बल	120.00
Judgement of Bhavas and Timing through dasha and Transit	260.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	भावनिर्णय, दशा एवं गोचर द्वारा समय निर्धारण	260.00
Mundane Astrology	320.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	संहिता ज्योतिष	350.00
Timing of Marriage	200.00	M.N. Kedar and others	विवाह का समय	200.00
Annual Horoscopy	100.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	वर्षफल एवं भविष्य	120.00
Introduction to Vastu	100.00	M.N. Kedar		
Muhurta	100.00	Kusum	मुहुर्त प्रकरण	200.00
AdvancedTechniques of Astrological Predictions	150.00	Compiled by	फलित दर्पण	200.00
Advanced Techniques Part-II	600.00	M.N. Kedar		

ग्रहशांति तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए

अमृतवाणी	151.00
कल्पवृक्ष	200.00
पंचदशी	101.00

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अहिंसकस्य दान्तस्य धर्मार्जितधनस्य च।
सर्वदा नियमस्थस्य सदा सानुग्रहा ग्रहाः ॥

(फलदीपिका अध्याय 26 श्लोक 50)

जो व्यक्ति किसी की हिंसा नहीं चाहता, संयमी होता है (अपने मन और आचरण पर सयंम रखता है) तथा धर्म मार्ग से धनोपार्जन करता है और सर्वदा शास्त्रोपदिष्ट नियमों का पालन करता है, उस पर ग्रह सदैव अनुग्रह करते हैं।

Whom to Grahas Help

A person who wishes no harm to anybody, is self restrained, earns wealth by fair means and follows the principles laid down by scriptures, always gratified by the planets.

OTHER BOOKS BY THE SAME AUTHOR

- Predicative Astrology
- Judgement of Bhavas & timing of events through Dasa and Transit
- Delineation & Dynamic Configuration of Horoscope
- Annual Horoscopy
- Nine Planets & Twelve Bhavas
- Advance Technique of Astrological Predictions
- Timing of Marriage

- फलित ज्योतिष
- भावनिर्णय, दशा एवं गोचर द्वारा समय निर्धारण
- जन्मपत्री का चित्रण एवं गतिशील संरूपण
- वर्षफल एवं भविष्य
- फलित दर्पण
- विवाह का समय

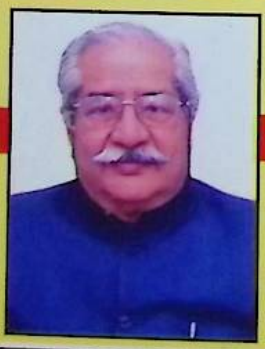

महेन्द्र नाथ केदार

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद (पंजी.) चेन्नै, की दिल्ली शाखा (प्रथम) के संस्थापक अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष।

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) दिल्ली की गेस्ट फैकल्टी के सदस्य।

Price: ₹ 500/-